Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम्परा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167932

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम्परा

(उपन्यास)

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

लेखक
गुरुदत्त

081
167932

Central Library
167932
Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम कथा

1. अमृत मंथन
2. परम्परा
3. अग्नि परीक्षा

R
089.9143
GUR-P

इशान दत्त

मूल्य : 70.00 रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
2 बी. डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली - 110005
फोन : 23553624, 23551344; फैक्स : 23553624
email : indiabooks@rediffmail.com

संस्करण : 2010

मुद्रक : नवशक्ति प्रिंटर्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

प्राक्कथन

भगवान श्रीराम के जीवन की कुछ घटनाओं को आधार बनाकर यह उपन्यास लिखा गया है।

वैसे तो श्रीराम के जीवन पर सैकड़ों ही नहीं, सहस्रों रचनाएं लिखी जा चुकी हैं, इस पर भी जैसा कि कहते हैं—

हरि अनन्त हरि कथा अनन्त।

भगवान राम परमेश्वर का साक्षात अवतार थे अथवा नहीं, इस विषय पर कुछ न कहते हुए यह तो कहा ही जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन में जो कार्य सम्पन्न किया वह उनको एक अतिश्रेष्ठ मानव के पद पर बैठा देता है। लाखों, करोड़ों लोगों के आदर्श पुरुष तो वह हैं ही। और केवल भारतवर्ष में ही नहीं बीसियों अन्य देशों में उनको इस रूप में पूजा जाता है। राम कथा किसी न किसी रूप में कई देशों में प्रचलित है।

और तो और तथाकथित प्रगतिशील लेखक जो वैचारिक दृष्टि से कम्यूनिस्ट ही कहे जा सकते हैं, वे आर्यों को दुष्ट, शराबी, अनाचारी, दशरथ को लम्पट, दुराचारी लिखते हैं परन्तु राम की श्रेष्ठता को नकार नहीं सके।

राम में क्या विशेषता थी, पौराणिक कथा 'अमृत मंथन' का क्या महत्व था, राम ने अपने जीवन में क्या कुछ किया, प्रस्तुत उपन्यास में इसी पर प्रकाश डाला गया है।

यह एक तथ्य है कि चाहे सतयुग हो, त्रेता-द्वापर हो अथवा कलियुग हो, मनुष्य की दुर्बलता उसमें उपस्थित पाँच विकार—काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार होती है और इन विकारों के चारों ओर ही मनुष्य का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन घूमता है। इन विकारों पर नियंत्रण यदि उसका आत्मा प्रबल है तो उसके द्वारा होनी चाहिए अन्यथा राजदण्ड का निर्माण इसी के लिए हुआ है। परन्तु जब ये विकार किसी शक्तिशाली, प्रभावी राजपुरुष में प्रबल हो जाते हैं जो देश में तथा संसार में अशान्ति का विस्तार होने लगता है और तब श्रेष्ठ सत् पुरुषों को उसके विनाश का आयोजन करना पड़ता है और यही इतिहास बन जाता है। इन्हीं विकारों ने देवासुर संग्राम का बीज बोया, रावण तथा राक्षसों को अनाचार फैलाने की प्रेरणा दी, महाभारत रचा तथा आज के युग में भी देश के भीतर गृहयुद्ध तथा देशों में परस्पर युद्ध करा रहे हैं।

इन विकारों के प्रभाव में दुष्ट पुरुष सदा विद्यमान रहे हैं और आज भी प्रभावी हो रहे हैं। श्रेष्ठ जनों को संगठित होकर उनके विरुद्ध युद्ध के लिए तत्पर होना होगा। जो लोग, देश तथा जाति इस प्रकार के धार्मिक युद्धों से घबराती है वह पतन को ही प्राप्त होती है। दुष्टों के प्रभावी हो जाने से पूर्व ही जब तक उनके विनाश का आयोजन नहीं किया जाता, तब तक युद्धों को रोका नहीं जा सकता और ऐसे युद्धों के लिए सदा तत्पर रहना ही देश में शान्ति स्थिर रख सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: १ :

दिल्ली करोलबाग लड़कियों के सरकारी स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती महिमा एम० ए०, बी-एड० अपने स्कूल में सर्वप्रिय थी। अध्यापिकाओं, छात्राओं और स्कूल के कर्मचारियों आदि सब में वह आदर और प्रशंसा की पात्रा बनी हुई थी।

महिमा की महिमा यही थी कि वह मृदुभाषी, न्यायप्रिय थी और पढ़ाने में अति परिश्रम और कुशलता से यत्नशील रहती थी।

जब से इस स्कूल में वह आयी थी, स्कूल का परीक्षा-फल अति श्रेष्ठ रहने लगा था और राज्य के प्रशासन में स्कूल की महिमा दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी।

महिमा स्कूल से कुछ अन्तर पर नाईवाड़ा के एक अच्छे, खुले मकान में रहती थी और घर तथा पड़ोस में वह आदर से देखी जाती थी। स्कूल में और स्कूल से बाहर भी उसके परिचित उसको महिमाजी कहकर सम्बोधित करते थे।

स्कूल में भी तथा घर के पड़ोसियों में भी वह विधवा समझी जाती थी और उससे वार्त्तालाप करते हुए सब परिचित उसके ससुराल तथा पति का उल्लेख करने में संकोच करते थे।

महिमा के साथ मकान की ऊपर की मंजिल में उसकी छोटी बहन गरिमा अपने पति और बच्चों के साथ रहती थी। गरिमा का पति कुलवन्तसिंह वायु सेना में मेजर था। वह स्क्वाड्रन लीडर था। उसके कमाण्ड में सात हवाई जहाज़ थे और उनमें काम करने वाले इक्कीस वायु-सेना के सैनिक काम करते थे। स्क्वाड्रन लीडर कमाण्डर कुलवन्तसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कार्यालय तो पालम में था, इस पर भी वह अपने परिवार के साथ करोलबाग में महिमा के मकान में रहता था।

महिमा हिमाचल प्रदेश बिलासपुर की रहने वाली थी। उसने चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय से इतिहास में एम० ए० तथा बी-एड० किया था। उसे दिल्ली में प्रधानाचार्य के पद पर नियुक्त हुए पाँच वर्ष हो चुके थे। गरिमा का विवाह हिमाचल प्रदेश में ही मण्डी क्षेत्र के रहने वाले एक राजपूत परिवार के कुलवन्तसिंह से हुआ और उसकी ड्यूटी दिल्ली में लगी तो वह परिवार सहित महिमा के मकान में आकर रहने लगा था।

गरिमा को महिमा के साथ रहते हुए भी चार वर्ष हो चुके थे। उसके विवाह को छः वर्ष हो चुके थे और जब वह दिल्ली आयी थी तो अपने साथ एक शिशु को लायी थी। यह लड़का था और इसकी दादी ने इसका नाम बलवन्त रखा था। दिल्ली आकर गरिमा के लड़की उत्पन्न हुई थी।

एक दिन कुलवन्त अपना काम पालम हवाई अड्डे पर समाप्त कर घर आया तो वह मकान की ऊपर की मंज़िल पर अपने परिवार में जाने के स्थान, मकान की भूमि की मंज़िल पर महिमा के फ्लैट में चला गया। मकान के बैठकघर में वह प्रविष्ट हुआ तो महिमा स्कूल से आ चाय ले रही थी। उसने मेजर साहब को आते देखा तो चाय का निमन्त्रण दे दिया।

कुलवन्त ने सोफा पर बैठते हुए कहा, "दीदी ! मेरे स्क्वाड्रन में एक नये पायलट की नियुक्ति हुई है। कुछ दिन हुए मेरे स्क्वाड्रन के एक पायलट के साथ दुर्घटना होने से उसका देहान्त हो गया था और उसका स्थान रिक्त पड़ा था। एक नया 'रिक्रूट' उस स्थान पर आया है। उसका नाम है अमृतलाल।"

अमृतलाल का नाम सुनते ही महिमा ने हाथ में पकड़ा प्याला सासर में रख दिया और अपने जीजा कुलवन्तसिंह का मुख देखने लगी।

कुलवन्तसिंह गम्भीर भाव में बैठा रहा। एकाएक महिमा अपनी घबराहट को छुपाने के लिये भर्रायी आवाज़ में घर की नौकरानी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाने लगी, "सुखिया ! ओ सुखिया !!" सुखिया एक प्रौढ़ावस्था की विधवा स्त्री थी। यह दिल्ली के एक देहात की रहने वाली थी और जब से महिमा दिल्ली में आयी थी, उसकी सेवा में थी।

सुखिया आयी तो महिमा ने कहा, "चाय के लिये और पानी स्टोव पर रख दो और ऊपर से गरिमा बहन को कहो कि मेजर साहब नीचे चाय ले रहे हैं और वह भी आ जाये।

"हाँ, तो जीजाजी ! यह आपके पायलट साहब कहाँ के रहने वाले हैं ?"

"उसके सर्विस-रोल पर तो लिखा है श्रीनगर कश्मीर। परन्तु सूरत-शक्ल से वह कश्मीरी प्रतीत नहीं हुआ। वह मेरे सामने 'सैल्यूट' कर खड़ा हुआ तो मैं एक नज़र उसको देख पूछने लगा, 'मिस्टर अमृत ! आप कश्मीरी प्रतीत होते नहीं ?'

"वह चुप कर सामने खड़ा रहा। मैंने मेज़ की दूसरी ओर रखी कुर्सी पर उसे बैठने का संकेत कर पुनः पूछा, 'मालूम होता है कि आप 'डौमिसाइल्ड' (बसे हुए) कश्मीरी हैं ?'

"उसने एक शब्द में उत्तर दिया, 'जी।' और मेरे सामने बैठ गया।

"मैंने उसका सर्विस-रोल देखकर पूछा, 'आप ब्राह्मण हैं ?'

"अब उसने मुस्कराते हुए कहा, 'जी ! ब्राह्मण का बेटा होने के नाते।'

'पूर्वज कहाँ के रहने वाले थे ?' मैंने पुनः पूछा। वह कहने लगा, 'हिमाचल प्रदेश के। बिलासपुर खास का रहने वाला हूँ।'

"मैंने कहा, 'तब तो भाई, तुम मेरी ससुराल के गाँव के कहे जा सकते हो।'

'तो आपका विवाह बिलासपुर में हुआ है ?'

"मैंने बताया, 'हाँ, वहाँ के एक रिटायर्ड तहसीलदार हैं पण्डित भृगुदत्त। मेरा विवाह उनके घर में ही हुआ है।'

"इस पर वह कुछ देर तक आँखें मूंद विचार करता रहा और फिर बोला, 'याद नहीं आ रहा। इस नाम के किसी व्यक्ति को मैं जानता नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने पूछा, 'किसके बेटे हो ?'

'सर्विस-रोल पर पिता का नाम लिखा है। वह एक बहुत ही सामान्य व्यक्ति हैं। उनको कोई जानता नहीं।'

"मैंने उसके सर्विस रोल में पढ़ा तो उसके पिता का नाम लिखा था पण्डित् सुरेश्वर। महिमा दीदी! वह नाम आपके श्वसुर का है न ?"

महिमा यह सब सुन अवाक् बैठी रह गयी थी।

इस समय गरिमा अपने दोनों बच्चों को लिये हुए नीचे आ गयी। बड़ा लड़का बलवन्त इस समय साढ़े-चार वर्ष का था और छोटी लड़की अभी एक वर्ष से कम आयु की ही थी।

कुलवन्त ने लड़की को गोद में ले लिया और उससे बातें करने लगा। बलवन्त उसके घुटनों में आ खड़ा हुआ। गरिमा ने बहन को पीत मुख देखा तो पूछने लगी, "दीदी! क्या बात है ? रंग फीका किसलिये पड़ गया है ?"

उत्तर महिमा ने नहीं दिया। वह भौंचक बहन का और अपने जीजा का मुख देखती हुई बैठी थी। कुलवन्तसिंह ने कहा, "आज एक व्यक्ति कार्यालय में मिला है। वह पायलट है। नाम है अमृतलाल और वह बिलासपुर के एक पण्डित सुरेश्वर का लड़का है। मैंने यह बात सुनायी है तो दीदी कुछ विचार करने लगी हैं।"

गरिमा ने कहा, "पर अमृत जीजाजी के स्वर्गवास हो जाने का समाचार है। यह वह नहीं हो सकते।"

"कहाँ देहान्त हुआ था उनका ?"

"देहान्त तो श्रीनगर में हुआ था। वह घर से लड़कर वहाँ गये थे। उनके विषय में अन्तिम समाचार यह था कि वह वहाँ अपनी प्रेमिका को मिलने गये थे। प्रेमिका ने विवाह कर लिया था। जीजाजी ने प्रेमिका के घर वाले से किसी प्रकार का झगड़ा किया और उस झगड़े में मारे गये। उनके शव को डल झील में फेंक दिया गया था। वह शव गला-सड़ा झील में तैरता पाया गया। शव की जेब से उनकी पाकेट डायरी मिली थी। वह भी गल चुकी थी। परन्तु उसमें जीजाजी के घर का पता लिखा मिल गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जीजाजी के पिता को सूचना भेजी गयी तो वह वहाँ गये । उनके वहाँ पहुँचने से पूर्व शव जला दिया गया था, परन्तु उनके गले-सड़े कपड़े और डायरी पुलिस ने रखी हुई थी । उनको देखकर पिताजी को भी यही समझ आया था कि शव जीजाजी का ही था ।

"वहाँ के लोगों से पता चला कि शव मिलने के तीन दिन पूर्व झील के किनारे शव मिलने के स्थान के समीप कुछ लोगों में झगड़ा हुआ था, परन्तु उस झगड़े में घायल कोई नहीं हुआ था । जीजाजी के पिताजी, बस इतना ही समाचार लेकर लौट आये थे । इस बात को आज आठ वर्ष हो चुके हैं ।"

कुलवन्तसिंह ने कहा, "बहुत ही विचित्र है ।"

अब महिमा ने पूछा, "देखने में कैसा प्रतीत होता है वह व्यक्ति ?"

"अच्छा, सुन्दर और बहुत ही चुस्त व्यक्ति है । सर्विस-बुक में उसका पता श्रीनगर का लिखा है ।"

"मेरा विचार है कि उसका और उसके पिता का नाम घटनावश वैसा है ।" महिमा ने मन से बात निकाल देने के लिये कह दिया ।

इस समय सुखिया चाय ले आयी । परन्तु कुलवन्तसिंह से दिये समाचार का प्रभाव तीनों बैठे व्यक्तियों पर था और वे चुपचाप चाय ले रहे थे । चाय समाप्त हुई तब भी तीनों अपने-अपने विचारों में निमग्न थे ।

महिमा सबसे पहले स्वाभाविक स्थिति में आयी । उसने बात बदलने के लिये कह दिया, "देश की राजनीतिक स्थिति तो बदलती जाती है ।"

"क्या बदलती जाती है ?"

"पाकिस्तान से एक अत्यन्त तनाव की स्थिति है । वहाँ पिछले सात वर्ष से तनाव की अवस्था चली आ रही है । एक तानाशाह के हटाये जाने पर एक दूसरे सैनिक तानाशाह गद्दी पर आ गये हैं और अब उनके विरुद्ध भी आन्दोलन और विद्रोह के लक्षण दिखायी देने लगे हैं ।"

"पर वहाँ की स्थिति से हमारा क्या सम्बन्ध है ?" गरिमा का प्रश्न था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सम्बन्ध तो इस युग में अमेरिका से भी है। पाकिस्तान तो उससे अधिक समीप है।" महिमा का कहना था।

"वैसे तो," कुलवन्तसिंह ने कह दिया, "भूमण्डल के सब-के-सब देश इतने समीप-समीप हो गये हैं कि परस्पर प्रभाव डालते रहते हैं। परन्तु आज स्थिति यह है कि बड़ी लड़ाई हो नहीं सकती।"

महिमा ने मुस्कराते हुए कहा, "जीजाजी से जब भी देश की राजनीति की बातचीत की जाती है तो वह युद्ध की बात करने लगते हैं। मैं यह कह रही हूँ कि दोनों देशों में शान्ति रहनी चाहिये। एक में दुर्व्यवस्था होगी तो उसका प्रभाव दूसरे पर भी होगा।"

कुलवन्तसिंह ने मुस्कराते हुए कह दिया, "जब पड़ोस में दुर्व्यवस्था हो तो युद्ध होगा ही। दुर्व्यवस्था का कोई अन्य परिणाम हो ही नहीं सकता।"

"परन्तु भारत तो लड़ेगा ही नहीं। इस कारण यदि लड़ाई हुई तो वह दो-चार दिन के लिये ही होगी।" गरिमा का विचार था।

"जीजाजी ! पूर्वी पाकिस्तान की ओर से सीमा पर नित्य सीमोल्लंघन तथा गोली चलने की घटनायें होती रहती हैं। इन घटनाओं से देशों में युद्ध नहीं हो सकता।"

"ऐसी घटनायें युद्ध के समीप होने के ही तो लक्षण होते हैं। इस पर भी मैं समझता हूँ कि पाकिस्तान में यदि कुछ भी सूझ-बूझ है तो युद्ध नहीं करेगा। पाकिस्तान को समझ लेना चाहिये कि भारत अब वह हिन्दुस्तान नहीं है जो महमूद गज़नवी अथवा मुहम्मद गौरी के आक्रमणों के समय था। अब जो कोई भी भारत पर आक्रमण करेगा, पहले दस बार विचार करेगा।"

गरिमा ने अपने पति के आत्मविश्वास की बात सुन कह दिया, "तो चीन को भी यह विचार करना पड़ेगा कि भारत पर आक्रमण करे अथवा न ?"

"चीन आक्रमण नहीं करेगा। चीन अथवा अन्य कम्युनिस्ट देश दो प्रकार से ही युद्ध कर सकते हैं। एक तो आत्म-रक्षा में और दूसरे किसी देश की किसी अन्य देश से हत्या कर देने पर उसके शव पर गिद्धों की भाँति झपटने में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो गारिमा ! रूस ने हंगरी पर आक्रमण किया है तो अन्य देशों से मिलकर। अकेले नहीं। इससे पहले युद्ध के दिनों में तथा उसके उपरान्त रूमानिया, बल्गारिया और पोलैण्ड पर अधिकार किया है तो इस कारण कि इन देशों का पहले जर्मनी द्वारा कचूमर निकाला जा चुका था। साथ ही इन देशों की जो सहायता करने की सामर्थ्य रखते थे, वे इन देशों को रूस की दया पर छोड़ चुके थे।"

"परन्तु अब चीन और रूस तो परस्पर लड़ने वाले दिखायी देते हैं।"

"नहीं। वे परस्पर तब तक नहीं लड़ेंगे, जब तक कि दोनों में से किसी एक की किसी स्वतन्त्र देश से पिटाई न हो चुकी होगी। इसके विपरीत हमारे अफसरों को अमेरिका के विषय में यह भय लगा रहता है कि यह इतना मूर्ख देश है कि यह अकारण भी लड़ सकता है।"

"यह क्यों ?"

"यह इसलिये कि पिछले विश्व-युद्ध में इसने विजय प्राप्त की है और इसने दूसरों के देश में जाकर युद्ध किया है। इसके अपने देश में युद्ध नहीं हुआ।"

महिमा ने पुनः विषय बदल दिया। उसने देश की राजनीतिक गतिविधियों पर चर्चा आरम्भ कर दी। उसने कहा, "वर्त्तमान राजनीति में एक बात सबसे अधिक सफल होती है। वह यह कि निश्चित बात की जाँच और उसके सत्य-झूठ का विचार छोड़कर उसे साहस के साथ उपस्थित किया जाये।

"प्रजा जड़ होती है। जो कोई इसे दृढ़ता से जिधर को ठोकर मारता है, यह उधर ही चल देती है। अतः किसी नीति से कल्याण होगा अथवा अकल्याण होगा, यह पीछे पता चलेगा। समय पर तो प्रजा उसके साथ हो जाती है जो अपनी बात को निडर होकर लोगों के समक्ष रखता है। जो दृढ़ता से यह कहता है कि उसकी योजना से अधिक-से-अधिक लोगों का कल्याण होगा, वह जनता का नेता बन जाता है।"

"कांग्रेस ऐसी ही है। एक बात मैं आपको बताता हूँ कि यद्यपि निकट भविष्य में युद्ध की आशंका नहीं, परन्तु हमारी सेना में और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैनिक सामग्री के कारखानों में तैयारी ऐसे हो रही है कि मानो युद्ध होने ही वाला है।"

"इसी को देखकर तो समझती हूँ कि युद्ध होगा।" महिमा का कथन था, "देवताओं, मेरा अभिप्राय है कि भले लोग सदा युद्ध को पसन्द नहीं करते और उसकी अवहेलना करते रहते हैं। इस पर भी युद्ध होते हैं और प्रायः भले लोग युद्ध की तैयारी में पिछड़े रह जाते हैं।"

कुलवन्तसिंह हँस पड़ा। वह उठते हुए बोला, "चलो गरिमा! दीदी को अब अपना काम करने दो। मैं जब आया था तो यह कुछ पढ़ रही थीं।"

"आप चलिये। मैं आती हूँ। आप बच्चों को साथ ले चलिये।"

कुलवन्त समझ गया कि गरिमा बहन से पृथक् में बात करना चाहती है। उसे विश्वास था कि यदि कुछ भी बात ऐसी होगी जो उसको भी जाननी चाहिये तो वह उसे बता दी जायेगी। पहले भी ऐसा हुआ करता था। इस कारण उसने बच्ची को गोद में लिया और मकान की ऊपर की मंज़िल पर चला गया।

: २ :

"दीदी! क्या समझी हो?"

"किस विषय में पूछ रही हो?"

"अमृतलालजी के विषय में।"

"निश्चय से तो कुछ कह नहीं सकती। इस पर मुझे पहले भी सन्देह था और अब तो वह सन्देह विश्वास में बदल जाता है कि तुम्हारे जीजाजी मरे नहीं और वह जीवित हैं।"

"मुझे भी यही समझ में आया है। तो अब क्या किया जाये?"

"किसलिये क्या किया जाये?"

"जीजाजी के विषय में निश्चय से जानना चाहिये। जब यह बात निश्चय हो जाये कि वह पायलट महाशय जीजाजी ही हैं तो फिर विचार कर निश्चय किया जाये कि उनके प्रति अपना क्या व्यवहार हो? उनके माता-पिता को सूचना भेजी जाये अथवा नहीं?"

"मैं समझती हूँ?" महिमा ने कहा, "कि हमें कुछ नहीं करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। उनकी अवहेलना करनी चाहिये। यदि वह यह पता पा जायें कि मैं दिल्ली में हूँ तो उनसे मेल-मुलाकात से इन्कार कर दूँ।"

"पर दीदी! यदि वह जीजाजी हैं तो मेरे विषय में तो उनको पता चल गया होगा कि बलवन्त के पिताजी की मैं पत्नी हूँ। पिताजी की दो ही लड़कियाँ हैं। अतः उसके स्क्वाड्रन लीडर की पत्नी गरिमा ही हो सकती है। यह तो प्रकट ही हो गया होगा।"

"तो तुम्हें भय है कि जीजाजी को तुम्हारा उससे सम्बन्ध का पता न लग जाये।"

गरिमा ने आँखें नीचे किये हुए कह दिया, "मैंने अपनी भूल का संकेत उनको बिना साथी का नाम-धाम बताये दे दिया हुआ है। इस पर वह हँसते रहे हैं। इस कारण इस बात का पता लगने का उतना भय नहीं जितना कि समझा जा सकता है। मैं तो तुम्हारे विषय में विचार कर रही थी। उनको यदि पता चला कि अमृतलाल तुम्हारे पति हैं और हमने यह बात उनसे जान-बूझ कर छुपा रखी है तो इसका कुछ दूषित परिणाम भी हो सकता है। मैं समझती हूँ कि हमें उनको जीजाजी की पूर्ण कथा और फिर उनके बाबा तथा पिताजी से सम्बन्ध की बात स्वयं ही बता देनी चाहिये।

"मैंने बाबा से एक बात ही सीखी है। वह यह कि ज्ञान को छुपा कर रखना भी चोरी होती है। अधिकारी को ज्ञान करा देना चाहिये।

"इस कारण अपनी पूर्ण बात बता देनी ठीक रहेगी और सब-कुछ प्रकट कर देना चाहिये। तदनन्तर जैसी भी स्थिति हो उसमें अपने व्यवहार का निश्चय करना चाहिये।"

महिमा अब अपने को भगवान-भरोसे कर स्थिर-चित्त हो चुकी थी। अतः उसने कह दिया, "ठीक है। मेजर साहब से पूर्ण इतिहास बता दो और फिर इस समस्या को सुलझाने का यत्न करो।

"यदि यह निश्चय हो जाये कि यह पायलट महाशय तुम्हारे जीजाजी ही हैं तो फिर तुम उनकी माताजी को भी लिख सकती हो।"

"और तुम नहीं लिखोगी?"

"जब से मैं दिल्ली में आयी हूँ, मेरे सास-श्वसुर ने मेरा त्याग कर रखा है। उनका पत्र आये भी तीन वर्ष से ऊपर हो चुके हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर दीदी ! तुमने भी तो उनका समाचार लेने का कभी यत्न नहीं किया। उनको अपने परिवार की परम्परा को, अपने साथ ही समाप्त होते देख बहुत दुःख है। मैं दिल्ली आने से पूर्व उनसे मिलने गयी थी तो वे बेचारे बीहड़ जंगल में निस्सहाय खड़े प्रतीत हुए थे।"

"ठीक है। यदि यह वही उनके पुत्र हैं तो माँ को पुत्र मिल जाना चाहिये।"

गरिमा ऊपर अपने कमरे को चली गयी। जब वह ऊपर पहुँची तो लड़की सो चुकी थी और कुलवन्त अमेरिका-जापान युद्ध पर एक पुस्तक पढ़ रहा था।

गरिमा उसके समीप कुर्सी पर बैठी तो स्वतः ही कहने लगी, "मैं दीदी से एक आवश्यक विषय पर सम्मति करने रह गयी थी।"

यह प्रारम्भिक बात तो उसने पति का ध्यान आकर्षित करने के लिये की थी। कुलवन्तसिंह ने पूछ लिया, "तो क्या वह आवश्यक बात मुझसे भी करना चाहती हो ?"

"जी। बात यह है कि यह दीदी के रहस्य की बात थी। उससे पूछे बिना किसी से भी कह नहीं सकती थी। हम दोनों की सम्मति यह हुई है कि वह रहस्य की बात आपको बता दी जाये और फिर आपसे इसमें सहायता ली जाये।"

"कुछ अमृतलाल की बात है क्या ?"

"जी ! मुझे और दीदी को भी यह सन्देह हुआ है कि वह मेरे जीजाजी ही हैं। वह दीदी से लड़कर घर से निकल गये थे। इस कारण मैं दीदी से पूछकर ही आपको बताना चाहती थी।"

"मुझे भी कुछ ऐसा ही समझ में आया है। परन्तु अमृतलाल ने बताने का कुछ यत्न नहीं किया और मैंने भी कुछ अधिक जानने की आवश्यकता नहीं समझी।"

"यह आज से दस वर्ष पहले की बात है। मैं अभी ग्यारहवीं श्रेणी में पढ़ती थी कि दीदी से मिलने और अपनी छुट्टियाँ व्यतीत करने उसके घर चण्डीगढ़ गयी थी। जीजाजी वहाँ की कार्पोरेशन में इन्जीनियर थे। जीजाजी ने मुझसे प्रेम प्रकट करना आरम्भ कर दिया। एक दिन वह प्रेम का सीमोल्लंघन करने लगे तो मैं वहाँ से चली आयी, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे मन में उत्सुकता बनी रही कि देखूँ उससे क्या रस प्राप्त होता है ?

"इसके छः मास उपरान्त वह बिलासपुर में दीदी के साथ आये तो मैं अपनी उत्सुकता की पूर्ति के लिये दीदी के घर रहने जा पहुँची। वहाँ दीदी के साथ वाले कमरे में रात रह गयी। जीजाजी का दीदी से उसी दिन झगड़ा हुआ था।

"उस झगड़े का कारण यह था कि जीजाजी के एक बाबा थे। वह बहुत ही रोचक कथा करना जानते थे। उन्होंने दीदी को प्रेरणा दी कि विवाह का अमृत-फल सन्तान है। इसके बिना पति का भोग बिना परिश्रम के पारिश्रमिक पाना है। दीदी और जीजाजी सन्तान निरोध के उपाय प्रयोग करते थे। दीदी को समझ आ गयी और उसने सन्तान निरोध उपकरण प्रयोग करने से इन्कार कर दिया। जीजाजी नाराज़ हो मेरे कमरे में चले आये।

"और मैंने आपको इस दुर्घटना की बात बतायी थी ?"

"तो यह बात थी ? अर्थात् यह तुम्हारे जीजाजी ही थे ?"

"जी। मैं दो दिन वहाँ रही, परन्तु बाबा की कथा सुनते हुए मुझे अपने पर घृणा उत्पन्न हो गयी और मैं अपनी माँ के घर चली गयी। मेरी शिकायत दीदी ने कर रखी थी। इस कारण मुझे माता-पिता ने डाँट बतायी और घर से निकाल देने की धमकी दी। मैं जीजाजी के बाबा से सम्मति करने गयी तो उन्होंने मुझे पश्चात्ताप करने को कहा और प्रायश्चित्त बताया। वह मैंने पूर्ण किया तो पिताजी ने क्षमा कर दिया। इसके उपरान्त मैंने बी० ए० पास किया और फिर समय पाकर आपसे विवाह हो गया।"

"किस प्रकार पश्चात्ताप किया था और बाबा ने कौन-सा प्रायश्चित्त बताया था ?"

"पश्चात्ताप में मैंने अपने पाप-कर्म को बिना कुछ भी छुपाये अपने बड़ों को बता दिया और पुनः वैसा न करने का आश्वासन दिया। प्रायश्चित्त में बाबा ने कहा कि मेरे इस कर्म से जिसको हानि पहुँची है, उसकी विनीत भाव में सेवा करूँ। मैंने दीदी के अधिकार पर डाका डाला था और उसी की सेवा करने लगी।

"सबसे पहले दीदी ने ही क्षमा किया; तदनन्तर माता-पिता ने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रौर ग्रब तो ग्रापने भी क्षमा कर रखा है ।"

"बाबा की प्रशंसा बहुत करती हो । क्या गुण था उनमें ?"

"उनकी वाणी में रस था, प्रभाव था ग्रौर समाधान करने की युक्ति थी । । वह एक कथा सुनाते थे ग्रौर दीदी ग्रौर मैं उस कथा को लेखनी-बद्ध करती रहती थीं । वह एक बृहद् ग्रन्थ बन गया है ।"

"कहाँ है वह ग्रन्थ ?"

"वह जीजाजी की माताजी के घर पर है। उन्होंने बाबा की स्मृति में रखा हुग्रा है ।

"पिछले वर्ष जब मैं बिलासपुर में गयी थी तो मैंने उनसे वह ग्रन्थ प्रकाशित करवाने के लिये माँगा था, परन्तु उन्होंने कहा था कि ग्रन्थ में बहुत-सी परिवार-सम्बन्धी बातें हैं, इस कारण वह उसको प्रकाशित करवाना नहीं चाहतीं ।"

"परन्तु उसका ठीक प्रकार से सम्पादन किया जाये तो परिवार सम्बन्धी बातें निकाली भी जा सकती हैं ।" कुलवन्तसिंह ने कहा ।

"हाँ । उनको कहूँगी । परन्तु मेरा ग्रौर दीदी का यह कहना है कि ग्रमृतलालजी के विषय में ग्रधिक व्याख्या से पता चल जाये तो हम विश्वास से जान जायेंगी कि वह मेरे जीजाजी हैं ग्रथवा नहीं । यदि यह वही हैं तो उनकी माताजी को लिख देना चाहिये जिससे वह ग्रपना खोया हुग्रा पुत्र पा जायें ।"

"ग्रौर तुम्हारी बहन के खोये हुए पति की भी तो बात है ?"

"दीदी गृहस्थ-जीवन में रस खो चुकी हैं ग्रौर उनका विचार है कि जीजाजी ने नया विवाह कर लिया होगा । इस कारण वह उनके नये जीवन में विघ्न बनना नहीं चाहतीं ।"

कुलवन्तसिंह ग्रपनी पत्नी के कथन पर गम्भीर विचार में मग्न हो गया । कुछ देर तक दोनों ग्रपने-ग्रपने विचारों में निमग्न रहे । कुलवन्तसिंह विचार कर रहा था कि ग्रमृतलाल के पुनः इस परिवार में ग्राने से उसकी पारिवारिक शान्ति में भी विघ्न पड़ सकता है ग्रौर महिमा के जीवन में तो भारी विस्फोट होने की सम्भावना है । इस पर भी वह इस परिणाम पर पहुँचा था कि ग्रनिश्चित स्थिति नहीं रहने देनी चाहिये । इतना विचार, उसने ही मौन भंग किया । उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरिमा से पूछ लिया, "अब क्या विचार कर रही हो ?"

"मैं यह विचार कर रही थी कि यदि यह जीजाजी ही हैं और इन्होंने अभी तक विवाह नहीं किया तो निस्सन्देह दीदी के जीवन का नया अध्याय आरम्भ हो सकेगा।"

"और यदि उसने विवाह कर लिया होगा तो क्या होगा ?"

"तब माताजी का परिवार तो चलेगा ही। परन्तु दीदी के साथ .कसी प्रकार की संधि करनी पड़ेगी। वह दूसरा विवाह नहीं कर सकते।"

: ३ :

अमृतलाल सुरेश्वर पण्डित का लड़का ही था। कुलवन्तसिंह के यह कहने पर कि उसका विवाह बिलासपुर के एक रिटायर्ड तहसीलदार की लड़की से हुआ है, वह सब समझ गया था। उसके सामने द्विविधा उत्पन्न हो गयी थी कि वह अपना पूर्ण परिचय अपने अफ़सर को दे अथवा इसे किसी प्रकार छुपा कर रखे।

रात-भर वह अपने क्वार्टर में लेटा-लेटा इस भाग्य की विडम्बना पर विचार करता रहा। उसे अभी भी अपनी पत्नी से नाराज़गी थी। वह अपने बाबा से भी नाराज़ ही था। वह समझता था कि उसके अपनी पत्नी से मधुर सम्बन्धों में उसने ही विष घोला था।

इतना वह समझ गया था कि यदि स्क्वाड्रन लीडर साहब ने अपनी पत्नी को उसके विषय में कुछ भी बताया तो गरिमा तुरन्त समझ जायेगी और वह अपने पति को और अधिक जानने का आग्रह करेगी।

इस स्थिति में उसने निश्चय किया कि यदि मेजर साहब स्वयं ही बात करेंगे तो वह विचार कर लेगा कि कितना अधिक बताये। वह यह भी समझता था कि गरिमा से अपना सम्बन्ध बताकर वह किसी प्रकार का गरिमा के जीवन में विष नहीं घोलना चाहेगा।

अगले दिन कुलवन्तसिंह अपने स्क्वाड्रन के साथ एक घण्टा-भर की उड़ान का अभ्यास कर जब भूमि पर उतरा तो उसने अमृत को अपने कार्यालय में बुलाकर उसकी कुशलता की प्रशंसा कर दी। अमृत ने मुस्कराते हुए कहा, "श्रीमान् ! मैं तो वायु-सेना में एक ग्राउण्ड

—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्जीनियर के रूप में भरती हुआ था। मैंने बैंगलोर में यही काम सीखा था। परन्तु जबलपुर में मेजर वासवानी को मैं एक दिन जबलपुर से दिल्ली तक हवाई जहाज में लाया था। मार्ग में ही उनसे बातचीत हुई तो उन्होंने यह सुझाव दिया कि मैं 'ऐक्टिव सर्विस' में आ जाऊँ? मैंने बताया कि मेरी 'ट्रेनिंग' उस दिशा में नहीं है। उन्होंने मुझे 'ट्रेनिंग' दिलवाने की सुविधा का वचन दिया। मैंने 'ट्रेनिंग' ली और फिर परीक्षा दी तो पायलट नियुक्त हो गया हूँ। मुझे यह काम करते हुए दो वर्ष हो गये हैं। अब यहाँ बदली हो गयी है।"

"कल मैंने अपनी पत्नी से किसी पण्डित सुरेश्वर के पुत्र अमृतलाल के अपने स्क्वाड्रन में पायलट के रूप में आने की बात कही तो वह कहने लगी कि एक अमृतलाल को वह भी जानती है, परन्तु पता चला था कि उसका तो देहान्त हो चुका है।"

अमृतलाल ने गम्भीर भाव में पूछ लिया, "कौन हैं वह सुरेश्वर पण्डित ?"

"एक हैं जो किसी समय क्रान्तिकारी भी रहे हैं और अब बिलासपुर में एक 'ऑरचर्ड' रखते हैं। अच्छे-खासे धनवान व्यक्ति हैं।

"अमृत उनका इकलौता बेटा था। सुना है कि वह किसी स्त्री के पीछे कश्मीर श्रीनगर में गया था और वहाँ किसी प्रकार के झगड़े में मारा गया था।"

अमृतलाल ने यह कह दिया, "मैं उस अमृत को जानता नहीं।"

परन्तु अमृत के पीत मुख से कुलवन्त समझ गया था कि वह झूठ बोल रहा है। इस पर उसने पूछ लिया, "तुम विवाहित हो ?"

"जी नहीं।"

"विवाह नहीं करोगे ?"

"चित्त नहीं करता। मैं समझता हूँ कि एक हवाई जहाज के पायलट को सेवा-मुक्त होने पर ही विवाह करना चाहिये।"

कुलवन्त ने एक योजना मन में बनायी और कहा, "भाई, कुछ हो। तुम मेरी ससुराल के गांव के तो हो ही। इस नाते साले लगते हो। एक दिन घर पर तुम्हें चाय के लिये निमन्त्रण देता हूँ।"

"आप कहाँ रहते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी बड़ी साली दिल्ली करोलबाग के एक गर्ल्स स्कूल में प्रधानाचार्या है। उनके साथ मिलकर मैंने एक बड़ा-सा मकान ले रखा है। वह नीचे की मंज़िल पर रहती हैं और मैं ऊपर की मंज़िल पर रहता हूँ। मकान उनके स्कूल के समीप ही नाईवाड़ा में है।

"मैं तुम्हें अपने स्कूटर पर ले जाऊँगा और फिर तुम्हें यहाँ छोड़ भी जाऊँगा।"

अमृत इस निमन्त्रण पर चंचलता अनुभव करने लगा। उसने कह दिया, "मुझे आपकी पत्नी से परिचय प्राप्त कर बहुत प्रसन्नता होगी। क्या नाम है उनका ?"

"गरिमा देवी।"

"ठीक है। और उनकी बहन के बाल-बच्चे भी हैं क्या ?"

"नहीं। वह विधवा है। सुना है कि वह अपने पति से लड़ पड़ी थी और उस लड़ाई की अवस्था में ही उसके पति का देहान्त हो गया था।"

"क्या काम करता था वह ? मेरा मतलब है कि आपकी साली का पति ?"

"यह सब घटना मेरे विवाह से पहले की है। मैं पूर्ण वृत्तान्त नहीं जानता। अब वह अपने स्कूल के काम में व्यस्त रहती है और कभी उनके पूर्व-जीवन के विषय में पूछने का अवसर नहीं मिला।"

"तो क्या अब मैं जा सकता हूँ ?" एकाएक अमृत ने बात समाप्त करते हुए कह दिया।

"हाँ। यदि आगामी रविवार चाय पर बुलाऊँ तो ठीक रहेगा क्या ?"

"मैं यहाँ सर्वथा एक नवीन व्यक्ति हूँ। अभी साथियों से भी मित्रता नहीं हुई समझता। परिचय मात्र ही हुआ है। इस कारण मैं तो अभी खाली ही हूँ।"

"तो ठीक है। आज मंगलवार है। इन तीन-चार दिनों में मुझे एक विशेष काम है। रविवार को ठीक रहेगा। मैं तुम्हें लेने के लिये तीन बजे यहाँ पहुँचूँगा और फिर साढ़े-पाँच बजे तक यहाँ छोड़ जाऊँगा।"

"आप कष्ट क्यों करेंगे ? मैं यहाँ सरकारी गाड़ी में जहाँ आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहें, पहुंच जाऊँगा ।"

"अच्छा, शनिवार को मिलकर प्रबन्ध कर दूंगा । सरकारी गाड़ी मिल सकेगी ।"

कुलवन्त ने अमृत को निमन्त्रण देने की सूचना अपनी पत्नी को दे दी । गरिमा ने महिमा से कहा तो उसने कह दिया, "मैं समझती हूँ कि उनकी माताजी को यहाँ बुला लेना चाहिये ।"

"पहले निश्चय कर लें ।"

"नहीं गरिमा ! उनको ही निश्चय करने दो कि वह उसे पुत्र के रूप में स्वीकार करती हैं अथवा नहीं । वैसे मुझे तो विश्वास हो गया है कि यह तुम्हारे जीजाजी ही हैं ।"

"तो क्या लिखूं ?"

"जीजाजी से ही पूछ लो । एक तार भेज दो कि वह यहाँ आ जायें ।"

"तार ?"

"हाँ । वैसे एक पत्र भी लिख देना चाहिये और उसमें उनके पुत्र के जीवित होने का समाचार और उसके रविवार घर पर आकर चाय लेने की बात व्याख्या सहित लिख दो ।"

गरिमा ने अपने पति को कहकर अमृत की माँ को तुरन्त दिल्ली आने के लिये एक तार भेज दिया । साथ ही उसने एक पत्र भी लिखा । इसमें उसने अमृतलाल के विषय में जितना उसने स्वीकार किया था और जितना उसने उसके हाव-भाव से अनुमान किया था, लिख दिया ।

उसने पत्र में यह भी लिखा कि आप आयें तो बाबा से कही कथा का ग्रन्थ भी लेती आयें । गरिमा और महिमा दोनों उस ग्रन्थ की बहुत प्रशंसा करती हैं । मेरी उस ग्रन्थ को पढ़ने की इच्छा हो रही है ।

तार और पत्र दोनों समय पर मिल गये और सुन्दरी देवी शनिवार शाम को ही दिल्ली आ पहुंची । कुलवन्त उसे बस-अड्डे पर लेने के लिये गया था । सुन्दरी ने बस से उतर अपना ट्रंक और बिस्तर निकलवा कर पहला ही प्रश्न पूछा, "तो कुछ और पता चला ?"

"दीदी का विचार है कि निश्चय ही वह आपका पुत्र है । हमने भी उसके विचार को ठीक समझा है । वह कल घर पर चाय के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143 GUR-P
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167932
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

आमन्त्रित है। आपके उसे पहचान लेने के उपरान्त ही शेष बात करूँगा।"

"मालूम होता है कि वह अभी भी नाराज़ है।"

कुलवन्त ने टैक्सी में सामान रखवाया और जब दोनों उसमें बैठ गये तो कुलवन्त ने कहा, "मैंने आपको कुछ लाने के लिये लिखा था।"

"बाबा के कथा वाले ग्रन्थ की बात कह रहे हैं ?"

"हाँ। गरिमा तो उनकी कथा की प्रशंसा करती थकती नहीं।"

"मैं समझती हूँ कि आप पढ़ लीजियेगा। यदि उसका प्रथम खण्ड कल से पहले पढ़ लेंगे तो अमृत के विषय में बहुत कुछ जान जायेंगे।"

"तो उसमें उसकी बात भी लिखी है ?"

"हाँ। महिमा ने बाबा की कथा लिखते हुए परिवार की कहानी भी साथ ही लिख दी थी। यही कारण है कि कथा अति रोचक और शिक्षाप्रद होते हुए भी मैंने प्रकाशित करवाने की स्वीकृति नहीं दी।"

"उसका सम्पादन इस ढंग से किया जा सकता है कि परिवार की कथा बीच में न रहे।"

"मुझे यह सम्भव प्रतीत नहीं हुआ। मैं घर चलकर आपको वह पुस्तक दूंगी। आप पढ़ियेगा। महिमा बेटी ने बहुत परिश्रम कर वह लिखा है। वैसे तो बीच-बीच में गरिमा के भी प्रयास की झलक मिलती है।"

घर पहुँच कर जब महिमा और गरिमा माताजी के चरण-स्पर्श कर चुकीं और सुन्दरी उन्हें पीठ पर हाथ फेर प्यार दे चुकी तो महिमा ने कहा, "माताजी ! आप तो हमको भूल ही गयी थीं।"

"तीन वर्ष से तुम छुट्टियों में बिलासपुर में नहीं आयीं। इससे हम समझते हैं कि तुम हमसे नाराज़ हो। वैसे तुम्हारे साथ हुई दुर्घटना में हम अपने को उत्तरदायी मानते हैं। परन्तु बेटी, मनुष्य के सब काम उसके अपने हाथ में नहीं होते। प्रारब्ध ऐसे खेल खेलाता है कि जिनका हम स्वप्न में भी विचार नहीं कर सकते।"

सुन्दरी को पुराने काल की बातें स्मरण आने लगी थीं और उसकी आँखें डबडबा आयी थीं। कुलवन्त ने बात बदलते हुए गरिमा को कहा, "माताजी, बाबाजी वाला कथा-ग्रन्थ लायी हैं। वह लेकर ऊपर चली आओ। उनका विचार है कि अमृतलालजी से मिलने के पूर्व मैं कथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रथम खण्ड पढ़ लूं।"

सुन्दरी महिमा के पास ही रही। कुलवन्त रात-भर कथा को पढ़ता रहा। प्रथम खण्ड समाप्त करते-करते रात के ढाई बज गये थे। अगले दिन रविवार था और उसे कार्यालय में नहीं जाना था। अतः वह रात को बहुत देर तक न सोने की कमी पूरी करने के लिए दिन के आठ बजे तक सोता रहा। सुन्दरी और महिमा ऊपर की मंजिल पर आयीं और कुलवन्त को अभी भी सोये देख गरिमा से उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछने लगीं तो गरिमा हँस पड़ी। उसने कहा, "मैं बारह बजे तक जागती रही थी और यह बाबा जी वाली पुस्तक रात देर तक पढ़ते रहे थे। ऐसा अनुभव होता है कि बाबा जी का जादू इनके मस्तिष्क पर भी सवार हो गया है।"

"बेटी गरिमा! इस समय इनको जगा देना चाहिये। इतनी देर तक सोने वालों के घर से लक्ष्मी रुष्ट होकर चल देती है।"

बच्चे जाग रहे थे। सुन्दरी गरिमा की बच्ची को गोद में ले उससे खेल रही थी। गरिमा ने बलवन्त को कहा, "देखो! भीतर चले जाओ। पापा को जगा कर कहो कि बड़ी माँ कह रही हैं कि चाय का समय हो गया है।"

बलवन्त भीतर गया और पिता के पलंग पर चढ़ पिता की गालों पर ऐसे प्यार देता हुआ जैसे माँ उसको जगाने के लिये दिया करती थी, कहने लगा, "पापा! जागो न। बड़ी माँ आयी हैं।"

बहुत यत्न करने पर ही बलवन्त पिता को जगा सका। जब कुलवन्त को पता चला कि महिमा की सास बाहर आयी है तो लपक कर पलंग से उठा और बाथ-रूम में चला गया।

: ४ :

कुलवन्त के तैयार होने तक तीनों स्त्रियाँ अतीत काल की बातें स्मरण करती रहीं। महिमा बता रही थी, "जिस दिन माता जी के पुत्र के निधन का समाचार पिताजी लाये थे, उस दिन बाबा के मुख से एकाएक निकल गया, कि यह लड़का मरते समय भी छलना कर रहा प्रतीत होता है। इस पर पिताजी ने अपनी जांच का पूर्ण विवरण बता दिया। जांच का वृत्तान्त सुन उन्होंने पूछा था, 'कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोखा तो नहीं खा गये ?'

"पिताजी उसकी पाकेट बुक और वस्त्र देख आये थे। उनको देख कर यही समझ में आया था कि वह अब इस संसार में नहीं हैं। तदनन्तर बाबाजी का भी निधन हो गया।"

गरिमा ने कहा, "बलवन्त के पिता के वृत्तान्त से तो यह पायलट आपका पुत्र ही समझ में आया है और मैं समझती हूँ कि यदि आपने तनिक सावधानी का प्रयोग किया तो वह आपके घर में दीपक का काम करेगा।"

"यह सावधानी तो महिमा के अधीन ही है।" सुन्दरी का कहना था।

महिमा अपने मन में विचार कर रही थी कि यह गृहस्थ का बन्धन पुनः चला आ रहा है। इसमें फँसकर उसका कल्याण होगा अथवा अकल्याण ? उसका मन कहता था कि यह मुसीबत आने वाली है। इस समय वह ग्यारह सौ रुपया मासिक वेतन पाती थी और सब प्रकार की कटौतियाँ काट कर भी वह एक सहस्र रुपया घर ला रही थी। मकान के अपने हिस्से का किराया वह एक सौ पचासी रुपया देकर बहुत मज़े में निर्वाह कर रही थी। उसे अब किसी प्रकार का अभाव दिखायी नहीं देता था।

पति के पुनः आने की सम्भावना पर वह किसी प्रकार का अज्ञात भय अनुभव करने लगी थी। वह विचार करती थी कि क्या अभाव है ? उसे समझ नहीं आ रहा था।

उस समय उसके मन में वासनायें नहीं थीं। इनकी पूर्ति के लिये वह पति की इच्छा नहीं कर रही थी। तो फिर क्या है ?

जब सुन्दरी ने यह कहा कि उसके घर में प्रकाश करना महिमा के अधीन है तो महिमा ने कहा, "पर माताजी ! आपके सुपुत्र एक नया विवाह भी तो कर सकते हैं।"

"यह पहली पत्नी के जीवन में कैसे कर सकेगा ?"

"वह अपनी पहली पत्नी की मृत्यु घोषित कर सकता है। मैं तो यहाँ एक विधवा घोषित हूँ ही और वह अपने सरकारी कागज़ात में अविवाहित घोषित कर चुका है। मैं समझती हूँ कि 'मोनोगेमी' का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानून उसके नवीन विवाह में बाधक नहीं होगा।"

"अर्थात् अब अमृत की भाँति तुम भी छलना खेलने का विचार कर रही हो?"

महिमा इस लांछन पर मौन हो गयी। इस समय कुलवन्त स्नान कर वस्त्र पहन बाहर आ गया। महिमा ने कहा, "चलिये, जीजाजी! अल्पाहार नीचे प्रतीक्षा कर रहा है।"

"तो गरिमा ने छुट्टी कर दी है?"

"माताजी ने अपना घर नीचे बना लिया है। महिमा उनकी पतोहू है। भला मैं उनके इस दावे को गलत करने वाली कौन हूँ?"

कुलवन्त मुस्कराया और नीचे चलने को तैयार हो गया। सब उठे और नीचे की मंजिल पर पहुंच खाने के कमरे में जा बैठे। कुलवन्त ने बैठते ही सायंकाल का कार्यक्रम बता दिया, "मैंने अमृतलालजी को ठीक चार बजे यहाँ पहुंचने के लिये कहा है। मैं समझता हूँ कि वह समय से पूर्व ही यहाँ पहुँच जायेगा। कल जब मैं अपने निमन्त्रण को दोहरा रहा था तो वह भी आने के लिये उत्सुक प्रतीत होता था। मेरे इस घर के विवरण तथा गरिमा की विधवा बहन के विषय में बताने पर सब समझ गया होगा। मैंने अभी माताजी के यहाँ होने की बात उसे नहीं बतायी। इस पर भी वह समझ रहा होगा कि दीदी से सुलह का अभिप्राय माता-पिता से भी सुलह ही है।"

सुखिया ने अल्पाहार का सामान रख दिया। पूरी, हलुवा, साग, चटनी, अचार था। गरिमा की लड़की का अभी नामकरण संस्कार नहीं हुआ था। माता-पिता उसे नीटू के नाम से सम्बोधन किया करते थे। वह मेज़ पर बैठी थी और गरिमा उसे दूध पिला रही थी। बलवन्त तो अब कुर्सी पर बैठ खाना सीख गया था।

चुप्पी कुलवन्त को अखर रही थी। इस कारण उसने वार्त्तालाप का विषय बदल दिया। उसने कहा, "सत्य ही बाबा की कहानी अति रोचक है। मैं उसे पढ़ने लगा तो छोड़ नहीं सका। प्रथम खण्ड समाप्त करते-करते रात के ढाई बज गये थे। ऐसा प्रतीत होता है कि कथा को उपन्यास का रूप दीदी ने दिया है।"

महिमा ने कहा, "इसकी औपन्यासिकता का श्रेय गरिमा को है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाँ, उसमें वर्णन-शैली मेरी है। कथा का भाव बाबा द्वारा बताया गया है। उदाहरण के रूप में बाबा ने बताया था कि अमृत-मन्थन की कथा एक अलंकार मात्र ही है। वैसे व्यक्तियों में जीवात्मा अमृत है और इन अमर जीवात्माओं के एक समूह को ही जाति कहते हैं। जाति का जीवन व्यक्तियों पर आधारित है। स्थायी विचारधारा, उस विचारधारा की आत्मा को जीवित रखते हुए बदलते ज़माने में उसे अनुकूल स्वरूप देते रहना और फिर जनसंख्या को एक उचित संख्या से कम नहीं होने देना, यही अमृत-मन्थन है। जब जाति ऐसी हो जाती है तो फिर वह अमर हो जाती है। देवता एक भयंकर युद्ध में न केवल संख्या में कम हो गये थे, वरन् उनके प्रायः युवा पुरुष युद्ध में वीरगति प्राप्त कर गये थे। देवताओं की युवा स्त्रियों और कन्याओं का विजातीय लोग अपहरण कर रहे थे। साथ ही जाति में कुछ ऐसे रूढ़िवादी उत्पन्न हो गये थे जो जातीय ज्ञान-विज्ञान में अपनी बपौती मान, उसे किसी दूसरे को देने को तत्पर नहीं होते थे। परिणामस्वरूप ज्ञान-विज्ञान से उन्नति अवरुद्ध हो गयी थी। इन सबके लिये द्वार खोलने को ही अमृत-मन्थन का नाम दिया गया है।[1]

"इस अमृत-मन्थन से एक नवीन जाति का प्रादुर्भाव हुआ। यह नाग जाति थी। इसको मानव-जाति का नाम दिया गया। यों तो देवता और दैत्य भी मनुष्य ही थे, परन्तु यह नई जाति ऐसे ही मानव कहलायी जैसे कि हिन्दू-समाज के अछूत हरिजन कहलाये।

"इसमें और तत्कालीन मानव-समाज के निर्माण में अन्तर था। तब देव-कन्याओं का निम्न जाति के पुरुषों से विवाह कर उनकी सन्तान को देवताओं का आचार-विचार वाला बनाना था। आज हरि-जनों की सन्तान ही हरिजन हुई है। उनमें नया रक्त संचार नहीं हो सका। अतः नाम से तो जाति नवीन बन रही है, परन्तु इनमें श्रेष्ठ गुण उत्पन्न नहीं हो रहे।

"अमृत मन्थन में सन्तान उपलब्ध की गयी और उसका वातावरण बदल दिया गया। इसे कई सौ वर्ष लगे।

---

१. देखें, श्री गुरुदत्त का उपन्यास 'अमृत मंथन'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर भी यह नयी जाति देवता के नाम से प्रसिद्ध नहीं हो सकी। प्राय: मानव अपने को देवताओं से श्रेष्ठ मानते थे। देवताओं में रूढ़िवादिता निःशेष नहीं हुई और कालान्तर में देवता समाप्त हो गये।"

"यह सब अति मनमोहक है।" कुलवन्त ने कह दिया, "मैं इसका अगला खण्ड भी पढ़ने के लिये उत्सुक हूँ। परन्तु मैं नित्य रात को इतनी देर गयो तक जाग नहीं सकता। अब थोड़ा-थोड़ा नित्य पढ़ा करूँगा।"

इस प्रकार कुलवन्त और महिमा की यात्रा की कथा पर विवेचना होते-होते अल्पाहार समाप्त हो गया।

कुलवन्त ने बता दिया, "मैं और गरिमा मध्याह्न का भोजन तो करनल बोपत के घर लेंगे। वहाँ से मैं तीन बजे से पूर्व घर लौट आऊँगा और पूर्व निश्चयानुसार अमृत ठीक चार बजे यहाँ आयेगा।"

तीन बजे कुलवन्त, गरिमा और बच्चे आये तो चाय की तैयारी हो चुकी थी। महिमा ने सुखिया को कहकर चाय का प्रबन्ध गरिमा के फ्लैट में कराया था। उसका स्पष्ट कहना था कि वह इस चाय-पार्टी में सम्मिलित नहीं हो रही। कुलवन्त के पूछने पर उसने कहा, "पहले माताजी को अपने पुत्र से समझ-समझा लेना चाहिये। तब मैं विचार करूँगी कि मैं माताजी की लड़की बनी रहूँ अथवा पुन: पतोहू बन जाऊँ?"

सुन्दरी का भी कहना था, "मैं समझती हूँ कि महिमा का विचार ठीक है। महिमा ने अमृत को छोड़ा नहीं था। यह तो अमृत था जो उसे छोड़ किसी अन्य लड़की के पीछे भाग खड़ा हुआ था।

"जहाँ तक मैं जानती हूँ, महिमा ने पत्नी का कर्तव्य पालन करने से भी इन्कार नहीं किया था, परन्तु वह तो व्यभिचार के पथ पर चल रहा था। महिमा ने उसके व्यभिचार का शिकार होने से इन्कार ही किया था। इस कारण मैं समझती हूँ कि यदि यह मेरा अमृत ही है तो उसे ही अपने विकृत व्यवहार की सफाई और सुधार का यत्न करना चाहिये।"

"मैं समझता हूँ कि कुछ यत्न दीदी जी की ओर से भी किया जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अच्छा था। दोनों में वैमनस्य तो है और इसको मिटाना दोनों के हित में है। मैं समझता हूँ कि दीदी का हित अधिक होने वाला है।"

महिमा चुप बैठी थी। इस पर भी उसके मुख की दृढ़ मुद्रा देख यह अनुमान लगाया जा सकता था कि वह अपने संकल्प पर दृढ़ है। सुन्दरी ने कहा, "नहीं बेटा कुलवन्त! यह पुरुष का ही अधिकार है कि वह लड़की का हाथ पकड़े। लड़कियाँ अपना हाथ निकाल कर पुरुषों को पकड़ने का निमन्त्रण नहीं देतीं।"

"परन्तु माताजी! आजकल तो यही कुछ हो रहा है।"

"ठीक है। मैं आज के इस प्रवहन को पसन्द नहीं करती। क्यों महिमा, तुम क्या कहती हो?"

"माताजी, मैंने अपना मत बता दिया है। मेरी कामना है कि माता को पुत्र मिल जाये और फिर वह माताजी के घर को पुत्र-पौत्रों से भरपूर कर दे। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं अभी तक अनिश्चित मन हूँ कि माताजी के घर में यह सौभाग्य लाने में मैं क्या और कितना सहयोग दूँ।"

सुन्दरी ने कह दिया, "चलो, गरिमा! ऊपर चलकर देखें कि सुखिया ने क्या प्रबन्ध किया है।"

: ५ :

अमृत आया। उसकी सैनिक जीप की आवाज़ नीचे सड़क पर सुनकर कुलवन्त मकान के नीचे उतर आया और अमृत को ऊपर की मंजिल पर ले गया। अमृत के मन में तो किसी प्रकार का संशय था ही नहीं। वह जानता था कि गरिमा और महिमा से मिलने आया है। परन्तु कुलवन्त तो उसे अभी भी कह रहा था कि वह उसे अपने ससुराल के गाँव का एक रहने वाला समझ चाय पर बुला रहा है। उसने सीढ़ियाँ चढ़ते हुए कहा, "दोपहर भोजन के लिये हम कैप्टन वोपत के यहाँ आमन्त्रित थे। जब मैं तीन बजे वहाँ से आने लगा तो कैप्टन साहब ने कहा कि सायंकाल चाय लेकर जाना। मैंने बताया कि मैंने आपको घर पर चाय के लिये बुलाया हुआ है। इस पर उसने पूछ लिया, 'आपको ही क्यों?' इस पर मैंने बताया कि, 'आप मेरी ससुराल के नगर के रहने वाले हैं।'"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत समझा कि उसका स्क्वाड्रन लीडर नहीं जानता कि गरिमा तथा उसकी बहन से क्या सम्बन्ध है उसका । अतः वह गरिमा आदि से पहचाने जाने पर उनके चकित रहने का मज़ा लेने की आशा कर रहा था ।

इस समय तक वे ऊपर चढ़ ड्रायंग-रूम में पहुँचे तो अमृत माँ को वहाँ खड़ा देख विस्मित रह गया ।

सुन्दरी ने पहचाना और उसे बैठक के द्वार पर खड़े देख कह दिया, "अमृत ! वहाँ खड़े क्यों रह गये हो ? आओ, इधर आओ ।"

अमृत को चेतना हुई तो वह आगे बढ़ माँ के चरण-स्पर्श करने के लिये झुका । माँ ने उसे उठा गले से लगा लिया । पीठ पर हाथ फेर प्यार दिया और फिर उसे सोफा पर बैठा, स्वयं उसके पास बैठ पूछने लगी, "कहाँ छुपे रहे हो तुम ?"

माँ की आँखें आँसुओं से भर गयी थीं । अमृत माँ को वहाँ देखने की आशा नहीं करता था । इस कारण वह इतना घबरा गया था कि वह माँ के प्रश्न को सुन नहीं सका । वह भूमि की ओर देखता हुआ मौन बैठा रहा ।

कुलवन्त ने दोनों को इस परेशानी से निकालने के लिये पूछ लिया, "अमृतजी ! यह माताजी आपकी क्या लगती हैं ?"

"यह यहाँ कैसे हैं ?" अमृत ने अपने मन पर नियन्त्रण पाते हुए पूछ लिया ।

"यह यहाँ अपनी पतोहू से मिलने आयी हुई हैं । मैंने बताया था न कि मेरी पत्नी की एक विधवा बहन है जो नीचे की मंज़िल पर रहती हैं । वह इन माताजी की पतोहू हैं और उनसे ही मिलने आयी हुई हैं ।"

"ओह ! और वह कहाँ हैं ?"

"नीचे की मंज़िल पर हैं ।"

"तो अब माताजी ही बतायेंगी कि मेरा इनसे क्या सम्बन्ध है ।"

"कुछ-कुछ तो मैं समझ गया हूँ । क्यों, माताजी ! यह आपके पुत्र हैं क्या ?"

सुन्दरी ने आँखें पोंछते हुए और मुस्कराते हुए कहा, "बताओ न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत ! मुझे पाँय लागू क्यों किया है ?"

"मिस्टर कुलवन्त !" अमृत ने अब साहस पकड़ कहा, "मैं तो पहले दिन ही समझ गया था कि आपकी पत्नी मेरी साली है। मैं यह भी समझ गया था कि आपके मकान की नीचे वाली मंजिल पर रहने वाली मेरी विवाहिता है। मैंने आपको कार्यालय में बताया नहीं। यह इसलिये कि जब आपने चाय का निमन्त्रण दिया तो मैं सब बात यहाँ आकर करना चाहता था। मेरा विचार था कि ये दोनों बहनें मिलेंगी, परन्तु यहाँ मिल गयी हैं माताजी।"

"हाँ। यह घटनावश ही है कि यह गरिमा की बहन महिमा से मिलने आयी हुई हैं और इस समय गरिमा से मिलने यहाँ बैठी थीं।"

"परन्तु महिमा कहाँ है ? मैं उससे मिलकर अपना भावी कार्यक्रम बनाना चाहता हूँ।"

"माताजी ! आप अपनी पतोहू को बता कर ले आइये। मैं समझता हूँ कि यह मिलन अत्यन्त शुभ होना चाहिये।"

सुन्दरी कुलवन्त की बातों को समझ रही थी और उसका अनुकरण करने के लिये उसने भी योजना बना कह दिया, "आप चाय लगवाइये। मैं अभी उसे बता कर ऊपर ले आती हूँ।"

सुन्दरी नीचे उतर गयी। कुलवन्त ने सुखिया को कह दिया, "चाय लगा दो।"

वहीं बैठकघर में ही तिपाइयाँ रख दी गयीं और सुखिया उन पर खाने के लिये मिठाई इत्यादि लगाने लगी।

पाँच मिनट में सुन्दरी अकेली ही ऊपर आयी। उसके मुख पर शोक-मुद्रा स्पष्ट थी। गरिमा अमृत की माँ की बात समझ गयी। इस पर भी वह भी अन्य दोनों के साथ सुन्दरी के मुख पर प्रश्न-भरी दृष्टि में देखने लगी।

सुन्दरी ने गरिमा के पास बैठते हुए कहा, "महिमा कहती है कि पहले ही दिन जब जीजाजी ने इनकी बात बतायी थी तो वह समझ गयी थी कि यह मेरे पुत्र ही हैं। अतः वह पिछले पाँच दिन से अपनी समस्या पर विचार करती रही है। अभी तक उसका यही निश्चय है कि ऐसे व्यक्ति से सम्बन्ध बनाने में क्या लाभ होगा जो अपनी माँ को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी सात वर्ष तक धोखे में रख सकता है ? अतः वह ऊपर नहीं आयी।"

इतनी कठोर, परन्तु युक्तियुक्त बात सुन तो सब चुप कर गये। कुलवन्त एक सैनिक की भाँति स्थिर बुद्धि रखता था। उसने कह दिया, "ठीक है। वह ऊपर नहीं आती तो हम सब नीचे चल सकते हैं। मैं देखूंगा कि वह किस प्रकार हमें अपने मकान में नहीं आने देती ?"

"इस प्रकार नहीं बेटा !" सुन्दरी ने गम्भीर भाव बनाये हुए कहा, "पारिवारिक मामलों में बलपूर्वक कोई भी बात करनी ठीक नहीं। मुझे स्मरण है कि अमृत ने उसे पत्नी के रूप में चुन कर उसे राज़ी कर लिया था। अब भी वह पुनः वैसा ही कर सकता है। मेरा अभिप्राय है कि उसे समझा कर अपने घर ला सकता है।"

"पर माताजी ! मैंने तो तब भी उसे समझाने-बुझाने की बात नहीं की थी। मैंने तब भी युक्ति से काम लिया था और अब भी युक्ति से ही काम ले सकता हूँ। पिछले पाँच दिन तक महिमा से मिलकर पुनः अपने घर बनाने के विषय पर मैंने विचार किया है और मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि एक सैनिक, विशेष रूप में वायु-सेना में काम करने वाले सैनिक को, अपने मरने पर लम्बा-चौड़ा परिवार छोड़कर नहीं मरना चाहिये।"

"क्यों ?" कुलवन्त ने मिठाई खाते हुए पूछ लिया।

"तो आप नहीं जानते ? प्रत्येक क्षण जब हम वायु में उड़ रहे होते हैं तो हम मौत से तकरार कर रहे होते हैं। ऐसी अवस्था में बाल-बच्चों के झगड़े में पड़ना नहीं चाहता।"

'मेरी सम्मति है कि चाय पी जाये, इससे मष्तिष्क काम करने लगेगा। इस समय तो यह मौत के भय से त्रसित हो रहा मालूम होता है।"

गरिमा ने अपने पति और जीजाजी के लिये चाय बनानी आरम्भ कर दी। सुन्दरी ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "कुलवन्तजी ! आपके स्क्वाड्रन में कुल कितने सैनिक हैं और उनमें कितने अविवाहित हैं ?"

"माताजी ! पहले तो मैं ही विवाहित हूँ। मेरी माताजी जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरिमा को देखकर आयी थीं और इसकी प्रशंसा करने लगीं तो मैंने वही बात कही थी जो अमृतजी इस समय कह रहे हैं। इस पर मेरी माताजी ने कहा था कि यदि मेरा काम इतना भय-युक्त है तो विवाह शीघ्र ही करो और एक-दो सन्तान पैदा कर लो जिससे परिवार का सूत्र चलता रह सके।

"वह बोली, 'युद्ध करते हुए मर जाने से जीव सीधा स्वर्ग को जाता है। परन्तु अपने परिवार को शून्य कर जायेगा तो पितृ-ऋण उतारे बिना संसार छोड़ने से स्वर्ग का द्वार ही बन्द हो जायेगा।'

"मुझे माताजी की बात समझ आ गयी। मेरा अब ऐसा विचार है कि कोई शूद्र अथवा बनिया भले ही निस्सन्तान मर जाये, परन्तु क्षत्रिय की सन्तान का सूत्र तो चलना ही चाहिये। यदि एक वीर क्षत्रिय का परिवार शून्य होता है तो देश को भारी हानि होती है।"

"परन्तु मेजर साहब! वैश्य और शूद्रों के बच्चे भी तो मेजर बन सकते हैं।" अमृत ने कह दिया।

"तो उनका भी निस्सन्तान मरना देश के लिये शुभ नहीं। वीरों की सन्तान देश की अमूल्य निधि है।"

अमृत ने कह दिया, "परन्तु यह उपदेश तो गरिमा की बहन को देना चाहिये। मुझसे सुलह करने से इनकार तो वह कर रही है।"

इस पर सुन्दरी ने कह दिया, "उसने इन्कार नहीं किया। उसने तो केवल यह कहा है कि माँ से भी छलना करने वाले व्यक्ति का विश्वास कौन करेगा? इसका अर्थ मैं यह समझी हूँ कि तुमको उसे समझाना चाहिये कि तुमने धोखा नहीं दिया।"

कुलवन्तसिंह हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "परन्तु यदि सत्य ही अमृतजी ने धोखा दिया हो तो क्या किया जाये?"

"क्यों अमृत! तुमने माँ को धोखा दिया था क्या? और दिया था तो किस कारण दिया था?" सुन्दरी ने कहा।

"मैं विचार कर रहा हूँ कि माँ की पीठ के पीछे छुप कर उसके शयनागार में पहुँच जाऊँ।"

"बहुत दुष्ट हो अमृत! तुमने अपने जीवन से कुछ नहीं सीखा। अभी भी तुम्हारा धोखा-धड़ी का स्वभाव बदला नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलवन्त हँस पड़ा। हँसते हुए कहने लगा, "माताजी ! यह इसका दोष नहीं। इसे अंग्रेज़ी में 'ऐनीलिज़्म' (पशुपन) कहते हैं और यह प्रत्येक मनुष्य में न्यूनाधिक मात्रा में उपस्थित होता है। अमृत जी में कुछ अधिक प्रतीत हुआ है।"

"तो," सुन्दरी ने डाँट के भाव में कहा, "मैं इसके पशुपन में सहायक हो जाऊँ ? यह अभिप्राय है आपका ?"

"नहीं; मेरे कथन का अर्थ यह है कि इस पशुपन का हम सब यहाँ विरोध करेंगे।"

सुन्दरी के माथे से त्योरी उतर गयी। उसने मुस्कराते हुए कहा, "देखो अमृत ! मेरा कहा मानो। अभी चाय समाप्त कर मेरे साथ नीचे चलो। मैं तुम्हारी माँ होते हुए तुम्हारी सहायता करना अपना कर्तव्य समझती हूँ, परन्तु तुम्हारा प्रयत्न ठीक दिशा में और ठीक ढंग से होना चाहिये।

"मेरा विचार है कि तुमको उससे अपने पूर्व के व्यवहार पर क्षमा माँग लेनी चाहिये और भविष्य में वैसी बात न करने का वचन देना चाहिये।

"मैं तुम्हारी सिफारिश कर दूँगी। परन्तु मेरे सिफारिश करने से पूर्व तुमको यह भी तो बताना होगा कि तुमने पिछले सात वर्ष से अपना समाचार क्यों नहीं भेजा ? इन सात वर्षों में अपने एक ही पुत्र के मारे जाने के समाचार से जो दुःख और क्लेश मुझे और तुम्हारे पिता को हुआ है, उसका भी तो कुछ प्रतिकार होना चाहिये। बिना उसका प्रतिकार किये मैं सिफारिश नहीं लगाऊँगी।"

इस प्रकार की बौद्धिक बातें होते हुए अमृत आश्वस्त हो स्वस्थ चित्त से चाय पीने लगा। उसने अब मुस्कराते हुए पूछा, "पर माँ ! तुम पुत्र के नाते सिफारिश क्यों नहीं लगाओगी ?"

"इसलिये कि तुमने अभी तक पितृ-ऋण नहीं उतारा। अब तक तुमको मेरे घर में चार-पाँच पोते-पोतियाँ उत्पन्न कर देने चाहिये थे। तुमने यह कर्तव्य अभी तक पालन नहीं किया। अभी तक तुम हमसे भी छुपे रहे थे। भला क्यों ?"

एकाएक बलवन्त ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि शेष चाय हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे चलकर महिमा जी के घर में लेनी चाहिये। आइये, माताजी ! चलिये, मैं सुखिया को कह देता हूँ कि सब सामान उठाकर नीचे चली आये।"

अमृत ने अभी आधा प्याला चाय पी थी। आधा प्याला चाय का उसने हाथ में पकड़ा हुआ था। उसने प्याला सासर में रख दिया और उठ खड़ा हुआ। दोनों सैनिक अधिकारी सेना में रहने के कारण तुरन्त निर्णय करने की प्रवृत्ति रखते थे। वे दोनों उठे तो गरिमा ने भी हाथ का प्याला मेज़ पर रख दिया और सुन्दरी का मुख देखने लगी। सुन्दरी इतनी जल्दी निश्चय नहीं कर सकी थी। वह बैठी-बैठी ही तीनों का मुख देखती रही। गरिमा ने कहा, "मौसी ! आइये, नीचे चलकर दोनों महिमा और उसके पति को आमने-सामने बैठाकर बात कर लें तो ठीक रहेगा।"

सुन्दरी अनिच्छा से उठी और सबके पीछे-पीछे नीचे उतर आयी। कुलवन्त सबके आगे था।

नीचे पहुँच वे स्तब्ध खड़े रह गये। बलवन्त बैठक के द्वार में खड़ा था और बाहर सड़क की ओर देख रहा था।

"यहाँ खड़े क्या कर रहे हो ?" पिता ने पुत्र से पूछा।

"मौसी इधर गयी हैं।"

"क्यों ?"

"कहती थीं कि ऊपर माँ को जाकर कह दूँ कि नीटू अकेली सो रही है।"

"तो अब वह भाग गयी है ?" सुन्दरी ने सब बात सुन और समझ कर कहा।

"यह ठीक नहीं हुआ।" कुलवन्त ने गम्भीर हो कहा।

"मैं तो क्षमा माँगने आया था, परन्तु उसने अवसर नहीं दिया।" अमृतलाल ने कहा।

गरिमा ने कहा, "उसे कैसे ढूंढ़ा जाये ? मैं समझती हूँ कि शीघ्र करना चाहिये। वह आत्म-हत्या भी तो कर सकती है।"

कुलवन्त और अमृत द्वार के बाहर सड़क पर खड़ी जीप में सवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो पुलिस चौकी की ओर चल दिये ।

सायं आठ बजे के लगभग कुलवन्त लौटा । अमृत नीचे से ही छावनी में अपने क्वार्टर को चला गया । गरिमा और सुन्दरी नीचे की मंज़िल पर बैठकघर में बैठी कुलवन्त के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थीं । कुलवन्त आया तो सुन्दरी ने पूछा, "कहाँ गये थे मेजर साहब ?"

"माताजी ? पहले पुलिस थाने में रिपोर्ट लिखाने गये थे । हमें भय था कि वह कहीं आत्म-हत्या न कर ले । हम यमुना पार तथा सड़कों पर इधर-उधर घूमते रहे हैं । अमृत अपने क्वार्टर को चला गया है । उसके मन पर बहुत उल्टी प्रतिक्रिया हुई है ।"

"मैं समझती हूँ कि महिमा आत्म-हत्या नहीं करेगी । वह अति बुद्धिशील लड़की है और बुद्धिशील व्यक्ति आत्म-हत्या नहीं करते । वह सड़कों पर भी घूम नहीं सकती । अवश्य किसी अपनी सहेली के घर जाकर छुपी बैठी है ।" गरिमा ने अपना विचार बता दिया ।

"क्यों, गरिमा ! कौन-सी सहेलियाँ हैं उसकी ?"

"एक-दो को तो मैं जानती हूँ । परन्तु मैं समझती हूँ कि उसका पीछा करने की आवश्यकता नहीं । यदि वह किसी सहेली के घर गयी है तो कल स्कूल में अवश्य जायेगी । वहाँ उससे जाकर मिला जा सकता है ।"

सुन्दरी ने कहा, "आप दोनों आराम करिये और मेजर साहब को अमृत की चिन्ता करनी चाहिये ।"

"मेरा विचार है कि मैं कल उससे मिल लूँ । तब आपकी योजना पर विचार कर लेंगे ।"

: ६ :

रात सुन्दरी महिमा के घर में ही रही । कुलवन्त जब दिन-भर के कामों से अवकाश पा गया तो वह बाबा की कथा वाली पुस्तक निकाल पढ़ने लगा ।

उसने पुस्तक का पहला खण्ड पढ़ा था । महिमा ने उस खण्ड का नाम 'अमृत-मन्थन' रखा था । अब वह दूसरा खण्ड निकाल कर पढ़ने लगा । इसमें लिखा था—

राक्षस भागे तो पाताल देश में जा पहुँचे । पाताल देश जन-शून्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वहाँ जंगल-ही-जंगल था। पशु-पक्षी भी बहुत कम थे। वनस्पतियाँ सर्वथा नवीन प्रकार की थीं और राक्षस नहीं जानते थे कि क्या खाया जाये और क्या न खाया जाये ?

वहाँ जाकर उनको पुनः वही कुछ करना पड़ा जो उनके पूर्वजों को लंका में पहुँच करना पड़ा था।

भोजन सबसे पहली समस्या थी। निवास-गृह दूसरी और फिर परिवार तीसरी। माल्यवान, सुमाली और माली में से सुमाली ही जीवित बचा था। उसका परिवार भी सुदर्शन-चक्र की अग्नि में भस्म हो गया था। कुछ राक्षस और गन्धर्व अपनी पत्नियों को बचाकर ले जा सके थे। सुमाली ने अपने लिये कुटिया बनाई और एक गन्धर्व कन्या से विवाह कर नये परिवार की सृष्टि आरम्भ कर दी। कालान्तर में उसके एक लड़का और एक लड़की हुई तो वह उनके पालन-पोषण का प्रबन्ध करने लगा।

सुमाली अपने पिता का विमान बचाकर ला सका था और उसकी सहायता से वह इस नये देश का सर्वेक्षण कर अपने सजातियों को बसाने में सफल हुआ था। उसने यह पता कर लिया था कि कहाँ-कहाँ फलों वाले वृक्ष हैं। कहाँ भूमि कृषि योग्य है और कहाँ पीने योग्य जल मिल सकता है।

लंका से निकले दस वर्ष हो चुके थे और वह तथा उसके साथी वहाँ अकिंचनों का जीवन व्यतीत कर रहे थे।

इस समय कुछ राक्षस अपनी अवस्था से दुःखी लंका में गये और वहाँ एक नया राज्य स्थापित हुआ देख पुनः वहाँ रहने की योजना बनाने लगे। उन्होंने वहाँ के राजा के पास पहुँच अपनी खेती-बाड़ी के लिये भूमि माँगी। राजा था कुबेर। यह महर्षि विश्रवा का पुत्र था और शास्त्रों का गूढ़ ज्ञाता था। अर्थशास्त्र उसके अध्ययन का विशेष विषय था।

कुबेर की योग्यता देख ब्रह्मा ने असुरों के चले जाने पर खाली पड़ी लंका में उसे लोकपाल बनाकर भेज दिया था। लंका-जैसे उष्ण देश में देवताओं को जाकर बसने में किसी प्रकार का प्रलोभन नहीं था। भारत खण्ड के लोग भी अपने-अपने देश में अति प्रसन्न और सन्तुष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने के कारण लंका में जाकर बसने के लिये तैयार नहीं थे। कुबेर के बहुत यत्न करने पर कुछ लोग आये, परन्तु वहाँ वह चहल-पहल नहीं बन सकी जो राक्षस-राज माल्यवान के काल में थी।

जब पाताल देश के लोग वहाँ आकर रहने की स्वीकृति माँगने लगे तो कुबेर ने पूछा, "कहाँ के रहने वाले हो?"

"पाताल देश के।"

"परन्तु तुम भाषा तो यहाँ की बोलते हो?"

"हाँ, महाराज! हमारे पूर्वज यहाँ इसी देश में रहते थे। हमारे पूर्वजों पर विष्णु ने आक्रमण कर दिया तो हमें मार-मार यहाँ से भगा दिया। हम पाताल देश में गये थे, परन्तु वहाँ जीवन बहुत दुस्तर है; इस कारण हम पुनः यहाँ लौट आना चाहते हैं।"

कुबेर ने कहा कि उनको यहाँ के धर्म का पालन करना होगा। राक्षस मान गये और कुबेर ने उन्हें वहाँ रहने की अनुमति दे दी। वे लोग वहाँ रहने लगे। उनको समतल खेत, बने पक्के मकान और अन्य सब सभ्य देश की सुविधायें प्राप्त हो गयीं। इन पाताल से आये राक्षसों में से कुछ लोग अपने सम्बन्धियों को भी वहाँ ले आने के लिये पाताल गये और वहाँ से लंका लौटने वालों का ताँता लग गया।

सुमाली को राक्षसों को पुनः लंका लौटते देख विचार आया कि वह भी क्यों न लौट जायें, परन्तु वह उस देश में जहाँ राज्य करता था, वहाँ सामान्य प्रजा बन कर रहने का विचार नहीं कर सका।

उसके मन में एक योजना बन गयी और वह अपनी लड़की को विमान में बैठा लंका जा पहुंचा। उसका विचार था कि वह अपनी लड़की का लंका के अधिपति कुबेर से विवाह कर देगा तो वह पूर्ण रूप में राजा नहीं तो लगभग राजा बन जायेगा।

अतः लंका में एक स्थान पर ठहर कर वह राजप्रासाद में राजा को देखने गया। वहाँ जाकर वह समझ गया कि उसकी योजना सफल नहीं हो सकेगी।

जब सुमाली राजप्रासाद के बाहर पहुंचा तो वहाँ एक महल से भी बड़ा आकाशाचारी विमान खड़ा था। वह उसे देख चकित रह गया। वह अभी उसे देख ही रहा था कि राजा अपनी रानी के साथ राज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रासाद से निकला।

कुबेर अति सुन्दर और ओजस्वी युवक था और उसकी पत्नी एक देवकन्या थी, जो उससे भी अधिक सुन्दर थी।

इनको देख सुमाली समझ गया कि उसकी लड़की का विवाह यहाँ नहीं हो सकेगा। यदि किसी प्रयोजन से हो भी गया तो वह इस रानी की तुलना में मान-प्रतिष्ठा नहीं पा सकेगी। अतः उसकी योजना कि वह पुनः लंका में प्रभावशाली व्यक्ति बन सकेगा, सम्भव प्रतीत नहीं हुई।

अतः अपने निवास-स्थान पर पहुँच उसने अपनी योजना बदल दी। उसने विचार किया कि इस युवक का पिता अब अर्ध-यौवन में पहुँच गया होगा और उससे इस जैसा सुन्दर पुत्र प्राप्त कर उसके द्वारा लंका पर अधिकार प्राप्त करे।

इस विचार के आते ही वह अपने विमान पर चढ़कर देवलोक जा पहुँचा और वहाँ महर्षि विश्रवा के आश्रम के समीप विमान खड़ा कर ऋषि को देखने चला गया।

महर्षि एक कुटिया के बाहर वृक्ष के नीचे आसन लगाये स्वाध्याय कर रहा था।

विश्रवा अति ओजवान व्यक्ति था। उसकी पत्नी रोहिणी महर्षि भारद्वाज की लड़की थी और उसने एक ही सन्तान ऋषि को देकर पृथक् रहना आरम्भ कर दिया था। इससे ऋषि बड़ी आयु हो जाने पर भी अत्यन्त ओज का स्वामी युवक ही प्रतीत होता था।

सुमाली विमान पर लौट आया और अपनी लड़की कैकसी से बोला, "कैकसी! मैं तुम्हें यहाँ अपने परिवार का एक महान् कल्याण करने के लिये लाया हूँ। यहाँ एक अति ओजस्वी महर्षि रहता है। उसकी पहली पत्नी से सन्तान है। वह सन्तान अति सुन्दर है। मैं चाहता हूँ कि तुम इस ऋषि से विवाह कर वैसी ही सुन्दर और ओजस्वी सन्तान प्राप्त करो।

"इससे हमारा परिवार पुनः अपना पुराना राज्य प्राप्त करने में सफल हो सकेगा।"

कैकसी ने कहा, "मुझे महर्षि दिखा दीजिये। यदि मेरी इच्छा हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मैं उससे विवाह कर लूंगी ।"

'ठीक है । चलो मेरे साथ ।" सुमाली स्वयं ऋषि के सम्मुख जाना नहीं चाहता था । इस कारण उसने दूर से ही महर्षि को दिखाकर कहा, "अब तुम स्वयं उसे देख और इच्छानुसार बातचीत कर लो ।"

कैकसी ने कुबेर को देखा था और उसने उसके पिता को भी देख लिया । वह उसे पसन्द कर उससे कुबेर जैसा पुत्र पाने की इच्छा करने लगी ।

कैकसी ने ऋषि को पसन्द किया और विमान में लौट आयी । वहाँ उसने सुन्दर वस्त्र पहने तथा शृंगार किया और कुटिया के बाहर जा पहुँची । ऋषि ध्यानावस्थित आँखें मूंदे आसन पर बैठा था । उसके सम्मुख हवन, यज्ञ के लिये ईंधनादि सामग्री रखी थी ।

कैकसी ऋषि के सामने जा खड़ी हुई । ऋषि का ध्यान भंग नहीं हुआ । वह हाथ जोड़ खड़ी रही और ऋषि के आँख खोलने की प्रतीक्षा करने लगी ।

विवाह के चिन्तन मात्र से वह कामातुर हो चंचलता अनुभव करने लगी थी और खड़ी-खड़ी भूमि पर पाँव के अँगूठे से रेखायें खींचने लगी थी ।

वह दो घड़ी-भर खड़ी रही, तब ऋषि की आँख खुली । ऋषि हवन के लिये अरणी को घिस कर अग्नि प्रदीप्त करने लगा तो उसकी दृष्टि सामने खड़ी इस अनिन्द्य सुन्दरी की ओर चली गयी । ऋषि ने देखा । दोनों की आँखें मिलीं तो कैकसी की आँखें झुक गयीं । ऋषि ने पूछ लिया, "सुन्दरी ! क्या चाहती हो ? किसलिये हाथ जोड़े खड़ी हो ?"

कैकसी ऋषि के सौन्दर्य और अंगों की रेखायें देख मन्त्र-मुग्ध हो ऋषि से कामना पूर्ति की अभिलाषा में चुप खड़ी थी । ऋषि के सम्बोधन करने पर सचेत हो बोली, "भगवन् ! वर चाहती हूँ ।"

"माँगो । हमारी सामर्थ्य में हुआ तो देंगे ।"

"भगवन् ! मैंने आपके पुत्र धनाध्यक्ष को देखा है । वैसा ही पुत्र पाने की अभिलाषा से दो घड़ी से खड़ी हूँ ।"

"परन्तु यह तो ईश्वर के अधीन है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज ! ईश्वर की प्रेरणा से ही यहाँ आयी हूँ और आपकी सामर्थ्य को जानती हुई आपकी सेवा में उपस्थित हुई हूँ ।"

ऋषि स्वयं भी लड़की के यौवन और सौन्दर्य पर मुग्ध हो रहा था । इस कारण कुछ विचार कर बोला, "इस सामने आसन पर बैठ जाओ ।"

कैकसी आसन पर बैठी तो ऋषि ने अग्नि प्रदीप्त की और हवन आरम्भ कर दिया ।

हवन समाप्त हुआ तो ऋषि ने शान्ति पाठ पढ़ा; तदनन्तर सामने बैठी लड़की को कहा, "अब उठकर मेरे बाईं ओर आसन पर बैठ जाओ । हमने तुम्हें अपनी पत्नी के रूप में वर लिया है ।

"हम सन्तान विवाहित पत्नी को ही देते हैं । इस कारण मैंने तुमसे विवाह कर लिया है और अब तुम यहीं इस आश्रम में रह सकोगी ।"

जब कैकसी ऋषि के वाम कक्ष में रखे आसन पर आ बैठी तो ऋषि ने उसका नाम उसके माता-पिता का स्थान पूछा ।

कैकसी के मन में आया कि अनृत बोल, अपने नाम-धाम को छुपा ले । परन्तु यह विचार कर कि पीछे सत्य प्रकट होने पर ऋषि कहीं शाप न दे दें, सत्य-सत्य अपना परिचय देकर बोली, "आपसे विवाह के उपरान्त मेरी संज्ञा ऋषि पत्नी की हो गयी है ।"

"हाँ । चलो, कुटिया में हम तुम्हारी इच्छा अभी पूर्ण करेंगे ।"

: ७ :

विश्रवा ऋषि पत्नी से और कैकसी पति से सन्तुष्ट रात के भोजन पर बैठे तो ऋषि ने कहा, "देवी ! सन्तान की इच्छा पत्नी में ही उत्पन्न होती है । यह पति का कर्तव्य है कि वह पत्नी की इच्छा पूर्ण करे ।

"मैंने यह कर्तव्य पालन कर दिया है और आशा करता हूँ कि तुम एक महा पराक्रमी और बुद्धिमान पुत्र की माँ बनोगी ।"

'पर भगवन् ! सन्तान की इच्छा पति में नहीं होती क्या ?"

"मेरा अनुमान है कि यदि होती है तो वह इतनी न्यून होती है कि उसकी अवहेलना की जा सकती है । परन्तु पत्नी की इच्छा यदि प्रबल न हो हो सन्तान उत्पन्न ही न हो ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे ग्रन्थ में लिखा था—

जब विष्णुशरण इतनी कथा कह चुके तो भृगुदत्त ने पूछ लिया, "बाबा ! यदि पति में कामना का वेग न हो तो वह सन्तान उत्पत्ति से इन्कार भी कर सकता है ?"

"पर यह उचित नहीं।" बाबा का कहना था, "सन्तान पत्नी को जीवन-भर सुख देने वाली होती है और उसकी इच्छा पूरी न की जाये तो संसार में दुराचार फैलने की सम्भावना है।

"यही परमात्मा का विधान है। यह होना ही चाहिये।"

महिमा ने कह दिया, "पर बाबा ! मेरा विवाह तो मेरी इच्छा पर नहीं हुआ। मेरे विषय में विवाह की इच्छा और योजना आपके पोते की थी।

"मैं एक पुस्तक-विक्रेता की दुकान पर खड़ी पुस्तक बदलने का यत्न कर रही थी। पुस्तक-विक्रेता पुस्तक बदल नहीं रहा था। मैं नवीन प्रति क्रय करने के लिये तैयार नहीं थी। मेरे पास नयी पुस्तक के लिये दाम नहीं था।

"आपके पौत्र ने दाम अपने पास से दे मुझे पुस्तक ले दी। मैंने उनका पता पूछा जिससे कि मैं पुस्तक का दाम भेज सकूं, तो वह बोले कि वह भी बिलासपुर में ही रहते हैं और मेरे पिताजी को जानते हैं। अतः वह दाम उनसे ले लेंगे। मैं समझी नहीं और मुझे विस्मय हुआ जब उन्होंने पिताजी से दाम में मुझे ही माँग लिया।"

"हाँ।" विष्णुशरण ने कहा, "मुझे सब स्मरण है और मैं समझता हूँ कि इसी कारण अवस्था यह बन गयी है कि वह जेल में है और तुम यहाँ बैठी तपस्या कर रही हो।"

"तो इसका निराकरण नहीं हो सकता ?" महिमा का अगला प्रश्न था।

"तो दूसरा विवाह करोगी ?"

"नहीं बाबा ! मेरा यह अभिप्राय नहीं है। मैं निस्सन्तान ही रहना चाहती हूँ।"

"यह तो तुम पति के साथ रहते हुए भी थीं। इसी अवस्था को वह चलाना चाहता था। यदि तुम्हारी ऐसी इच्छा थी तो उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिरस्कार किसलिये किया था ?"

"बाबा, ऐसा नहीं। तिरस्कार के समय मैं आपके पौत्र से सन्तान की इच्छा रखती थी। मैंने याचना भी की थी, परन्तु वह सन्तान देने के लिये तैयार नहीं हुए और पीछे उन्होंने एक अविवाहित पत्नी को सन्तान दी है। यह देख मैं अपमानित अनुभव करती हूँ। साथ ही विवाह से पूर्व की भावना जागृत हो गयी है।"

"क्या भावना थी तब ?"

"यही कि पढ़ाई समाप्त कर बौद्धिक कार्य करूँगी और उसमें ही रस प्राप्त करूँगी।"

"तो अब तुम पुनः पढ़ाई चालू रखना चाहती हो ?"

"हाँ, बाबा! एक अन्तर आ गया है। तब मैं यह समझती थी कि किसी स्कूल, कालेज में पढ़ाती हुई स्वतः सुख-भोग करूँगी। अब आपकी शिक्षा से स्वतः सुख-भोग की लालसा नहीं रही, प्रत्युत बौद्धिक जीवन को यज्ञ रूप चलाने की लालसा बन रही है।"

"यह विचार ठीक है। मैं समझता हूँ कि तुम आगामी वर्षारम्भ पर पुनः चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने का यत्न करो। मुझे इस इच्छा से तुम्हारे जीवन में विरोधाभास दिखायी नहीं देता।"

इस समय सुन्दरी ने एक प्रश्न कर दिया, "पर बाबा! हमारे परिवार का सूत्र क्या यहीं टूट जायेगा ?"

"नहीं तुम उस कश्मीरी लड़की को घर ले आओ और उसकी सन्तान से अपने परिवार में वृद्धि कर लो।"

"नहीं। बाबा!" सुरेश्वर ने कहा, "उस स्त्री की सन्तान हमारे परिवार की परम्परा के अनुकूल नहीं होगी।"

"तो अमृत को कहना कि वह जेल से छूटने के उपरान्त पुनः विवाह कर ले।"

इस पर बात समाप्त हो गयी। महिमा के मन में इसमे किसी प्रकार का दुःख अनुभव नहीं हुआ।

: ७ :

महर्षि विश्रवा को कैकसी अत्यन्त प्रिय और सुखकारक प्रतीत हुई। उसकी पहली पत्नी धनाध्यक्ष कुबेर की माँ रोहिणी थी। उसने एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तान हो जाने के उपरान्त पुन: सन्तान की इच्छा नहीं की। उसने अपनी कुटिया ऋषि के आश्रम में ही, परन्तु ऋषि से पृथक् बना रखी थी।

ऋषि कैंकसी के साथ कई वर्ष तक सुखपूर्वक दाम्पत्य जीवन चलाता रहा। परिणामस्वरूप कैकसी के चार सन्तान हुई। पहली सन्तान एक पुत्र था। जब इसका जन्म हुआ तो उस समय रात का समय था। भयंकर आंधी, बिजली की कड़क और वर्षा हो रही थी। विद्युत् की गरज से वन-पशु भयभीत हो चीखते-चिल्लाते सुनायी दे रहे थे।

इस पर भी लड़का देखने में अति सुन्दर, शरीर से सुदृढ़ और बलवान और सतर्क था। कुछ ही दिनों में यह स्पष्ट हो गया कि लड़का मेघावी और संसार में प्रभुता-सम्पन्न होगा। उचित समय पर पिता ने इसकी बुद्धि की प्रखरता देख इसका नाम दशग्रीव रख दिया।

इस पर भृगुदत्त ने बाबा विष्णुशरण से पूछ लिया, "बाबा! रामायण में तो लिखा है कि रावण की दस ग्रीवा थीं?"

"मैं समझता हूँ कि यह अलंकार मात्र है। यदि रावण के दस सिर होते तो उसे सोने में, चलने-फिरने में और काम-काज में अत्यन्त कष्ट होता। कोई सामान्य व्यक्ति तो आत्म हत्या कर अपने को समाप्त कर लेता।

"इस कारण दशग्रीव का अभिर्प्राय यही प्रतीत होता है कि उसकी बुद्धि दस मनुष्यों के बराबर थी।

लड़के के सुन्दर और बलवान होने से तो कैंकसी प्रसन्न थी, परन्तु वह दो वर्ष की आयु में ही ऊधम मचाने लगा था। इससे उसकी प्रसन्नता में कमी आ गयी थी।

इस समय एक दूसरी सन्तान हो गयी। यह भी एक लड़का था, परन्तु इसका शरीर बेडौल था। वृहत्‌काय, बड़े-बड़े कान और बोलने का शब्द घड़े में बोलने जैसा था। इससे कैंकसी को और भी निराशा हुई।

एक अन्य सन्तान हुई। यह लड़की थी। वह भी सामान्य रूप-रेखा रखती थी। इससे तो कैंकसी की निराशा बहुत बढ़ गयी। एक दिन उसने अपने पति से कहा, "महाराज! मैं तो आपके लोकपाल पुत्र को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख, वैसा ही पुत्र पाने की इच्छा से आपके आश्रम में आयी थी और आपसे प्राप्त इस सन्तान को देख तो मुझे अत्यन्त निराशा हुई है।"

महर्षि विश्रवा ने मुस्कराते हुए कहा, "सुश्रोणि ! सन्तान उस साँचे के अनुसार ही बनती है जिसमें वह नौ मास तक गर्भ के काल में रहती है। जैसी मनोभावना स्त्री की उस काल में होती है, उस भावना को पूर्ण करने वाली उसकी सन्तान बन जाती है।

"तुमने कुबेर की माता को देखा नहीं। कभी गयी हो उसकी कुटिया में ?"

"नहीं भगवन् ! मेरा विचार है कि वह मुझसे रुष्ट होगी। मैंने उनके भाग पर अधिकार किया है।"

"नहीं देवी ! ऐसी कोई बात नहीं। वह तुमसे रुष्ट नहीं। कुबेर की माता अब और सन्तान नहीं चाहती। इस कारण वह मेरी कुटिया में नहीं आती।

"यदि वह आती तो अवश्य सन्तान-रूपी फल पाती। तुम उसके भाग का कुछ भी नहीं ले रहीं। उसके भाग की वस्त मुझमें संचित रहती है। वह मेरे ओज का रूप हो रही है।"

"तो वह बहुत सुन्दर हैं ?"

"हाँ। मन और शरीर से कदाचित् तुम उससे अधिक सुन्दर हो, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि गर्भ-काल में तुम अपने मन को कुत्सित विचारों से भर कर रखती हो। इससे तुम्हारे कोख में अच्छा मन और शरीर बन नहीं पाया।

"पहले, दशग्रीव के समय तुम ईर्ष्या, द्वेष को मन में जोहती रही हो और आसुरी प्रवृत्ति का पुत्र हो गया। आसुरी शरीर, मन और बुद्धि बनी है और वैसी ही आत्मा उस शरीर में आ गयी है। यह दशग्रीव राजसी प्रवृत्ति का पुत्र है। अब भी वह वन और वाटिकाओं में पशुओं को मारने में हर्ष और उल्लास अनुभव करता है। तुमने गर्भ-काल में उसका शरीर बनाया है, परन्तु उसमें वैसी ही आत्मा अपने कर्म-फलों को लिये हुए आ गयी है।

"दूसरी सन्तान के समय तुम तामसी विचारों को जोहती रही प्रतीत होती थीं और तुम्हारा लड़का तामसी स्वभाव का बन गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर बना है तुम्हारे गर्भ-काल के तामसी विचारों से और उसी प्रकार के कर्म-फलों वाला आत्मा उसमें आ गया है। मैं देख रहा हूँ कि वह दिन-रात के आठ प्रहर में छः प्रहर सोया ही रहता है। उसे कुछ भी काम करने को कहा जाये तो वह उलटा ही विचार करता है। वह समझता है कि हम उसे कष्ट देने के लिये काम बता रहे हैं।

"अब तुमने एक लड़की उत्पन्न की है। वह स्वेच्छाचारी होगी।

"भगवान जाने, इसके गर्भ-काल में तुम किसका चिन्तन करती रही हो। उसके अनुसार ही तुम्हारी लड़की का शरीर बना है और वैसी ही आत्मा उसमें आ गयी है।

"मन को कैसे श्रेष्ठ, कामना रहित और लोक-कल्याण में रत रखा जा सकता है? यह तुम कुबेर की माता से मिलकर जानो कि वह कैसे अपने मन को श्रेष्ठ और निःस्पृह रखती है?"

"मुझे वहाँ जाने में संकोच होता है? मैं इस आश्रम में दस वर्ष से हूँ और मैंने उनसे मिलने का कभी यत्न नहीं किया। अब जाने में लज्जा अनुभव होती है।"

"तो चलो, मैं तुमको वहाँ ले चलता हूँ। तुम्हारा उनसे परिचय करा दूंगा। वैसे तो जो भी स्त्री आश्रम में आती है, वह निस्संकोच हो उनसे मिलने चली जाती है और किसी को वहाँ जाने पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं। न ही किसी के साथ वहाँ भेद-भाव रखा जाता है।"

ऋषि कैकसी को लेकर रोहिणी की कुटिया में जा पहुँचा। जब ये दोनों कुटिया में पहुँचे तो रोहिणी एक अन्य आसन पर बैठी वेद-पाठ कर रही थी। उसके सामने भूमि पर दस-बारह अन्य स्त्रियाँ बैठी पाठ सुन रही थीं।

ऋषि के कुटिया में पहुंचने पर सब अपने-अपने आसन से उठ खड़ी हुईं। रोहिणी हाथ जोड़ प्रणाम कर आदर-युक्त भाव में पति की ओर देखने लगी।

ऋषि ने हाथ उठा सबको आशीर्वाद दिया और सबको बैठ जाने के लिये कहा। जब सब बैठ गयीं तो ऋषि ने अपने साथ आयी कैकसी का परिचय करा दिया। उसने रोहिणी से कहा, "देवी! यह मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी पत्नी कैकसी है। इसकी इच्छा हुई है कि तुमसे कुछ सीखे। इसलिये यहाँ आयी है।

"और देवी!" उसने अपने साथ आयी स्त्री को सम्बोधन करते हुए कहा, "यही जो ऊँचे आसन पर बैठी वेद-पाठ कर रही थीं, मेरी पहली पत्नी रोहिणी हैं। यह विदुषी और सद्चरित्र हैं।"

रोहिणी ने कैकसी से कहा, "बैठो भगिनी! यहाँ कोई किसी को शिक्षा नहीं देता। हम परस्पर विचार-विनिमय से ही सत्य की खोज में लीन रहती हैं। खोज का क्षेत्र है वेद भगवान्। हम यहाँ पाठ करती हैं। इसके अर्थ जानकर इसका भावार्थ अपनी बुद्धि से लगाती हैं। तदनन्तर हम परस्पर विचार करती हैं कि किसका भावार्थ ठीक है?"

कैकसी उन स्त्रियों में बैठ गयी और ऋषि उसे वहाँ छोड़ अपनी कुटिया में चला गया।

वेद-पाठ पुन: चलने लगा। दो घड़ी-भर पाठ के उपरान्त वार्त्तालाप आरम्भ हुआ और पढ़े गये मन्त्रों पर विवेचना होने लगी।

इस प्रकार एक प्रहर व्यतीत हो गया। बातचीत अगले दिन के लिये स्थगित हो गयी और सब स्त्रियाँ उठ खड़ी हुईं। रोहिणी भी उठ आसन से नीचे आ गयी।

स्त्रियाँ परस्पर बातें करती हुई कुटिया से जाने लगीं तो कैकसी भी हाथ जोड़ रोहिणी को नमस्कार कर बाहर को घूमी तो रोहिणी ने उसे रोक कर कहा, "अभी ठहरो। तुमसे परिचय तो अभी हुआ ही नहीं।"

कैकसी रोहिणी के समीप आ बैठ गयी। वह कहने लगी, "मुझे पता चला था कि एक बहन मुनिजी के पास रहने के लिये आश्रम में आयी है और उसे तीन सन्तान प्राप्त होने पर भी सन्तोष नहीं हुआ।"

"आपकी सूचना ठीक है। मुझे इस आश्रम में आये दस वर्ष हो चुके हैं। मैं यहाँ आने के विषय में कई बार विचार कर चुकी थी, परन्तु आते हुए संकोच अनुभव करती थी।"

"किसलिये?"

"मैं समझती थी कि आपको मुझ पर ईर्ष्या होनी चाहिये। मैं आपकी सम्पत्ति पर अधिकार जमाये बैठी थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोहिणी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो बहन को मुनिजी सम्पत्ति दिखायी दिये हैं ? सम्पत्ति तो एक जड़ वस्तु होती है । क्या मुनिजी का योग एक जड़ वस्तु के भोग के समान समझ आया है ?"

कैकसी इस विवेचना पर घबरा उठी और आश्चर्यवत् मुख देखने लगी । उसे इस प्रकार घबराया देख, रोहिणी खिलखिलाकर हँस पड़ी । हँसते हुए उसने कहा, "वह जड़ नहीं हैं । चेतना-युक्त आत्म-तत्व हैं । उनकी इच्छा के बिना तुम उनका भोग प्राप्त नहीं कर सकती थीं । इस कारण मैं तो यही समझी थी कि उन्होंने स्वेच्छा से तुम्हारी सेवायें स्वीकार की हैं ।

"जहाँ तक मेरी बात है, मैं उनको सम्पत्ति नहीं समझती । मैं अपने को भी केवल भोग-सामग्री नहीं मानती । मुनिजी एक महान् विभूति हैं । उनको अपनी और अपने पूर्वजों की परम्परा चलाने के लिये एक पुत्र चाहिये था । मैंने उनकी इस इच्छा-पूर्ति में सहयोग दिया है ।"

"हाँ । उन्होंने बताया है कि अब आपकी इच्छा उनकी सेवा के लिये नहीं होती ।"

"हाँ । मैंने अपना कर्तव्य पालन कर दिया है और एक सुन्दर, योग्य पुत्र उनको दे दिया है ।"

"आपके सुपुत्र को देखकर ही तो मैं मुनिजी के पास आयी थी और वैसे ही एक-दो पुत्रों की इच्छा करती थी । परन्तु बहुत निराशा हुई है । बड़ा लड़का दशग्रीव सुन्दर है, धीमान है, बलवान् है; परन्तु वह इतना चंचल है कि एक क्षण भी निश्चल बैठ नहीं सकता और उसकी इच्छा सदा दूसरों को कष्ट देने की बनी रहती है । दूसरा पुत्र विशालकाय, कुम्भ में बोलने के समान शब्द वाला और तामसी प्रवृत्ति का है । वह दिन-भर सोया रहता है । अब एक लड़की हुई है । वह भी कुछ अधिक सुन्दर नहीं है ।

"मैंने आज मुनिजी से कहा है कि यह कैसे हुआ कि उनकी सन्तान ऐसी निकृष्ट हुई है ? इस पर उन्होंने बताया कि सन्तान का शरीर तो माँ की देन होता है । इसका रहस्य मुझे आपसे जानना चाहिये ।"

रोहिणी कुछ देर तक सामने बैठी स्त्री के मुख पर देखती रही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कुछ विचार कर कहा, "मुनिजी ने ठीक कहा है कि शरीर तो स्त्री के सांचे में रूप स्वीकार करता है। इसलिये मैं यह समझती हूँ कि कैकसी बहन के सांचे में कुछ दोष है। सम्भवतः तुम्हारा मन और तुम्हारी बुद्धि ठीक कार्य नहीं कर रही। इनमें क्या दोष है? यह तो यहाँ रहो तो फिर जान सकूँगी और यदि उसका कुछ सुधार हो सका तो यत्न करूँगी।

"मैं समझती हूँ कि अब तुम इस कुटिया में ही रह जाओ। यहाँ नित्य वेद भगवान् का पाठ और व्याख्या सुनते हुए बुद्धि, मन और आत्मा में सुधार होने लगेगा। तब परमात्मा की कृपा से सन्तान भी श्रेष्ठ होगी।"

"परन्तु यहाँ रहते हुए पति की संगत प्राप्त नहीं हो सकेगी।"

"हो जायेगी। तनिक देखो, कि मुनिजी को भी तुम्हारी सेवा की आवश्यकता है अथवा नहीं?"

इस बात ने उसे वहीं रह जाने पर तैयार कर दिया। उसको विदित था कि वह पिछले दस वर्ष में स्वयं ही मुनिजी के पास सन्तान की याचना के लिये गयी थी। मुनिजी मान गये थे। अब रोहिणी के सुझाव पर वह यह देखने के लिये तैयार हो गयी कि मुनि को भी सन्तान की इच्छा है अथवा नहीं?

अतः उसने रोहिणी की कुटिया में ही निवास स्वीकार कर लिया। इस कुटिया में रहते हुए और दिन-रात स्वाध्याय, धारणा-ध्यान और चिन्तन से उसका चित्त स्थिर होने लगा। उसकी इच्छा पति पाने की धीरे-धीरे कम होने लगी।

इस प्रकार चार वर्ष व्यतीत हो गये। एक दिन मुनि आये और द्वार पर खड़े हो कैकसी को कहने लगे, "देवी! आज पति की कुटिया को सुशोभित करो। आज एक श्रेष्ठ मुहूर्त्त है।"

कैकसी मुनि को देख उठ उनके साथ चल पड़ी। गर्भ स्थित हुआ तो वह पुनः रोहिणी की कुटिया में आ गयी। इस बार पुनः लड़का हुआ। यह दोनों भाइयों से अधिक सुन्दर, सौम्य स्वभाव और बुद्धिमान प्रतीत होता था। इसका नाम विभीषण रखा गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ८ :

पहली रात कुलवन्त रात के दो बजे तक जागता रहा था। आज वह रात के भोजनोपरान्त सोने की तैयारी करने लगा। गरिमा के मन में विचार आया कि नीचे मौसी को पूछ आये कि उसे किसी वस्तु की आवश्यकता तो नहीं। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने सास-पतोहू को पतोहू के सोने के कमरे में बैठ बातें करते देखा।

"दीदी !" गरिमा ने कमरे में प्रवेश करते ही पूछ लिया, "कहाँ भाग गयी थीं ?"

"यहीं करोलबाग में ही थी। निर्मला बहन के घर चली गयी थी। विचार था कि माताजी के पुत्र चले जायेंगे तो लौट आऊँगी।

"निर्मला के पति यहाँ देखने आये थे कि तुम्हारे जीजाजी यहाँ से चले गये हैं अथवा नहीं ? उन्होंने यहाँ आ जीप में माताजी के लड़के को जाते और जीजाजी को उसे विदा करते हुए यह कहते सुन लिया था कि कल मिलकर बात करेंगे।

"इसके उपरान्त निर्मला के घर खाना खाया और माताजी को सान्त्वना देने चली आयी हूँ।"

"परन्तु तुम चली क्यों गयी थीं ?"

"गरिमा ! मुझे अभी भी विश्वास नहीं आया कि उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन आया है। मैंने उनको यह कहते हुए सुन लिया था कि वह माताजी के पीछे छुपकर आना चाहते हैं और बलपूर्वक मेरे शयनागार में घुस जाना चाहते हैं।

"यह असुरों का-सा व्यवहार है। बाबा ने एक दिन कथा में यह कहा था कि जब स्त्री सन्तान की कामना करती है तो यह एक स्वाभाविक और शुभ परिणाम उत्पन्न करने वाला व्यवहार है। परन्तु जहाँ पुरुष स्त्री के पीछे भागने लगे तो सब-कुछ उलट-पुलट हो जाता है।"

गरिमा गम्भीर विचार में मग्न हो गयी। एकाएक उसके मन में विचार आया और उसने पूछ लिया, "यदि पुरुष-स्त्री दोनों में सन्तान की कामना हो तो क्या होगा ?"

"यह तो बाबा की कहानी में आया नहीं। हाँ, इतना समझ आता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि तब अवश्य सन्तुलित मन वाली सन्तान होगी।"

"अर्थात् तुम्हारे मन में सन्तान उत्पन्न करने की भावना उत्पन्न की जाये। जीजाजी के मन में तो प्रतीत होती है।"

"मुझे इसमें सन्देह है।"

"अच्छा, तुम्हारे जीजाजी से कहूँगी कि मेरे जीजाजी के मन की भावना का पता करें। यदि वह मां जी के परिवार को चलाने के इच्छुक हुए तो फिर तुम मान जाओगी?"

महिमा चुप रही। वह समझ रही थी कि वह मोह-जाल में फँस रही है। सुन्दरी महिमा के सामने बैठी थी। वह महिमा के कथन को सुन अति दुःखी हो रही थी। उसकी आँखें आँसुओं से डबडबा आयी थीं।

वह गरिमा ने देखे। महिमा तो आँखें मूँद अपने अन्तरात्मा को टटोल रही थी। गरिमा ने माताजी की आँखें तरल देखीं तो पूछ लिया, "मौसी! आपको इस घटना से बहुत दुःख हो रहा है न?"

सुन्दरी ने अपने आँचल से आँखें पोंछनी आरम्भ कर दीं। गरिमा का कथन सुन महिमा ने आखें खोल दीं और सास को आँखें पोंछते देख पूछ लिया, "तो आप रोने लगी थीं माताजी? पर क्यों?"

सुन्दरी ने पुनः आँखों में आँसू भरते हुए कहा, "मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा है कि हम, मेरा अभिप्राय है कि मैं और अमृत के पिताजी वृद्धावस्था को प्राप्त हो परिवार को समाप्त करते हुए परलोक गमन करेंगे।"

महिमा ने कह दिया, "आप अपने पुत्र के नवीन विवाह का प्रबन्ध क्यों नहीं कर देतीं?"

"वह इसलिये," सुन्दरी ने महिमा की आँखों में देखते हुए कहा, "कि मैं अपनी लड़की महिमा पर सौतन नहीं ला सकती। मन नहीं मानता।"

महिमा चुप कर गयी। तीनों स्त्रियाँ एक-दूसरे का मुख देखती रह गयीं। एकाएक सुन्दरी ने कह दिया, "मैं समझती हूँ कि अमृतसर एक तार भेज प्रज्ञा को यहाँ बुला लें। मैं तो अकेली रसातल में पहुँच

—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही अनुभव कर रही हूँ।"

गरिमा ने कहा, "माताजी! अब सो जाइये। प्रातःकाल बलवन्त के पिताजी से सम्मति करेंगे। कदाचित् वह इस समस्या का कोई सुझाव उपस्थित कर सकें।"

इतना कह गरिमा ऊपर की मंज़िल पर चली गयी। कुलवन्त उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। गरिमा ऊपर शयनागार में पहुँची तो कुलवन्त ने पूछ लिया, "बहुत देर लगा दी है नीचे?"

"हाँ। दीदी आयी हुई थी और माताजी से कह रही थी कि उसे जीजाजी पर विश्वास नहीं आ रहा। वह जीजाजी का यह कहना छुप कर सुन गयी प्रतीत होती है कि वह माताजी के पीछे-पीछे छुप कर उसके शयनागार में घुस जायेंगे।"

कुलवन्त खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "अमृत के इस कथन से तो उसके लिये मेरे मन में मान बढ़ गया है। वह एक श्रेष्ठ सैनिक है। जब हम किसी पर आक्रमण करते हैं तो उससे पूछ कर नहीं करते। न ही ढोल और नगारों से शोर मचाते हुए करते हैं। हाँ, आक्रमण आरम्भ होने के उपरान्त तो तोप, बन्दूक, बम्ब चलते हैं।

"और जब विजय होती है तो फिर शान्ति का सुखमय जीवन चलता है! मैं अमृत के कथन का अर्थ यही समझा था। हमारी भाषा में यह एक सामान्य विधि-विधान है। सन् १९६२ में चीन ने इसी प्रकार आक्रमण किया था। विजय चीन की हुई और अब शान्ति है। यद्यपि अभी भी उस बलात्कार पर भारत को दुःख तो है, परन्तु अब क्या हो सकता है? मेरी सम्मति तो यह है कि अमृतजी की सहायता की जाये, जिससे कि उसे एक पत्नी मिल जाये।"

"मैं महिमा दीदी और मौसी को यह कह आयी हूँ कि आप कल इसका कोई उपाय बतायेंगे।"

"अब सो जाना चाहिये। कल भी रात मैं बहुत देर तक जागता रहा हूँ।"

अगले दिन कुलवन्तसिंह ने नीचे सुखिया को कहला भेजा, "हम भी प्रातः का अल्पाहार माताजी के साथ लेंगे।"

अतः स्नानादि से अवकाश पा वह, गरिमा और बच्चे नीचे जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचे । महिमा खाने की मेज़ के समीप खड़ी मुस्करा रही थी। कुलवन्तसिंह ने हँसते हुए कहा, "दीदी ! यह आँख-मिचौली का खेल अभी भी खेलती हो ?"

"जीजाजी ! यह आपके अधीनस्थ अधिकारी खेलना चाहते थे । मैंने उन्हें नहीं खेलने दिया ।"

कुलवन्त ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "आखिर आप क्या चाहती हैं ?"

"मैं ऐसे ही रहना चाहती हूँ जैसी हूँ। मैं अकेली ही सन्तुष्ट हूँ ।"

"परन्तु हमारा कुछ कर्तव्य अपने पुरखों के प्रति भी तो है । हमें उनके परिवार में सम्मिलित होने का सुख प्राप्त हुआ है। उस परिवार को चलाने का कार्य भी तो हम युवकों के कन्धे पर होता है । उसे क्यों न निभाया जाये ?"

"वह तो मैं तैयार थी । परन्तु अब मेरी इस कार्य में रुचि नहीं है ।"

"तो यह रुचि अब उत्पन्न नहीं हो सकती ?"

"हो सकती है । परन्तु इसके लिये उचित वातावरण और उचित समय की प्रतीक्षा करनी चाहिये । नौ-दस वर्ष की आवारागर्दी के उपरान्त जब जीवन की छटकन रह गयी है तो इसको भी ऊँचे दाम पर बेचने के लिये यत्न पसन्द नहीं आया ।"

कुलवन्त ने कहा, "तब तो बात बन गयी है ।"

"क्या बन गयी है ?" सुन्दरी ने कमरे में प्रवेश करते हुए कुलवन्त का अन्तिम वाक्य सुन लिया था । इससे उसने कुर्सी पर बैठते हुए पूछ लिया था ।

बलवन्त अपनी माँ के पास जा बैठा था । नीटू को मेज़ के एक किनारे पर बैठा दिया गया था और वह दूध पीकर तृप्त बैठी थी ।

कुलवन्त ने माता सुन्दरी के प्रश्न का उत्तर दे दिया । उसने कहा, "मौसी ! महिमा दीदी कहती हैं कि उचित वातावरण में उचित ढंग से उपाय किया जाये तो उससे अमृत की सन्तान हो सकती है ।"

सुन्दरी ने हँसते हुए कहा, "आधी रात तक मेरे समझाने और विनय-अनुनय करने का इतना फल हुआ है कि यह हमारे घर में पोते-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोतियों का द्वार खोल रही है।"

"मौसी! यही तो मैं समझा हूँ। अब प्रश्न रह गया है कि उचित वातावरण और उचित ढंग का ज्ञान प्राप्त किया जाये।"

"देखो बेटा!" सुन्दरी ने कहा, "तुम अमृत को इस बात के लिये राज़ी करो कि वह महिमा से स्वयं पृथक् में मिले और इन दोनों बातों के विषय में जानकारी प्राप्त कर ले। यह पति-पत्नी में उचित-अनुचित की बात उनको स्वयं ही निश्चय करनी चाहिये।"

"कहाँ और कब वह दीदी से मिलकर बातचीत कर सकता है?"

"यह भी वह स्वयं ही जानने का यत्न करे।" सुन्दरी ने यह भी बताया, "रात महिमा बेटी हमारी दयनीय दशा के विषय में जान चुकी है। इससे मैं आशा कर रही हूँ कि यह उस दिशा में सधार लाने का यत्न करेगी।"

इस विषर पर अधिक बातचीत नहीं हो सकी। कुलवन्त को अपने कार्यालय में जाना था। उसने अपना स्कूटर निकाला और 'कन्टोनमैंण्ट' को चल पड़ा।

कार्यालय में जाते ही उसे अमृत की एक दिन की छुट्टी की अर्ज़ी मिली। उसने लिखा था—'मैं एक अत्यावश्यक निजी कार्य के लिये 'कन्टोनमैंण्ट' से बाहर जा रहा हूँ। अतः चौबीस घण्टे की छुट्टी प्रदान की जाये।'

कुलवन्त समझ नहीं सका कि उसका यह काम पहले दिन वाली घटना से सम्बन्ध रखता है अथवा उससे पृथक् कोई कार्य है। इस पर भी उसने अर्ज़ी पर स्वीकृति लिख क्लर्क को दे दी।

दिन-भर कार्यालय में काम रहा। तीन बजे उसे अफसरों की एक मीटिंग में जाना पड़ा। वहाँ दिल्ली क्षेत्र के सब स्क्वाड्रन लीडर इकट्ठे किये गए थे। यह अर्जेण्ट मीटिंग बुलायी गयी थी।

सबके कमेटी-रूम में उपस्थित होने पर 'एयर कमाण्डर' ने बताया, "यह मीटिंग, जैसा कि आप सबको बताया जा चुका है 'टॉप सीक्रेट' में है। इस कारण इसकी कोई भी बात कमेटी-रूम के बाहर नहीं होनी चाहिये।

"भारत सरकार ने यह सूचना भेजी है कि पाकिस्तान में युद्ध की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयारी की जा रही है। इस युद्ध में हवाई सेना ने और उसमें भी हमारे नार्दर्न कमाण्ड ने विशेष भाग लेना है। हमारे हवाई कमाण्डरों की आज मध्याह्न से पूर्व एक मीटिंग से इस अवसर पर क्या-क्या करना चाहिये, इस विषय में उन सब बातों का एक लिखा पत्र आपको मिल जायेगा।

"वह पत्र अभी तैयार हो रहा है। उसके विषय में तो कुछ कहने के लिये नहीं है। वह तो हमें बिना कुछ कहे पालन करना है। जो बात मैं आप सबको कहना चाहता हूँ वह यह है कि सब छुट्टियाँ रद्द। सबको हेड क्वार्टर से बाहर नहीं जाना होगा, सब टेलीफोन पर होंगे और सब समय एक घण्टे के भीतर ड्यूटी पर उपस्थित होने के लिये तैयार रहना चाहिये।"

इसके उपरान्त पश्चिमी पाकिस्तान के सीमा-क्षेत्र का मानचित्र निकाल कर बोर्ड पर 'पिन' कर दिया गया और उस पर आक्रमण करने के स्थानों के विषय में विचार होने लगा। उन स्थानों की सब उपलब्ध जानकारी मेज़ पर रख दी गयी और हवाई जहाज़ों की पार के अन्तर का विचार कर भिन्न-भिन्न हवाई छावनियों का कार्य-क्षेत्र निश्चय कर दिया गया।

इस विचार-विनिमय में दो घण्टे व्यतीत हो गये। तदनन्तर कॉफी पीने के उपरान्त मीटिंग विसर्जित हुई।

इस मीटिंग के उपरान्त दिल्ली विंग के विंग-लीडर के अधीन एक बैठक हुई। दूसरे विंग के लोग पृथक्-पृथक् कमरे में बैठ अपने-अपने प्रबन्ध के विषय में विचार करने लगे।

यह तो समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो रहा था कि पाकिस्तानी घुसपैठिये कश्मीर की पश्चिमी सीमा से कश्मीर में आ रहे हैं।

छम्ब के समीप सीमोल्लंघन करने वाले एक घुसपैठिये के पकड़ जाने पर वहाँ के पुलों के नक्शों और उनको उड़ा देने के लिये डिनामाईट उसके पास से मिला। उसके बकने पर पता चला था कि वह उसी क्षेत्र में बीस अन्य घुसपैठियों के सम्पर्क में रखा गया था और वे सब पांच दिन उपरान्त अपने कार्य को एकाएक करने वाले थे। अखनूर का पुल इस आक्रमण का लक्ष्य था।

इस पर सीमा-क्षेत्र की सेना को सतर्क किया गया तो क्षेत्र में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ लोग संदिग्ध अवस्था में पकड़े गये। इनसे यह पता चला था कि बड़े स्तर पर आक्रमण किया जाने वाला है।

मीटिंग के उपरान्त कुलवन्तसिंह ने विंग-कमाण्डर से अपने घर में टेलीफोन लगवाने की माँग उपस्थित कर दी। अन्य स्क्वाड्रन लीडर तो कन्टोनमैण्ट ऐरिया में रहते थे। उनके टेलीफोन लगे थे। कुलवन्त ने इसके लिये कभी माँग नहीं की थी। वह अभ्यास के दिन कार्यालय के एक कमरे में ही आकर सो जाया करता था। इस प्रकार इस आपद्-काल के समय वह टेलीफोन पर उपस्थित होना चाहता था।

विंग-कमाण्डर ने टेलीफोन अधिकारियों को कहा तो तुरन्त टेलीफोन लगवाने की आज्ञा मिल गयी और उस दिन कुलवन्तसिंह के घर पहुँचने से पूर्व टेलीफोन लगाने वाले कर्मचारी घर पर पहुँचे हुए थे।

उस दिन कुलवन्तसिंह सायंकाल सात बजे घर पहुँचा तो अमृत वहाँ महिमा और गरिमा तथा अपनी माताजी के साथ बातें कर रहा था।

कुलवन्त की हँसी निकल गयी। उसने भीतर पहुँचते ही हँसते हुए कहा, "तो यह बात है? तुमने छुट्टी को बहुत उपकारी काम में व्यय किया प्रतीत होता है।"

"हाँ, श्रीमान्! महिमा जी की यह महिमा है कि इन्होंने आज रात इस घर में रह जाने का निमन्त्रण दिया है।"

"तब तो अमृत! मैं तुम्हें बधाई देता हूँ।"

महिमा मुस्कराती हुई अपने जीजाजी के मुख पर देख रही थी। कुलवन्त विचार कर रहा था कि पति-पत्नी में मिलने के लिये ठीक ढंग और ठीक वातावरण निर्माण करने के उपाय सामान्य वार्त्तालाप से विलक्षण ही हैं।

उसे विश्रवा मुनि की कुटिया में कैकसी के पहुँचने और सन्तान की माँग करना ही ठीक ढंग और ठीक वातावरण का सूचक समझ आया। इस कथा को स्मरण कर उसे समझने में देर नहीं लगी कि यह बात मुनि से केवल इस अंश में विलक्षण है कि वहाँ पत्नी पति के पास गयी थी और यहाँ पति पत्नी के पास आया है। शेष सब समान रूप में ही हुआ है।

वह कुछ कहने ही वाला था कि गरिमा ने पूछ लिया, "यह टेलीफोन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप लगवा रहे हैं ?"

"मैं बाहर तारें फिट की जाती देख आया हूँ ।"

"भीतर तो सब फिटिंग आपके कमरे में हो गयी है ।"

"तब तो आधे घण्टे तक टेलीफोन चालू हो जायेगा ।"

"वे लोग कह रहे थे कि उनको आज्ञा है कि रात आठ बजे से पूर्व यह चालू हो जाना चाहिये ।"

"ये किस समय आये थे ?"

"पाँच बजे के लगभग आये थे ।"

: ६ :

रात आठ बजे कुलवन्त ने अपने विंग-कमाण्डर लैफ्टिनेण्ट बोपत को टेलीफोन किया और टेलीफोन लग जाने के लिये उसका धन्यवाद कर दिया ।

रात कुलवन्त बाबा की कथा में अधिक रुचि लेने लगा था । जो बात विश्रवा मुनि ने कही थी, उसकी परीक्षा हो गयी । कैकसी अपने चतुर्थ गर्भ काल में रोहिणी की कुटिया में रही थी । वहाँ के सात्त्विक वातावरण और बातचीत का प्रभाव नवजात पर हुआ था । वह शरीर से कुछ दुर्बल था, परन्तु उसकी बुद्धि दशग्रीव से सर्वथा विलक्षण थी।

विभीषण बाल्यकाल से ही सौम्य स्वभाव और ईश्वर-भक्त था । वह अपने पिता से शिक्षा पाता हुआ द्रुत-गति से शास्त्र का ज्ञाता होने लगा । दशग्रीव और कुम्भकर्ण पिता की शास्त्र-शिक्षा से अधिक खेल-कूद और मल्ल-युद्ध में रुचि लेते थे । कैकसी की लड़की तो दिन-दिन-भर वनों में घूमती रहती थी ।

इन सब दिनों सुमाली अपनी लड़की से मिलता रहता था । परन्तु वह कभी ऋषि के सम्मुख नहीं आया था ।

दशग्रीव अट्ठारह वर्ष की वयस का हुआ तो एक दिन सुमाली एकान्त में कैकसी से मिलकर कहने लगा, "देखो कैकसी ! अब समय आ गया है कि तुम उस योजना को आगे चलाओ, जिसके लिये मैंने तुम्हें यहाँ भेजा था ।"

"मैं क्या करूँ, बाबा ?"

"अपने पुत्रों को ब्रह्मलोक में तपस्या करने के लिये भेज दो । वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध-विद्या सिखाने का एक विशेष विद्यालय है। वहाँ इनको भेज दो।"

"परन्तु सुना है कि वहाँ देवताओं के अतिरिक्त अन्य किसी को प्रवेश नहीं मिलता।"

"यह मैं जानता हूँ। हम देवताओं के भाई दैत्य हैं और तुम्हारी सन्तान पिता-पक्ष के मानस-पुत्र की सन्तान होने से वहाँ प्रवेश पा जायेगी।"

"पर बाबा! यदि ऋषि ने पूछा कि वहाँ बच्चों को भेजने का क्या उद्देश्य है तो क्या बताऊँगी?"

"कुछ नहीं। यही कि यहाँ बच्चे उच्छृङ्खल होते जाते हैं। वहाँ वे श्रेष्ठ क्षत्रिय बनकर आयेंगे।"

"और यह न बताऊँ कि मैं लड़कों के लिये लंका के राज्य की इच्छा करती हूँ?"

"अभी नहीं। यह बात बताने की नहीं।"

"तो बाबा! तुम बच्चों को ही कहो कि वे स्वयं अपने पिता से कहकर वहाँ चले जायें। मैं उनके सम्मुख झूठ नहीं बोल सकती।"

"किसलिये?"

"वह क्रुद्ध हो गये तो मुझे भस्म कर डालेंगे।"

"तुम सर्वथा भीरु हो।"

"ठीक है बाबा। यदि मुनि ने पूछा तो मैं सत्य-सत्य बता दूँगी।"

"अच्छा, रहने दो। तुम मत कुछ कहना। मैं दशग्रीव को ही कहूँगा कि वह अपने पिता से स्वयं कहकर उनकी स्वीकृति लेकर वहाँ शिक्षा प्राप्त करने चला जाये।"

दोनों भाई मल्ल-युद्ध कर रहे थे कि सुमाली उनकी माँ से निराश हो उनकी व्यायामशाला में जा पहुँचा। वह पहले भी उनको व्यायाम करते देखने आया करता था और उनको उस दुस्तर कार्य के लिये तैयार होते देख प्रसन्न हुआ करता था। अतः वह यह देख रहा था कि दोनों भाई शारीरिक बल में तो तैयार हैं। अब इनको युद्ध-विद्या और शस्त्रास्त्र प्रयोग करने का ज्ञान दिलाना चाहिये। वह वहाँ विश्रवा मुनि के आश्रम में सम्भव नहीं था।

जब दोनों भाई व्यायाम से अवकाश पा, अखाड़े से बाहर निकल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्र पहनने लगे तो सुमाली ने कहा, "मैं आज आपसे एक विशेष परामर्श करने आया हूँ।"

"तो माताजी के पास चलें?" कुम्भकर्ण ने पूछ लिया।

"नहीं। यह बात स्त्रियों से करने की नहीं। यह मैं तुम दोनों से सर्वथा पृथक् में करूँगा।"

दोनों भाई वस्त्र पहन अपने नाना के साथ चल पड़े। वह उनको अपने साथ वहाँ ले गया जहाँ उसने अपना विमान खड़ा किया हुआ था। उसमें बैठ सुमाली ने अपने पूर्वजों का पूर्ण इतिहास बता दिया। उसने विष्णु द्वारा की गयी राक्षसों की हत्या का भी वर्णन कर दिया और वहाँ से अकिंचन हुए राक्षसों का पाताल में जाकर दुःख और कष्ट के जीवन का विस्तृत वर्णन सुना दिया। इसके पश्चात् उसने कहा, "मैंने तुम्हारी माता का विवाह यहाँ के मुनि से इस कारण किया था जिससे कि उसके पुत्र इसकी दूसरी पत्नी के पुत्र के बराबर के पत्तीदार बन सकें। वह तुम हो। परन्तु राजनीति में अधिकार प्राप्त करने के लिये शक्ति का संचय करना पड़ता है।

"अभी तक तुम बलवान तो हो गये हो। मुझे विश्वास है कि यदि मल्ल-युद्ध से निर्णय होना हो तो तुम अपने भाई धनाध्यक्ष को पछाड़ दोगे। परन्तु बेटा, आज राज्यों का निपटारा इस पाशविक बल से नहीं होता। इसके लिये शस्त्रास्त्र प्रयोग करने का ज्ञान भी होना चाहिये। साथ ही राजनीति, युद्ध-नीति, मायावी युद्ध और इस श्रेणी की अन्य विद्याओं को सीखना होगा। उसके लिये यह आश्रम स्थान नहीं है।

"मैं चाहता हूँ कि तुम ब्रह्मलोक में चले जाओ। वहाँ इन सब विद्याओं का विद्यालय है। उस विद्यालय के कुलपति ब्रह्माजी स्वयं हैं। उनका प्रमाण-पत्र सुगमता से नहीं मिलता। उसके लिए घोर तपस्या की आवश्यकता रहती है। यह तुम करने के योग्य हो गये हो।

"देखो बेटा! तुम वहाँ से शिक्षित हो आओगे तो तुम्हें मैं लंका का राज्य दिलवा दूंगा। सहस्रों राक्षस तुम्हारी सहायता के लिये एकत्रित हो जायेंगे।"

कुम्भकर्ण इस कठोर तपस्या और शीतप्रधान ब्रह्मदेश में जाकर रहने के लिये तैयार नहीं हो रहा था। वह तो नाना की बात सुनता-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनता भी ऊँघने लगा था। जब सुमाली अपनी इच्छा कह चुका तो दशग्रीव तो तैयार हो गया, परन्तु कुम्भकर्ण से जब सुमाली ने पूछा तो उसने नाना की बात सुनी ही नहीं थी। उसने सचेत हो पूछा, "क्या कहा है नाना?"

दशग्रीव ने बताया, "इसने आपकी बात सुनी ही नहीं। यह उस समय सो रहा था।"

"तो फिर?"

दशग्रीव ने उसकी पीठ में एक मुक्का लगा कहा, "अरे कुम्भ! सुनो, हमें अब यहाँ से चलना होगा।"

"कहाँ?" कुम्भकर्ण ने पूछ लिया।

"ब्रह्म लोक में। शस्त्रास्त्र की विद्या सीखने।"

"पर वहाँ तो बहुत शीत होगी।"

"कुछ भी हो, चलना होगा।"

विश्रवा मुनि से ब्रह्मा के नाम पत्र ले दोनों भाई ब्रह्मलोक में जा पहुँचे।

इसको सुनकर भृगुदत्त ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "बाबा! ऐसी बात किसी ग्रन्थ में लिखी नहीं?"

"हाँ। इस रूप में नहीं लिखी।" विष्णुशरण ने कहा, "परन्तु इसके अतिरिक्त तो अन्य कुछ अर्थ निकलते ही नहीं। पण्डितजी, आप क्या समझते हैं कि दशग्रीव और उसका भाई ब्रह्मा के प्रासाद के बाहर एक टाँग पर खड़े हो तपस्या करते रहे थे। ऐसा भी तो कहीं नहीं लिखा।

"बात यह है कि साहित्यिक ग्रन्थों में इतना मात्र ही कहा जा सकता है कि गुरुकुल में ब्रह्मचारी पच्चीस वर्ष की आयु तक तपस्या का जीवन व्यतीत करते थे। इस तपस्या में वेद-वेदांग का पढ़ना भी तो आता है। तपस्या का अभिप्राय निरन्तर घोर प्रयत्न से कार्य-सिद्धि में लगा रहना है।

पाँच वर्ष की कठोर शिक्षा के उपरान्त दशग्रीव और कुम्भकर्ण शिक्षा समाप्त कर ब्रह्माजी से वर, अभिप्राय यह कि प्रमाण-पत्र लेकर अपने पिता के आश्रम में लौट आये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वहाँ सुमाली उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब ये अपनी शिक्षा का प्रमाण-पत्र अपने माता-पिता को दिखा चुके तो नाना के पास पहुँचे। सुमाली ने उनके प्रमाण-पत्र को पढ़कर कहा, "यह बहुत अच्छा है। अब तुम मेरे साथ लंकापुरी को चलो और उसे देख लो कि कितना सुन्दर राज्य है और उसके लिए तुम्हारी तपस्या का कुछ भी मूल्य नहीं।"

"दशग्रीव और कुम्भकर्ण सुमाली के साथ लंका में पहुँचे। चारों ओर सागर से घिरी लंकापुरी और उसमें सुदृढ़ प्राचीरों से घिरा हुआ नगर, स्वर्ण और रत्न जड़ित द्वारों वाला नगर भूतल पर एक सूर्य समान शोभायमान हो रहा था।

"सुमाली ने अपने नातियों को पूर्ण लंकापुरी में घुमाकर उसके सौन्दर्य और शोभा को दिखाया तो दशग्रीव की लार टपक पड़ी। उसने कहा, "बाबा! इसे विजय करने में तो घोर युद्ध करना पड़ेगा।"

"नहीं। तुम इस पर भाई के नाते अपना दावा करो। वह स्वीकार नहीं होगा। तब मैं तुम्हें इसी दिशा में सहस्रों की सहायता से विद्रोह करा, तुम्हें यहाँ का राजा बनवा दूँगा।"

"किसके पास दावा करूँ?"

"अपने पिता के पास। उसे कहना कि तुम छोटे हो। बड़ा भाई देवताओं की सहायता से एक नया नगर बना सकेगा, परन्तु तुमको दैत्यों का रक्त होने से देवता न तो स्थान देंगे और न ही अन्य सहायता।"

सुमाली दशग्रीव को पुनः उसके पिता के आश्रम में ले गया। दशग्रीव ने अपने पिता से जाकर कहा, "पिताजी! मैं अब अपनी शिक्षा पूर्ण कर किसी राज्य का राजा बनने के योग्य हो गया हूँ। इस कारण बड़े भाई कुबेर को आप कह दें कि वह लंका का राज्य मुझे दे दे।"

"और वह क्या करे?"

"वह अति योग्य व्यक्ति है। सब देवता लोग उसके ऋणी हैं। इस कारण उसे नवीन नगर और राज्य के निर्माण में कष्ट नहीं होगा।"

"ऐसा करो।" विश्रवा ने कह दिया, "तुम कुबेर के पास चले जाओ और उसकी राज्य में सहायता करो। तुम अपनी योग्यता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बड़े भाई से अधिक मान-प्रतिष्ठा पा जाओगे ।"

"पर मैं तो अपना पृथक् राज्य चाहता हूँ ।"

"जो अपने भाई को अपने राज्य में नहीं रहने देना चाहता, उसकी लोक में भूरि-भूरि निन्दा होगी ।"

"पिताजी ! मैं निन्दा से नहीं डरता । मैं तो यह कहता हूँ कि मेरा लंका के राज्य पर दोहरा दावा है । मैं कुबेर का भाई होने से, पितृ-पक्ष से लंका पर राज्य करने का अधिकार रखता हूँ । दूसरे, यह नगरी मेरे नाना के पिता और भाइयों ने निर्माण की थी और बसायी थी । इस कारण मातृ-पक्ष से भी मेरा इस राज्य पर अधिकार है ।"

"परन्तु यह राज्य कुबेर को इन्द्र ने दिया है । मैंने नहीं दिया । इस कारण मैं उसको तुम्हें कैसे दे सकता हूँ ?"

"तब तो पिताजी, युद्ध होगा । इन्द्र हमारे शत्रु-पक्ष में है । उससे राज्य युद्ध से ही प्राप्त किया जा सकता है ।"

"परन्तु वह तुम्हारी हत्या कर देगा ।"

"यह तो है ही । यदि मेरा बस चला तो मैं उसकी हत्या कर दूंगा ।"

"इस झगड़े में किसलिये पड़ते हो ? तुम कुबेर के पास चले जाओ और राज्य का आनन्द तुम भी भोग करो । राज्य का उत्तरदायित्व उसके कन्धों पर ही रहने दो ।"

"नहीं पिताजी ! मैं राज्य ही लूंगा ।"

"अच्छा, अब तुम जाओ । मैं इस विषय पर बात करना नहीं चाहता । इसमें मेरा अधिकार भी नहीं ।" विश्रवा ने कहा और मुख मोड़ लिया । दशग्रीव उठा और कुटिया से निकल गया । समीप कैकसी बैठी पिता-पुत्र में सम्वाद सुन रही थी । दशग्रीव के चले जाने पर उसने कहा, "भगवन् ! यह आपने क्या कर दिया है ?"

"क्या कर दिया है ?"

"भाई-भाई में विग्रह का बीज बो दिया है ।"

"यह मूर्ख बालक नहीं जानता कि वह क्या कह रहा है ?"

"श्रीमान् ! वह ब्रह्मलोक से घोर तपस्या द्वारा शस्त्रास्त्र की विद्या सीखकर आया है । इससे अधिक सम्भावना तो बड़े भाई के मारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने की है।"

"देवता मरते नहीं।"

"परन्तु मर तो रहे हैं। विष्णु अब नहीं रहे।"

विश्रवा चुप कर रहा।

: १० :

मुनि विश्रवा के आश्रम के बाहर सुमाली दशग्रीव की प्रतीक्षा कर रहा था। जब वह बाहर आया तो उसने उससे पूछ लिया, "बताओ, क्या कर आये हो ?"

"आपकी योजना विफल गयी है। भाई के नाते मुझे राज्य नहीं मिल सकता। यह राज्य देवताओं ने धनाध्यक्ष को दिया है और पिताजी उसको बिना देवताओं की स्वीकृति के मुझे नहीं दे सकते।"

"परन्तु दशग्रीव ! राज्य कई प्रकार से लिया जा सकता है। इनमें छल, बल और भय प्रबल उपाय हैं। देखो, पहले वहाँ के राजा के लिये भय उत्पन्न करने का प्रबन्ध मैंने किया है। इस समय लंका की प्रजा में तीन-चौथाई राक्षस हैं। मेरे मित्र और मन्त्री तुम्हारी सहायता के लिये राक्षसों का संगठन पूर्ण कर चुके हैं। प्रजा का नेता प्रहस्त है। उसके सहायक हैं मारीच, विरुपाक्ष और महोदर। तुम वहाँ चलो और ये मेरे मन्त्री प्रजा की सहायता से तुम्हारे भाई को राज्य त्यागने के लिये विवश कर देंगे। मुझे विश्वास है कि तुम बिना भाई के हत्यारे कहलाये राज्य पा जाओगे।"

दशग्रीव अपने नाना के विमान में लंका जा पहुँचा। उसके दोनों भाई और बहन अभी माताजी के पास ही रहे। लंका में दशग्रीव के पहुँचते ही सुमाली ने प्रहस्त को बुला भेजा और वह दशग्रीव को लेकर नगर के एक मकान में चला गया। वहाँ प्रहस्त के अन्य साथी उपस्थित थे।

प्रहस्त ने नगर में यह सूचना भेज दी कि उनके राजा सुमाली का नाती अपने नाना का राज्य प्राप्त करने लंका में आ गया है। इस सूचना पर नगर में राक्षस दशग्रीव के दर्शन करने जोंक-दर-जोंक जाने लगे।

देव-राज्य और राक्षस-राज्य में अन्तर यह था कि देव-राज्य में परिश्रम का फल मिलता था और राक्षस-राज्य शक्तिशाली जो चाहे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले सकता था। इस कारण शक्तिशाली और उसके गुट्ट में सम्मिलित लोग सकल सुख-सुविधा के पालक समझे जाते थे।

मारीच इत्यादि ने यह विख्यात कर रखा था कि राक्षस यक्षों (कुबेर के सजातियों) से अधिक बलशाली हैं। अतः यदि राक्षस संगठित हो जायें तो राज्य उनका हो जायेगा। इस आशा पर राक्षसों का संगठन बन गया था। सब बलशाली लोग दशग्रीव को राजा बनाने के लिये तैयार हो गये। उनको समझ में आने लगा कि राक्षस-राज्य स्थापित होने से उनको सब प्रकार की सुख-सुविधा अनायास ही मिलने लगेगी।

जब दशग्रीव के निवास-स्थान के बाहर सहस्रों की संख्या में बलवान राक्षस एकत्रित हो रहे थे तो प्रहस्त दशग्रीव का दूत बन कुबेर के राज-प्रासाद में जा पहुँचा। उसने सूचना भेज दी कि महाराज के कनिष्ठ भ्राता दशग्रीव का मन्त्री प्रहस्त, महाराज के दर्शन करना चाहता है।

इस सूचना पर कुबेर ने प्रहस्त को भीतर बुला अपने सम्मुख बैठा पूछ लिया, "कहाँ है दशग्रीव ?"

"महाराज ! वह नगर चौक के एक भवन में ठहरा हुआ है।"

"यहाँ क्यों नहीं आया ?"

"इसी विषय पर उनका एक सन्देश लेकर आया हूँ।"

"हाँ, बताओ ?"

प्रहस्त ने अति सभ्य भाषा में कहा, "महाराज ! यह नगरी राक्षसों के राजा सुकेश और उसके पुत्रों ने निर्माण की थी। उससे पहले यहाँ उनके पूर्वजों ने राज्य स्थापित किया था। अतः राक्षस यह समझते हैं कि आपका यहाँ राज्य-पद पर आसीन होना अनधिकार चेष्टा है। अब राक्षसों ने आपके छोटे भाई और सुकेश के सुपुत्र सुमाली के नाती दशग्रीव को अपना राजा स्वीकार कर लिया है। अतः वह चाहता है कि यह राज्य आप अब अपने छोटे भाई को दे दें।"

कुबेर ने कह दिया, "परन्तु यहाँ शासन मैं नहीं करता। यहाँ के नागरिकों की एक समिति शासन करती है। उस समिति में राक्षस ही अधिक संख्या में हैं। मैं तो केवल उस समय समिति के कार्य में हस्तक्षेप करता हूँ जब समिति के सदस्य परस्पर सहमत नहीं होते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस कारण मुझसे शासन लेने का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। दशग्रीव को कहो कि नगर के भवन को छोड़ दे और यहाँ आ जाये।"

"महाराज ! वह आपके रहते यहाँ नहीं आयेगा।"

"तो वह क्या चाहता है ?"

"वह चाहता है कि आप यहाँ से चले जायें। आपको देवताओं ने यहाँ का लोकपाल नियुक्त किया है। उन्होंने विष्णु द्वारा राक्षसों की महान हत्या करा कर लंका पर अधिकार प्राप्त किया था। अब राक्षस पुनः अपना राज्य वापस लेना चाहते हैं।

"आप यह लंका राक्षसों को लौटा दें। उनका मनोनीत राजा दशग्रीव यहाँ राज्य करेगा।"

"ठीक है। यह हो सकता है। परन्तु शासन तो नागरिक समिति ही करेगी।"

"दशग्रीव और राक्षस यहाँ का शासन शुक्र-नीति की मर्यादा से चलाना चाहते हैं। शुक्र दैत्यों के पुरोहित थे और राक्षस दैत्यों की सन्तान हैं।"

"हम उस नीति में दोष मानते हैं।"

"इसी कारण दशग्रीव चाहते हैं कि आप यहाँ से प्रस्थान कर दें। अब शुक्र-नीति से राज्य चलेगा।"

"परन्तु उस नीति के अनुसार तो प्रजा की समिति कार्य नहीं कर सकेगी।"

"ठीक है। प्रजा की समिति के स्थान पर सैनिक समिति बनेगी, जिसके अध्यक्ष दशग्रीव होंगे।"

कुबेर ने कह दिया, "प्रजा इसे स्वीकार नहीं करेगी।"

"महाराज !" प्रहस्त ने कहा, "यह प्रजा द्वारा स्वीकार कर ली गयी है। आप अभी अपना संरक्षक भेज पता करिये। सहस्रों की संख्या में नागरिक दशग्रीव के गृह के बाहर एकत्रित हो उसकी जय-जयकार मना रहे हैं।"

"कितने लोग होंगे उसके निवास-गृह के बाहर ? वहाँ तो चार-पाँच सहस्र से अधिक लोग एकत्रित नहीं हो सकते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराज !" प्रहस्त ने गम्भीर भाव धारण कर कहा, "मेरी सूचना के अनुसार वहाँ दस सहस्र लोग एकत्रित हो चुके हैं और अभी और आ रहे हैं।"

"परन्तु हमारी नगरी की जनसंख्या तो इससे बहुत अधिक है।"

"हाँ, महाराज ! लंका की जनसंख्या पचास सहस्र है। उन पचास सहस्र में से आधे से अधिक स्त्री-वर्ग है। शेष पच्चीस सहस्र में से बाल और वृद्ध निकाल दें तो पन्द्रह सहस्र युवा रह जाते हैं। इन पन्द्रह सहस्रों में शूद्र, वैश्य और ब्राह्मण वर्ग को निकाल दें तो दस सहस्र से कुछ कम ही बनते हैं। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि देश की पूर्ण तरुण क्षत्रिय जनता वहाँ एकत्रित हो रही है।

"ये लोग हैं जो देश के लिये प्राण को न्योछावर करते हैं और वे ही राज्य करने के अधिकारी हैं।"

कुबेर इस गणना को सुन गम्भीर विचार में लीन हो गया। वह विचार करता था कि इस दशग्रीव के दूत के कथन में भी सत्यता है। इन दस सहस्र युवकों का विरोध करने के लिये मुझे इससे अधिक नहीं तो इतने सैनिक देवलोक से लाने चाहियें। यह इन्द्र, वरुण इत्यादि ही दे सकते हैं।

इतना विचार कर उसने कहा, "देखो प्रहस्त ! तुम दशग्रीव को जाकर कहो कि वह मुझे विचार करने का अवसर दे। मैं नहीं चाहता कि निर्दोष प्रजा का रक्तपात किया जाये। परन्तु यह राज्य मेरे पास किसी की धरोहर है। मुझे इस उत्तरदायित्व को छोड़ने से पूर्व विचार करने दो कि यह उचित भी है अथवा नहीं ?"

"आपका निश्चय कब तक हो जायेगा ?" प्रहस्त समझ रहा था कि जिस कार्य के लिये उसे सुमाली ने भेजा है, वह पूर्ण हो रहा है। उसे यह कहा गया था कि उसने देवता लोकपाल के मन में भय उत्पन्न करना है। इसमें उसे सफलता मिल रही अनुभव हुई थी।

कुबेर ने कहा, "मैं कल मध्याह्नोत्तर तक निर्णयात्मण बात करूँगा। या तो प्रासाद छोड़ दूंगा अथवा अपने भाई को युद्ध के लिये ललकारूँगा।"

प्रहस्त सन्तुष्ट हो दशग्रीव के स्थान को लौट गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुबेर ने यह समय इस कारण लिया था कि वह पिता से और इन्द्र से सम्मति करना चाहता था। अतः उसने तुरन्त पुष्पक विमान निकलवाया और पिता के आश्रम को चल पड़ा। विश्रवा का आश्रम हिमालय के चरणों में देवलोक की सीमा पर था।

पिता के आश्रम में पहुँच उसने पूर्ण स्थिति का वर्णन किया और पूछ लिया, "पिताजी! अब मुझे क्या करना चाहिये?"

मुनि विश्रवा ने पूछा, "कुबेर! कब से राज्य कर रहे हो वहाँ?"

"पैंतीस वर्ष से ऊपर हो चुके हैं।"

"इस काल में तुमने कितने लोग ऐसे निर्माण किये हैं जो तुम्हारे लिये जीवन-मरण की बाज़ी लगा सकें?"

"वहाँ अस्सी प्रतिशत से ऊपर राक्षस लोग बसे हैं। शेष बीस प्रतिशत में प्रायः वैश्य और शूद्र हैं।"

"तुमने राक्षसों को किसलिये वहाँ बसा रखा है?"

"अन्य कोई वहाँ बसने के लिये आता नहीं था। देवता तो इस शीत-प्रधान देश को छोड़ वहाँ उष्ण और गीले वायु-मण्डल में जाकर रहना नहीं चाहते। गन्धर्व और किन्नर एक स्थान पर टिक कर रहते नहीं। वे कुछ वहाँ हैं, परन्तु युद्ध की आशंका होने पर वह वहाँ से चल देंगे।"

"वहाँ समीप ही मानव, रीछ, वानर और गिद्ध इत्यादि जातियों के लोग रहते थे। उनको किसी प्रकार का प्रलोभन देकर वहाँ बसाने का यत्न क्यों नहीं किया?"

"मानव तो वहाँ आते नहीं। वह विन्ध्याचल से ऊपर के देशों में ही रहना पसन्द करते हैं। अन्य जातियों के लोग अति असभ्य हैं। उन सबसे राक्षस अधिक परिश्रमी और योग्य योद्धा एवं कुशल कारीगर थे।"

ऋषि ने क्रोध में अपने पुत्र को सम्बोधन कर कहा, "वैश्रवण! तुम एक अयोग्य शासक सिद्ध हुए हो। अब अपनी अयोग्यता के दोष को मिटाने के लिये अपने अनुगामी भक्तों की हत्या करने का विचार कर रहे हो। यह महापाप हो जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम यह नहीं समझ सके कि सरलचित्त वानर और रीछ कुटिल राक्षसों से अधिक विश्वास के योग्य हैं। कुशलता क्या श्रेष्ठता का स्थानापन्न हो सकती है ? श्रेष्ठता जन्म-जात होती है। कुशलता शिक्षा और संगत से उपलब्ध की जाती है।

"यदि तुम्हारे नगर में श्रेष्ठ लोग अपना देश छोड़कर नहीं आये तो यह इस कारण कि तुमने अपने देश में वह सुविधायें उपलब्ध नहीं करायीं जो अन्य देशों में उनको प्राप्त थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि तुम यक्ष प्रवृत्ति से बाहर नहीं निकल सके। लोकपाल का काम क्षत्रिय वर्ग का है, वैश्य-वृत्ति वालों का नहीं। वैश्य तो सदा धन की गिनती-मिनती में लगा रहा है। क्षत्रिय उद्देश्य की पूर्ति के लिये धन तो क्या जीवन की भी आहुति दे देता है।"

"सस्ते श्रमिक ढूंढते हुए तुमने अपने और अपनी जाति के शत्रु एकत्र कर रखे थे।"

कुबेर ने अपने मन की बात कह दी। उसने कहा, "पिताजी ! मैं इन्द्रदेव के पास सहायता के लिये जाना चाहता हूँ।"

"वह क्या करेगा ? व्यर्थ की हत्यायें तुम जैसे अयोग्य शासक के राज्य की रक्षा करने के लिये, मैं उचित नहीं मानता। इससे न तुम्हारा कल्याण होगा, न देवताओं का।

"मेरी सम्मति मानो। तुम अपने परिवार को लेकर वहाँ से चले आओ। अपने लिये स्थान कहीं देवलोक क्षेत्र में बना लो। यहाँ अभी बहुत स्थान रिक्त पड़ा है।"

कुबेर पिता का मुख देखता रह गया। पिता ने आगे कहा, "भाई-भाई परस्पर लड़कर एक दूषित प्रथा को मत चलाओ। राज्य के लिये भाई-भाई लड़ते हुए शोभा नहीं पाते।"

"ऐसा तो पहले हो चुका है।" धनाध्यक्ष ने साहस पकड़ कहा, "हिरण्यकशिपु और विष्णु लड़ चुके हैं। आदित्य और दैत्य भी कई बार लड़ चुके हैं। बलि और इन्द्र का झगड़ा भी विख्यात है। वामन का छल से बलि का राज्य लेना भी इतिहास में लिखा मिलता है।"

ऋषि ने मुस्कराते हुए कहा, "इसी से तो कहता हूँ कि तुम केवल अयोग्य शासक ही नहीं, वरन् मूर्ख भी हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो वैश्रवण ! हिरण्यकशिपु का और विष्णु का वही झगड़ा था जो विष्णु और माल्यवान का था। वहाँ राज्य का झगड़ा नहीं था, प्रत्युत प्रजा पर अत्याचार का झगड़ा था। यही बात वामन और बलि की थी। प्रजा का धन ले-लेकर बलि अपने यज्ञों पर व्यय कर रहा था। यज्ञों में भी पात्र-कुपात्र का विचार किये बिना दान दिया जाता था। वामन ने उसकी मिथ्या उदारता का भाण्डा फोड़ने के लिये वह आयोजन किया था। न तो विष्णु ने हिरण्यकशिपु का राज्य लिया था और न ही वामन ने बलि का।

"जब उनका अपना राज्य दैत्यों ने छीनने का प्रयास किया तो आदित्यों ने स्वयं अपने बलबूते पर देवासुर संग्राम लड़े थे। परन्तु तुम्हारी बात दूसरी है। तुम राज्य में रहते हुए दुर्बल रहे हो। तुम्हारी प्रजा ही तुम्हारे विरुद्ध उठ खड़ी हुई है। तुम जैसे अयोग्य शासक के लिये कोई देवता भी सहायता के लिये नहीं आयेगा।

"भाई-भाई की बात तो मैंने अपने विचार से कही है। तुम दोनों में मेरे लिये कुछ अन्तर नहीं है। वह अपने नाना की परम्परा चलायेगा अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। हाँ, तुमने देवताओं की परम्परा नहीं चलायी। तुमने देवता और असुर में भेद-भाव नहीं रखा। अब तुम किस आधार पर देवताओं से सहायता माँग सकते हो अथवा मेरी सहानुभूति के पात्र हो ?"

"परन्तु पिताजी ! वह प्रकृति से दुष्ट और चरित्र से हीन है।"

"उसमें मैंने क्रूरता तो देखी है, परन्तु ब्रह्मलोक की शिक्षा से वह अवश्य बदला होगा और यह राज्य-संचालन करने पर पता चलेगा। तुम तो असफल सिद्ध हो चुके हो।"

: ११ :

कुबेर को पिताजी की एक बात मन में लगी थी। वह यह कि उसके शासन में दोष था। अन्यथा उसके तीस वर्ष से ऊपर के लंका में राज्य करने पर भी उसके सहायक नगण्य थे। इस अवस्था में वह इन्द्र के पास सहायता लेने के लिये नहीं पहुँचा। वह उसी रात लंका पहुँचा और अपने परिवार को पुष्पक विमान में चढ़ाकर पिता के आश्रम में आ गया। वहाँ से उसने अपने लिये [illegible] की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा पर कैलाश के चरणों में बना लिया और वहाँ जाकर रहने लगा।

लंका में अगले दिन नियत समय पर प्रहस्त कुबेर का निर्णय जानने के लिये राजप्रासाद में पहुँचा तो प्रासाद को खाली देख समझ गया कि कुबेर लंका का राज्य अपने भाई दशग्रीव के लिये छोड़ गया है।

दशग्रीव अपने नाना के जाति वालों की सहायता से ही लंका का राज्य पा सका था। अतः पहला काम जो उसने किया, वह राक्षसों के अतिरिक्त अन्य सबको वहाँ से चले जाने का आदेश दे दिया। दक्षिण भारत के लोग एक अल्प संख्या में वहाँ आकर बस गये थे। वह लंका छोड़ने लगे तो उनका धन-दौलत और स्त्री-वर्ग छीन लिया गया। यह कहा गया कि यह देश की विभूति है। इनको वे देश से बाहर ले जाने नहीं देंगे।

इसके साथ ही राक्षसों की धर्म-व्यवस्था स्थापित कर दी गयी। यह थी बलवानों की कही बात को प्रमाण मानना। राज्याधिकारी शक्तिशाली ही नियुक्त होते थे।

जब लंका में राक्षस राज्य स्थापित हो गया, तब राक्षस अपना पूर्व इतिहास और उसकी प्रभुता स्मरण कर गर्व अनुभव करने लगे। इसका सीधा परिणाम यह हुआ कि जिन्होंने उस काल में गर्व भंग किया था, उनके प्रति घृणा और द्वेष उभरने लगा और दशग्रीव यद्यपि एक ऋषि की सन्तान था और एक ऋषि आश्रम में पला था तो भी इस जातीय मनोद्गारों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा।

अतएव विष्णु एक अत्यन्त घृणित शब्द हो गया। विष्णु तो उस समय जीवित नहीं था, परन्तु उसके सजातीय देवलोक में राज्य करते थे। अतः देवलोक का भूतल से नामो-निशान मिटा देने का संकल्प करने लगा।

दिन-रात दशग्रीव को प्रहस्त इत्यादि भूमण्डल पर राक्षस राज्य स्थापित करने की प्रेरणा देने लगे।

भूमण्डल विजय करने में दशग्रीव ने अपने सम्बन्ध राक्षसों के अतिरिक्त जाति वालों से बनाने आरम्भ कर दिये। इस अर्थ उसने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वज दानवों से सम्बन्ध पुनर्जीवित करने के लिये अपनी बहन शूर्पणखा का विवाह काल दानव के पुत्र विद्युतजिह्व से कर दिया। दानव अदिति दिति की एक बहन दनु की सन्तान थे। इस सम्बन्ध से भूतल पर बचे-खुचे दानव लंका में एकत्रित होने लगे।

दशग्रीव ने अपना विवाह दैत्यों के परिवार के मय की कन्या मन्दोदरी से किया। यह विवाह घटनावश ही हुआ था। दशग्रीव एक दिन वन में आखेट के लिये गया हुआ था कि उसकी दृष्टि एक शौर्यवान पुरुष और उसके साथ एक मुन्दर कन्या पर जा पड़ी। दशग्रीव को उनका वहाँ भ्रमण करते हुए विस्मय हुआ और उसने पुरुष से प्रश्न कर दिया, "भगवन् ! आप इस निर्जन वन में कहाँ घूम रहे हैं ?"

उस पुरुष ने एक ओजस्वी युवक को आखेट के लिये वन में देखा तो कहा, "भगवन् ! मेरा नाम मय है। मैं दैत्य हूँ। मैं एक बार इन्द्र की पुरी अमरावती में भ्रमण कर रहा था कि वहाँ की एक हेमा नाम की अप्सरा से विवाह की याचना की। इन्द्र अपने नगर की अप्सरा को दैत्यों के घर में जाने पर आपत्ति करता था, परन्तु जब मैंने बताया कि महारानी शचि भी तो दैत्यों की लड़की है और जब उन्होंने इसे इन्द्र को देना स्वीकार किया तो मुझे भी एक देवलोक की स्त्री से विवाह की स्वीकृति मिलनी चाहिये।

"इन्द्र मान गया और मेरा विवाह हेमा से हो गया। हमने अपना एक नया प्रासाद बनाया और उसमें सुखपूर्वक रहने लगे। हमारे प्रासाद के चारों ओर नगर बस गया और उसका नाम मायापुरी रखा गया। वहाँ दैत्य एकत्रित होने लगे। मेरे हेमा से एक लड़की और दो लड़के हुए। एक लड़के का नाम मायावी है और दूसरे का नाम दुंदुभी है। लड़की का नाम मन्दोदरी है।

"कई वर्ष तक मेरे पास रहने के उपरान्त हेमा मुझे छोड़कर देवलोक में चली गयी और अब पुनः वह वहाँ अप्सरा का जीवन व्यतीत कर रही है।"

"क्यों ?"

"इस कारण कि विवाहित जीवन के बन्धनों से वह ऊब गयी प्रतीत होती थी। अप्सरा के जीवन में उस पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। प्रतिबन्ध पुरुषों पर रहता है। वह बिना उसकी इच्छा के उसका भोग नहीं कर सकते। विवाहित जीवन में तो पुरुष की इच्छा अधिक चलती है। इस कारण वह मेरे घर से भाग गयी है।

"मैं उसके चले जाने पर अत्यन्त दुःख अनुभव करने लगा हूँ। यह मेरी लड़की है। इसके साथ वन-भ्रमण से दिल बहला रहा हूँ। इसके साथ भ्रमण करता-करता इधर आ गया हूँ।"

अब दशग्रीव ने अपना परिचय दिया। परिचय देकर कहा, "आपकी यह कन्या मुझे प्रिय लग रही है। मैं इससे विवाह की इच्छा करने लगा हूँ।"

मय ने इस प्रस्ताव से प्रसन्न हो वहीं अग्नि प्रदीप्त कर अपनी लड़की मन्दोदरी का विवाह रावण से कर दिया।

लंका अति सुन्दर और सुखद स्थान था। मन्दोदरी के दोनों भाई भी दशग्रीव के सहायक हो वहीं रहने लगे।

दशग्रीव ने अपने भाई कुम्भकर्ण और विभीषण दोनों का विवाह भी अन्य शिष्ट परिवारों में कर दिया।

मन्दोदरी के भाइ मायावी की यह सम्मति थी कि देवलोक पर आक्रमण करना चाहिये। वह देवताओं से रुष्ट था। अपनी माँ के वहाँ चले जाने पर वह इन्द्र के पास उसे माँगने गया था। परन्तु उसे धक्के दे-देकर देवलोक से निकाल दिया गया था। अतः वह लंका का धन-दौलत और बलवानों का संग्रह स्थान देख अपना देवताओं से प्रतिशोध लेने की बात विचार कर बैठा।

दशग्रीव विश्व-विजय के स्वप्न देख रहा था। राक्षसों के देवताओं से प्रतिशोध की भावना में मायावी देवताओं के प्रति द्वेष में सहायक हो गया और दशग्रीव देवलोक विजय की योजना बनाने लगा।

इस समय तक लाखों की संख्या में राक्षस पाताल देश से लंका राज्य में और भारत के दक्षिण पार्श्व में आकर रहने लगे थे। वे लूट-मार मचाते हुए कभी-कभी विन्ध्याचल पर्वत तक चले जाते थे।

इस बात को मायावी पसन्द नहीं करता था। उसने एक दिन दशग्रीव से कहा, "श्रीमान्! यदि देवलोक विजय करना है तो लंका और देवलोक के मध्यवर्ती क्षेत्रों से शत्रुता नहीं करनी चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो पूर्ण भूमण्डल पर राज्य स्थापित करना चाहता हूँ।"

"हाँ, यह ठीक है। परन्तु महाराज, यह नीति है कि सुगमता से पराजित होने वाले को पहले विजय करना चाहिये। उसको अपना सहायक बना फिर प्रबल राज्य पर आक्रमण करना ठीक रहेगा।"

"कौन दुर्बल है और कौन प्रबल राज्य है?"

विन्ध्याचल के पार कौशल राज्य इस समय महान बल का स्वामी है। उससे टक्कर लेने से पहले अपनी शक्ति प्रबल करने के लिये दुर्बल, परन्तु धनी को अपना सहायक बना लेना चाहिये। कम-से-कम उसे शत्रु पक्ष में जाने का अवसर नहीं देना चाहिये।

"देवता दुर्बल हैं, वे स्वामी हैं, अपनी अप्सराओं के बाहुल्य के कारण विषय-रत हैं और अभिमानी हैं। इनके विपरीत उत्तरी भारत के आर्य लोग एक निश्चित धर्म-व्यवस्था के अनुसार व्यवहार करते हैं। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए बलवान और बुद्धिमान बन रहे हैं।

"इसके अतिरिक्त देवलोक स्वर्ग समान सुन्दर देश है। उस पर राज्य पा जाना अत्यन्त सौभाग्य की बात है।"

मायावी ने देवलोक के कुछ स्थानों का वर्णन इतनी लुभायमान भाषा में किया कि दशग्रीव के मन में यह लालसा उत्पन्न हो गयी कि देवलोक विजय होना चाहिये। विजय से पूर्व वह इसे देखना चाहता था।

एक दिन उसने अपने नाना वाला विमान लिया और देवलोक-दर्शन के लिये चल पड़ा।

अपने पिता के आश्रम से उड़ान करता हुआ वह अमरावती, यमपुरी, कैलाश पर महादेव शिवजी के निवास-स्थान की शोभा देखता हुआ वह विचर रहा था कि उसे कैलाश पर्वत के चरणों में एक बहुत ही सुन्दर नगरी उद्यानों और पुष्करणियों से सुशोभित दिखायी दी। वह इस सुन्दर नगरी को देख इस पर मोहित हो गया। उसने अपना विमान एक निर्जन स्थान पर उतारा और उस सुन्दर नगर की शोभा देखने लगा।

विशाल उद्यान, सुन्दर पुष्करणियाँ, पुष्प-वाटिकायें भिन्न-भिन्न प्रकार के मनुष्यों से चहल-पहल युक्त प्रशस्त मार्ग और ऊँची-ऊँची अट्टालिकायें देखता हुआ दशग्रीव घूम रहा था कि उसे एक उद्यान में कुछ ललनायें मधुर संगीत और नृत्य करती दिखायी दे गयीं। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको देखने खड़ा हो गया। आते-जाते अन्य लोग भी उनको देखते और फिर चल देते थे। दशग्रीव तो उनके नृत्य पर इतना मुग्ध हुआ कि वहीं खड़ा रह गया।

उस स्थान से कुछ अन्तर पर एक अति विशाल उच्च प्रासाद बना था। नृत्य-संगीत के उपरान्त सब स्त्रियाँ उसी अट्टालिका की ओर जा रही थीं कि दशग्रीव ने आगे बढ़ एक युवती से पूछ लिया, "यह किसका स्थान है?"

वह स्त्री विस्मय में प्रश्नकर्त्ता का मुख देखने लगी। दशग्रीव ने कह दिया, "मैं परदेशीय व्यक्ति हूँ। अपने विमान में भूमण्डल का भ्रमण कर रहा हूँ। इस कारण इस सुन्दर स्थान को देख यहाँ उतर पड़ा हूँ।

"यह नगर बहुत ही सुन्दर और मनोहर प्रतीत हुआ है। उसमें आपके इस स्वच्छन्द नृत्य ने तो मुझे आप सबका अनुचर बनने की प्रेरणा दी है।"

जब दशग्रीव इस युवती से प्रश्न कर रहा था तो अन्य नृत्य करने वाली स्त्रियाँ भी वहाँ एकत्रित हो उन दोनों की बात सुनने लगी थीं। उस युवती ने उस स्थान का परिचय दे दिया, "यह अल्कापुरी है। ऋषि विश्रवा के पुत्र वैश्रवण ने इसे बसाया है। वह एक समय भूमण्डल की एक सुन्दर नगरी लंका पर राज्य करते थे। वहाँ से अपने पिता का आदेश पाकर उन्होंने वह नगरी अपने छोटे भाई को दे दी है और अब यहाँ इस नगरी को बसाया है।"

दशग्रीव इस नगरी पर राज्य कर इन सब सुन्दर ललनाओं को अपने रनवास में रखने की इच्छा करने लगा। इस समय उसने पूछ लिया, "आप कौन हैं जो यहाँ अपना सौन्दर्य और लालित्य बिना मूल्य बिखेर रही हैं।"

उस स्त्री ने बताया, "हम इस प्रासाद में रहने वाले की श्री वैश्रवण के पुत्र नलकूबर की दासियाँ हैं। हम यहाँ पर रम्भा की प्रतीक्षा में खड़ी हैं।"

"रम्भा! वह कौन है?"

"यहाँ की सर्वश्रेष्ठ अप्सरा है। वह महाराज नलकूबरजी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमिका है। वह अपने निवास-गृह में आने वाली हैं।"

"क्या मैं भी उसके दर्शन कर सकूंगा ?"

"उसके आने पर सब लोग उसे देखते हैं। आप भी देख सकेंगे। परन्तु भगवन्, आप कहते हैं कि आप विमानचारी हैं। अतः आप अवश्य ही कोई देवता होंगे। आप अपना परिचय दीजिये।"

दशग्रीव ने अपना परिचय दिया तो सब ललनायें उसे आदर की दृष्टि से देखने लगीं।

कुछ ही देर में एक अति सुन्दर रमणी सोलहों शृंगार से युक्त अपनी वेणी में पाटल का फूल लगाये हुए और गले में वैजयन्ती पुष्पों की माला पहने हुए मस्त चली आती दिखायी दी।

दशग्रीव ने उसको देखा और अति मुग्ध हो खड़ा रह गया। जब वह समीप आ गयी तो दशग्रीव ने आगे बढ़ हाथ जोड़ प्रणाम किया और अपना परिचय दे दिया। तदनन्तर कहा, "मुझे ज्ञात हुआ है कि आप रम्भा हैं और गृह-स्वामी की सेवा के लिये आयी हैं।"

"हाँ। मैं आपकी पतोहू हूँ। आपके भाई के पुत्र की पत्नी।"

"मैं आपसे पृथक् में एक बात कहना चाहता हूँ।"

"तो भीतर आइये। आपके भाई के लड़के आपसे परिचय प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे।"

"पहले आपसे एक बात करना चाहता हूँ। इस समीप के कुंज में आइये।"

रम्भा झिझक रही थी। उसने कुछ कहा नहीं। वह खड़ी विचार करती रही।

दशग्रीव ने उसकी बाँह पकड़ आग्रह करते हुए कहा, "देवी! तनिक इधर आओ। तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ।"

अनिच्छा से रम्भा घसीटी जाती हुई मौन उस कुंज में चली गयी। दशग्रीव ने उसे अपनी बलिष्ठ भुजाओं में उठाया और उधर को भागा जिधर उसका विमान खड़ा था। वह समीप ही था। दशग्रीव ने उसे विमान में बैठाया और आकाश में उड़ा ले गया।

विमान पर रम्भा से बलात्कार किया और कुछ देर उपरान्त उसे नलकूबर के प्रासाद के समीप उतार दिया। उसके उतरते ही दशग्रीव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमान को उड़ाकर लंका की ओर चल पड़ा।

: १२ :

अगले दिन कुलवन्तसिंह उठा तो उसको पता चला कि अमृत उसके बैठकघर में बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। वह शयनागार से निकल उसे बैठा देख पूछने लगा, "क्यों ? फिर पत्नी ने शयनागार से निकाल दिया है ?"

अमृत हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "यह बात नहीं है।"

"तो क्या बात है ?"

"मैं महिमा को कह रहा हूँ कि कुछ दिन की छुट्टी लेकर उसे कहीं भ्रमण के लिये ले जाऊँ।"

कुलवन्तसिंह गम्भीर हो गया। उसने कहा, "रात विंग-कमाण्डर साहब टेलीफोन पर कह रहे थे कि ऊपर से आज्ञा आ गयी है कि जब तक नये आदेश नहीं आ जाते, तब तक छुट्टियाँ बन्द और जो छुट्टी पर गये हुए हैं, उनको तुरन्त वापस बुला लो।"

"तो युद्ध अवश्य होगा ?"

"हाँ। मैं तो अपने अधिकारियों को यह कहा करता हूँ कि जब तक वर्त्तमान पाकिस्तान बना रहता है, तब तक युद्ध की सम्भावना है।"

"मेरा यह अभिप्राय है कि निकट भविष्य में युद्ध हो रहा है क्या ?"

"जब हम सम्भावना का शब्द प्रयोग करते हैं तो निकट भविष्य की ही बात होती है। पाकिस्तान बना था १४ अगस्त, सन् १९४७ को; और पाकिस्तान से प्रथम युद्ध आरम्भ हो गया था २३ अक्टूबर, सन् १९४७ को। यह युद्ध हमने बन्द किया था प्रथम जनवरी, सन् १९४९ को। तदनन्तर युद्ध होता-होता रुका था सन् १९५० में, जब पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं का कत्ले-आम किया जा रहा था। यदि उस समय नेहरू प्रधान मन्त्री न होते तो युद्ध हो जाता। तब से अभी तक अनेक बार पाकिस्तानियों ने हमारे देश की सीमा पार कर लूट-मार मचायी है, परन्तु नेहरूजी इसे युद्ध नहीं मानते रहे। इस पर भी ये घटनायें इतना तो प्रकट करती हैं कि हम पाकिस्तान से निरन्तर अट्ठारह वर्ष से युद्ध की स्थिति में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और देखिये, अमृतजी ! अब भारत के प्रधान मन्त्री पण्डित नेहरू नहीं हैं।"

"परन्तु शास्त्री तो नेहरूजी से भी नरम स्वभाव के व्यक्ति हैं। यह भी गांधीजी के भक्त हैं।"

"परन्तु यह शास्त्री हैं। यदि इन्होंने शास्त्र, मेरा मतलब है कि गीता को कुछ भी पढ़ा होगा तो युद्ध हो जायेगा।"

"तो छुट्टी नहीं मिल सकती ?"

"बहुत कठिन है। इस पर भी कार्यालय में चलकर ही...।"

इस समय टेलीफोन की घण्टी बजी। कुलवन्त ने लपक कर टेलीफोन उठाया। उसने सुना और चोंगा रखकर अमृत को कहा, "जल्दी करो। तैयार हो जाओ। ड्यूटी पर आधे घण्टे में रिपोर्ट करने की आज्ञा है।"

"तो हो गयी ?"

"ऐसा ही प्रतीत होता है।"

कुलवन्त कपड़े पहनने अपने शयनागार में चला गया और अमृत नीचे को भागा।

गरिमा पति से पहले जागी थी और अपनी बहन महिमा से बैठी बातें कर रही थी। उसको वहाँ आया देख ही अमृत ऊपर गया था। वह समझा था कि कुलवन्तसिंह जाग चुका होगा।

कुलवन्तसिंह रात भी बाबा द्वारा कही कथा देर तक पढ़ता रहा था। इस कारण उठने में देर हुई थी।

गरिमा ने देखा कि दीदी अति प्रफुल्ल-बदन बैठी अपनी सितार बजा रही है। गरिमा ने उसके समीप बैठ सुनना आरम्भ कर दिया। महिमा ने उसकी ओर देखा तो गरिमा खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"किसलिये हँसी हो, गरिमा ?"

"कितने वर्ष के उपरान्त सितार बजाना याद आया है ?"

"जब से बाबाजी का देहान्त हुआ है, इसे हाथ नहीं लगाया था। आज स्नानादि से निवृत्त होकर आयी तो विचार करने लगी थी कि क्या करूँ ? पढ़ने को चित्त नहीं किया। अतः सितार निकाल स्वर करने लगी और फिर यह बजने लगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मेरे कारण जो दीदी और जीजाजी में वैमनस्य उत्पन्न हुआ था, वह आज मिट गया है।"

"परन्तु यह वैमनस्य तुम्हारे कारण नहीं हुआ था।"

"दीदी ! मैं जानती हूँ कि तुम्हारे मन में कुछ नहीं था, परन्तु जीजाजी ने तो कश्मीर जाकर भी मुझे बुलाया था।"

"छोड़ो इस बात को। आशा है कि अब वह तुम्हें नहीं बुलायेंगे।"

"अब क्या बुलायेंगे ? अब तो मैं दो बच्चों की माँ हूँ और बूढ़ी हो गयी हूँ।"

"पर दो बच्चों की मातायें बूढ़ी होती हैं ?"

"और क्या ? वह नीम्बू जिसका रस निचोड़ा जा चुका हो।"

"यह काल की गति है।"

"पर दीदी ! यह हुआ कैसे ? कल सुबह तक तो तुम कह रही थीं कि सुलह हो नहीं सकती।"

"माताजी परसों रात बिस्तर में मुख छुपाये रोती रही थीं और सिसकियाँ लेती रही थीं। उनका प्रभाव सुषुप्त मन पर हुआ था। इसी के परिणामस्वरूप मैंने अपने व्यवहार को नरम कर देने का विचार बना लिया था।

"कल मैं स्कूल जाने तक आशंका करने लगी थी कि तुम्हारे जीजा कहीं पुनः लापता हो गये तो माताजी जीवन-भर मुझे कोसती रहेंगी।

"कल मध्याह्न की छुट्टी के समय वह स्कूल में आये। चपरासी ने मुझे बताया कि एक व्यक्ति मुझे मिलना चाहता है। मैं उठी और द्वार पर आयी तो भौंचक्क उनको देखती रह गयी। वह कहने लगे, "महिमा जी ! आधे दिन की छुट्टी नहीं हो सकती क्या ?"

"क्या होगा छुट्टी से ?"

"यह मेरे साथ चलिये तो बताऊँगा।"

"मुझे कुछ ऐसा समझ आया कि वह निश्चयात्मक बुद्धि से कुछ कहने वाले हैं। मेरे मन में रात माताजी का रोना स्मरण आने लगा था। इस कारण मैंने कहा, "ठहरिये। मैं प्रबन्ध करके आती हूँ।"

"मैं अपने अधीन एक अध्यापिका निर्मला से कहने गयी तो वह मेरा पीत मुख देख पूछने लगी कि क्या बात है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने बताया, 'तुम्हारे जीजाजी आये हैं।'

'तो सुलह करने जा रही हो ?' उसने पूछा।

"मेरा कहना था कि मन नहीं मान रहा। वह मेरा पूर्ण इतिहास जानती है। उसने कान में कहा, 'मान जाओ। सुख पाओगी। आज मुहूर्त्त बहुत अच्छा है।'

"मेरी हँसी निकल गयी। मैं आयी। उक्त पृष्ठ-भूमि को मन में लिये हुए हम एक टैक्सी में छावनी में गये। उसने एक क्वार्टर खोल मुझे कहा, 'यह घर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।'

"एक घण्टा-भर हम वहाँ रहे। तदनन्तर हम दोनों माताजी को अपनी सुलह का शुभ सन्देश बताने चले आये।"

गरिमा और महिमा अभी बातें ही कर रही थीं कि अमृत ऊपर से नीचे उतर आया और बोला, "कदाचित् पाकिस्तान से युद्ध आरम्भ हो गया है। हमें आधे घण्टे में ड्यूटी पर उपस्थित होने की आज्ञा आयी है।"

गरिमा ऊपर को भागी।

दस मिनट में कुलवन्त नीचे उतर आया। वह अपनी यूनिफार्म पहने हुए था। इस समय तक अमृत भी वस्त्र पहन तैयार हो गया। दोनों स्कूटर पर सवार छावनी में जा पहुँचे।

समाचार था कि छम्ब के समीप पाकिस्तानी सेनायें भारत की सीमा उल्लंघन कर भीतर घुस आयी हैं। हवाई जहाज़ के तीन स्क्वाड्रनों को अमृतसर पहुंचने की आज्ञा थी।

इनके पहुँचने के पहले हवाई जहाज़ तैयार खड़े थे। तुरन्त हवाई जहाज़ों में बैठ हवाई जहाज़ एक-एक कर उड़ने लगे। पन्द्रह हवाई जहाज़ दिल्ली से अमृतसर की ओर चल पड़े।

दिल्ली में दोनों बहनें अब उत्सुकता से युद्ध के समाचार पढ़ने लगीं। इनके घर वालों का समाचार नहीं आ रहा था। दिन-पर-दिन व्यतीत हो रहे थे। युद्ध चलते हुए सात-आठ दिन हुए थे कि यह समाचार प्रकाशित हुआ कि भारतीय हवाई जहाज़ों ने लायलपुर के 'राडार स्टेशन' पर आक्रमण किया है और वहाँ का 'राडार' नष्ट कर दिया है। एक भारतीय हवाई जहाज़ वापस नहीं लौट सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई जहाज़ों के अन्य आक्रमणों के भी समाचार आ रहे थे। हवाई जहाज़ों ने शत्रु के कई टैंक बरबाद कर दिये थे।

दिल्ली में नित्य ब्लैक आउट हो रहा था और एक प्रकार का उत्साह और साहस का वातावरण बना हुआ था।

इक्कीस-बाईस दिन के युद्ध के उपरान्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद् के कहने पर युद्ध-विराम हो गया।

जिस दिन युद्ध-विराम की घोषणा हुई, उसी दिन सेना विभाग की ओर से एक टेलीग्राम आया कि लायलपुर राडार स्टेशन पर जो जहाज़ गिरा था, उसमें एयर पायलट अमृतलाल था। उसका कोई समाचार नहीं। यह समझा जा रहा है कि अमृतलाल वीर गति को प्राप्त हो गये हैं।

तार महिमा ने पढ़ा। वह तार पढ़कर स्तब्ध रह गयी। उसे हतोत्साह कुर्सी पर बैठते देख सुन्दरी ने पूछ लिया, "क्या बात है, महिमा ?"

महिमा की आँखों से आँसू ढुलकने लगे थे। सुन्दरी समझ गयी। उसने पतोहू के हाथ से तार ली और ऊपर की मंज़िल पर जाकर गरिमा से पढ़ायी। गरिमा ने तार पढ़कर कहा, "माताजी! बहुत ही बुरा समाचार है।"

सुन्दरी ने एक लम्बा साँस लिया और वहीं सोफा पर बैठ गयी। गरिमा ने माताजी को आश्रय दे उठाया और दोनों नीचे महिमा के पास आ गयीं।

तीनों स्त्रियाँ बिना बोले एक-दूसरे का मुख देखती हुई मौन बैठी थीं। तीनों के आँसू बह रहे थे।

सूचना भेजने पर पण्डित सुरेश्वर भी दिल्ली चला आया। जिस दिन वह आया, उसी दिन कुलवन्त भी दिल्ली लौट आया। उसने बताया, "आक्रमण के समय हम पूरे दल-बल के साथ वहाँ गये थे। हम बारी-बारी से नीचे उतरते थे। भूमि से दो सौ गज की ऊँचाई तक जाकर राडार पर बम्ब फेंकते थे और फिर भाग कर ऊपर चले आते थे। अमृत ने तीसरी बार आक्रमण किया। नीचे से गोलियाँ चल रही थीं। यह हमारी अन्तिम बारी थी। वैसे राडार के आस-पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमारतें उड़ गयी थीं, परन्तु राडार पर हिट नहीं लगी थी।

"अमृत ने राडार पर बम्ब फेंका। निशाना ठीक रहा, परन्तु उसके जहाज़ के टैंक पर गोली लग गयी और पैट्रोल के टैंक को आग लग गयी। उसने हवाई जहाज वापस भगाया, परन्तु कुछ दूर तक लौटने पर उसके हवाई जहाज़ में धमाका हुआ और हवाई जहाज़ आकाश में ही टूट गया। हममें से कुछ कहते हैं कि उन्होंने धमाके से पहले हवाई जहाज़ में से उसे पैराशूट से नीचे उतरते देखा है। परन्तु पाकिस्तान से सूचना नहीं आयी कि कोई पकड़ा गया है अथवा नहीं।"

"मैं समझती हूँ।" सुन्दरी ने कहा, "अमृत अपनी निशानी पीछे छोड़ गया है। आज प्रातः महिमा ने खाना उलट दिया है।"

"परमात्मा करे कि माताजी की अभिलाषा पूरी हो।"

दिन-पर-दिन व्यतीत होने लगे, परन्तु अमृत का कोई समाचार नहीं आया।

फिर जनवरी मास में ताशकन्द समझौता हुआ तो निश्चय रूप में अमृत के मरने का समाचार प्रसारित कर दिया गया। अमृत को वीर चक्र मिला जो उसकी विधवा पत्नी को राष्ट्रपति भवन में बुला कर दिया गया।

इस समय तक यह निश्चय हो चुका था कि महिमा के गर्भ ठहर गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

रम्भा से बलात्कार का समाचार पूर्ण देवलोक में फैल गया। कुबेर ब्रह्मलोक में ब्रह्मा के पास पहुँचा और रम्भा का पूर्ण वृत्तान्त बता कर कहने लगा, "इसका प्रतिकार होना चाहिये।"

ब्रह्मा ने मुस्कराते हुए कहा, "धनाध्यक्ष ! तुम लंका छोड़ किस लिये चले आये थे ?"

"पिताजी कहते थे कि राज्य जैसी तुच्छ वस्त के लिये भाई-भाई में युद्ध ठीक नहीं होगा।"

"और अब एक अप्सरा के लिये तुम देवलोक में आग लगाना चाहते हो ?"

"परन्तु भगवन् ! यह विषय अब देवलोक के नियमोपनियम का हो गया है। देवलोक में स्त्रियों पर बलात्कार नहीं होता।"

"और स्त्रियाँ पुरुषों पर बलात्कार कर सकती हैं ?"

"भगवन् ! यह स्त्रियों को अधिकार देवताओं ने ही दिया हुआ है।"

देवता इस घटना पर लंकाधिपति से युद्ध नहीं करेंगे। इस पर भी मैं चाहता हूँ कि देवताओं को अपने भविष्य पर विचार करना चाहिये। एक देव-सभा बुलायी जाये और उसमें वर्त्तमान देवलोक की स्थिति पर विचार किया जाये।"

"तो महाराज ! आप हमारे पुरोहित हैं। आप बुलाइये।"

"ठीक है। मैं देव-सभा इन्द्र के प्रासाद में बुलाऊँगा। तुम भी आना। अपने साथ हुए अन्याय का वर्णन करना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः अमरावती में देवताओं की सभा हुई और उसमें लंका पर दशग्रीव के अधिकार हो जाने और उसके देवलोक में आकर यहाँ की स्त्रियों पर बलात्कार का विषय उपस्थित हुआ।

इस सभा में कुबेर ने दशग्रीव के लंका पर अधिकार जमाने से लेकर तत्काल तक का पूर्ण वृत्तान्त बता दिया। उसने लंका में बसे हुए देवताओं के साथ दुर्व्यवहार तथा उनकी स्त्रियों से वेश्यावृत्ति कराने की कथा भी सुनायी।

इस पर इन्द्र ने स्पष्ट कह दिया, "अन्य देशों में इस प्रकार के व्यभिचार के उदाहरण मिलते रहते हैं। इसके लिये हम देवलोक को युद्ध में नहीं घसीट सकते।"

इस पर कुबेर ने रम्भा अप्सरा पर बलात्कार का वृत्तान्त बता दिया।

"परन्तु क्या वह आपके राज्य में सेना लेकर आया था?" इन्द्र ने पूछा।

"नहीं। वह अपने विमान में अकेला आया था।"

"आपके पास भी तो विमान था। आपने उसका पीछा क्यों नहीं किया? मुझे यह सूचना मिली है कि रम्भा जब उसके साथ कुंज में गयी तो उसकी सखियाँ वहाँ उसे देख रही थीं। वे देख रही थीं कि दशग्रीव रम्भा को किस काम के लिये ले जा रहा है और रम्भा ने हो-हल्ला नहीं किया। वह उसके साथ चली गयी।

"उसकी सखियों ने यह समझा था कि रम्भा स्वेच्छा से दशग्रीव के साथ गयी है। उन्होंने भी नलकूबर को बताया नहीं। जब दशग्रीव उसे विमान में बैठाकर चला गया तब भी देखने वालों ने आपत्ति नहीं की। यह तो जब रम्भा लौटकर आयी तो उसकी हो रही दुर्दशा को देखकर सबको क्रोध आया, परन्तु उससे क्या हो सकता था?

"उस समय भी यदि नलकूबर विमान लेकर उसका पीछा करता तो उसे लंका पहुँचने से पहले पकड़ा जा सकता था। तुम्हारे पास पुष्पक विमान था जो उससे कई गुना अधिक गति से उड़ सकता है।

"देखिये, धनाध्यक्षजी! आप अपनी मूर्खतापूर्ण भूलों के लिये देव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक को युद्ध में घसीटना चाहते हैं। यह नहीं होगा।"

इन्द्र के निराशाजनक कथन से सब देवता निरुत्साह हो रहे थे। ब्रह्मा देवताओं से ऐसी ही आशा करता था। इस सब दुर्घटना का उसने विश्लेषण कर दिया। ब्रह्मा का कहना था, "वास्तविक बात यह है कि इस समय देवताओं में कोई नहीं जो दशग्रीव से युद्ध कर सके। कुबेर क्या और इन्द्र क्या, सब अपनी दुर्बलता को छुपाने के लिये युक्तियाँ दे रहे हैं। ये वास्तव में युक्तियाँ नहीं हैं, प्रत्युत ये अपनी दुर्बलता छुपाने के लिये कुतर्क हैं।

"एक काल था जब देवता अपने को भूमण्डल में धर्म और न्याय के संरक्षक मानते थे। तब मानव-समाज एक थी। मानव-नियम एक थे और उनका उल्लंघन मानव अधिकारों का हनन माना जाता था। देवता अपने को मानवों के नेता समझ जहाँ कहीं भी मानव रहते थे, उनकी रक्षा के लिये आगे चले आते थे। लोकपालों की प्रथा का यही अर्थ था।

"अब तो तुम्हारे अपने देश में आकर भी एक बलात्कार कर चला जाता है और तुम उसको दण्ड देने की सामर्थ्य नहीं रखते और अपनी असमर्थता को प्रकट करने के लिये एक-दूसरे को कोस रहे हैं।

"नलकूबर ने दशग्रीव को शाप दे दिया है। परन्तु यह दुर्बलात्माओं का व्यवहार है। अपने पर अत्याचार होने पर वे दूसरों को गाली ही दे सकते हैं।

"मैं तुम सबके दोषों को जानता हूँ। इसलिये कहता हूँ कि दशग्रीव तुम्हारे मान का नहीं है। इस कारण अब तुम कुछ ऐसा प्रयत्न करो कि जिससे तुम्हारी रक्षा कोई दूसरा कर सके।

"मुझे यह पता चला है कि कोशल राज्य की राजधानी अयोध्या में एक यज्ञ किया जा रहा है। वहाँ का राजा दशरथ पुत्र की कामना करता हुआ पुत्रेष्टि-यज्ञ कर रहा है। यहाँ अश्विनी कुमार बैठे हैं। उनको चाहिये कि महाराज दशरथ की इसमें सहायता कर दें।

"पुत्रेष्टि-यज्ञ वहाँ के ऋषि भी सिद्ध कर देंगे, परन्तु जो यज्ञ से पुत्र बनने वाला है, वह आप सबकी रक्षा कर सके, ऐसी योजना अश्विनीकुमार ही कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह यहाँ से राजा की रानियों के लिये फल-पाक बनाकर भेजें तो राजा के घर में अति सुन्दर, बलवान, मेधावी और साहसी शरीर वाली सन्तान निर्माण हो सके। यदि यह ऐसा प्रबन्ध कर दें तो कोई परमात्मा की श्रेष्ठ विभूति से युक्त आत्मा उस कलेवर में चली जायेगी। तदनन्तर उसका राक्षसों से आमना-सामना कराने का प्रबन्ध किया जा सकेगा और भू-भार टल जायेगा।

"उस महापुरुष को सहयोग देने के लिये तुम लोग लंका के समीप के क्षेत्रों में चले जाओ और वहाँ जाकर श्रेष्ठ, बलवान सन्तान उत्पन्न करो। यही अमृत-मन्थन के समय किया गया था। तब नागों और देवताओं के सहयोग से यह संकट टला था। अब रीछ, वानर, गिद्ध इत्यादि जातियों से तुम अपना वीर्य सिंचन करो। तब ही इस संकट का निवारण हो सकेगा।"

ब्रह्मा की इस सम्मति पर कार्य करने के लिये देवता लोग परस्पर परामर्श करने लगे और अश्विनीकुमारों को फल-पाक तैयार करने के लिये कह दिया गया।

यह समाचार मुनि विश्रवा के आश्रम में भी पहुँचा कि देवता लोग दशग्रीव की हत्या कराने की योजना बना रहे हैं। इस समाचार से दशग्रीव की माता कैकसी को भय लग गया। उसने अपने पति से कहा, "महाराज! क्या देवताओं की यह योजना सफल होगी?"

"अवश्य होनी चाहिये। क्यों न हो?"

"इस कारण कि वह आपका पुत्र है। ब्रह्मा से कुशल योद्धा का प्रमाण पत्र-प्राप्त है और लाखों लड़ने-मरने वाले सैनिक उसके संकेत मात्र पर लड़ जाने वाले उसके पास हैं?"

"इस पर भी देवी! वह पापी है और उसका विनाश होगा ही।"

"तो कुछ उपाय नहीं है?"

"उपाय तो है। कोई पाप नहीं जिसका कि प्रायश्चित्त न हो।"

"तो भगवन्! उससे वह प्रायश्चित्त कराइये।"

"वह हमारा कहा नहीं मानेगा।"

"इस पर भी आप स्नेह रखने वाले पिता के नाते उसको सुमति दीजिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्रवा का विचार था कि रावण कोई भी अच्छी सम्मति को मानेगा नहीं। इस कारण उसने सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं सुश्रीणि ! मैं उसको सम्मति देकर और उसे अस्वीकार करा कर अपना अपमान नहीं कराना चाहता।"

कैकसी निराश नहीं हुई। इन दिनों कुबेर आश्रम में ही रह रहा था। अल्कापुरी में नलकूबर राज्य करता था। अतः कैकसी कुबेर की माता के पास पहुँची। उसने कहा, "रोहिणी बहन ! तुम तो दया की मूर्ति हो। एक दया का कार्य मेरे लिये भी कर दो।"

"हाँ, बताओ। क्या कहती हो ?"

"अपने सुपुत्र को कहकर मेरे पुत्र दशग्रीव को यह सम्मति भिजवा दो कि देवता लोग उसकी हत्या का कार्यक्रम विचार कर रहे हैं। इस कारण उसे अपने व्यवहार को शुद्ध कर देवताओं से सन्धि कर लेनी चाहिये। यदि वह अपने पूर्व के कर्मों पर पश्चात्ताप प्रकट करे तो निश्चय ही देवता उसके पहले के कार्यों को भूल जायेंगे और भविष्य में वे उसके अभ्युदय में सहायक हो जायेंगे।"

रोहिणी ने समझा कि यह तो बहुत अच्छा काम है। यदि वह इसमें सफल हो जाये तो सहस्रों निर्दोष सैनिकों की जान बच जायेगी। इससे वह महान पुण्य की भागी बन जायेगी।

अतः उसने उसने अपने पुत्र को बुला लिया। धनाध्यक्ष माँ की कुटिया में आया तो वहाँ विमाता को भी बैठे देख विस्मय में दोनों के चरण-स्पर्श कर हाथ जोड़ सामने खड़ा हो गया।

रोहिणी ने कहा, "कुबेर ! मुझे ज्ञात हुआ है कि ब्रह्माजी की सम्मति से यह निश्चय किया गया है कि महाराज दशरथ के घर में तुम्हारे भाई दशग्रीव की हत्या करने में समर्थ पुत्र उत्पन्न किया जाये।"

"हाँ, माताजी ! उसने शिष्ट-जनों के सब व्यवहार का उल्लंघन कर दिया है। वह युवा है, बलवान है और अमिट साहस रखने वाला जीव है। इस कारण इन सब गुणों में उससे श्रेष्ठ वीर योद्धा तैयार करने का आयोजन है।"

"यह ठीक है। उनको ऐसा करना ही चाहिये। परन्तु मैं यह चाहती हूँ कि तुम बड़े हो, विद्वान्, बुद्धिमान, दयालु और परिवार वालों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से स्नेह रखने वाले हो। तुम्हें अपने परिवार के भूल कर रहे सदस्य को समझाना चाहिये। मेरी यह कामना है कि तुम उसे अपने व्यवहार को सुधारने की सीख दो।"

"परन्तु माताजी ! वह मानेगा नहीं।"

"नहीं मानेगा तो उस न मानने का फल पायेगा। तुम्हारा तो कल्याण होगा कि तुमने अपने परिवार के एक प्राणी को दूषित मार्ग पर चलना छोड़ देने की सम्मति दी है।"

कुबेर मान गया कि वह इस दिशा में यत्न करेगा। उसने अगले ही दिन एक दूत अपने एक पत्र के साथ रावण के पास भेज दिया।

वह दूत कुबेर का पत्र लेकर लंका पहुँचा और वहाँ पहले विभीषण के पास गया। विभीषण को उसने अपने वहाँ आने का उद्देश्य बताया। विभीषण ने दूत की बात सुन कह दिया, "धनाध्यक्ष बहुत ही सरल-चित्त हैं। उसे ज्ञात होना चाहिये कि दशग्रीव किसी की बात नहीं मानते।"

"क्यों ?"

"उन्हें यह विश्वास हो गया है कि इस समय भूमण्डल में कोई भी व्यक्ति उनसे अधिक बलवान नहीं है। साथ ही यह बात भी वह जानते हैं कि लंका राज्य भूमण्डल के सब राज्यों से अधिक शक्तिशाली, शस्त्रास्त्र से सुसज्जित और धन-वैभव से युक्त है। इसके कोटि-कोटि सैनिक पूर्ण भूमण्डल पर काले बादलों की भाँति छाने में समर्थ हैं।

"ऐसी अवस्था में वह यह समझते हैं कि किसी का अधिकार नहीं कि उसे कुछ ऐसी बात करने को कहे जो वह करना नहीं चाहता।"

"इस पर भी मेरी यह इच्छा है कि हम अपने विचार से एक इतने सामर्थ्यवान व्यक्ति को सन्मार्ग दिखायें। यदि हम अपने उद्देश्य में सफल हो गये तो निस्सन्देह मानव-समाज के कल्याण करने का श्रेय हमको मिलेगा।"

विभीषण इच्छा न रखते हुए भी उक्त प्रेरणा की अवहेलना नहीं कर सका। वह तैयार हो गया और दूत को लेकर रावण के प्रासाद में जा पहुँचा। भीतर सूचना भेजने पर रावण ने इनको अपनी भरी सभा में ही बुला लिया। प्रहस्त, मारीच, दुन्दुभी इत्यादि सुभट्ट और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायावी, डिम्ब, डिमडिम इत्यादि माया-युद्ध में सिद्धहस्त सभा में उपस्थित थे।

विभीषण और कुबेर का दूत सभा में पहुँचे। विभीषण ने कहा, "महाराज! यह अपने बड़े भाई धनाध्यक्ष का भेजा हुआ दूत है। यह उनका एक सन्देश लेकर आया है। मैं इसे स्वयं वह सन्देश तुम्हें देने के लिये यहाँ ले आया हूँ।"

रावण ने भाई को बैठने के लिये भी नहीं कहा। उसने तुरन्त दूत को सम्बोधन कर कहा, "हाँ, बताओ! वह क्या कहता है?"।

"महाराज!" दूत अपने स्वामी और रावण के बड़े भाई को इस अनादर-युक्त ढंग से सम्बोधन किया जाता देख समझ गया कि उसका वहाँ आना निरर्थक है। परन्तु अब वहाँ आ जाने के उपरान्त बिना सन्देश सुनाये चला जाना उसे ठीक प्रतीत नहीं हुआ। अतः उसने कहा, "महाराज! मैं आपके बड़े भाई महाराज कुबेर धनाध्यक्ष का दूत हूँ। मुझे आज्ञा हुई है कि मैं आपसे यह निवेदन करूँ कि आपने जब से राज्य सम्भाला है तब से अनेकों व्यक्तियों के साथ अत्याचार किया है। आपने अगणित स्त्रियों से बलात्कार किया है और इस समय आपने लंका से लेकर विन्ध्याचल पर्यन्त सामान्य प्रजा को भी दुःखी कर रखा है। धनाध्यक्ष महाराज का यह कहना है कि आप अपना मार्ग ठीक करें। परमात्मा की प्रेरणा से यह राज्य आपके बड़े भाई ने आपको दिया है। इस कारण उनका अधिकार है कि आपको कहें कि आप अपने व्यवहार में सुधार करें।"

"और यदि मैं उनकी बात न मानूं तो?"

"तो देवता लोग यह यत्न कर रहे हैं कि न केवल आपका जीवन समाप्त कर दिया जाये, वरन् यह भी कि आपका नाम अनन्त काल तक भले लोगों से तिरस्कार और घृणा का पात्र बना रहे।"

"तो यह तुम मुझे शाप दे रहे हो?"

"महाराज! इसमें मैं कहाँ से आ गया? मैं तो केवल एक दूत होने के नाते वही कुछ कह रहा हूँ जो कुछ आपके बड़े भाई ने आपको कहने के लिये मुझे भेजा है।"

"बहुत धृष्टता कर रहे हो तुम। हम इसको सहन नहीं कर सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रहस्त ! इस व्यक्ति का सिर शरीर से पृथक् कर दो।"

पूर्व इसके कि दूत समझे कि क्या हो रहा है, प्रहस्त ने तुरन्त अपना खड्ग निकाला और दूत का सिर काट डाला।

सब राक्षस लंकाधिपति रावण की जय-जयकार कर उठे और विभीषण एक भी शब्द और कहे बिना वहाँ से चला गया।

इसके अगले दिन दूत का सिर एक कपड़े के थैले में लिपटा हुआ धनाध्यक्ष के निवास-स्थान में आ गिरा। कुबेर दूत के सिर को पहचान सब समझ गया। उस सिर को लेकर कुबेर अपनी विमाता के पास जा पहुँचा और सिर दिखाकर बता दिया कि यह उस दूत का सिर है जिसे मैंने आपका सन्देश देकर दशग्रीव के पास भेजा था।

कैकसी चुप कर रही।

: २ :

इस दूत की हत्या के उपरान्त रावण की सभा में इस कृत्य की देवलोक में प्रतिक्रिया पर विचार होने लगा। प्रहस्त का कहना था, "महाराज ! देवता इसका प्रतिशोध लेंगे।"

"वे नपुंसक मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

"वे लंका पर आक्रमण तो कर सकते हैं।"

"अब उनमें विष्णु जैसा शौर्यवान कोई नहीं है।"

"परन्तु महाराज ! एक महापुरुष के अभाव में सौ सामान्य व्यक्ति मिलकर उसके समान कार्य तो कर ही सकते हैं।"

प्रहस्त के इस कथन पर रावण ने पूछ लिया, "तो फिर आप क्या चाहते हैं ? मैं क्या करूँ ? मन्त्री प्रहस्त ही बतायें।"

प्रहस्त ने कह दिया, "महाराज ! मेरा यह कहना है कि युद्ध अपने राज्य में नहीं होना चाहिये। शत्रु के घर में जाकर लड़ना ठीक है। इस कारण देवलोक पर आक्रमण कर देना चाहिये।

"युद्ध तो अब होगा। इस कारण मेरी सम्मति यह है कि एकाएक देवलोक पर आक्रमण कर दिया जाये।"

यह तो रावण के मन की बात थी। अतः उसने कहा, "तो तैयारी कर दो।"

बस फिर क्या था। रण-भेरी बजा दी गयी और काले बादलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भाँति कृष्ण वर्ण राक्षसों की अपार सेना देवलोक की ओर उमड़ पड़ी। रावण अपने लड़के मेघनाथ को लेकर सेनानायक बन दो मास में देवलोक में जा पहुँचा।

सबसे पहले अल्कापुरी पर ही आक्रमण किया गया। धनाध्यक्ष ने डटकर आक्रमण का विरोध किया, परन्तु रावण की सेना बहुत अधिक थी और लड़ने का अभ्यास रखती थी। अल्कापुरी की सेना को लड़ने का अभ्यास नहीं था। जब से धनाध्यक्ष ने राज्य स्थापित किया था तो लोग शान्ति और सुख का जीवन व्यतीत करते रहे थे।

सेना राक्षस सेना के सामने टिक नहीं सकी। धनाध्यक्ष स्वयं लड़ने के लिये आया, परन्तु घायल हो अचेत हुआ तो उसके सेवक उसे उठा कर ले गये। रावण ने पूर्ण नगर को लूटा। वहाँ के स्त्री-वर्ग को अपने सैनिकों के हवाले कर दिया और कुबेर के पुष्पक विमान को अपने अधिकार में ले लिया।

अल्कापुरी के उपरान्त कैलाश पर आक्रमण कर दिया। यह महादेव शिव का देश था। शिवजी के गण लड़ने के लिये निकल आये। घमासान युद्ध हुआ। सहस्रों लोग दोनों पक्ष के मारे गये। अन्त में शिवजी से रावण का युद्ध होने लगा तो दोनों में संधि हो गयी।

रावण को समझ आया कि वह शिवजी पर विजय प्राप्त नहीं कर सकेगा। इस कारण रावण ने ही सन्धि का प्रस्ताव किया।

शिवजी ने भी समझा कि और अधिक रक्तपात की क्या आवश्यकता सरे देवताओं पर रोष था कि वह उसकी रक्षा के लिये नहीं आये।

इस प्रकार बारी-बारी से भिन्न-भिन्न देव-राज्यों को ध्वस्त करता हुआ यम, वरुण और अन्य देवताओं पर विजय प्राप्त कर उसने अमरावती पर धावा बोल दिया।

इन्द्र किसी अन्य देवता की सहायता के लिये नहीं निकला था और अन्य कोई देवता भी इन्द्र की रक्षा के लिये नहीं आया। इस पर भी अति भयंकर संग्राम हुआ। रावण पराजित होने वाला था कि मेघनाथ ने मायावी युद्ध कर इन्द्र को बन्दी बना लिया।

इन्द्र के बन्दी बना लेने पर जहाँ राक्षसों के नेता नाच-नाच कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्पर गले मिलने लगे वहाँ देवताओं में मुर्दनी छा गयी। रावण अमरावती को जला कर भस्म कर देने वाला था कि ब्रह्मा समाचार पाकर वहाँ चले आये और रावण तथा इन्द्र में सन्धि करवा दी। परस्पर मैत्री रखने के वचन हो गये और इन्द्र ने अपनी मुक्ति के मूल्य में एक दिव्य शक्ति भी मेघनाथ को दी।

अमरावती पर रावण की सेना की बहुत हानि हुई थी। राक्षस बहुत अधिक संख्या में मर गये थे।

पूर्ण देवलोक विजय होने पर भी रावण अपना वहाँ राज्य स्थापित नहीं कर सका। देवलोक शीत-प्रधान देश था। देवता लोग दिव्याग्नि से अपने नगरों और मकानों को रहने के योग्य बनाते थे। उसका रहस्य रावण नहीं जानता था। इस कारण उसने अपनी सेना के सेनापति से सम्मति की तो वह भी वहाँ से लौट चलने के लिये कहने लगा।

देवलोक का अपार धन लूटकर और वहाँ की सुन्दर स्त्रियों को बन्दी बना रावण लंका को चल पड़ा।

मार्ग में रावण ने अपने साथ आते हुए मायावी से कहा, "भैया! देवताओं में तो और कोई विजय करने योग्य रहा नहीं। अब भारत के आर्य राजाओं को सन्देश भेजकर अपने अधीन होने को कह दिया जाये।

"ये बेचारे तो मेरी देवलोक विजय की बात सुन ही भय से काँपते हुए पराजय स्वीकार कर लेंगे।"

मायावी भारत के राजाओं के विषय में अधिक जानता था। उसने कह दिया, "महाराज! इन दुर्बलों की हत्या करने से क्या बनेगा?"

"यदि वे हमें कर दे दें तो ठीक है। इनको सन्देश भेज दिया जाये तो ये हमारी अधीनता बिना लड़े ही स्वीकार कर लेंगे।"

"परन्तु महाराज! मानव नीतिमान हैं, और नीतिमान सदा विजयी होता है।"

"परन्तु मायावी! नीति तो हम भी जानते हैं। मैंने भी ब्रह्मलोक में युद्ध-नीति पढ़ी है।"

मायावी चुप हो रहा। रावण देवलोक की विजय से मदोन्मत्त हो रहा था। इस कारण वह मन में विचार करने लगा था कि भारत को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय कहाँ से आरम्भ करे ? विन्ध्याचल पर्वत तक तो उसके राक्षस लूट-मार और बरबादी मचाते रहते थे और विन्ध्याचल से उत्तर की ओर विन्ध्य प्रदेश में नर्मदा के किनारे महिष्मति नगरी पर उसकी दृष्टि गयी। उसने सुन रखा था कि महिष्मति अमरावती से भी अधिक सुन्दर नगरी है। वहाँ की धन-सम्पदा तो भारत की सब नगरियों से अधिक है। इस बात पर विचार करते ही उसके मुख से लार टपकने लगी। उसने अपना पुष्पक विमान उधर ही घुमा दिया।

पुष्पक विमान में उसके सेनापति और साथ कई सहस्र सैनिक थे। रावण का विचार था कि विन्ध्य राज्य को जीतने के लिये इतने सैनिक पर्याप्त हैं। वास्तव में वह तो अपनी पूर्व विजयों का भय दिखाकर ही महिष्मति के महाराज अर्जुन से कर प्राप्त करना चाहता था।

उसने अपना विमान नर्मदा नदी के तट पर उतार दिया और वहाँ से अपना एक दूत महिष्मति पुरी में राजा के प्रासाद पर भेज दिया। दूत मारीच था। उसने राजप्रासाद के द्वार पर जाकर महाराज से मिलने का अनुरोध किया।

द्वारपाल का कहना था, "महाराज इस समय नहीं मिल सकते।"

"क्यों ?"

"वह अपनी रानियों के साथ जल-विहार कर रहे हैं।"

"कब तक जल-विहार से अवकाश पायेंगे ?"

"आज वह नहीं मिलेंगे।"

"तो उनको सन्देश भिजवा दो।"

"हाँ, बताओ ?"

"लंका नरेश रावण जिसने देवलोक को विजय किया है, नर्मदा के किनारे ठहरे हुए हैं। वह चाहते हैं कि विन्ध्य प्रदेश के राजा तुरन्त उनसे आकर मिलें और उनकी भेंट-पूजा से स्वागत करें।"

द्वारपाल ने कहा, "सन्देश अभी भिजवा देता हूँ, परन्तु आज उनसे भेंट की सम्भावना नहीं है।"

इस पर मारीच ने आवेश में कह दिया, "यदि आज भेंट नहीं हुई तो हम आज इस सुन्दर नगरी को लूट लेंगे और यहाँ पर अपना राज्य स्थापित कर देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारीच द्वारपाल को इस प्रकार डरा-धमका कर अपने सेना-शिविर में लौट आया।

मारीच अभी शिविर पर पहुंच कर रावण को राजा के रानियों से जल-विहार करने की बात बता ही रहा था और रावण इत्यादि उसके जल-विहार की कथा को सुन ही रहे थे कि नर्मदा का जल चढ़ने लगा। देखते ही देखते, जहाँ वे लोग ठहरे हुए थे, वह स्थान पानी से घिर गया। रावण नदी में सामान्य बाढ़ आयी समझ किसी ऊँचे स्थान को ढूंढने लगा।

रावण और उसके सब साथी देख रहे थे कि नर्मदा का जल बहने से रुक गया है। मानो, कहीं बांध लगा दिया गया हो और चारों ओर जल-थल हो गया था। आधी घड़ी में ही यह हो गया और जल इतना अधिक हो गया कि वे तैरने लगे। उनके पांव भूमि से नहीं लगते थे। विमान में जल भर गया और वह उड़ने के योग्य नहीं रहा।

रावण की सेना तो डूबने लगी थी। वह भयभीत जिधर जिसको समझ आया, भाग खड़ी हुई। सैनिक अपनी-अपनी जान बचाने के लिये समीप की पहाड़ियों की ओर तैर कर जाने लगे थे। रावण और मारीच भी तैरते हुए जान बचाने की चिन्ता में थे कि नौकाओं में राजा अर्जुन के सुभट्ट आये और रावण तथा मारीच को बन्दी बनाकर राजप्रासाद में ले गये।

राजप्रासाद और महिष्मति पुरी एक पहाड़ी पर स्थित था। नगरी के लोग नगर के बाहर आ राक्षसों के तैर-तैर कर जान बचाने का दृश्य देख रहे थे। जो कोई भी राक्षस तट पर पहुँच पाता था, उसे पकड़ कर बन्दी बना लिया जाता था।

रावण और मारीच को बन्दी बना कर राजप्रासाद में लाया गया तो वही द्वारपाल जिसे मारीच सन्देश देकर गया था, अपने स्थान द्वार पर खड़ा मिला। उसने मारीच को झुककर प्रणाम किया और गम्भीर भाव में खड़ा रहा।

मारीच लज्जा से गरदन झुकाये समीप से निकल गया। रावण उसके आगे-आगे था। दोनों को एक ही आगार में बन्दी बना रखा गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज अर्जुन से तो भेंट अगले दिन ही हुई। दोनों बन्दियों को राज्य-सभा में उपस्थित किया गया। जब दोनों बन्दी सामने उपस्थित हुए तो राजा ने लाने वाले से पूछा, "ये कौन हैं ?"

"महाराज ! कल ये अपने साथ दो सहस्र के लगभग सैनिकों को एक बृहत्काय विमान में लिये हुए नर्मदा के किनारे पर उतरे थे। इनमें जो यह कुछ छोटे कद का व्यक्ति है, राजप्रासाद के बाहर द्वारपाल से कहने आया था कि वह लंकाधिपति रावण का दूत है। रावण की आज्ञा से वह आया है और रावण चाहता है कि महाराज तुरन्त उसके पास भेंट-पूजा लेकर पहुँचें। यदि नहीं पहुँचेंगे तो ये पुरी पर आक्रमण कर देंगे। पुरी को लूट लेंगे और यहाँ के राजा को वन्दी बना अपने साथ ले जायेंगे।"

"तो तुम लंकाधिपति हो ?" राजा ने दशग्रीव से पूछा।

दशग्रीव अपराधियों की भाँति सामने खड़ा क्रोध से लाल-पीला हो रहा। परन्तु उसके हाथ पीठ के पीछे सुदृढ़ रस्सों से बँधे हुए थे। विवश उसने कहा, "हाँ।"

"प्रमाण ?"

"नदी के किनारे खड़ा पुष्पक विमान जो देवलोक की विजय पर मुझे मिला है।"

"तो उस खिलौने को पाकर तुम समझते हो कि तुम्हारा अधिकार हो गया है कि सबसे भेंट-पूजा प्राप्त करो ?"

रावण चुप रहा।

"हम चाहें तो तुम्हारे विमान को आधे पल में फूँक मार कर भस्म कर सकते हैं। हम तो तुम सब को वहीं अपने अग्निबाण से फूंक भस्म कर सकते थे। परन्तु हमने समझा कि तुम्हारा यह खिलौना टूट गया तो तुम रोने लगोगे और यदि तुम सबको मार डाला तो तुमको दण्ड नहीं मिलेगा। इस कारण हमने अपने किंचित् मात्र प्रयत्न से तुम्हें बन्दी बनाना ही उचित समझा है।"

"तो यह आपने हमें बन्दी बनाया है क्या ? यह तो नदी की बाढ़ ने हमें विवश कर दिया है।"

"नहीं दशग्रीव ! यह हमारी ही योजना थी। हमने नदी को बहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से रोक दिया था। हम जानते थे कि तुम डूब कर मर जाओगे, परन्तु हम तुम्हें इस प्रकार अपने सामने बन्दी बने खड़ा देखना चाहते थे।

"सुनाओ, कल रात और आज प्रातः खाने-पीने को कुछ मिला है अथवा नहीं ?"

रावण ने कुछ उत्तर नहीं दिया। मारीच बोल पड़ा, "श्रीमान् ! हम भी एक विस्तृत देश के राजा हैं। हमने अपने शौर्य से देवलोक विजय किया है और हम आशा करते हैं कि हमारे साथ राजाओं का-सा व्यवहार किया जाये।"

"ठीक है। आप जैसे श्रीमानों को तो बन्दी बना रखा जाना चाहिये, जब तक आपके मूल्य की राशि न मिल जाये।"

"कितनी धन-राशि चाहिये ?"

"सात कोटि स्वर्ण मुद्रा और लिखित क्षमा-याचिका। उस याचिका में यह शर्त कि आप पुनः विन्ध्याचल पार कर इस राज्य में पाँव नहीं रखेंगे।"

"यह हम नहीं देंगे। हमारी सेना के सेनाध्यक्ष राजकुमार मेघनाथ इधर से ही लंका लौट रहे हैं और यदि उसे पता चल गया कि हम बन्दी हैं तो वह इस देश पर आक्रमण कर देगा। तब यहाँ की ईंट-से-ईंट बजा देगा।"

"आने दो। राजन, उसे कहलवा भेजो कि इधर न आये, अन्यथा वह भी आपकी भाँति पकड़ बन्दी बना लिया जायेगा और फिर आपके ही आगार में रखा जायेगा। परिणाम यह होगा कि उस छोटे-से आगार में तीन व्यक्तियों के रहने से कष्ट आपको भी होगा।

"देखो रावण ! तुम्हारे दो सहस्र सैनिकों में से डेढ़ सहस्र जल-प्लावन में डूब कर मर गये हैं। यदि पूर्ण सेना भी तुम्हारे साथ होती तो उसका भी तीन-चौथाई भाग विनष्ट हो चुका होता। यदि अब तुम्हारे राजकुमार यहाँ आयेंगे तो तुम्हारा वंश ही निःशेष हो जायेगा। अभी वंश तो चल रहा है।

"हमारी सम्मति मानो। अपने छूटने का मूल्य दे दो और चल दो।"

इसके उपरान्त बन्दियों को पुनः बन्दी-गृह में डाल दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बात भूमण्डल में विख्यात हो गयी कि लंकाधिपति को विन्ध्य प्रदेश के राजा अर्जुन ने बन्दी बना रखा है। यह सूचना विश्रवा-आश्रम में भी पहुँची। कैकसी को जब यह पता चला कि रावण बन्दी बना लिया गया है तो वह अपने पति के पास पहुँची और उसे कहने लगी कि उसके पुत्र को छुड़ाना चाहिये।

"मैं क्या कर सकता हूँ?"

कैकसी जानती थी कि राजा अर्जुन मुनिजी का शिष्य रह चुका है और कभी-कभी गुरुजी से उपदेश लेने आश्रम में आया करता है। इस कारण कैकसी ने पति से कहा, "भगवन्! राजा अर्जुन आपका शिष्य है। अतः आप अपने पुत्र की सिफारिश करेंगे तो वह छोड़ दिया जायेगा।"

इस पर मुनि ने कहा, "मैं विचार करता हूँ कि मैं तुम्हारे पुत्र की सिफारिश किस कारण करूँ?"

"तो क्या पुत्र होना पर्याप्त कारण नहीं कि आप उसके जीवन की रक्षा करें?"

"जीवन तो उसका बना है। मुझे विश्वास है कि अर्जुन उसकी हत्या नहीं करेगा और खाने-पीने को भी मिलेगा।"

"परन्तु भगवन्! यदि उसे वहाँ बन्दी-गृह में सुख-सुविधा रहेगी तो फिर उसे बन्दी बनाया ही किसलिये गया है?"

"इस कारण कि वह किसी अन्य को हानि न पहुँचा सके।"

"नहीं भगवन्! आप उससे वचन ले लीजिये कि वह राजा अर्जुन का कहा मानेगा। अर्थात् दोनों में संधि करवा दीजिये।"

कैकसी ने पति को विवश कर दिया कि वह रावण को छोड़ देने का अपने शिष्य को आदेश दे।

विश्रवा स्वयं विन्ध्य प्रदेश में गया और उसके कहने पर राजा ने धन की माँग वापस ले ली और पुनः आक्रमण न करने का वचन ले रावण इत्यादि को मुक्त कर दिया गया।

: ३ :

एक दिन कुलवन्तसिंह उद्विग्न मन घर पर आया। महिमा यद्यपि गर्भवती हो चुकी थी और कुछ अस्वस्थ रहने के कारण स्कूल का कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भली-भाँति नहीं कर पाती थी, इस पर भी वह नियम से स्कूल जाती थी और वहाँ पढ़ाई भी कराती थी।

सुन्दरी और पण्डित सुरेश्वर बिलासपुर को लौट गये थे। करोलबाग वाले मकान में पूर्ववत् महिमा उसकी बहन गरिमा और उसके दोनों बच्चे रहते थे।

इस दिन कुलवन्त आया तो उसका मुख उतरा हुआ था। यह बात युद्ध-समाप्ति के पाँच मास उपरान्त की थी। ताशकन्द समझौता और भारत के प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का देहान्त हो चुका था। पति को उदास और पीत मुख देख गरिमा ने पूछ लिया, "क्या बात है जी? बहुत उदास प्रतीत होते हैं?"

"हाँ! मैंने विशेष यत्न किया था, अमृत के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये। अपने एयर कमाण्डर के एक गहरे मित्र यार मुहम्मद पाकिस्तानी वायु-सेना के कमाण्डर हैं। मैंने उनको अमृत की पूर्ण दुर्घटना बतायी तो उन्होंने अमृत का पता कर देने के लिये अपने मित्र को लिखा था। उसने जाँच करायी होती है और कमाण्डर यार मुहम्मद का पत्र आया है। उसने लिखा है कि लायलपुर राडार पर आक्रमण के दिन एक हिन्दुस्तानी जहाज भूमि पर से की गयी गोलाबारी से निशाना बना था। वह जहाज़ हिन्दुस्तान की ओर भागा था। यह सूचना है कि लायलपुर से बीस-बाईस मील के अन्तर पर उस जहाज़ में किसी प्रकार के विस्फोट होने से जहाज़ विनष्ट हो था। उसका पायलट पैराशट से नीचे उतरा था, परन्तु समीप के गाँव वालों ने पकड़कर उसे तुरन्त मार डाला था।"

"तो यह पक्की खबर है?"

"हाँ। हमारा कमाण्डिंग अफसर कहता है कि यार मुहम्मद उससे झूठ नहीं बोल सकता। उसने लिखा है कि उसके आदमी उस गाँव में गये हैं और वहाँ से अमृत की डायरी और अन्य वर्दी के चिह्न लाये हैं। इससे अमृत के विषय में तो बात पक्की ही समझनी चाहिये।"

गरिमा ने कहा, "परन्तु आप यह सूचना महिमा को नहीं दीजियेगा।"

"आखिर उसे पता तो चलेगा ही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह अभी भी अपने मन में एक धीमी-सी आशा रखती है और मैं समझती हूँ कि बच्चा होने तक तो यह आशा बनी ही रहनी चाहिये। पीछे यह सूचना दी जा सकेगी। दीदी एक दिन कह रही थी कि वह जीवित हैं। कहीं किसी स्त्री के चक्कर में पाकिस्तान में मुसलमान बन रहे हैं।"

कुलवन्त ने मुस्कराते हुए कहा, "उसे अपने पति की निष्ठा पर सन्देह अमिट बना हुआ है।"

"तो क्या आप समझते हैं कि वह सुधर चुके थे?"

"वह आठ-दस दिन ही तो मेरे अधीन यहाँ रहा है। मेरा उससे किसी प्रकार का घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं बना था और मैं कह नहीं सकता कि वह कैसा जीवन व्यतीत करता था।"

"कुछ भी हो, यह सूचना, कम-से-कम अभी तो नहीं देनी चाहिये।"

इस पर कुलवन्त ने एक दूसरी सूचना दे दी। उसने कहा, "मुझे कदाचित् इंगलैण्ड भेजा जायेगा। वहाँ ट्रेनिंग के लिये बीस चुने हुए व्यक्ति जा रहे हैं। मेरा नाम भी उनमें है।"

"कितने काल के लिये यह ट्रेनिंग होगी?"

"यह अभी निश्चय नहीं। इस पर भी यह विचार किया जा रहा है कि यह प्रशिक्षण तीन से छः महीने तक होगा।"

"तो मुझे भी साथ चलना होगा?"

"मैं समझता हूँ कि यह सम्भव नहीं होगा।"

इस पर गरिमा का मुख उतर गया। उसे उदास देख कुलवन्त ने पूछ लिया, "तो कहाँ रहोगी?" वह पत्नी का ध्यान छः मास के वियोग से हटा कर पीछे रहने के प्रबन्ध के विषय में विचार करने पर लगाना चाहता था।

गरिमा ने कहा, "इच्छा तो यह है कि आपके साथ ही चलूँ। मौसी, यहाँ आ दीदी के साथ रहना चाहती हैं और प्रसव काल के एक मास पूर्व उसे बिलासपुर में ले जायेंगी।

"यदि आपके साथ चल सकती तो मौसीजी को जल्दी आने के लिये लिख देती।"

"बात यह है कि लन्दन अथवा किसी भी नगर से दूर रहना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ बैरक्स में तुम्हें ले जाकर रखूंगा तो तुम्हें कष्ट होगा और फिर 'हेड क्वार्टर' से दूर भी जाना पड़ा करेगा।"

"मैं समझता हूँ कि दीदी को बिलासपुर ले जाने के स्थान यहाँ ही किसी हस्पताल में प्रसव का प्रबन्ध करो तो ठीक है।"

"तब तो मेरा यहाँ रहना सार्थक हो जायेगा।"

"मैं चाहता हूँ कि तब तक मैं बाबा की शेष कथा भी पढ़ डालूं।"

"परन्तु आपको समय भी तो मिले ?"

"बात यह है कि इस पाकिस्तान के युद्ध के उपरान्त हमें अपनी सुरक्षा-सम्बन्धी बहुत-सी त्रुटियों का ज्ञान हो गया है और उसके लिये रात को उड़ान और बम्बबाज़ी तथा रात के समय हवाई जहाज़ों पर गोलाबारी के अभ्यास अधिक हो गये हैं। सप्ताह में एक-आध दिन ही तो समय पर घर आ पड़ सकता हूँ।"

"तो आप आशा कर रहे हैं कि पुनः युद्ध होगा ?"

"ताशकन्द के समझौते से दोनों पक्ष असन्तुष्ट हैं। इससे युद्ध अवश्यम्भावी है।"

"यदि अब पाकिस्तान से युद्ध हुआ तो अधिक भयंकर होगा।"

"यह बात तो बाबा की कथा में लिखी है कि यदि रावण के लंका में आते ही उसको बन्दी बना लिया जाता तो पीछे देवलोक में हुई अपार हत्यायें न होतीं। कुबेर को ही चाहिये था कि उस समय रावण के निवास-स्थान पर सैनिक भेज एकत्रित भीड़ को तितर-बितर करा देता।

"परन्तु यह भी वहाँ लिखा है कि सैनिक सब-के-सब राक्षस थे। साथ ही राक्षस सेना तो अपने भाई-बन्धुओं पर आक्रमण करने के स्थान कुबेर को ही पकड़ लेती।

"अर्थात् सेना में अपने भक्तों को ही भरती करना चाहिये। जिस देश में दो जातियों के लोग बसते हों वहाँ अपने से अन्य जाति के लोग सेना में भरती नहीं करने चाहियें।"

"आजकल तो यह बात असिद्ध हो चुकी है। अंग्रेजी काल में अंग्रेजी सेना में हिन्दू और मुसलमान दोनों सरकार के प्रति निष्ठा और भक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते थे और प्रायः अंग्रेजी सिपाहियों से अधिक बहादुरी से लड़ते थे।"

"देखो गरिमा !" कुलवन्त ने अपने मन की बात बता दी, "हिन्दुस्तान में चिरकाल से राज्य की भक्ति का विचार प्रचलित है। कदाचित् यह विचार हिन्दू काल से ही चला आता है। तब राजा और प्रजा सजातीय होते थे।

"यही प्रथा मुसलमानी काल में भी चली आयी थी। पठानों और मुगलों के हिन्दू सिपाही भी जी-जान से लड़ते थे।

"यह तो मुसलमानों की प्रथा है कि वह गैर-मुसलमान राजाओं के प्रति वफादार नहीं होते। इस पर भी हिन्दुस्तानियों के रक्त में राजा की भक्ति परमात्मा की भक्ति के समान समझी जाती है।

"अंग्रेजी राज्य में जब राजा ने हिन्दुस्तानियों से घृणा करनी आरम्भ की और उनके साथ दुर्व्यवहार करना आरम्भ किया तो हिन्दुस्तानियों में आत्म-सम्मान की भावना उत्पन्न होने लगी।

"प्रथम और द्वितीय विश्व-व्यापी युद्धों में हिन्दुस्तानी सिपाही अंग्रेजों से अधिक शौर्य का प्रदर्शन करते रहे, परन्तु अंग्रेज अफसर उनसे घृणा करते हुए उनको अपने से छोटा समझते रहे। परिणाम-स्वरूप सेना में इसकी प्रतिक्रिया हुई।

"सन् १८५७ के भारत-अंग्रेज युद्ध में भी अंग्रेजों की हिन्दुस्तानियों के प्रति घृणा ही कारण थी। उस समय कई कारणों से भारतीय पक्ष की पराजय हुई थी, परन्तु द्वितीय विश्व-युद्ध के उपरान्त तो सेना के विद्रोह में भारत की सामान्य जनता भी सम्मिलित हो गयी थी।

"बम्बई, जबलपुर तथा एक सीमा तक कराची में बगावत हुई तो पूर्ण देश में विद्युत्-तरंग के तुल्य चंचलता उत्पन्न हो गयी। अंग्रेज डर गया और उसने राज्य छोड़ विलायत को कूच कर दिया।"

"तो अंग्रेज़ ने भी कुबेर की भाँति समझ लिया कि सेना उनकी रक्षा नहीं करेगी ?" गरिमा ने कह दिया।

"हाँ।" कुलवन्तसिंह ने स्वीकार करते हुए कहा, "अंग्रेज़ ने भी समझा था कि भारत रूपी लंका पर यहाँ के निवासियों की सहायता से ही राज्य चल सकेगा। जैसे कुबेर ने भारी संख्या में सजातीय वहाँ बसा कर राक्षसों से एकमत होने की योजना नहीं बनायी थी, इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार अंग्रेज ने यहाँ रहकर यहाँ के लोगों से एकरूपता उत्पन्न करने का यत्न नहीं किया था। परिणाम यह हुआ था कि हिन्दुस्तानी और अंग्रेज़ एक नहीं हो सके। प्रजा और राजा में एकरूपता उत्पन्न नहीं हो सकी और इनको भी कुबेर की भाँति यहाँ से जाना पड़ा है।"

"परन्तु क्या हिन्दुस्तानी भी रावण के देवलोक पर आक्रमण की भाँति इंगलैण्ड पर आक्रमण करेंगे ?"

"यह आवश्यक नहीं कि इंगलैण्ड पर धावा बोला जाये। परन्तु हिन्दुस्तानियों ने भूमण्डल पर से अंग्रेज की प्रतिष्ठा को समाप्त करने में भारी यत्न किया है। अंग्रेज़ युद्ध के उपरान्त उतनी उन्नति नहीं कर सका, जितनी कि पश्चिमी जर्मनी, जापान और फ्रांस ने कर ली है। इसमें मुख्य कारण यह रहा है कि अंग्रेज़ की प्रतिष्ठा कम करने में हिन्दुस्तानी यत्न करते रहे हैं।"

"मैं तो यह समझ रही हूँ कि लंका-विजय के समान पाकिस्तान भी विजय होगा। परन्तु यह कैसे हो सकेगा, अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।

"वैसे जो व्यवहार देवताओं से रावण और उसके सजातीयों ने किया था, बहुत सीमा तक वही व्यवहार पाकिस्तानियों ने भारत से करना आरम्भ कर दिया है।

"पहले से अब स्थिति में अन्तर आ गया है। पहले धर्म और अधर्म-युक्त व्यवहार के आधार पर जातियाँ मानी जाती थीं। मनु की सन्तान सूर्यवंशीय और चन्द्रवंशीय देवताओं का पक्ष लेती थी। यह इस कारण कि उनके साथ धर्म का सम्बन्ध है। इन मानवों की धर्म-व्यवस्था वही है जो देवताओं की है। देवताओं को भी राक्षसों से युद्ध में मानव ही सहायक मिले थे।

"आज धर्म-अधर्म का नाता नहीं रहा। आज देश में पैदा होने का नाता बन गया है। देश-प्रेम तो कदाचित् तब भी था। अपने देश के जलवायु और देखे-भाले स्थानों और परिजनों से परिचय इस प्रेम का मूल था, परन्तु इसके लिये युद्ध नहीं होते थे। युद्ध होते थे जीवन के विधि-विधान पर। इसे ही धर्म कहते थे।

"यही कारण था कि देशों में सीमायें नहीं थीं। एक देश के लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना पासपोर्ट और परमिट के देश-विदेश में आते-जाते थे। दैवी और राक्षसी वैमनस्य भी तो इसी आधार पर था। दोनों के जीवन चलाने के विधि-विधान भिन्न-भिन्न थे।

"ऐसा प्रतीत होता है कि यह बात पुनः प्रचलित होने वाली है। कम्युनिस्ट जीवन-मीमांसा और स्वतन्त्र जीवन-मीमांसा में संघर्ष होने की सम्भावना प्रतीत होती है।"

इस समय महिमा ऊपर चली आयी और अपनी बहन के पास बैठकर बोली, "आज मैं स्कूल से थकी हुई आयी थी तो चाय लेकर सो गयी थी। सोये हुए मुझे स्वप्न आया है कि गरिमा के जीजाजी पाकिस्तानी सीमा पार करते हुए पाकिस्तानी सिपाहियों से पकड़कर वापस कराची भेज दिये गए हैं।"

"कौन-सी सीमा थी ?"

"मैं सीमावर्त्ती क्षेत्रों को पहचानती तो हूँ नहीं। इस पर भी ऐसा दिखायी दिया था कि वह रेगिस्तानी क्षेत्र था। जब वह पकड़े गये तो लेट गये। लेटते समय यह समझ आया कि वह स्थान रेतीला था।"

कुलवन्त को गरिमा की बात स्मरण थी। उसने बात बनाकर कह दिया, "पर वह वहाँ रेगिस्तान में कहाँ जा पहुँचे ? वह तो सियालकोट के क्षेत्र में जहाज़ से कूदे थे।"

"हाँ। परन्तु मैं विचार करती हूँ कि युद्ध बन्द हुए पाँच मास से ऊपर हो चुके हैं। पाँच मास में तो मनुष्य तीन हज़ार मील की यात्रा कर सकता है और सियालकोट से सिन्ध तो चार सौ मील से कम ही है।"

कुलवन्त ने दीर्घ श्वास लेते हुए कहा, "भगवान् करे कि वह मिल जाये। यदि वह जीवित है तो ताशकन्द समझौते के अनुसार भारत भेज दिया जाना चाहिये।"

"मेरा मन कहता है कि वह जीवित हैं।"

"मैं अपने उच्चाधिकारियों को पुनः लिखूँगा।"

इस समय गरिमा ने बात बदल दी। उसने कहा, "दीदी! तुम्हारे जीजाजी किसी प्रकार के प्रशिक्षण के छिये इंगलैण्ड भेजे जा रहे हैं।"

"अच्छा। तो तुम भी साथ जाओगी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे लिये ग्राज्ञा है कि दीदी के पास ही रहूँ।"

"क्यों ? किसने ग्राज्ञा दी है ?"

ग्रब कुलवन्त ग्रौर गरिमा हँस पड़े।

: ४ :

कुलवन्तसिंह ने ग्राज पुनः बाबा द्वारा कही कथा की फाइल निकाली ग्रौर पढ़नी ग्रारम्भ कर दी।

रावण के विन्ध्य प्रदेश के राजा ग्रर्जुन द्वारा बन्दी बनाये जाने के समाचार की भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रितिक्रियायें हुईं। देवलोक में इन्द्र को पता चल गया कि राजनीति ग्रौर युद्ध-नीति में कहाँ ग्रन्तर है ? जहाँ राजनीति ग्रपने राज्य में रहने वालों से सम्बन्ध रखती है ग्रौर वह देश तथा जाति में प्रचलित धर्मानुसार होती है, वहाँ शत्रु के साथ नीति भिन्न होती है। वहाँ युद्ध में माया (छलना) का व्यवहार क्षम्य है। मेघनाथ ने इन्द्र को भी माया से ही बन्दी बनाया था। कुछ राक्षस सैनिकों को देवताग्रों के पहरावे में इन्द्र के पास भेज दिया ग्रौर इन्द्र को कहा गया कि देवताग्रों ने रावण की सर्वश्रेष्ठ नर्तकी को बन्दी बना लिया है ग्रौर वह राजा इन्द्र को ग्रपना नृत्य ग्रौर संगीत सुनायेगी। इन्द्र छलना में ग्रा गया ग्रौर ग्रपने थोड़े-से साथियों के साथ नृत्य देखने चला गया। वहाँ मेघनाथ ने उसे ग्रनायास ही बन्दी बना लिया।

इन्द्र ने जब राजा ग्रर्जुन की कथा सुनी कि नर्मदा के जल को बाँध लगा रोक दिया गया तो उस पूर्ण क्षेत्र में बाढ़ ग्रा गयी ग्रौर बिना एक भी तीर चलाये रावण के तीन-चौथाई सैनिक डूब गये। पुष्पक विमान जल भर जाने से बेकार हो गया ग्रौर रावण डूबता-डूबता बचा कर बन्दी बना लिया गया।

इन्द्र को समझ ग्राया कि ग्रार्य राजे देवताग्रों से नीति में बाज़ी ले गये हैं। ग्रतः उसने ग्रार्यों को ही राक्षसों से भिड़ा देने की योजना पर विचार करना ग्रारम्भ कर दिया।

देवताग्रों में नारद का सम्पर्क पूर्ण भूमण्डल से था। ग्रतः उसे बुलाया गया ग्रौर सम्मति होने लगी कि किस प्रकार दुष्ट रावण के भार से पृथिवी को मुक्त किया जाये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारद ने बताया, "इन्द्रराज ! आज से बीस वर्ष पूर्व जब धनाध्यक्ष ने बिना युद्ध के लंका रावण के हाथ में दे दी थी तो ब्रह्मा ने एक योजना निर्माण की थी। उस योजना में अश्विनी कुमारों से सहायता ली गयी थी।

"राजा दशरथ कोशल नरेश ने पुत्रेष्टि-यज्ञ किया था। वह पचपन वर्ष का हो गया था। तब उसकी सबसे छोटी रानी भी चालीस वर्ष की थी। उसकी तीनों रानियों में किसी के घर भी सन्तान नहीं थी।

"महर्षि शृंगी ने यज्ञ कराया था। उस यज्ञ में अश्विनी कुमारों ने यहाँ से एक पाक बना कर राजा के यज्ञ में भेजा था और उसे राजा दशरथ ने अपनी पत्नियों को खाने को दिया था।

"बड़ी रानी पचास वर्ष से ऊपर की आयु की थीं। उसके गर्भ से एक अति तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ था। दूसरी रानी सुमित्रा के दो पुत्र हुए थे और तीसरी रानी के भी एक पुत्र हुआ था।

"चारों भाई दैवी गुणों से सम्पन्न और राक्षसों से युद्ध करने में समर्थ हैं। परन्तु उनके पास अभी तक न तो दिव्यास्त्र हैं और न ही उनमें उन दिव्यास्त्रों के प्रयोग की योग्यता है।

नारद ने आगे बताया, "मैंने पितामह को उनकी योजना स्मरण करायी तो वह कहने लगे कि राजा दशरथ का बड़ा लड़का राम रावण को पराजित कर सकेगा। अतः उसे ब्रह्मास्त्र प्रयोग करने का ढंग सिखाने का प्रबन्ध करना चाहिये।

"इस समय गंगा के दक्षिण की ओर विन्ध्याचल की तलहटी के वन में राजर्षि विश्वामित्र तपस्या कर रहे हैं। उनके पास बहुत-से दिव्यास्त्र हैं। उनके पास मैं जा रहा हूँ और ऋषिजी को उन अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग का ढंग राम को बता देने का आग्रह करूँगा।

"परन्तु मेरा अनुमान है कि रावण को परास्त करने के लिये विश्वामित्र के अस्त्र-शस्त्रों से काम नहीं चलेगा। इसमें आप भी कुछ सहायता कर दें।"

इन्द्र ने कहा, "बात यह है कि ब्रह्मा के सम्मुख मेरी रावण से सन्धि हो चुकी है। हम मित्र हैं। इस कारण मैं रावण का विरोध प्रत्यक्ष रूप में नहीं कर सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है। उससे आपको युद्ध नहीं करना चाहिये। परन्तु आप ऐसे दिव्यास्त्र तो राम के पास पहुँचा ही सकते हैं जो राम जैसे युवक प्रयोग कर सकें।"

"ठीक है। मैं विचार करूँगा। दण्डक वन में एक शरभंग ऋषि का आश्रम है। एक समय यह शरभंग सुमाली इत्यादि से पीड़ित महादेव के पास पहुँचा था। तदनन्तर वहाँ से सहायता न पा वह धौम्य मुनि की सहायता से विष्णु के पास गया था।

"माल्यवान इत्यादि राक्षसों के लंका से भगा देने के उपरान्त वह दण्डक वन में रहता हुआ तपस्या कर रहा है। उसे मैं अपने शस्त्रास्त्र दे सकूँगा। वह इस योग्य है कि उनके चलाने का ढंग सीख और सिखा सके।"

"तो ऐसा करिये कि आप शरभंग ऋषि से सम्पर्क बनाइये और मैं विश्वामित्रजी से बातचीत करता हूँ।"

नारद विश्वामित्र के पास मलद और कुरुष नगरों के उजड़ जाने पर बने वन में जा पहुँचा। विश्वामित्र यज्ञ कर रहा था। उसके कुछ शिष्य भी उसके यज्ञ में सम्मिलित हो रहे थे।

नारद को विश्वामित्र पहचानता था। अतः उसे आया देख विश्वामित्र यज्ञ-वेदी से उठा और देवर्षि के चरण-स्पर्श कर उन्हें आदर-युक्त आसन पर बैठाकर हाथ जोड़ पूछने लगा, "भगवन्! कैसे आना हुआ है?"

"आपसे एक कार्य है। मैंने सुना है कि आप इस भयंकर वन में बैठे यज्ञ कर रहे हैं और यहाँ पर राक्षसों ने विघ्न और बाधायें डालनी आरम्भ कर दी हैं।"

"हाँ, भगवन्! वे नित्य यज्ञ को भ्रष्ट कर जाते हैं। वे मुझे और मेरे शिष्यों को तो हानि पहुँचा नहीं सकते। मैं अपनी रक्षा के लिये अपने शस्त्रास्त्र प्रयोग कर लेता हूँ। परन्तु यज्ञ पर बैठे हुए मैं किसी की हत्या नहीं कर सकता।"

"हाँ।" नारद ने कह दिया, "मैंने ऐसा ही सुना है और मैं आपकी सहायता के लिये आया हूँ।"

"आज्ञा करिये। मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो, ऋषिवर ! तुम्हें कोई क्षत्रिय कुमार चाहिये जो तुम्हारे शस्त्रों का प्रयोग कर सके और फिर इस वन को राक्षसों से मुक्त करा सके।"

"यह तो ठीक है। परन्तु मुझे भय है कि वह मेरे अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग सीखकर भले लोगों को ही कष्ट देना आरम्भ न कर दे।"

"ऋषिवर ! कोशल राज्य की राजधानी अयोध्या में राजा दशरथ का बड़ा पुत्र राम और उसका छोटा भाई लक्ष्मण बीस-इक्कीस वर्ष के युवक हैं। बहुत श्रेष्ठ स्वभाव रखते हैं। उनको तुम राजा दशरथ से माँग लाओ और उनको शिक्षा देकर तैयार करो। वे तुम्हारे यज्ञ के निर्विघ्न होने में सहायक हो जायेंगे। वे धर्मात्मा राजा के पुत्र धर्म की रक्षा करेंगे।"

"परन्तु महाराज दशरथ अपने पुत्रों को यहाँ इस भयंकर वन में भेजना पसन्द नहीं करेंगे।"

इसका प्रबन्ध मैं कर दूंगा। तुम राजा के पुरोहित वशिष्ठजी के सामने राजकुमारों को यज्ञ की रक्षा के लिये माँग लेना। महर्षि वशिष्ठ तुम्हारी सहायता कर देंगे। पुरोहित की बात राजा टाल नहीं सकेगा।"

इस प्रकार योजना बन गयी। उसी दिन विश्वामित्र अयोध्या के लिये चल पड़ा।

उस दिन बाबा की कथा पर भृगुदत्त ने कह दिया, "परन्तु बाबा ! कुछएक लेखकों ने यह विख्यात किया है कि राम शृंगी ऋषि के कौशल्या से नियोग की सन्तान है ?"

बाबा ने कहा—"ऐसा किसी प्रामाणिक ग्रन्थ में लिखा नहीं मिलता। यदि यह बात होती तो महर्षि वाल्मीकि इस बात को लिख देने में संकोच न करते। प्राचीन काल में शिष्ट परिवारों में नियोग की प्रथा प्रचलित थी।

"इसमें पुरुष से समागम केवल सन्तान के लिये ही किया जाता था। वासना-तृप्ति के लिये नहीं। सन्तान होने पर पुरुष-स्त्री का सम्पर्क छूट जाता था।

"धृतराष्ट्र इत्यादि और पाण्डवों का नियोग की सन्तान होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निन्दा की बात नहीं मानी जाती थी। यदि राम भी ऐसी सन्तान होता तो बाल्मीकि इसे छुपाते नहीं। यह लज्जा की बात नहीं मानी जाती थी।"

"परन्तु आजकल तो इसे ठीक नहीं माना जाता ?"

"हाँ। यह प्रथा है। आर्यों ने इसको जारी रखना उचित नहीं समझा। आजकल इसे वर्जित माना गया है।"

"यह क्यों ?"

"निश्चय से तो इसका कारण नहीं बता सकता। इस पर भी हिन्दू-समाज के धर्म-शास्त्रियों ने इस प्रथा का दुरुपयोग होते देखा होगा तो इसे बदल दिया होगा। आज उसके स्थान पर विधवा-विवाह स्वीकार कर लिया गया है।"

"तो विवाह की प्रथा धर्म का अंग नहीं है ?"

"है। परन्तु विवाह करना अथवा न करना, एक करना अथवा दो या अधिक विवाह करना, ये धर्म हैं जो देश, काल, अवस्था इत्यादि के साथ बदले जा सकते हैं। इनके बदलने से सनातन धर्मों में अन्तर नहीं पड़ता।"

"तो राम नियोग की सन्तान नहीं था ?"

"कुछ बौद्ध और नास्तिक लेखकों ने प्राचीन आर्यों को बदनाम करने के लिये इस प्रकार की निराधार बात को लिख दिया है। मैं तो यह कहता हूँ कि राम-कथा जैसी बाल्मीकि ने लिखी है, उसमें यह नहीं लिखा। इस पर भी राम दशरथ का पुत्र था अथवा महर्षि शृंगी का, इससे वह राम से कुछ अन्य नहीं हो जाता।

"राम को हम विशेष विभूति-युक्त महापुरुष इस कारण नहीं मानते कि वह दशरथ का पुत्र था और शृंगी ऋषि का नहीं था। राम की महिमा किसी अन्य कारण से थी ?"

"किस कारण से थी ?"

"पण्डित भृगुदत्त ! यही तो सुना रहा हूँ। पूर्ण कथा सुनने पर भी यदि तुम समझ नहीं सकोगे तो मैं स्वयं समझा दूँगा। परन्तु बिना पूर्ण कथा सुने तुम समझ नहीं सकोगे।

"रावण को बन्दी बनाये जाने और फिर महर्षि विश्रवा के बीच-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचाव करने पर छोड़ने की प्रतिक्रिया आर्य राज्यों में भी हुई। विन्ध्य प्रदेश के राजा अर्जुन ने रावण से सन्धि तो कर ली, परन्तु वह सन्देह करने लगा कि छूट जाने पर रावण अन्य आर्य राज्यों को कष्ट देगा। इस कारण उसने अपने राज्य को और अधिक सुदृढ़ करना आरम्भ कर दिया। विन्ध्याचल के वनों में रहने वाले ऋषि भी इस समाचार से त्रसित अनुभव करने लगे थे कि रावण अपनी हलचल नर्मदा के दक्षिण में तेज़ कर देगा।

: ५ :

जब मेघनाथ अपनी सेना को ले देवलोक से वापस लंका में पहुँचा तो अपने पिता और पुष्पक विमान को वहाँ न पहुँचा देख बहुत परेशानी अनुभव करने लगा। उसने यह पता करने के लिये कि उसका पिता कहाँ रह गया है, अपने दूत चारों ओर भेजे।

दूत उस मार्ग पर देखते हुए देवलोक की ओर चल पड़े, जिधर से मेघनाथ के पिता के आने का कार्यक्रम था। वे दूत जब विन्ध्याचल क्षेत्र में पहुँचे तो उनको रावण अपने पुष्पक विमान को ठीक करते हुए मिल गया।

पुष्पक विमान में जल भर जाने से वह नाकारा हो गया था। उसे पुनः ठीक करने में समय लगा। जब दूतों ने राजा रावण से मिलकर अपने आने का कारण बताया तो रावण ने उन दूतों को भी साथ ले लिया और विमान के ठीक होते ही सब साथियों सहित लंका में जा पहुँचा।

वहाँ रावण ने अपने अपमान और रोष का वर्णन किया तो मेघनाथ राजा अर्जुन से बदला लेने के लिये विन्ध्य प्रदेश पर आक्रमण कर देने का विचार करने लगा, परन्तु रावण ने बताया कि उसके पिता ने उसकी अर्जुन से संधि करा दी है और उस संधि से वह उसके देश पर आक्रमण करने की स्वीकृति नहीं दे सकता। इस पर भी मेघनाथ ने कहा, "पिताजी ! मैं तो आपकी संधि का पाबन्द नहीं हो सकता।"

"परन्तु तुम अपना पृथक् राज्य बना लो। और लंका से सदा के लिये सम्बन्ध-विच्छेद कर लो, तब ही तुम ऐसा कर सकते हो। उस अवस्था में मेरी संधियाँ प्रतिष्ठित रहेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और यदि तुमने यहाँ रहते हुए लंका की सेना द्वारा किसी देश पर आक्रमण किया तो देवता लोग मुझे अविश्वास के योग्य मान मुझ पर आक्रमण कर देंगे। यह ठीक नहीं होगा।"

"परन्तु पिताजी।" मेघनाथ ने पूछ लिया, "यह ठीक क्यों नहीं होगा? हम पुनः देवताओं को परास्त कर सकेंगे।"

'नहीं मेघनाथ! देवताओं और आर्य राजाओं के इकट्ठे हो जाने पर हम विजयी नहीं हो सकेंगे। तुम्हारी माया इन आर्यों पर चल नहीं सकेगी। वह तुमसे अधिक मायावी हैं।"

"परन्तु पिताजी! हमें कुछ तो करना चाहिये। यदि हमने कोई समर नहीं चलायी तो हमारे सिपाही भी देवताओं के सैनिकों की भाँति भीरु, दुर्बल और प्रमादी हो जायेंगे।"

"देखो, मैंने मारीच के साथ आते हुए मार्ग में एक योजना बनायी है। हमें अपने राज्य की अग्रिम चौकियाँ विन्ध्याचल के साथ-साथ बना लेनी चाहियें और उनके द्वारा इस धर्म का प्रचार करना चाहिये कि वीरों के भोग के लिए पृथ्वी की सब विभूतियों का भोग प्रस्तुत करना चाहिये। आज से हमारे राज्य की उत्तरी सीमा नर्मदा होगी और हमारे सैनिक युद्ध के अभ्यास के लिये सीमा पार के क्षेत्रों में जाया करेंगे।

"हम अपने नियमानुसार दुर्बल मानवों को अपना भोजन बनायेंगे। इससे वे लोग स्वयं भाग-भाग कर उत्तर की ओर हटते जायेंगे।

"कोई बड़ा युद्ध अथवा आक्रमण नहीं होगा। अतः लंका राज्य युद्ध नहीं करेगा और हमारे सैनिक छुट-पुट युद्धों में आर्यों को आतंकित कर विन्ध्याचल पर्वत से भगाना आरम्भ कर देंगे। जब कोई क्षेत्र जन-शून्य हो जायेगा तो हम उस पर अपना अधिकार कर लेंगे।

"मारीच ने बताया है कि उसके साथियों ने दो बहुत बड़े क्षेत्र मलद और कारुष जन-शून्य कर दिये हैं।

"एक समय था कि मलद और कारुष बहुत ही सम्पन्न जनपद थे। उनकी माता ताड़का एक तपस्वी सुकेतु की लड़की है। वह अतुल बल की स्वामिनी है। जब वह सज्ञान हुई तो उसका विवाह जम्भ के पुत्र सुन्द से कर दिया गया। इस विवाह से ही मारीच का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म हुआ है। ताड़का और सुन्द एक बार अगस्त्य ऋषि के आश्रम में पहुँचे तो वहाँ आश्रम के पशुओं को मार-मार कर खाने लगे। इस पर अगस्त्य ने उन्हें मना किया, परन्तु ये नहीं माने। अगस्त्य ने सुन्द को मार डाला। पिता के मरने पर मारीच और उसकी माँ वहाँ ऋषियों को मार-मार कर खाने लगे।

"तब इन्द्र ने इन दोनों को देवलोक से निकाल विन्ध्याचल क्षेत्र में मलद और करुष नगरों में रहने को भेज दिया। यहाँ पहुँच इन्होंने इन दोनों जनपदों को उजाड़ दिया है और अब उस वन में माँ-पुत्र दोनों का राज्य है। नगर विध्वंस हो चुके हैं। उनके स्थान पर घने जंगल हो गये हैं।

"अब सुना है कि वहाँ किसी विश्वामित्र मुनि ने एक सिद्धाश्रम नाम का अपना निवास-स्थान बनाया है? ये माँ-पुत्र विचार कर रहे हैं कि उस आश्रम के सब रहने वालों को मार कर खा जायें।

"मारीच की सम्मति है कि ऐसी ही नीति पूर्ण विन्ध्याचल पर चलायी जाये। उनका विचार है कि पाँच-दस वर्ष में वह पूर्ण क्षेत्र जनशून्य हो जायेगा तब हमारे सैनिक वहाँ राक्षस राज्य स्थापित कर लेंगे।"

"परन्तु पिताजी! मार्ग में पम्पासुर पड़ता है। वह भी एक समृद्ध वन राज्य है। उसके बने रहते हम विन्ध्य प्रदेश में राज्य स्थापित नहीं कर सकेंगे।"

"उसके विषय में भी एक योजना बनायी है। वह मैं चुपचाप सम्पन्न कर लूंगा। उस राज्य का राजा बाली अति शौर्यवान है। उसकी आँखों में इतना तेज है कि जिसकी ओर वह देखता है, उसका बल क्षीण हो जाता है।

"मैं अकेला जाकर छल से उसे बन्दी बना लाऊँगा। एक बार वह बन्दी हुआ तो पूर्ण राज्य हमारे अधीन हो जायेगा।"

इस योजना पर कार्य होने लगा। दो राक्षस सेनापति खर और दूषण नर्मदा के तट पर दण्डकारण्य में भेज दिये गए और उन्होंने वहाँ एक विस्तृत जनपद बसाना आरम्भ कर दिया।

एक दिन रावण वेश बदल कर पम्पासुर क्षेत्र के सागर तट पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूम रहा था। वह देखना चाहता था कि बाली वहाँ अपने राज्य को सुदृढ़ करने के लिये क्या योजना बना रहा है।

तट पर भ्रमण करते हुए रावण ने एकान्त स्थान पर बाली को ध्यानावस्थित बैठे देखा। इसे एक ईश्वर-प्रदत्त अवसर मान रावण ने बाली को पकड़ कर लंका में ले जाने की योजना बना ली। उसने अपना विमान जिस पर वह भ्रमण कर रहा था, बाली के तपस्या स्थान से कुछ अन्तर पर उतारा और वहाँ से पैदल उस स्थान को चल पड़ा जहाँ बाली तपस्या में लीन बैठा था।

बाली अभी भी चिन्तन कर रहा था और रावण धीरे-धीरे बिना आवाज़ किये बाली की ओर जाने लगा। परन्तु बाली ने उसे देख लिया था और उसे चोरी-चोरी अपनी ओर आते देखा तो उसे सन्देह हो गया कि यह व्यक्ति किसी प्रकार की कुटिलता करना चाहता है। बाली आने वाले व्यक्ति की नीयत पर तो सन्देह कर रहा था, परन्तु नहीं जानता था कि वह क्या करना चाहता है। इससे आने वाले व्यक्ति को दबे-पाँव अपनी ओर आते देख बाली आधी मूँदी आँखों से उसे देखता रहा।

रावण बाली के समीप पहुँच उसके पीछे हो लपक कर उसको बाँध लेना चाहता था। बाली ने जब उसे अपने हाथ की पहुँच के भीतर आया जाना तो उसने एकाएक घूमकर रावण को पकड़ कर अपनी बगल में दबा लिया।

रावण कुछ काल तक छूटने के लिये छटपटाता रहा, परन्तु बाली उससे अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ। वह उसे पकड़ कर अपने राज्य की राजधानी किष्किन्धा नगरी में ले गया। वहाँ उसे बन्दी बनाकर रख लिया।

एक दिन बाली रावण के पास पहुँचा। वह जानना चाहता था कि वह कौन है और क्यों घूमकर उसके पीछे हो गया था। बाली उस कोठरी के बाहर पहुँचा जहाँ रावण बन्दी बना रखा हुआ था।

रावण से उसने पूछा, "तुम कौन हो ?"

"मैं लंकापति रावण हूँ।"

बाली हँस पड़ा। वह हँसकर बोला, "पर इसका प्रमाण क्या है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जहाँ आप मिथ्या समाधि लगाये बैठे थे। वहाँ से एक कोस के अन्तर पर मेरा विमान पड़ा मिल जायेगा।"

"पर तुम चोरी-चोरी क्यों आये थे ?"

"मैं देखना चाहता था कि तुम वास्तविक समाधि में हो अथवा तुम्हारी समाधि धोखे की टट्टी है।"

"तो क्या देखा है ?"

"यही कि तुम मुझसे कम छली नहीं हो। जब मेरे पूर्वज पाताल देश में गये थे तो वहाँ के लोगों की पूजा सीख आये हैं। वह है लिंगायत-वाद। उसमें पुरुष-लिंग की पूजा की जाती है। मैं इसे मूर्खता समझता हूँ। परन्तु मूर्ख राक्षसों को यह बताने के लिये कि मैं भी उनके मत का हूँ, मैं भी उसकी पूजा करता हूँ।

"जब देवलोक पर आक्रमण किया था तो लिंग की पूजा कर ही आक्रमण आरम्भ किया था।

"मैं यह समझता हूँ कि तुम मुझसे कम छली नहीं हो।"

बाली फिर हँसा। हँसकर उसने कहा, "तो तुमने महिष्मति के राजा अर्जुन को सन्देश भेजने से पहले भी पूजा की थी ?"

"नहीं। तब तो नहीं की थी।"

"क्यों ?"

"जिनको दिखाने के लिये पूजा करता हूँ, वे वहाँ नहीं थे।"

"तो मैं एक बात बताऊँ। सुनोगे ?"

"हाँ।"

"तुमने पूजा नहीं की थी। इसी कारण पकड़ बन्दी बना लिये गये थे और मुझे विश्वास है कि मुझे पकड़ने आने से पहले भी पूजा कर नहीं आये थे।"

"और तुम मुझे पकड़ पाये हो; क्योंकि तुम पूजा कर रहे थे ?"

"तुमने देखा होगा कि मैं तो लिंग की पूजा नहीं कर रहा था। जहाँ बैठा था वहाँ कोई लिंग की मूर्ति नहीं थी।"

"तो फिर तुम किसकी पूजा कर रहे थे ?"

"जो अमूर्त्त है। वह महान शक्तिशाली है। सर्वव्यापक है। सबके मन की बात जानने वाला है। जब मैं उसमें ध्यान लगा रहा था तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मेरे कान में कह गया था कि कोई शक्तिशाली व्यक्ति मुझे छल से बन्दी बनाने आ रहा है ।

"इस पर मैंने आँख खोली तो तुम दबे-पाँव मेरी ओर आते दिखायी दिये । उसके पीछे की बात तुम जानते हो ।"

"तो मैं भी तुम्हारे देवता का पुजारी बन जाता हूँ । मुझे अपना गुरु भाई बना लो ।"

"उसकी प्रथम पूजा यह है कि वचन का पालन करो । सत्य बोलना और सत्य का पालन करना सबसे बड़ी पूजा है ।"

"यह तो मैं कर रहा हूँ ।"

"कैसे ?"

"मैंने देवताओं को वचन दिया है कि मैं उनको अब कष्ट नहीं दूंगा । मैं इसका पालन कर रहा हूँ ।"

"परन्तु तुम कष्ट तो दे रहे हो ?"

"कहाँ ?"

"मैं भी तो देवताओं की सन्तान हू । तुम मुझे ही पकड़ने आये थे।"

रावण मुस्कराया और बोला, "राजन् ! मुझे ज्ञात नहीं था । यदि आप भी देवता हैं तो मैं समझता हूँ कि मेरी आपसे सन्धि है ।"

"यह इस प्रकार नहीं । मैं लंकाधिपति से पृथक् सन्धि करना चाहता हूँ ।"

"तो राजन् ! किसी भले लोगों के बैठने योग्य स्थान पर बैठकर बातचीत कर लें तो ठीक होगा । जो कुछ वचन होगा, मैं उसका पालन करूँगा ।"

इसके उपरान्त बाली और रावण में कई दिन तक वार्त्तालाप होता रहा और फिर दोनों अभिन्न मित्र बन गये ।

: ६ :

जब किष्किन्धा नगरी में रावण और बाली में सन्धि हो रही थी तो लगभग उसी समय विश्वामित्र अयोध्या में राजप्रासाद के द्वार पर पहुँच द्वारपालों को कह रहा था, "महाराज को सूचना दो कि राजर्षि विश्वामित्र पधारे हैं ।"

विश्वामित्र के साथ उसके चार शिष्य भी थे। द्वारपाल राजर्षि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वामित्र की कथा और उसकी वशिष्ठजी से युद्ध की बात जानता था। अतः वह आगन्तुक ऋषि का नाम सुनते ही भागा और महाराज दशरथ को सूचना देने अन्तःपुर में जा पहुँचा।

दासी द्वारा भीतर सूचना भेज उत्तर की प्रतीक्षा में खड़ा रहा। दासी गयी और तुरन्त ही लौटी। उसने द्वारपाल को बताया, "महाराज की आज्ञा है कि महर्षि को आदर सहित अतिथि-गृह में ठहराया जाए और उनकी विशेष सेवा का प्रबन्ध हो। महाराज स्वयं वहाँ ही पहुँच रहे हैं।"

राजर्षि का ऋषियोचित सत्कार और सेवा की गयी। महर्षि अभी विश्राम कर उठे ही थे कि महाराज दशरथ अपने पुरोहित वशिष्ठ और मन्त्रियों सहित अतिथि-गृह में पहुँच गये। महाराज ऋषि के चरण-स्पर्श कर हाथ जोड़ सामने खड़े हो गये।

विश्वामित्र ने महाराज को आशीर्वाद दिया और सामने बैठने को कहा। जब महाराज और उनके साथ आये सब मन्त्रीगण बैठ गये तो विश्वामित्र ने महाराज का, महारानियों का तथा पुत्रों का कुशल-मंगल पूछा। यथोचित उत्तर पा ऋषि ने कहा, "हम एक विशेष प्रयोजन से आये हैं। आपकी उस कार्य में सहायता की आवश्यकता है। यदि आप मेरी बात मानने का वचन दें तो मैं कहूँ।"

"ऋषिवर! यह सब राज-पाट और मैं भी सपरिवार आपकी सेवा के लिये उपस्थित हूँ। आज्ञा करिये, यहाँ से कोई भी व्यक्ति निराश नहीं जाता।"

"महाराज!" ऋषि ने अपना आशय बताने के लिए कहा, "भगवान आपका कल्याण करे। मैं अपने सिद्धाश्रम में एक यज्ञ का अनुष्ठान कर रहा हूँ। उसमें वहाँ कुछ राक्षस विघ्न डालते रहते हैं। मैं चाहता हूँ कि जब तक मेरा यज्ञ पूर्ण नहीं हो जाता, मेरी और यज्ञ की रक्षा करने वाला कोई वीर पुरुष वहाँ रहे। इस कार्य के लिये मुझे आपके दो पुत्र राम और लक्ष्मण उपयुक्त समझ में आये हैं। मैं चाहता हूँ कि आप उनको मेरे साथ भेज दें। यज्ञ समाप्त होने पर मैं उनको यहाँ छोड़ जाऊँगा।"

राजा दशरथ जानता था कि सिद्धाश्रम ऐसे वन में है जहाँ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई राजा नहीं। वहाँ राक्षसों का बाहुल्य है। राजा का विचार था कि राम और लक्ष्मण अभी सुकुमार हैं। वे राक्षसों से युद्ध करने में सक्षम नहीं। इस कारण वह अवाक् महर्षि का मुख देखता रह गया।

विश्वामित्र ने कुछ देर तक राजा के उत्तर की प्रतीक्षा की और फिर पूछ लिया, "राजन्! क्या विचार कर रहे हैं?"

"मैं दस सहस्र सेना के साथ स्वयं आपके आश्रम की रक्षा के लिये चल सकता हूँ। राम और लक्ष्मण अभी बालक हैं। इन्होंने अभी तक कोई युद्ध नहीं देखा।"

"नहीं राजन्! तुम नहीं समझते। यज्ञ की रक्षा के लिये सेना तो स्वयं ही यज्ञ में विघ्न बन जायगी। साथ ही मैं जानता हूँ कि जो ये दो बालक कर सकते हैं, तुम्हारी एक कोटि सेना भी नहीं कर सकेगी।

"मुझे आपके दोनों पुत्र चाहियें। बताओ, है स्वीकार अथवा मैं यहाँ से निराश लौट जाऊँ?"

विश्वामित्र ने वशिष्ठजी की ओर देखा। जब वह भी मौन बैठा रहा तो विश्वामित्र उठ खड़ा हुआ। इसका अभिप्राय था कि वह जा रहा है। उसके उठने पर राजा दशरथ ने मुनि के पाँव पकड़ लिये और कहा, "भगवन्! मुझ पर दया करें। मुझे मन्त्रियों और पुरोहितजी से सम्मति कर लेने दीजिये।"

विश्वामित्र बैठ गया और वशिष्ठजी से बोला, "यज्ञ की रक्षा किसी देश अथवा नगर की रक्षा के समान नहीं होती। महर्षि वशिष्ठ इस बात को जानते हैं। वहाँ तो एक अथवा दो सिद्ध धनुर्धर चाहियें, जो रक्षा का कार्य शान्ति से कर सकें और जब वे सुरक्षा कार्य कर रहे होंगे तब हम शान्तिपूर्वक यज्ञ कार्य चला सकेंगे।"

अब वशिष्ठजी ने राजा दशरथ को सम्बोधन कर कहा, "राजन! राजर्षि ठीक कहते हैं। राम और लक्ष्मण वह कुछ कर सकेंगे जो आप की पूर्ण सेना नहीं कर सकेगी।

"मेरी सम्मति है राजर्षि का पूजन कर इनको राम तथा लक्ष्मण के साथ विदा कर दिया जाये।"

—८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर राजा का मुख उतर गया। राजा ने एक बार दयनीय दृष्टि से वशिष्ठ और विश्वामित्र की ओर देखकर कहा, "भगवन्! मुझे उनके जीवन का भय लग रहा है।"

"महाराज! जहाँ राजर्षि उपस्थित होंगे वहाँ मृत्यु समीप नहीं फटक सकती।"

इस कथन से उत्साहित हो राजा ने सेवक को भज राम और लक्ष्मण को वहीं बुला भेजा और उनको समझाकर विश्वामित्र के साथ कर दिया।

मार्ग में चलते हुए विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को अपने विषय में और अपने यज्ञ के विषय में समझाया। नारद मुनि के कथनानुसार विश्वामित्र ने राम इत्यादि को रावण के साथ युद्ध के लिये तैयार करना था और इस युद्ध की तैयारी के लिये रावण से युद्ध करने की आवश्यकता पर बताना आवश्यक था। इसके लिये रावण और अपने में मतभेद बताने की आवश्यकता थी। इसी उद्देश्य से विश्वामित्र ने अपनी ही जीवन-कथा से आरम्भ किया।

उसने चलते हुए पूछा, "राम! जानते हो कि मैं कौन हूँ?"

"महाराज! इतना ही जानता हूँ कि आप एक ऋषि हैं और सिद्ध आश्रम में एक यज्ञ कर रहे हैं।"

"हाँ। यह तो तुमको ठीक ही बताया गया है, परन्तु यह वस्तुस्थिति का एक बहुत ही छोटा-सा अंग है।"

"तो भगवन्! आप बताने की कृपा करें कि वस्तुस्थिति क्या है?"

"तो सुनो। तुम्हें अपनी ही कथा से बताना आरम्भ करता हूँ। हमारे एक पूर्वज राजा कुश थे। वह प्रजापति के पुत्र कहे जाते हैं। प्रजापति उस व्यक्ति की उपाधि है जो बहुत-सी प्रजाओं को उत्पन्न करे और उन प्रजाओं को सुसंगठित कर लोक-कल्याण का कार्य सम्पन्न करे। लोक-कल्याण से अभिप्राय है कि राज्य निर्माण कर उसमें अधिक-से-अधिक प्रजा का पालन-पोषण करे।

"यह भी प्रजापति का कार्य है, परन्तु यह दूसरी श्रेणी का कार्य है। प्रथम श्रेणी का कार्य है अपनी सन्तान निर्माण करना। एक-एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजापति की हज़ारों सन्तान होती थीं।

"जिसके अपने औरस और मानस पुत्र सहस्रों हों वह प्रजापति कहा जा सकता है। अतः हमारे इस पूर्वज ने कई सौ विवाह किये और उनसे कई सहस्र सन्तान उत्पन्न कीं। उस सन्तान के विवाह किये और उन्होंने भी सन्तान उत्पन्न कीं'। परिणाम यह हुआ कि कुश प्रजापति के कौशिक नाम से गोत्र चल पड़ा।

"इतनी सन्तान से महाराज कुश ने एक बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित कर लिया।"

"तो महाराज! ये सहस्रों पुत्र परस्पर लड़ नहीं पड़े?"

"लड़ते क्यों? वे सब-के-सब भली-भाँति सुशिक्षित थे। साथ ही इस लम्बे-चौड़े परिवार का ज्येष्ठ एक कुश नाम का था, जो बहुत ही योग्य शासक था। उसने परिवार के सब लोगों को उत्तरदायित्व के पद पर नियुक्त किया हुआ था। सबको अपनी-अपनी योग्यतानुसार अधिकार और सुख-सुविधा प्राप्त थीं।

"एक बहुत बड़ा राज्य काम-राज्य के नाम से हमारे परिवार का था। परिवार के लोग सब प्रकार का कार्य करते थे। उसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भी थे। महाराज कुश ने सबको सन्तुष्ट रखा हुआ था।

"महाराज कुश के एक पुत्र थे गाधी। वह मेरे पिता थे। वह बाल्य-काल से ही राजसी स्वभाव से विभूषित थे और अपने समय में मैंने एक बहुत बड़ा राज्य स्थापित कर लिया था।

"मेरा राज्य कई सौ योजन लम्बा और कई सौ योजन चौड़ा था। राज्य में नदी, नाले, पहाड़, सरोवर सब प्रकार के सुन्दर सुखकारक स्थान थे। मेरे भी कई पुत्र और कन्यायें हुईं। मैंने राज्य-भार अपने एक लड़के के हाथ में दिया और भूमण्डल पर भ्रमण करने निकल पड़ा।

"सिन्ध पार कर मैं गंगा तक आया। मेरे भ्रमण मे मेरे साथ कई सहस्र मेरे सैनिक और कर्मचारी थे। हम गंगा के किनारे भ्रमण कर रहे थे। चित्रक वन में मुझे वहाँ के एक वनवासी ने यह सूचना दी कि उस वन में एक महा तेजस्वी ऋषि रहते हैं। बहुत दूर-दूर से लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके दर्शन करने तथा उनका उपदेश सुनने आते हैं।

"इस वृत्तान्त से मेरे मन में उन ऋषि को मिलने की लालसा उत्पन्न हो गयी। मैंने उस वनवासी से पूछा, 'क्या नाम है उन ऋषिजी का ?'

"उसने बताया, 'महाराज ! लोग उन्हें वशिष्ठ कहते हैं।'

"मैं वशिष्ठजी के आश्रम को चल पड़ा। महर्षि वशिष्ठ अत्यन्त तेजस्वी और सरलचित्त व्यक्ति थे। वह योग्य भी बहुत थे। मैंने राजसी व्यवहार के अनुसार उनको स्वर्ण और वस्त्रों की भेंट की और उनके मनोहर उपदेश को सुनकर अति प्रभावित हुआ।' "

राम ने पूछा, "किस विषय पर उपदेश हुआ था ?"

"उन्होंने स्वकल्याण और लोक-कल्याण पर अति मनोहर प्रवचन कहा। मैं उसे सुनकर गद्गद प्रसन्न हो गया।

"हमारे राज्य में तो सब-कुछ राजा के लिये ही होता था, परन्तु वशिष्ठजी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से बताया कि अपना वही है जो दूसरे के कल्याण में प्रयुक्त हो।

"मैं जब ऋषिजी से विदा लेने लगा तो उन्होंने पूछ लिया, 'कहाँ ठहरे हो, राजन् ?'

"मैंने बताया, 'लगभग आधे कोस पर मेरी सेना ने शिविर डाला हुआ है।'

'तो आज हमारा आतिथ्य स्वीकार किया जाये।'

"मैं उस आश्रम की अवस्था देख यह समझा कि ऋषिजी मुझे दण्ड दे रहे हैं। कारण यह कि मेरे लिये बहुत ही स्वादिष्ट पकवान बनाये जाते थे। मेरा अपना पाचक अत्यन्त कुशल समझा जाता था। इस पर भी मैंने ऋषिजी के निमन्त्रण को अस्वीकार नहीं किया। मैंने केवल यह कहा, 'भगवन् ! आपकी अत्यन्त कृपा है। परन्तु मैं तो अपने सैनिकों के साथ बैठकर ही भोजन करता हूँ।'

'तो सब सैनिकों को यहीं बुला लो।'

'परन्तु वे कई सहस्र हैं। उनको खिलाने-पिलाने में आपको भारी कष्ट होगा।'

'नहीं होगा। आज महाराज विश्वामित्र अपने पूर्ण दल-बल सहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वनवासी ऋषि के अतिथि होंगे।'

"मैं इन्कार नहीं कर सका और मैंने कहा, 'तो महाराज! मैं सेना सहित दो घड़ी में आऊँगा। अब मैं चलता हूँ और सेना के साथ ही आऊँगा।'

"मेरे साथ वन में उस समय मेरी दो पत्नियाँ, तीन पुत्र और दो सहस्र से ऊपर सैनिक थे। उन सैनिकों की देख-रेख के लिये लगभग उतने ही सेवक थे। इस प्रकार पाँच सहस्र के लगभग लोग आधे प्रहर में ऋषि-आश्रम पर पहुँच गये और यह देख हमारे विस्मय का ठिकाना नहीं रहा कि उस वन में एक बहुत बड़े कनात के भीतर से पकवानों की सुगन्धि आ रही थी। सेना के बैठकर भोजन करने का सुचारु रूप से प्रबन्ध था।

"हमारे आश्रम में पहुँचते ही सेना को एक खुले मैदान में बैठा दिया गया और मेरे तथा सैनिकों के बैठकर भोजन करने के लिये एक पृथक् स्थान बनाया गया था।

"मैंने इच्छा प्रकट की कि सैनिकों को खाकर सन्तुष्ट होते देख लूं। मैं मन में सन्देह कर रहा था कि भोजन की कमी होने से सैनिक भूखे न रह जायें।

"ऋषि ने मेरी बात मान ली और सब सैनिकों को पहले खिलाने की आज्ञा हो गयी।

"मेरे देखते-देखते वहाँ सैंकड़ों ही सेवक भिन्न-भिन्न प्रकार के पकवान बड़े-बड़े थालों में लिये हुए कनात के पीछे से निकल आये और सैनिकों के सामने पत्तल बिछाकर उन पर दाल-भात, विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ, मिष्ठान और उनके साथ पीने के लिये आसव, पानक फलों का रस इत्यादि प्रस्तुत किये गए।

"मैं खड़ा सैनिकों को उन स्वादिष्ट पकवानों को पेट-भर खाते देखता रहा। सैनिक पेट-भर खा-खाकर उठने लगे, तब भी कनात के पीछे से भोजन के भरे हुए परात निरन्तर आ रहे थे।

"मुझे भी अपनी रानियों के साथ बैठाकर भोजन कराया गया। मुझे यह समझ आया कि मेरे शिविर में भी उतना बढ़िया भोजन नहीं बनता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऋषि ने पूछा, 'राजन् ! सुरा-पान भी करते हो ?'

'नहीं महाराज ! परन्तु क्या वह भी आपके यहाँ तैयार मिलती है ?'

'यहाँ जो कुछ आप माँगें प्रस्तुत हो सकता है।'

'तो क्या यहाँ माँस भी उपलब्ध हो सकता है ?'

'हाँ। यदि आपकी इच्छा हो तो माँगिये। किस जन्तु का माँस चाहते हैं ?'

'नहीं भगवन ! मैं आमिष भोजन नहीं करता।'

"मुझे इस सबको देखकर विस्मय हो रहा था। दो घड़ी पूर्व वहाँ कुछ भी नहीं था और इस कम समय में वहाँ जंगल में मंगल हो गया था।

"भोजनोपरान्त जब मैं अपने शिविर को जाने लगा तो मैंने कहा, 'भगवन ! मैं आपके कर्मचारियों के सुप्रबन्ध से अति प्रसन्न हूँ और उनको पुरस्कृत करना चाहता हूँ।'

'हाँ। यह आप जैसे श्रीमानों के योग्य है। इस सब सुप्रबन्ध का श्रेय मेरे शवला कामधेनु को है।'

"मैंने समझा कि ऋषि मेरी हँसी उड़ा रहे हैं। कामधेनु से मैं उनकी शवला नाम की गाय समझा था। शवला चितकबरे रंग के जन्तु को कहा जाता है।

"मैंने कह दिया, 'तो भगवन् ! उसे बुलाइये।'

"शवला को बुलाया गया। वह एक अधेड़ आयु का व्यक्ति था। मैं उसे देख विस्मय करने लगा। मैंने उसे अपने पास से स्वर्ण मुद्राओं से भरी हुई एक थैली दी तो वह ऋषि का मुख देखने लगा। ऋषि उसके देखने का आशय समझ बोले, 'शवला ! ले लो। राजाओं से मिला पुरस्कार तिरस्कार करने योग्य नहीं होता।'

"शवला ने झुककर प्रणाम किया और स्वर्ण मुद्राओं की थैली ले ली। मैंने शवला से पूछा, 'शवला ! महर्षि क्या वेतन देते हैं ?'

'मैं महर्षिजी का सेवक हूँ। यह मेरा पालन-पोषण करते हैं और मैं इनकी ही देन हूँ। अतः वेतन नहीं पाता।'

'तो ऐसा करो। तुम हमारे राज्य में चलो। हम तुमको एक सौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्ण मुद्रा प्रति मास देंगे ।'

"इस प्रस्ताव पर राजर्षि ने कह दिया, 'यह इतना अच्छा और योग्य प्रबन्धक है कि मैं इसे निकालना नहीं चाहता । इस पर भी इसे यहाँ से वेतन नहीं मिलता । यदि यह जाना चाहे तो जा सकता है ।'

"शवला ने कह दिया, 'श्रीमान् तो बड़े-से-बड़े वेतन पर योग्य-से-योग्य प्रबन्धक नियुक्त कर सकते हैं । मैं तो यहीं रहूँगा ।'

"इस पर मुझे विस्मय हुआ । मैंने महर्षि को ही कहा, 'आप इसे आज्ञा करिये कि यह अपनी स्थिति को उज्ज्वल करने के लिये मेरे साथ चला जाये । एक योग्य व्यक्ति तो राजा-महाराजाओं के पास ही रहना चाहिये ।'

'राजन् !' वशिष्ठजी ने दो टूक बात कह दी, 'हम इसको आज्ञा नहीं कर सकते । न यहाँ रहने की और न ही यहाँ से जाने की । यहाँ हम वेतन नहीं देते । यह जानता है । अतः यह जाना चाहे तो जा सकता है । हम इसे मना नहीं करते ।'

"शवला ने निश्चित रूप में कह दिया, 'मैं महर्षिजी की सेवा में ही रहूँगा । यह यहाँ से निकाल भी देंगे तो मैं किसी अन्य की सेवा में नहीं जाऊँगा ।'

"इस पर मुझे क्रोध आ गया । मैंने उसकी बाँह पकड़ कर अपने साथ बलपूर्वक ले चलने का यत्न किया । उसने एक बार महर्षि की ओर देखा और उन्हें मौन देख झटका दे अपनी बाँह मुझसे छुड़ा कर अपने निवास-स्थान की ओर चल पड़ा ।

"मैंने अपने संरक्षकों को, जो महर्षि के आश्रम के बाहर खड़े थे, आज्ञा दे दी, कि उस व्यक्ति को पकड़ कर बन्दी बना लो ।

"मेरे संरक्षक उसकी ओर लपके, परन्तु वह जब सबके सामने खड़ा हुआ तो सैनिक वहीं खड़े हो गये जहाँ थे । मैं चकित था कि वे सैनिक उसे पकड़ क्यों नहीं रहे । मैंने आज्ञा दी, 'पकड़ लो, इस विद्रोही को ।'

"सैनिक आगे नहीं बढ़े और बोले, 'महाराज ! यह तो गाय है और सींग खड़े कर हम पर प्रहार करना चाहती है । हम गाय पर शस्त्र नहीं चला सकते ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने सेना वापस बुला ली और यह आज्ञा कर दी कि इस शवला को पकड़ लें और यदि न पकड़ में आये तो इस आश्रम को ही लूट लें, जिससे न यह आश्रम रहे और न यह शवला यहाँ रह सकेगा।

"इस पर सेना ने उस विद्रोही को पकड़ने का यत्न किया तो महर्षि आगे आ कहने लगे, 'राजन्! अब आपने अतिथि का आदर खो दिया है। अतः अब मैं आपको आज्ञा देता हूँ कि यहाँ से प्रस्थान कर दीजिये।'

"ऋषि की इस आज्ञा से मेरा क्रोध और भी बढ़ गया। मैंने सेना को आज्ञा दी कि इस ऋषि को भी पकड़ लो और इसके आश्रम को उखाड़ दो।

"इस पर ऋषि अपनी कुटिया में गये और वहाँ से अपना ब्रह्म-दण्ड उठा लाये और उस ब्रह्म-दण्ड को चलाने लगे। मेरे देखते-देखते उन्होंने अपने ब्रह्म-दण्ड से मेरी पूर्ण सेना मृत्यु के घाट उतार दी और मुझे अपने दण्ड के बल से वहाँ से उठाकर एक सौ योजन के अन्तर पर फेंक दिया।

"मैंने अपने देश में अपने लड़कों को दूत भेज बुलवा लिया। मेरी दो अक्षौहिणी सेना आयी तो मैं उसको लेकर आश्रम पर आक्रमण करने चल पड़ा।

"मेरी सेना के आने की सूचना पर महर्षि वशिष्ठजी ने भी मेरे सामने सेना लाकर खड़ी कर दी।

"घोर संग्राम हुआ और मेरे सौ पुत्र एवं पूर्ण सेना उस युद्ध-क्षेत्र में मौत के घाट उतार दी गयी।

"इस प्रकार पूर्ण परिवार के समाप्त हो जाने और सेना के पराजित हो जाने पर मैं वहीं युद्ध-भूमि से कैलाश को चल पड़ा और महादेव की शरण में चला गया।

"मैंने महादेव की बहुत अनुनय-विनय की और वहाँ से मुझे दिव्यास्त्र मिल गये। उन अस्त्रों की सहायता से लड़ने के लिये मैं पुनः वशिष्ठजी के आश्रम पर जा पहुंचा।

"इस बार महर्षि अकेले अपना ब्रह्म-दण्ड लेकर मेरे अस्त्रों का विरोध करने आ खड़े हुए।

"जो भी अस्त्र मैं उन पर चलाता था, वह उसका ब्रह्म-दण्ड से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराकरण कर देते थे। लड़ते-लड़ते महादेव से प्राप्त सब अस्त्र समाप्त हो गये, परन्तु उनका ब्रह्म-दण्ड ज्यों-का-त्यों बना रहा।

"इस पर भयभीत मैं पुनः महादेव के पास पहुँचा और उनको वहाँ से प्राप्त सब अस्त्रों का परिणाम बताया तो महादेवजी सिर हिला-कर बोले, 'राजन् ! हमारे पास उनके ब्रह्म-दण्ड को व्यर्थ करने के लिये कोई अस्त्र नहीं।'

'तो मैं उन पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता ?' मैंने पूछा।

'नहीं। जब तक तुम्हारे पास भी एक ब्रह्म-दण्ड न आ जाये।'

'वह कहाँ मिलता है ?'

'देखो राजन् ! उनके दण्ड में इतना गुण नहीं है जितना उनके ब्रह्मर्षि होने में है।'

'और यह कैसे हुआ जा सकता है ?'

'यह देवताओं के पुरोहित ब्रह्मा से पता करो। यदि मैं जानता तो स्वयं ब्रह्मर्षि-पद के लिये यत्न करता।'

"अतः मैं ब्रह्माजी की सभा में जा पहुँचा। वहाँ से आत्म-शुद्धि के लिये आदेश हो गया और उपाय बता दिया गया।

"मैं उसी की प्राप्ति के लिये कई प्रकार के यज्ञ कर रहा हूँ और एक यज्ञ यहाँ सिद्धाश्रम में कर रहा हूँ। इस यज्ञ को राक्षस पूर्ण होने नहीं देते। इसी के लिये तुम्हें साथ लिये जा रहा हूँ।"

"और वह वशिष्ठजी कहाँ हैं ?"

"वह आपके राज-पुरोहित ही हैं।"

"तो वह इतने गुणी हैं ?"

"हाँ। उनमें गुण यही है कि वह अपनी श्लाघा कभी नहीं करते। किसी के विषय में बुरा नहीं विचार करते। सबके लिये उनके मन में सहानुभूति है और पृथ्वी पर के भले लोगों को एक समान समझते हैं। सब जातियों के बुरे लोगों को एक समान बुरा समझते हैं।"

राम यह कथा सुन बहुत ही विस्मित हुए।

: ७ :

"राम !" महर्षि विश्वामित्र ने कहा, "सिद्धाश्रम के मार्ग में एक ताटका वन है। उस वन का यह नाम एक ताटका नाम की असुर स्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण पड़ा है। वह स्त्री अति भयंकर योद्धा और नर-मांस खाती है। अतः इस वन में कोई भी मनुष्य आ जाये तो वह उसे मारकर उसका मांस खा जाती है।"

"गुरुजी !" राम ने पूछा, "यह किसकी लड़की और किसकी पत्नी है ?"

"वह एक सुकेतु नाम के यक्ष की लड़की है। बहुत तपस्या के उपरान्त उसके घर यह लड़की उत्पन्न हुई थी। यह अति सुन्दर देवकन्या समान थी। यक्ष देवलोक के निवासी हैं। दुर्घटना यह हुई कि उसका विवाह एक सुन्द नाम के व्यक्ति से हो गया। सुन्द स्त्री पर इतना मुग्ध हुआ कि वह सदा उसकी आज्ञानुसार काम करता था।

"ताटका और सुन्द की सन्तान एक दुर्जय बली पुत्र हुआ। वह मारीच है। मारीच माँसाहारी हो गया। इससे वह जहाँ कहीं भी वन-पशु मिलते, उनको मार कर खा जाता।

"एक बार वह अगस्त्य ऋषि के आश्रम पर बहुत से मृगों को स्वेच्छा से विचरण करते देख उनका मांस खाने की लालसा करता हुआ उस आश्रम के पास ही रह गया। वह नित्य आश्रम के मृगों को मार-मार कर खाने लगा।

"ऋषि ने उसे मना किया, परन्तु वह नहीं माना। इस कारण महर्षि ने मारीच को शाप दे दिया।"

"क्या शाप दिया ?" राम ने पूछ लिया।

"उसको देश-निष्कासन की सिफारिश कर दी और इन्द्र ने महर्षि के कथन का पालन करते हुए मारीच को देवलोक से निकल जाने की आज्ञा दे दी।"

"लो यह शाप कहा जाता है ?"

"हाँ। ऋषि-मुनि किसी की हत्या नहीं करते और न ही किसी को कोई दण्ड देते हैं। वे शाप ही देते हैं। शाप का अभिप्राय यह है कि वे किसी पापी के पाप का दण्ड सुना देते हैं और उस दण्ड का पालन इन्द्र कराता है।

"यही बात मारीच से हुई। मारीच को देवलोक से निकाल दिये जाने का दण्ड हो गया। यह ऋषि का वचन इन्द्र को बताया गया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र ने अपने गण भेज मारीच को देवलोक से बाहर कर दिया।

"मारीच को देवलोक से निकाला गया तो उसकी माँ ताटका को अति दुःख हुआ। उसने अपने पति को कहा कि इस ऋषि से यह दण्ड वापस करवाइये।

"सुन्द मुनिजी के पास पहुँचा तो अगस्त्यजी माने नहीं। इस पर सुन्द ने मुनिजी को खा जाने की धमकी दी तो मुनिजी ने उसे मृत्यु दण्ड का शाप दे दिया।

"वह इन्द्र की आज्ञा से मृत्यु-दण्ड पा गया। इस पर तो ताटका क्रोध से भर गयी और उसने अगस्त्य आश्रम को उजाड़ना और वहाँ के प्राणियों को खाना आरम्भ कर दिया।

"इस कारण ताटका को भी देवलोक से निकाल देने का शाप दे दिया गया। मारीच इसी वन में रहता था। ताटका भी यहाँ आ गयी और दोनों यहाँ सब प्रकार के उपद्रव करते रहते हैं।"

जब राम और लक्ष्मण इस वन में से गुज़र रहे थे कि ताटका से साक्षात्कार हो गया। वह स्त्री अति भयंकर रूप वाली थी। साथ ही वह युद्ध करना भी जानती थी। वह राम को पकड़ मार खा जाने के विचार से लपकी। राम को महर्षि विश्वामित्र ने सचेत कर रखा था। अतः राम ने उसे देखते ही धनुष पर बाण चढ़ाया और राक्षसी की बाहें काट दीं। इस पर भी वह अमर्ष से भरी हुई राम को खा जाने को दौड़ी तो राम ने उस पर बाण-वर्षा कर उसे मार डाला।

उसके मर जाने पर राम ने महर्षि से पूछ लिया, "भगवन्! यह देवकन्या तो प्रतीत नहीं होती थी। इसका रूप तो अति विकराल था। आपने कहा था कि यह एक सुन्दर देवकन्या थी।"

"हाँ, परन्तु जब सुन्दर-से-सुन्दर व्यक्ति भी चिरकाल तक क्रूर कर्म करता रहे तो उसका रूप विकृत हो जाता है। नर-माँस खाने से भी आकृति में विकरालपन उत्पन्न होने लगता है।

"सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है रहन-सहन का। इस स्त्री का रहन-सहन पिशाचों वाला था। यही कारण है कि यह देखने से भी देवकन्या नहीं रही थी।"

ताटका के मारे जाने से वे उस वन में से निकल सिद्धाश्रम पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा पहुँचे। वहाँ इनके पहुँचते ही राम और लक्ष्मण यज्ञ-मण्डप की रक्षा का प्रबन्ध करने लगे और ऋषि अपने साथियों के साथ यज्ञ करने लगे।

जब वेद-ध्वनि उठने लगी एवं अग्नि से सुगन्धित द्रव्यों का सुवासित धुआँ उठने लगा तो राक्षस विघ्न डालने के लिये आने लगे।

राम जो भी आता, उस पर अपने बाणों की वर्षा करते थे। जो भाग जाते, वे बच जाते। जो नहीं भागते थे, वे मारे जाते थे।

पहले दिन तो कुछ विशेष घटना नहीं हुई। कुछ राक्षस मारे गये और शेष भाग गये थे। रात के समय जब सब विश्राम करने के लिये तैयार हुए तो राम ने पूछ लिया, "गुरुजी! आपका यज्ञ तो किसी प्रकार से भी यहाँ के राक्षसों को कष्ट नहीं देता। इस पर भी ये बार-बार इसमें विघ्न डालने क्यों आते हैं?"

विश्वामित्र ने इसका कारण बताते हुए कहा, "यहाँ से चार सौ योजन के अन्तर पर एक राज्य है, जिसका नाम लंका है। वहाँ एक रावण नाम का राक्षस राजा राज्य करता है। वह बहुत ही बली है। वह देवलोक को विजय कर देवताओं से कर लेता है।

"उसने भारत निवासी आर्यों पर भी आक्रमण किया था, परन्तु वह आर्य-राज्यों को पराजित नहीं कर सका। अतः उसने आर्यावर्त की विजय करने का ढंग बदल दिया है। एक बार वह सेना लेकर विन्ध्याचल प्रदेश में जा पहुँचा। वह राज्य को विजय कर वहाँ अपना राज्य स्थापित करना चाहता था। विन्ध्याचल प्रदेश के राजा अर्जुन ने सहज ही रावण को बन्दी बना लिया। पीछे सन्धि हुई तो रावण को समझ आ गया कि वह आर्य-राज्यों को पराजित नहीं कर सकेगा।

"अतः शस्त्रास्त्रों से आक्रमण कर विजय न कर सकने पर उसने इस देश को विजय करने का एक दूसरा उपाय प्रयोग करना आरम्भ कर दिया है। उसने मारीच की अध्यक्षता में सहस्रों राक्षस यहाँ भेजे हुए हैं। वह गाँव-के-गाँव लूट और बरबाद करते चले आते हैं। वह किसी से जमकर युद्ध नहीं करते। छापे मारते हैं और लूट-मार कर विन्ध्याचल के दक्षिण के वनों में जा छुपते हैं।

"इस प्रकार पूर्ण विन्ध्याचल प्रदेश के गाँव उजड़ रहे हैं। लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने घरों को छोड़-छोड़ भाग रहे हैं और जब कोई गाँव अथवा नगर जनशून्य हो जाता है तब ये लोग वहाँ वन बना, पशुओं को एकत्रित कर देते हैं। इस प्रकार वे अपना खाने-पीने का प्रबन्ध करते हैं। साथ ही इस प्रकार वनों को धीरे-धीरे उत्तर की ओर बढ़ा रहे हैं।

"इस वन को भी रावण के राक्षसों ने उजाड़ा है और अब हमें भी खदेड़ देने के उपरान्त निश्चिन्त हो वन-पशुओं के मांस से अपना निर्वाह करना चाहते हैं। यह है इनके मन में हमारे प्रति व्यवहार का कारण।"

मारीच को जब अपनी माँ के मारे जाने की सूचना मिली तो वह अपने साथियों के साथ इस वन में आ धमका। वह एक कुशल योद्धा था। उसे जब पता चला कि उसकी माँ को मारने वाले यही दो युवक हैं तो वह उनसे युद्ध करने चला आया।

घोर युद्ध हुआ। दोनों ओर से डटकर मुकाबला हुआ। अत्यधिक राक्षसों का हनन हुआ और मारीच घायल हुआ तो उसके साथी उसे उठाकर ले गये।

इस प्रकार यज्ञ में विघ्न डालने वाले भागने लगे और यज्ञ चलता गया। विश्वामित्र का यज्ञ एक प्रकार से रावण के विरुद्ध युद्ध के लिये राम को तैयार करना था। विश्वामित्र के पास कई प्रकार के दिव्यास्त्र थे। उनकी शिक्षा राम को मिलने लगी।

राम एक वर्ष से ऊपर ऋषि-आश्रम में रहा। वहाँ रहते हुए उसने न केवल यज्ञ की रक्षा की, वरंच उसने राक्षसों से युद्ध का ढंग सीखा। उसने अनेकानेक प्रकार के शस्त्रास्त्रों के प्रयोग का ढंग सीखा और फिर राक्षसों से वास्तविक संघर्ष का मूल कारण भी जाना।

एक दिन ऋषि विश्वामित्र ने बताया, "आदि सृष्टि से दो प्रकार की प्रवृत्तियों के मनुष्यों का जन्म हो रहा है। एक देवता हैं और दूसरे असुर हैं। देवता स्वभाव के लोग अपना जीवन यज्ञ-रूप चलाते हैं। अर्थात् वे अपने अर्जित धन-सम्पद में से केवल अपने निर्वाह के लिये रखकर शेष लोक-कल्याण में व्यय कर देते हैं। उनके जीवन के सब काम निस्पृह अनासक्त भाव से होते हैं। इसके विपरीत आसुरी स्वभाव के लोग अपने पूर्ण जीवन के प्रयत्न को अपने भोग-विलास पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही व्यय करते हैं।

"संसार के भोग इतने अधिक हैं कि सबके लिये पर्याप्त नहीं। अतः आसुरी प्रवृत्ति के लोग अधर्माचरण से भूमण्डल की पूर्ण सम्पत्ति को छीना-झपटी से प्राप्त करने का यत्न कर रहे हैं। देवता ऐसा नहीं चाहते। इस कारण बड़े-बड़े सात देवासुर-संग्राम हो चुके हैं।

"वर्त्तमान लंका राज्य में पुनः एक देवासुर संग्राम होने वाला है। यह संग्राम पुराने संग्रामों से भिन्न होगा। इसमें देवता और असुर दोनों परम्परागत देशों के लोग नहीं होंगे।

"अभी तक देवलोक के देवता देवताओं का पक्ष ले लड़ा करते थे और दैत्य लोग आसुरी पक्ष लेते थे, परन्तु इस बार आर्य लोग दैवी पक्ष में होंगे और लंका के राक्षस आसुरी पक्ष में।"

"गुरुजी ! हम भी लड़ेंगे इनसे ?"

"यह कहना अभी सम्भव नहीं।"

"तो आप किस प्रकार कहते हैं कि आर्य लोगों से लंका के राक्षसों का युद्ध होगा ?"

"युद्ध तो राक्षस करेंगे। कारण यह कि वह असुर हो गये हैं। देवताओं से राक्षसों की संधि हो चुकी है और दोनों में संधि तोड़ने की इच्छा नहीं है। इस शान्तिमय वातावरण में राक्षस निश्चल नहीं बैठ सकते। वे निरन्तर किसी-न-किसी प्रकार का भ्रष्टाचार कर रहे हैं।

"इस बार उन्होंने आर्यावर्त पर एक प्रकार से आक्रमण कर रखा है। इसका परिणाम यह होगा कि राक्षसों का आर्यों से युद्ध होगा।"

"यह कब तक होगा ?"

"जब आर्य लोग एक राजा की छत्रछाया में ही लड़ने के लिये तैयार हो जायेंगे।"

राम और लक्ष्मण अभी सिद्धाश्रम में ही थे जब यह समाचार मिला कि विदेह के महाराजा जनक अपनी लड़की से स्वयंवर करा रहे हैं। देश-विदेश के राजा मिथिला में जनकपुरी जा रहे हैं। इस सूचना से विश्वामित्र के मन में एक विचार उत्पन्न हुआ और उसने राम को कहा, "राम ! हम जनकपुरी चलेंगे।"

"वहाँ क्या है, गुरुजी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महाराजा जनक की पुत्री का स्वयंवर हो रहा है। मिथिला नरेश एक वृहत् यज्ञ रच रहे हैं। उस यज्ञ में दूर-दूर से विद्वान् ऋषि लोग उपस्थित होंगे। हमें भी चलना चाहिये।"

राम और लक्ष्मण तथा सिद्धाश्रम के बहुत से तपस्वी मिथिला को चल पड़े।

: ८ :

कुलवन्तसिंह अगले दिन अपने कार्यालय में पहुँचा तो उसे इंगलण्ड जाने की आज्ञा हो गयी। जाने वाले वायु-सेना के बीस अधिकारी थे। भारत के भिन्न-भिन्न भागों से दिल्ली में एकत्रित हो एक दिन इंगलैण्ड के लिये चल दिये।

इंगलैण्ड में नौटिंगम के हवाई पत्तन पर वे सब उतर गये और उनके वहाँ जाते ही उनका प्रशिक्षण आरम्भ हो गया। भिन्न-भिन्न प्रकार के हवाई-जहाज़ों की जानकारी और उनमें उड़ान करने तथा आक्रमण के संरक्षण के उपायों पर प्रशिक्षण होता रहा।

सप्ताह में दो दिन शनिवार और रविवार अवकाश रहता था और हिन्दुस्तानी अधिकारी इंगलैण्ड के साथियों के साथ भिन्न-भिन्न स्थानों पर भ्रमण करने जाते थे।

छः महीनों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम था और हिन्दुस्तानी अधिकारियों को आये हुए चार मास हो चुके थे। कुलवन्तसिंह की एक ब्रिटिश 'एयर कमांडर' मिस्टर फ़िट्स इरविन से घनिष्टता हो गयी थी। मिस्टर इरविन की पत्नी और बच्चे लन्दन में रहते थे और कुलवन्तसिंह प्रायः सप्ताह के अन्तिम दो दिन लन्दन में व्यतीत करने चला जाया करता था। वह कभी मिस्टर इरविन के मकान पर और कभी किसी सामान्य होटल में ठहर जाया करता था।

इस दिन दोनों मित्र 'ही थ्रो' हवाई पत्तन पर पहुँचे तो इरविन ने कुलवन्तसिंह को कहा, "मेरे घर पर चलो।"

"इरविन डीयर! मैं आज होटल में ठहरने का विचार कर रहा हूँ। मैं लन्दन म्यूज़ियम के पुस्तकालय में पूरा दिन व्यतीत करना चाहता हूँ। तुम्हारे घर से वह दूर पड़ेगा।"

"देखो सिंह! ठहरो हमारे घर पर। प्रातः के अल्पाहार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपरान्त तुम चले जाना। मध्याह्न का भोजन और मध्याह्नोत्तर की चाय वहाँ ही लेना। रात भोजन के समय तुम घर आ सकते हो।"

कुलवन्त ने विचार किया और तैयार हो गया। दोनों मित्र बाहर जाने लगे कि कुलवन्त की दृष्टि एक व्यक्ति पर पड़ी जिसे वह समझता था कि पहचान गया है। उसे वह अमृतलाल प्रतीत हुआ। वह एक क्षण तक विचार करने लगा कि यह भ्रम तो नहीं।

वह व्यक्ति बहुत बढ़िया युरोप्रियन ढंग के सिविलियन पहरावे में था और उसकी बाँह-में-बाँह डाले एक युवती साथ-साथ आ रही थी। दोनों किसी हवाई जहाज़ से उतर उधर ही जा रहे थे जिधर ये दोनों मित्र जा रहे थे।

देखते-देखते युगल भीड़ में विलीन हो गया। अब तक कुलवन्त सतर्क हो चुका था और वह इरविन को छोड़ पत्तन के द्वार की ओर लपका। वह आशा करता था कि द्वार पर वह उन दोनों से पहले पहुँच जायेगा और वहाँ वह इस व्यक्ति को भली-भाँति देख और पहचान सकेगा।

इरविन समझ नहीं सका कि क्या बात है? भीड़ में से लगभग भागता हुआ कुलवन्त जा रहा था और उसका मित्र इरविन भी लम्बे-लम्बे पग उठाता हुआ उसके पीछे-पीछे था।

दोनों पत्तन के द्वार पर जा पहुँचे। उनके जल्दी-जल्दी करने पर भी कई लोग बाहर जा चुके थे। कुलवन्त ने बाहर निकल चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। रात के छः बज रहे थे। यद्यपि अभी दिन था, परन्तु धुंध के कारण दूर तक दिखाई देना कठिन था। सड़क पर कोहरा छाया हुआ था। लोग टैक्सियों में और प्राइवेट गाड़ियों में सवार हो जा रहे थे।

जब उसे कोई जाना-पहचाना मुख दिखायी नहीं दिया तो वह निराश हो गया।

उस समय तीन हवाई जहाज़ आये थे और तीनों के यात्री जा चुके थे। इसी समय एक अन्य हवाई जहाज़ के आने की सूचना दी गयी। यह ऐडनबरा से आ रहा था। कुलवन्त अब टैक्सी की ओर चला तो इरविन ने पूछा, "मित्र! क्या था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कोई जाना-पहचाना व्यक्ति था। उसकी एक ही झलक प्लेन से उतरते हुए देखी थी।"

"कौन था ?"

"मेरा एक सम्बन्धी, जिसकी मैं यहाँ होने की आशा नहीं करता था।"

"गलती भी हो सकती है। वह कोई और भी हो सकता है।"

"हो सकता है।" इतना कह कुलवन्त इरविन के साथ चल पड़ा। कुलवन्त विचार करने लगा था कि क्या उसमें इतना दृष्टिकोण आ गया है कि वह इस प्रकार की भूल कर सकता है। एक बात उसे स्मरण आ गयी थी। उस व्यक्ति के साथ जो स्त्री थी, उसकी स्कर्ट का रंग मौरून था और उस रंग के स्कर्ट वाली कोई स्त्री उसके देखते हुए पत्तन से बाहर नहीं निकली थी। यह सम्भव है कि वह युगल उसके द्वार पर पहुँचने से पहले निकल गया हो।

वह और इरविन टैक्सी में बैठ चुके थे और इरविन टैक्सी वालों को घर का पता बताने वाला ही था कि कुलवन्त ने उसे रोक कर कहा, "मैं एक बार फिर द्वार पर जा रहा हूँ। आप टैक्सी में बैठें। मैं अभी आया।"

इतना कह वह पुनः पत्तन के द्वार पर जा पहुंचा। इस बार उसका प्रयास सफल हुआ। उसे मौरून रंग के स्कर्ट वाली स्त्री आती दिखायी दी। ज्यों ही वह स्त्री और उसका साथी द्वार से निकले कि वह दोनों का मार्ग रोक बोला, "अमृत !"

अमृत एक क्षण के लिये झिझका। फिर तुरन्त अपने पर नियन्त्रण कर हिन्दी में बोला, "जीजाजी ! आप यहाँ क्या कर रहे हैं ?"

"यह तो मैं पीछे बताऊँगा।" कुलवन्त ने भी हिन्दी भाषा में ही बात की, "पहले तुम बताओ कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

"मैं आपसे पृथक् में मिलकर बात करूँगा। आप कहाँ ठहरने जा रहे हैं ?"

"मैं एक मित्र के साथ ही उसके घर पर जा रहा हूँ। वह किंग्स रोड पर एक फ्लैट में रहता है।"

—९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप मुझे फ्लैट का नम्बर बता दीजिये। मैं कल आपके साथ प्रातः का अल्पाहार ले सकता हूँ।"

"धन्यवाद।" कुलवन्त ने कहा, "मैं बता सकता हूँ, परन्तु तुम मेरे साथ अभी क्यों नहीं चलते? हम डिनर इकट्ठे ले सकते हैं।"

"परन्तु मेरे साथ एक विशेष व्यक्ति है। मैं इसे छोड़कर नहीं जा सकता।"

"तो इसे भी ले आओ। मेरे साथ भी एक मित्र है। हम चार और यदि तुम आपत्ति न करो तो मित्र की पत्नी और बच्चे भी साथ आ जायेंगे।"

कुलवन्त को भय लग गया था कि यदि अमृत गया तो पुनः नहीं मिलेगा और वह उसके बच निकलने की कहानी सुनना चाहता था तथा फिर घर पर सूचना भेजने की बात भी थी।

अमृत ने कहा, "जीजाजी! मैं तो आपसे पृथक् में बात करना चाहता हूँ। उसके गुप्त होने के कारण आप जानते ही हैं।"

"इसी कारण कहता हूँ कि तुरन्त बात होनी चाहिये। मैं भी अपने कर्तव्य से बँधा हुआ हूँ।"

"परन्तु वहाँ निजी और पृथक् में बात करने को स्थान मिल सकेगा क्या?"

"हाँ, मिल जायेगा।"

"तो ऐसा करिये। मैं 'सोहो स्क्वेयर' में एक चीनी होटल में ठहरने जा रहा हूँ। मैंने वहाँ अपने लिये कमरा बुक कराया है।"

"आओ, मेरे साथ। मैं तुम्हें 'सोहो स्क्वेयर' के ही एक रैस्टोराँ में ले चलता हूँ। हम वहाँ खाना खायेंगे और फिर तुम्हारी गुप्त बात भी सुन लूँगा।"

अमृत ने कुछ विचार किया और फिर अपने साथ आती स्त्री से अंग्रेजी में कहा, "प्रिय! यह एक मित्र है। यह हम दोनों को आज रात खाने पर आमन्त्रित कर रहा है। मैं समझता हूँ कि हम स्वीकार कर लें।"

"जैसा आप चाहें। मुझे तो कल दिन के समय ही काम है।"

इस पर कुलवन्त ने आगे बढ़ अपना परिचय स्वयं ही दे दिया, "मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलवन्तसिंह, मिस्टर अमृत का एक सम्बन्धी हूँ। आप हमारे साथ ही गाड़ी पर आ जाइये। गाड़ी में एक अन्य मित्र भी हैं।"

अब अमृतलाल ने साथ आ रही स्त्री का परिचय करा दिया। उसने बताया, "कुलवन्तजी! यह हैं मिसेज़ सूसन आनन्द।" कहते-कहते अमृत ने मुस्कराते हुए कुलवन्त की ओर देखा।

कुलवन्त ने उसे आश्वस्त करने के लिये कह दिया, "यह तो मैं समझ गया था।" वे टैक्सी की ओर चल पड़े थे। स्त्री ने अपने हाथ में एक छोटा-सा सूटकेस उठाया हुआ था। वह कुलवन्त के दूसरी ओर चल रही थी।

कुलवन्त ने पुनः हिन्दी में बात करनी आरम्भ कर दी, "यह कहाँ मिल गयी है तुम्हें?"

"मैं अपने अफसर से बात कर रहा हूँ अथवा जीजाजी से?"

"यहाँ तो जीजा ही समझो।"

"तो मैं आपको पूर्ण कथा होटल में चलकर सुनाऊँगा।"

"और तब तक कहीं लापता हो गये तो?"

"जीजाजी से लापता नहीं हूँगा। हाँ, भारतीय सैनिक अधिकारी से बचना चाहता हूँ।"

इससे कुलवन्त गम्भीर विचार में मग्न हो गया। वे टैक्सी के समीप जा पहुँचे थे। कुलवन्त ने मिस्टर फ़िट्स से कहा, "इरविन डीयर! सौभाग्य से मैं इनको पा गया हूँ। मुझे ध्यान हो आया था कि कहीं ये अपने 'लगेज' छुड़ाने के लिये पीछे न रह गये हों। इसी कारण मैं पुनः इनको देखने जा रहा था कि ये द्वार पर ही मिल गये।

"ये हमारे साथ रात का खाना खायेंगे। अतः मैंने रात होटल में ठहरने का विचार कर लिया है। इनसे बहुत बातें करनी हैं। कल पुस्तकालय में जाने के कारण समय नहीं होगा।"

"तो फिर हम कब मिलेंगे?"

"मैं अभी तो तुम्हारे साथ मिसेज़ इरविन से 'रिसपैक्ट पे' करने चल रहा हूँ। वहाँ से 'सोहो स्क्वेयर' में मैट्रोपोलिटन में खाना खाऊँगा और वहाँ ही ठहरने का प्रबन्ध करना चाहूँगा।

"आप और मिसेज़ इरविन बच्चों सहित मेरे साथ खाना खायें तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आभारी रहूँगा ।"

इरविन ने स्वीकार किया तो कुलवन्त ने उस स्त्री का और अमृत का परिचय करा दिया ।

चारों व्यक्ति टैक्सी में सवार हो किंग्स रोड पर पहुँचे । वहाँ मिसेज़ इरविन और उसके बच्चों को साथ ले वे अब दो टैक्सियों में सोहो स्क्वेयर में मैट्रोपोलिटन होटल और रैस्टोरां में जा पहुँचे ।

अमृतलाल ने देखा कि कुलवन्त लन्दन से भली-भाँति परिचित है और वह मैट्रोपोलिटन रैस्टोरां में पहुँचा तो उसके रात रहने का प्रबन्ध भी वहाँ सुगमता से हो गया ।

अभी रात के सात बजे थे । खाने को अभी दो घण्टे का समय था । इस कारण सब एक-एक प्याला चाय ले होटल के 'रिसैप्सन रूम' में जा बैठे । कुलवन्त ने अमृत को बता दिया था कि वह उसकी गुप्त बात को रात के खाने के उपरान्त अपने कमरे के एकान्त में सुनेगा ।

इस कारण कुलवन्त ने वहाँ अपने होने की बात बता दी । उसने बताया, "हम हिन्दुस्तानी अधिकारियों को यहाँ आये चार महीने हो चुके हैं और इन चार महीनों में मैं लन्दन में छः-सात बार आ चुका हूँ ।"

"इस होटल वाले आपको जानते प्रतीत होते हैं ?"

"हाँ । मैं प्रायः इसी होटल में ठहरा करता हूँ । यह न बहुत महँगा है और न ही गन्दा ।"

मिस्टर इरविन सूसन से बातें कर रही थी । उसने ऐमिली इरविन को बताया, "मेरे पापा लन्दन में रहते हैं । वह पैंशन पाते हैं । मम्मी एक फ्रांसीसी स्त्री थी । वह मेरे लिये एक अच्छी-खासी सम्पत्ति छोड़ गयी है । मैं लियौन में रहती हूँ ।"

"तो तुमने इस हिन्दुस्तानी से विवाह कर लिया है ?"

"हाँ । मैं कराची घूमने गयी थी । वहाँ यह मिल गया और मैंने इससे विवाह कर लिया । अब इसे अपने साथ रहने के लिये फ्रांस में ले आयी हूँ ।"

"तो यह पाकिस्तानी है ?"

"हाँ, मगर हिन्दू है । वहाँ मुसलमान बन कर रहता था ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कोई जासूस था क्या ?"

"नहीं। मगर इसका इतिहास इसके मित्र से ही पता करियेगा। मैं बताने का अधिकार नहीं रखती।"

इस पर ऐमिली ने बात बदल दी। दूसरी ओर अमृत कुलवन्त को ऐमिली का परिचय दे रहा था। वह बता रहा था, "यह लियौन में रहती है। मैं इसका पति होने के नाते वहाँ ही रह रहा हूँ। 'फ्रेंच एयर लाइन्स' में मैंने नौकरी के लिये प्रार्थना-पत्र दिया हुआ है। वे अगले सप्ताह मेरा टैस्ट ले रहे हैं।"

"परन्तु तुम फ्रांस लियौन में पहुँचे कैसे ?"

"मैं आपको रात खाने के उपरान्त बताऊँगा।"

: ६ :

खाने के उपरान्त फ्रिट्स और उसकी पत्नी खाने के लिये कुलवन्त का धन्यवाद कर अगले दिन-रात का खाना उनके यहाँ लेने का वचन ले चल दिये।

कुलवन्त अपने कमरे में चला गया। अमृतलाल सूसन को अपने कमरे में छोड़ स्वयं कुलवन्त से बात करने उसी के कमरे में आ गया।

कुलवन्त होटल के बैरे को दो प्याले कॉफी लाने के लिये कह अमृत से बातचीत करने बैठ गया। जब बैरा कॉफी दे गया तो अमृत ने कमरे का द्वार भीतर से बन्द कर अपनी कथा बता दी। उसने कहा, "पिछले वर्ष अक्टूबर पन्द्रह को हमारा स्क्वैड्रन लायलपुर के राडार को तबाह करने गया था। राडार को मैंने ही बम्बों से उड़ाया था। मैंने तीन बार गोता लगा बम्ब फैंके थे। तीन डुबकियों में मैंने पन्द्रह बम्ब उस क्षेत्र पर गिराये थे। अन्तिम डुबकी में दो बम्ब निशाने पर बैठे। परन्तु इस बार मेरे जहाज़ के 'फ्यूअल टैंक' में गोली लगने से टैंक बहने लगा था। मैंने और मेरे साथियों ने वहाँ से भाग अमृतसर पहुँचने का यत्न किया। यदि टैंक में आग न लगती तो हम अमृतसर पहुँच जाते, परन्तु लायलपुर से बीस मील के अन्तर पर ही टैंक फट गया। हवाई जहाज़ को आग लग गयी। मैं पैराशूट बाँधे हुए था और मैंने हवाई जहाज़ से छलांग लगा दी।

"मैं एक गाँव में एक मकान की छत्त पर उतरा। मेरे गिरने और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैराशूट के गिरने का शब्द सुन घर की स्त्रियाँ छत्त पर आ गयीं। उनके हाथों में लाठियाँ थीं। उनके आने तक मैं अभी पैराशूट के रस्सों से मुक्त हो रहा था।

"एक लड़की ने मेरे सिर पर लाठी चलाने के लिये उठायी तो मेरे मुख से अनायास ही निकल गया, 'ठहरो, मैं मुसलमान हूँ।'

"इस पर उस लड़की की लाठी नीचे हो गयी। मैं जब कश्मीर में था तो वहाँ अपने रफीक की हत्या करने के लिये मुझे मुसलमान का अभिनय करना पड़ा था। इस कारण सुन्नत करवायी थी।

"मेरे कहने पर लड़की ने कह दिया, 'झूठ।'

'नहीं बहन! मैं मुसलमान हूँ। मेरा हवाई जहाज़ अभी हवा में जल गया है और ख़ुदा की मेहर से मैं बच गया हूँ।'

"इस पर एक बड़ी आयु की स्त्री ने पूछ लिया, 'नाम क्या है?'

"मैंने बताया, 'असगर अली। ख़ुदा की कसम, मैं मुसलमान हूँ।'

"वह स्त्री चुप थी। दो प्रौढ़ावस्था की थीं और एक कुंवारी प्रतीत होती थी। वे परस्पर सम्मति करने लगीं। मैंने तब तक अपने को पैराशूट से छुड़ा लिया। मैंने उनको अनिश्चित मन देखा तो कह दिया, 'थोड़ा पानी पिला दो।'

"वही कुंवारी लड़की नीचे को भागी। उसकी दृष्टि में मुसलमान होने से मैं एक बहादुर पाकिस्तानी अफसर बन गया था। मैंने कहा, 'जान बच जाने से मैं नमाज पर ख़ुदा का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।'

"वे स्त्रियाँ मुझे छत्त से नीचे ले गयीं और मुझे एक खाट पर बिठाया गया। वही लड़की मेरे लिये गिलास में पानी ले आयी। मैंने जल पिया और गिलास वापस करते हुए कहा, 'मुझे अलैहदा नमाज़ पढ़ने दो।'

"मैं देख रहा था कि मेरा वहाँ रहना भययुक्त है। थोड़े ही काल में गाँव में मेरे छतरी से उतरने की बात फैल जायेगी और दूसरे लोग तो वरगलाये नहीं जा सकेंगे। उनके सामने कुछ-न-कुछ कहानी बनानी पड़ेगी। इसी कहानी को सोचने के लिये ही मैं एकान्त चाहता था। उसी लड़की ने एक कमरे में चटाई बिछा दी और मैं घुटने टेक उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बैठा तो स्त्रियाँ बाहर चली गयीं।

"दस मिनट का ही समय था। इसी में कोई काम-चलाऊ कहानी बनानी थी। वह मैंने बना ली।

"दस मिनट गुज़रने से पूर्व ही वही लड़की भीतर आयी और बोली, 'गाँव के चौधरी आपसे मिलना चाहते हैं।'

'उसे यहाँ ही भेज दो।' मैंने नाटक करते हुए कहा।

"वह लड़की बोली, 'मेरा भाई भी जंग में गया हुआ है।'

'मैं भी तो तुम्हारा भाई हूँ।'

"उसने उत्तर नहीं दिया और चौधरी भीतर चला आया। उसने आते ही पूछा, 'क्या तुम मुसलमान हो ?'

'हाँ, चचा जान ! बैठ जाओ। मैं तुम्हें अपना नाम और पता बताता हूँ।'

'नहीं, तुम पहले मुसलमान होने का सबूत दो।'

"मैं चटाई से उठा और पतलून खोल सुन्नत दिखाने लगा। उसे देख वह बोला, 'ठीक है। नाम बताओ ?'

'असगर। मैं कश्मीरी हूँ। वहाँ काज़ीपुर का रहने वाला हूँ। हिन्दुस्तानी हवाई जहाज़ में नौकरी करता था। हमें यहाँ हमला करने को भेजा गया था। मैंने पाकिस्तान में उतरने के लिये जहाज़ को खुद तबाह किया है और छतरी से नीचे उतर आया हूँ।'

"चौधरी ने कहा, 'तुम्हारा काम तमाम करने के लिये लोग बाहर खड़े हैं। मगर रमजान की बीवी कह रही है कि तुम खुदा की कसम खाकर कह रहे हो कि तुम मुसलमान हो।'

'चचा जान !' मैंने कहा, 'वह तो तुमने देख ही लिया है।'

'इस पर भी तुम इस मकान से बाहर नहीं जा सकते। मैं अभी यहाँ के चौकीदार को थाने में भेजता हूँ। वहाँ से पुलिस आयेगी और हम तुम्हें उसके हवाले कर देंगे।'

'क्यों ?' मैंने पूछा।

'तुम भारत सरकार के नौकर जो हो।'

'चचा जान ! ऐसा न करो। खबर भेज दो कि मैं भी मर गया हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पर दूसरे लोगों ने तुम्हें सही-सलामत इस मकान की छत्त पर उतरते देखा है।'

'मगर मैंने तो पाकिस्तान की मदद की है। दुश्मन के एक जहाज़ को तबाह कर दिया है।'

'मगर तुम भाग कर फिर भारत में चले जाओगे।'

'अगर वहाँ गया और उनको मेरी हरकत का पता चला तो गोली से उड़ा दिया जाऊँगा। देखो, चचा! मैं तब तक इसी मकान में कैद रहूँगा जब तक जंग रहेगी। पीछे में पाकिस्तान में ही बस जाऊँगा! उस काफिरिस्तान से निकलने के लिये ही मैं बेताब था। अगर एक हिन्दुस्तानी फौजी समझ कर कैद किया गया तो ये मुझे भूखा मार देंगे। चचा, रहम करो। देखो, जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। खुदा तुम्हारे कामों में बरकत डालेगा।'

"जीजाजी! यह नाटक मैं पहले भी कर चुका हूँ। इसी कारण इस बार भी मैं सफल हो गया। चौधरी को बात समझ में आ गयी। उसने कहा, 'बताओ?'

'मैं तुम्हें अपनी वर्दी उतार कर दे देता हूँ। तुम किसी लाश को पहना कर मेरी लाश का ऐलान कर दो। मैं बच जाऊँगा और ता-हयात तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को दुआ देता रहूँगा।'

"चौधरी को मेरी कहानी पर विश्वास आ गया और वह बोला, 'ठहरो! मुझे ज़रा सोचने दो।' कुछ देर तक वह मौन बैठा रहा। फिर बोला, 'बात बन गयी है। तुम लेट जाओ। मैं रमज़ान की बीवी से राय करता हूँ।'

"वह बाहर चला गया। पाँच मिनट के बाद चौधरी और घर की लड़की लौट आये। लड़की ने कहा, 'चौधरी ने कहा है कि तुम फौजी कैदी नहीं बनना चाहते। हम इसका इन्तज़ाम कर रहे हैं। पहले चौधरी और अम्मी बाहर वालों से बात कर आयें तब पीछे तुमको बतायेंगे कि क्या हो सकता है?

'अभी तुम लेट जाओ! चौधरी साहब गाँव के लोगों को कहने गये हैं कि तुम्हें दिल का दौरा पड़ा हुआ है और तुम्हें दवाई दी जा रही है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उस लड़की ने मेरे लिये खाट वहाँ ही लगा मुझे लिटा दिया और मेरे ऊपर रज़ाई डाल दी। वह स्वयं एक चौकी पर खाट के पास ही बैठ गयी। पाँच-सात मिनट के बाद चौधरी दो गाँव के रहने वाले व्यक्तियों को साथ लेकर आया और मुझे लेटे हुए दिखा गया। चौधरी ने मेरी नब्ज़ देखी और कह दिया, 'तुम ठीक हो रहे हो। जवान, तुम लेटे रहो।'

"चौधरी और दोनों दूसरे दबे-पाँव आये थे और दबे-पाँव ही बाहर चले गये। चौधरी ने लोगों को क्या कहा, मुझे पता नहीं।

"रात को वही लड़की मेरे लिये तन्दूरी रोटियाँ और पतला-पतला माँस का शोरबा लायी। मैं शोरबे में रोटी भिगो-भिगो खा रहा था तो उस लड़की ने बताया, 'मैं समझती हूँ कि तुम्हारी जान बच जायेगी। मगर एक शर्त है।'

'क्या ?' मैंने पूछा।

'तुमको रात ही यह मकान छोड़ना पड़ेगा।'

'तो कहाँ जाऊँगा ?'

'जहाँ मैं ले जाऊँगी।'

'कहाँ ले जाओगी ?'

'अपने ननिहाल में। मगर...।'

'मगर क्या ?'

'मुझसे निक़ाह पढ़ाना पड़ेगा।'

"मैं ध्यान से उस लड़की की आँखों में देखने लगा। वह शर्म से झुक गयी। मैंने स्वीकार किया तो वह उठकर बाहर चली गयी। मेरे लिये वहाँ की देहाती पोशाक लायी गयी और वह पहना मेरी वर्दी उतरवा ली गयी। मैंने अपना पर्स और हवाई जहाज़ का लायसेंस निकाल अपने कुर्ते की जेब में रख लिये। मेरी डायरी और कलम मेरी वर्दी में ही रह गये।

"पन्द्रह-बीस मिनट में चौधरी, लड़की और उसी घर की दोनों अन्य स्त्रियाँ और एक मुल्ला बकर-दाढ़ी रखे भीतर आ गये और मेरा निकाह उस लड़की से पढ़ाकर उसका हाथ मुझे पकड़ा दिया गया।

"वहीं मेरी सुहाग-रात हुई और रात के तीन बजे मुझे लड़की के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ गाँव से विदा कर दिया गया । वहाँ मुल्ला हमारे साथ था ।

"वहाँ से दस मील के अन्तर पर उस लड़की के ननिहाल थे । हम तीनों, दिन के सात बजे वहाँ पहुँच गये और साथ आये मुल्ला ने लड़की की नानी को समझा दिया ।

"यह मुझे पीछे ज्ञात हुआ कि उसकी नानी तो सगी थी, परन्तु उसका नाना उसकी नानी का दूसरा खाविन्द था । मुल्ला के अपने गाँव लौटते ही लड़की ने कहा, 'हमको यहाँ नहीं रहना । आज रात ही हम यहाँ से कराची चले जायेंगे । नाना को मेरा यहाँ आना पसन्द नहीं ।'

: १० :

अमृतलाल ने आगे बताया, "उसी रात हम गाँव से रेल के स्टेशन को चल पड़े । स्टेशन पाँच मील के अन्तर पर था । लाहौर से कराची जाने वाली डाक गाड़ी में हमें स्थान मिल गया और दूसरे दिन मध्याह्न के समय हम कराची पहुँच गये ।

"लड़की कुछ रुपये अपने साथ लायी थी । अतः हम एक होटल में ठहर गये । वहाँ असगर नाम लिखा पति-पत्नी बन रहने लगे ।

"युद्ध बन्द हुआ । तब मैं कराची से भागने की योजना पर विचार करने लगा । मैंने अपनी बीवी फातिमा से कहा कि मैं नौकरी ढूँढ़ना चाहता हूँ । वह यही चाहती थी । इस कारण में प्राय: घर से निकलता था और सायंकाल घर लौट जाता था । कराची से भागने का कोई साधन नहीं मिल रहा था ।

"एक दिन यह सूसन एक दुकान पर मिल गयी । मैं उस दुकान के मालिक से कह रहा था, 'हजूर ! नौकरी चाहिये ।' दुकान एक जनरल स्टोर था ।

'नौकरी नहीं है ।' दुकानदार का स्पष्ट उत्तर था ।

'तो साहब ! मैं भूखा मर जाऊँगा । आज तो सूखे चने खाने को भी दाम नहीं हैं ।'

"सूसन दुकान पर कुछ वस्तुयें खरीद रही थी । मैं अंग्रेज़ी में बात कर रहा था । दुकान के मालिक ने कहा, 'फर्श साफ करने का काम कर लोगे ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कहा, 'हाँ। परन्तु उजरत तुरन्त मिलनी चाहिये। वरना काम भी नहीं कर सकूँगा।'

"दुकानदार ने कहा, 'पहले दो-तीन घण्टे काम कर लो, पीछे खाने-भर को मिल जायेगा।'

"मैं तैयार हो गया और फर्श साफ करने के लिये कोट उतार दुकानदार से पूछने लगा, 'इसे कहाँ रखूँ?'

"इस पर सूसन बोल उठी, 'तुम तो पढ़े-लिखे व्यक्ति प्रतीत होते हो?' इसने अंग्रेजी में पूछा।

'यस मैडम।' मैंने कहा।

'चलो, मैं तुम्हें काम बताऊँगी।'

"मैंने इसकी ओर देखा तो यह फातिमा से अच्छी मालूम हुई। साथ ही यह विदेशी थी। मैं पाकिस्तान से निकलने का साधन ढूँढ रहा था। अतः मैंने उसी समय कोट पहन लिया और कहा 'चलिये।'

"वह बिस्कुट, ड्राई फ्रूट, साबुन और अन्य शृंगार की सामग्री खरीद चुकी थी। उस समय उससे खरीदा सामान बँध रहा था और वह दाम दे रही थी। मैंने उसके सामान का बण्डल उठाया और तैयार हो गया। स्टोर के बाहर टैक्सी खड़ी थी। उसने मुझे ड्राईवर के पास बैठ जाने को कहा और स्वयं टैक्सी में पीछे बैठ गई। सैसिल होटल में हम पहुंचे तो मैं सामान उठा उसके पीछे-पीछे उसके कमरे में जा पहुँचा।

"जब सामान रख दिया तो वह एक कुर्सी पर बैठने को कह बोली, 'मैं फ्रांस जा रही हूँ। मेरे साथ चलोगे?'

" 'यस मैडम।'

'कितना पढ़े हो?'

"मैंने बताया कि मैं इन्जीनियरिंग पास हूँ। मेरे पास हवाई जहाज़ के पायलट का सर्टिफिकेट है और···।" अपने भारतीय सेना के आदमी होने की बात कहना चाहता था, परन्तु कुछ विचार कर चुप रहा।

"इस पर वह पूछने लगी, 'और क्या?'

'यदि आप मुझे पाकिस्तान से बाहर ले जायेंगी तब बताऊँगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या मतलब ?'

"मैंने बात बदलने के लिये कहा, 'मेरे पास बाहर जाने का पासपोर्ट नहीं।'

'तो बनवा लो।'

'नहीं बनवा सकता। मैं पाकिस्तान का रहने वाला नहीं हूँ।'

'ओह ! मगर तुम 'क्रिमिनल' तो नहीं हो ?'

'नहीं-नहीं। मैं एक भद्र पुरुष हूँ।'

'कहाँ के रहने वाले हो ?'

'यदि आप वचन दें कि इस देश में किसी को बतायेंगी नहीं तो मैं बता सकता हूँ ?'

'मैं तुम्हें वचन देती हूँ।'

'मैं 'इण्डियन सिटिजन' हूँ। वहाँ वायु-सेना का एक अफसर था। पिछले युद्ध में हमारे स्क्वैड्रन ने एक पाकिस्तानी राडार को तोड़ देने के लिये आक्रमण किया। मैं राडार तोड़ने में सफल हो गया, परन्तु वापस लौटते हुए हवाई जहाज़ के टैंक में आग लग गयी और हवाई जहाज़ आकाश में ही विस्फोट से फट गया। मैं पैराशूट से कूदा तो एक गाँव में एक मकान की छत्त पर जा गिरा।

"वहाँ के लोग मुझे शत्रु का आदमी समझ मारने दौड़े तो मैंने अपने को मुसलमान और पाकिस्तानी मित्र प्रकट किया। मकान वालों को तो मैंने अनुकूल बना लिया, परन्तु गाँव के लोगों को विश्वास नहीं आया। एक रात घर वालों ने मुझे छुपा कर रखा। रात के समय घर की एक लड़की की सहायता से गाँव से भाग आया और कराची पहुँच गया।

'यहाँ कई दिन से मैं बेकार घूम रहा हूँ।'

'तो तुम फ्रांस चलो और फिर वहाँ से अपनी नौकरी से छुट्टी ले, वहाँ ही रहना। यदि ऐसा करो तो मैं तुम्हारे यहाँ से निकलने का प्रबन्ध कर सकती हूँ।'

'कृपया अवश्य करिये।'

'तुम कहाँ रहते हो ?'

'सड़कों के किनारे घूमता रहता हूँ। रात को किसी सराय में आठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने दे सो जाता हूँ ।'

"मैंने फातिमा की बात नहीं बतायी । यदि बताता तो यह मुझे अपने साथ लाती अथवा नहीं, जानता नहीं था ।

"इस लड़की ने कहा, 'मैं एक अच्छी-खासी अमीर लड़की हूँ । साथ ही तुम फ्रांस में हवाई कम्पनी में नौकरी कर सकते हो । मगर मैं चाहूँगी कि तुम मेरे साथ रहो ।'

"मुझे सन्देह हुआ कि यह भी फातिमा की भाँति मुझसे विवाह करना चाहती है । मैंने इस विषय पर बात नहीं की । मैं तो पाकिस्तान से निकलना चाहता था ।

"मैंने कहा, 'मैं अति अनुगृहीत हूँगा । आप प्रबन्ध करिये ।'

"उसने मुझे होटल के एक पृथक् कमरे में ठहरा दिया और स्वयं फ्रेंच ऐम्बेसी में गयी । उस रात मैं फातिमा वाले होटल में नहीं गया । अगले दिन सूसन मेरा एक नकली पासपोर्ट और विसा बनवा लायी और मैं उसके साथ दस घण्टे में पैरिस पहुँच गया । वहाँ से हम रेल द्वारा लियौन पहुँच गये ।

"यह वहाँ एक बड़े मकान में रहती है । इसकी माँ यहाँ इंगलैण्ड के एक रईस की बीवी थी । इसकी माँ का देहान्त हो चुका है, परन्तु पिता जीवित हैं । यह वहाँ अपनी नानी की सम्पत्ति पर गुजारा करती है । वह इसकी माँ को इसकी नानी ने दी थी और माँ ने इसको दी है । इसका पिता इसकी विमाता के पास रहता है ।

"लियौन में पहुँच इसने मुझे अपना पति बना लिया । हमारा विवाह गिरजाघर में नहीं हुआ । अब यह मेरी पूर्ण कहानी जानती है ।"

कुलवन्त ने कहा, "भाई अमृतलाल ! पीछे अपने माता-पिता को तो सूचना भेजनी थी कि तुम जीवित हो । वह तो तुम्हारा श्राद्ध कर चुके हैं । तुम्हारी पत्नी को तुम्हें मरणोपरान्त मिला अशोक-चक्र मिल चुका है ।"

"मैं सूसन के मोह में फँस गया हूँ । अब भारत लौटने का विचार छोड़ दिया है ।"

"दीदी के बच्चा होने वाला है ।"

"सत्य ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ। तुम एक रात उसके कमरे में रहे थे और उसको अपनी स्मृति दे आये हो।"

"तब तो ठीक हुआ है। माता-पिता को सन्तान मिलेगी। उनका वंश चल सकेगा। यह एक चिन्ता थी। मैं समझता हूँ कि मैं पितृ-ऋण से मुक्त हो गया हूँ। अब मेरे लिये हिन्दुस्तान लौटने में कोई कारण नहीं। मेरे विषय में आप वहाँ कुछ नहीं लिखियेगा।"

"मगर मैं तुम्हारा अफसर भी तो हूँ। तुम सेना से भागे हुए व्यक्ति हो।"

"वे तो मुझे मरणोपरान्त पुरस्कार भी दे चुके हैं।"

"देखो अमृत ! मुझे अपना पता बता दो और मुझे विचार करने दो कि मुझे क्या करना चाहिये।

"मगर एक बात मुझे समझ में नहीं आयी कि तुम तुरन्त किसी-न-किसी से विवाह करने में सफल हो जाते हो। कितनों से विवाह कर चुके हो ?"

अमृत हँस पड़ा। हँसकर बोला, "यह पाँचवीं है।"

"ओह ! बहुत भाग्यशाली हो।"

"मैं अपनी ओर से यत्न नहीं करता। यह तो लड़कियाँ मेरे पीछे भागती हुई प्रतीत होती थीं। परन्तु एक बात से मैं परेशान रहता हूँ। वह यह कि महिमा को छोड़कर जो भी मेरे पल्ले पड़ी है, वह किसी-न-किसी कारण मेरे साथ नहीं रह सकी। इस सूसन पर भी मुझे सन्देह रहता है।

"जब हम लियौन में पहुँचे तो इसने पहली रात मेरे साथ सोने का प्रस्ताव कर दिया। मैं इस प्रस्ताव की आशा ही करता था। तब तक वह मुझ पर कई सहस्र फ्रेंक व्यय कर चुकी थी। मैंने इसे कहा, 'मेरी एक पत्नी दिल्ली में है।'

"इस पर इसने कहा, 'तब क्या हुआ ? अब तुम वहाँ नहीं जाओगे। उसके लिये तुम इस दुनिया में नहीं हो।'

"इसी विचार से कि यह सम्बन्ध भी पक्का नहीं होगा, मैं स्वतन्त्र नौकरी पाने का यत्न कर रहा हूँ। 'फ्रेंच एयर लाइन्स' में नौकरी मिल जाने की आशा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सूसन अब यहाँ किस काम से आयी है ?"

"इसके पिता ने इसे बुला भेजा है। वह चाहता है कि इसका विवाह कर दे। सूसन मुझे अपने साथ लायी है। भेंट कल होने वाली है।"

"अच्छा। मैं कल शनिवार और परसों रविवार लन्दन में ही हूँ। लन्दन से रात आठ बजे के हवाई जहाज़ से नौटिंगम जाने का कार्यक्रम है। सोमवार प्रातःकाल ही मुझे प्रशिक्षण में उपस्थित होना है।

"इस कारण मैं चाहता हूँ कि कल सायं चाय के समय आओ तो बातचीत हो जायेगी। मैं स्वयं भी अनिश्चित मन हूँ कि तुम्हारी मुखबरी करूँ अथवा न ?"

"मैंने इस विषय में बहुत विचार किया है। अब पाँच स्त्रियों की संगत पाने के उपरान्त मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि स्त्रियों की संगत में अन्तर नहीं। अन्तर है पुरुष-स्त्री के दूसरे सम्बन्धों का। इस समय मेरी आयु चौंतीस वर्ष की हो गयी है और मैं अब जीवन में स्थिर होना चाहता हूँ।

"परन्तु जिस बात को भारतीय समाज निन्दनीय मानता है, उसे यहाँ फ्रांस में जीवन की एक सामान्य बात मानी जाती है। इस कारण महिमा और सूसन में निर्वाचन इसी दृष्टिकोण से कर रहा हूँ।

"मैं आपको बताता हूँ कि उस दिन क्या हुआ जिस दिन मैं महिमा को पुनः प्राप्त हुआ था। रात उससे तिरस्कृत मैं अपनी बैरक में लौटा तो उस तिरस्कार का बदला लेने की भावना मन में उत्कृष्ट हो उठी। अतः मैंने योजना बनायी और आपसे उस दिन की छुट्टी ले मैं यह पता करने कि महिमा अपनी नौकरी पर गयी है अथवा नहीं, उसके स्कूल पर जा पहुँचा। आधे दिन के अवकाश के समय वहाँ गया था। मैंने अपनी सूचना भीतर भेजी तो वह बाहर मिलने आयी। मैंने उसे कहा, 'मैं तुमसे सबसे पृथक् में बात करना चाहता हूँ।'

"वह तैयार हो गयी। मैं समझ गया कि मेरा अनुमान ठीक है कि पुरुष-स्त्री आकर्षण सफल हो जायेगा।

"मैं उसे छावनी में अपने क्वार्टर पर ले गया। वहाँ चाय का प्रबन्ध कैन्टीन से करवा लिया। चाय पीते हुए मैंने उससे सुलह करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की इच्छा प्रकट की। उसने एक शर्त रख दी। मैं मान गया और हमारी वास्तविक सुलह वहाँ ही हो गयी।

"रात मैं महिमा के घर पर सोया। माँ ने आशीर्वाद दिया और मैं समझता हूँ कि माँ को आशीर्वाद देने का फल मिल रहा है।"

"क्या शर्त थी महिमा की ?"

"यही कि वह माताजी का परिवार चलाने के लिये एक सन्तान चाहती है। इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं।"

"अच्छा अमृत ! तुम अपने इस अंग्रेज़ श्वसुर से मिलकर मुझे कल यहाँ इसी होटल में मध्याह्नोत्तर चाय के समय मिलना। शेष बात उसके प्रकाश में करेंगे जो तुम्हारी इस श्वसुर से भेंट में होगा।"

रात के ग्यारह बज गये थे। अमृत अपने कमरे में चला गया। अगले दिन प्रातः के अल्पाहार के समय अमृत से भेंट नहीं हुई। सूसन और अमृत दोनों प्रातः का अल्पाहार लेने मिस्टर ब्राउन स्मिथ के मकान पर जा पहुँचे थे।

अल्पाहार के उपरान्त कुलवन्त ब्रिटिश म्युज़ियम में चला गया और वहाँ के पुस्तकालय में जा बैठा। मध्याह्नोत्तर चार बजे तक वह वहाँ रहा। तदनन्तर वह होटल मैट्रोपोलिटन में चला आया। वहाँ सूसन और अमृत दोनों उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

तीनों चाय के लिये 'रिसैप्शन रूम' में चले गये। अमृत ने वहाँ बैठते ही सूसन के पिता से हुआ वार्तालाप सुना दिया। उसने कहा, "कुलवन्त ! मैंने सूसन को तुम्हारा पूर्ण परिचय दे दिया है और हमने मिस्टर ब्राउन स्मिथ को भी अपने 'मैन एण्ड वाइफ' बने रहने का समाचार दे दिया है।

"मिस्टर स्मिथ ने मुझे पसन्द तो किया है, परन्तु वह चाहता था कि मैं विवाह कर लूँ। मैं विवाह कर नहीं सकता। कारण यह कि यह सौगन्धपूर्वक कहना पड़ेगा कि मेरी पहले कोई विवाहित पत्नी नहीं है।

"यह बात मैंने सूसन के पिता से तो बतायी नहीं, परन्तु मैंने कह दिया है कि जैसा सूसन कहेगी, मैं तैयार हूँ। सूसन जानती है कि मैं विवाह नहीं कर सकता। इस कारण सूसन ने एक बात कह दी है। वह यह कि यदि कोई बच्चा होने का अवसर आया तो विवाह कर लेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यहाँ के समाज की बात विचित्र है। उसके पिता ने हमें आशीर्वाद दे दिया है और परमात्मा से प्रार्थना कर दी है कि हमारे घर में एक-दो बच्चे हो जायें।"

इस पर तीनों हँसने लगे।

अब सूसन ने कहा, "मिस्टर सिंह ! मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि आप इनके जीवित रहने की सूचना भारत में न भेजें। यह यहाँ फ्रांसीसी एयर लाइन्स में नौकरी पा जायेंगे और फिर फ्रांसीसी नागरिक के रूप में रहने लगेंगे।"

"मैंने भी इस विषय पर विचार किया है और इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि यह अपना नाम बदलकर यहाँ आपके साथ रहें। मैं इसका रहस्य सेना में नहीं दूंगा। परन्तु इस बात की सूचना इसकी पत्नी को अवश्य दूंगा कि यह जीवित है। उसका इसके साथ क्या व्यवहार होता है, यह मैं उस पर छोड़ता हूँ। अमृत की माता को भी सूचना मिलनी चाहिये। उसको इसके जीवित होने के समाचार से सुख मिलेगा।

'मैं उनको समझाने का यत्न करूँगा कि वे दोनों इससे सम्पर्क उत्पन्न करें और कोई व्यावहारिक प्रबन्ध बना लें। यह भारत में नहीं जा सकेगा। वहाँ यह सेना से भागा हुआ समझा जायेगा और इसका 'कोर्ट मार्शल' भी हो सकता है।

'मैं इसका रहस्य अपने कार्यालय में नहीं बताऊँगा। इसे भी किसी को नहीं बताना चाहिये कि यह मुझे मिला है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

१

मिथिलापुरी को जाते हुए मार्ग में विश्वामित्र राम, लक्ष्मण और सिद्धाश्रम के मुनियों के साथ एक रात विशालापुरी में ठहरे थे। वहाँ के राजा सुमति से भेंट और परिचय प्राप्त कर विश्वामित्र मिथिलापुरी को चले तो मार्ग में महर्षि गौतम के आश्रम में जा पहुँचे। उस आश्रम का सौन्दर्य देख राम और लक्ष्मण मुग्ध हो गये। राम ने मुनि श्रेष्ठ से पूछा, "गुरुवर! यह आश्रम इतना सुन्दर है, परन्तु यह निर्जन क्यों पड़ा है? और यहाँ कोई नहीं रहता, क्यों?"

इस प्रश्न के उत्तर में ही महर्षि विश्वामित्र ने कहा था, "यह आश्रम महर्षि गौतम का है। किसी समय यहाँ चहल-पहल रहती थी। महर्षि के धर्म और ज्ञानयुक्त प्रवचन सुनने के लिये दूर-दूर से लोग आते थे। कोई-न-कोई नरेश यहाँ डेरा डाले रहता था। यह आजकल सूना पड़ा है। इस पर भी यहाँ एक प्राणी रहता है। वह महर्षि की अपनी पत्नी अहल्या है। महर्षि यहाँ नहीं आते। इस कारण अब यहाँ कोई नहीं आता।"

"और माताजी यहाँ अकेली क्यों रहती हैं?"

"वह पति से शापित हैं। बात यह हुई कि उन दिनों जब आश्रम में चहल-पहल रहती थी, एक दिन देवेन्द्र ऋषि के दर्शन करने आये। ऋषि कहीं गये हुए थे। इन्द्र ने ऋषि-पत्नी को देखा तो उस पर मोहित हो गये।

"इन्द्र के मन में पाप समा गया। इस पर आश्रमवासियों से बचने के लिये और ऋषि-पत्नी को किसी प्रकार के अपमान से बचाने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह वन में एकान्त स्थान पर गये और वहाँ से गौतम ऋषि का वेश बना आश्रम में चले आये। आश्रमवासियों ने उनको गौतम ऋषि ही समझा और जिस किसी ने भी उसे देखा, उन्हें ऋषि समझ आदर और सत्कार से हाथ जोड़ नमस्कार किया। इस प्रकार आश्रमवासियों से ऋषि ही समझा जाने पर आश्वस्त हो इन्द्र ऋषि की कुटिया में चला गया और ऋषि-पत्नी के सामने जा खड़ा हुआ। ऋषि-पत्नी उसे पहचान गयी और वह बोली, 'राजन् ! आपने यह छद्म वेश किसलिये बनाया है और इस वेश में आप यहाँ किस कारण आये हैं ?'

"इन्द्र इस पतिव्रता स्त्री से पहचाना जाने पर झेंपा, परन्तु उसने कह दिया, 'सुन्दरी ! मैं तुम पर मोहित हो गया हूँ और तुमसे सहवास की भिक्षा माँगता हूँ।'

"ऋषि-पत्नी इन्द्र को अपने पर मुग्ध देख, अपने सौन्दर्य पर गर्व करती हुई सहवास के लिये तैयार हो गयी।

"सहवास के उपरान्त इन्द्र वहाँ से विदा होने लगा तो ऋषि वहाँ पहुँच गये। ऋषि इन्द्र को छद्म वेश में देख अति क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने इन्द्र को शाप दे दिया। उसने कहा, 'इस पर स्त्री-गमन के पाप के कारण तुम पुरुष कर्म करने के अयोग्य हो जाओगे।

"इन्द्र वहाँ से भागा और सीधा देवलोक में पहुँचा तो अश्विनी कुमारों से अपनी चिकित्सा कराने लगा।

"जब इन्द्र कुटिया से चला गया तो ऋषि ने पत्नी से पूछा, 'तुम पहचान नहीं सकीं इस धूर्त को ?'

'पहचान गयी थी, महाराज ! परन्तु मैं इनके ओज से प्रभावित हो इनको आत्म-समर्पण कर बैठी हूँ।'

'तो तुमने यह पाप-कर्म किया है ?'

"अब गौतम-पत्नी को पश्चात्ताप लगने लगा। इस कारण वह अपने पति से क्षमा माँगने लगी। ऋषि तो उसे भस्म कर देना चाहता था, परन्तु अहल्या को पश्चात्ताप करते देख उसने उसका त्याग-मात्र ही किया।

"तब से ऋषि यहाँ से दो कोस के अन्तर पर अपने नवीन आश्रम में रहते हैं और उनकी त्यक्ता पत्नी यहाँ रहती हैं। महर्षि के दर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाले अब नये आश्रम में जाते हैं और यह आश्रम सूना रहता है।"

राम इस कथा को सुन अति दुःखी हुआ। उसने महर्षि से पूछा, "गुरुजी ! माताजी के दर्शन कहाँ होंगे ?"

"वह बहुत दुःखी हैं और अपनी भूल का घोर प्रायश्चित्त कर चुकी हैं।"

विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को उसी आश्रम के एक कोने में बनी एक कुटिया में ले गये। वहाँ एक अति हीन-क्षीण तपस्विनी आसन पर शोक-मुद्रा में पत्थरवत् बैठी हुई थी। राम ने उस दुःखी स्त्री को देख झुककर नमस्कार किया और कहा, "माताजी ! मैं अयोध्या नरेश दशरथ-पुत्र राम हूँ। मेरे योग्य सेवा बताइये।"

अहिल्या इस सहानुभूतिपूर्ण वाक्य को सुन राजकुमारों का मुख देखती रह गयी। वह कुछ कह नहीं सकी। उसकी आँखों से पश्चात्ताप के अश्रु गिरने लगे।

विश्वामित्र ने उसके मन की व्यथा के विषय में राम को कहा, "महर्षि गौतम इसकी घोर तपस्या पर भी सन्तुष्ट प्रतीत नहीं होते।"

"गुरुजी ! उनको आप समझाइये। हम समझते हैं कि माताजी अपने पाप का पर्याप्त प्रायश्चित्त कर चुकी हैं।"

विश्वामित्र को एक बात सूझी। उन्होंने अपने एक साथी मुनि को महर्षि गौतम के आश्रम में कहलवा भेजा कि विश्वामित्र आये हैं और महर्षि गौतम के दर्शन की अभिलाषा करते हैं। विश्वामित्र ने यह भी कहलवा भेजा कि उनके साथ अयोध्या नरेश महाराज दशरथ के पुत्र राम और लक्ष्मण भी महर्षि को दर्शन देने की प्रार्थना कर रहे हैं।

बात बन गयी। महर्षि गौतम आये। आते ही उन्होंने विश्वामित्र को प्रणाम कर कह दिया, "भगवन् ! मैं अब दूसरे आश्रम में रहता हूँ।"

"हम जानते हैं।" विश्वामित्र ने कहा, "परन्तु हम यहाँ आपके दर्शन की इच्छा करते थे। सो आपने यहाँ आकर अत्यन्त कृपा की है।

"महर्षि ! राजकुमार राम आपसे कुछ निवेदन करना चाहते हैं।'

गौतम ऋषि ने राम की ओर देख उसे आशीर्वाद दिया और कहा, "राजकुमार ! बताओ, क्या चाहते हो ?"

"एक वर माँगने के लिये मैं इस आश्रम पर आया था, परन्तु इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम को सूना देख अति दुःखी हूँ।"

"माँगो राजकुमार! मेरे बस में हुआ तो अवश्य दूंगा।"

"भगवन्! माताजी क्षमा के योग्य हैं। वह घोर प्रायश्चित्त कर चुकी हैं।"

मुनि एक क्षण तक राम का मुख देखता रह गया। राम ने ऋषि-पत्नी की ओर संकेत कर कह दिया, "इनकी दयनीय अवस्था देखिये। भगवन्! अब दया करिये।"

गौतम ने राम की ओर देखकर कह दिया, "एवमस्तु! परमात्मा इसका कल्याण करे।"

राम ने आगे बढ़ ऋषि के चरण-स्पर्श किये और ऋषि-पत्नी का हाथ पकड़कर उसे आसन से उठाते हुए कहा, "माताजी! आइये, और परमात्मा का धन्यवाद करिये। महर्षिजी ने शाप वापस ले लिया है।"

अहल्या उठी और ऋषि के चरण-स्पर्श करने के लिये झुकी तो ऋषि ने पत्नी को उठा उसके सिर पर हाथ रख आशीर्वाद देते हुए कहा, "अब मैं इस आश्रम में आ गया हूँ और यहीं रहूँगा।"

ऋषि-पत्नी का राम द्वारा उद्धार का समाचार विश्वामित्र के मिथिलापुरी पहुंचने से पहले पहुँच गया था। जब ये लोग मिथिलपुरी की राजधानी जनकपुरी में पहुंचे तो महाराज जनक महर्षि विश्वामित्र और तेजस्वी राम के दर्शन के लिये इनके निवास-स्थान पर आये। विश्वामित्र जनकपुरी के एक उद्यान में ठहरे हुए थे।

राजा जनक ने विश्वामित्र के चरण-स्पर्श किये और कहा, "भगवन्! इन राजकुमारों का महर्षि गौतम और उनकी पत्नी से सुलह करवाने का समाचार यहाँ पहुँचा है। हम इससे बहुत प्रसन्न हैं।"

विश्वामित्र ने महाराज जनक को आशीर्वाद दिया और बताया, "हम भ्रमणार्थ आये हैं।"

इस पर जनक ने बताया, "भगवन्! हमारी कन्या सीता अब विवाह योग्य हुई है और हम उसके लिये वर ढूंढ़ने का यत्न कर रहे हैं।"

"यह बात हमने सुनी है।" विश्वामित्र ने कहा, "और उसी के निमित्त में इन दो राजकुमारों के साथ यहाँ आया हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ये कौशल नरेश महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र राम हैं और यह इनके छोटे भाई लक्ष्मण हैं।

"मैं इनको इनके पिता से अपने यज्ञ की रक्षा के लिये माँग कर लाया था। सिद्धाश्रम में इनकी रक्षा में मेरा यज्ञ निर्विघ्न समाप्त हुआ है और अब मैं इनको यहाँ आपकी मनोकामना पूर्ण करने के लिये लाया हूँ।"

"यह राम देखने में एक योग्य युवक प्रतीत होते हैं, परन्तु सीता की इच्छा से उसके वर के लिये शर्त निश्चय की गयी है कि शिव के धनुष पर जो बाण चढ़ा सकेगा, सीता का विवाह उससे ही होगा।"

"राजन्!" विश्वामित्र ने कहा, "यह शर्त तो अति कठोर है। मैंने उस धनुष को देखा है। मैं समझता हूँ कि इस युग में उस पर चिल्ला चढ़ाने में कदाचित् कोई योग्य नहीं होगा।"

"हाँ। बहुत से राजकुमार यहाँ आ चुके हैं और अभी तक इस शर्त को पूरा करने में कोई भी योग्य नहीं हुआ।"

"तो फिर यह कठोर शर्त किसलिये रखी है ?"

इस पर राम ने गुरुजी के कान में धीरे से कहा, "भगवन्! मेरी इच्छा उस धनुष को देखने की हो रही है।"

विश्वामित्र ने एक क्षण तक आँखें मूंद पुनः आँखें खोल महाराज जनक को सम्बोधन कर कहा, "यह राजकुमार उस धनुष को देखने की इच्छा रखते हैं।"

"ठीक है। राजकुमार कल हमारे प्रासाद में पधारें तो उनको वह धनुष दिखाया जा सकता है। यदि यह उस पर बाण चढ़ा कर चला सके तो निस्सन्देह सीता इनको वर लेगी।"

"परन्तु बाबा! यह धनुष कैसा था ?" महिमा ने पूछ लिया।

विष्णुशरण ने कहा, "आज धनुष के अर्थ बाँस का बना हुआ एक छड़ होता है, जिस पर एक डोरा ऐसे बँधा रहता है कि जिससे बाँस टेढ़ा हो झुका रहता है। इस डोरे पर तीर रख उसे खींच कर तीर छोड़ देते हैं। बाँस की लचक से धकेला जाता हुआ तीर लक्ष्य-स्थान की ओर वेग से जाता है।

"परन्तु मैं समझता हूँ कि यह तो एक बहुत ही सामान्य-सा यन्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जो सेनानी और सामान्य जनता समान रूप में रख सकते हैं। धनुष का अर्थ सब ऐसे यन्त्रों से है जो किसी प्रहार करने वाली वस्तु को दूर फेंक सके।

"इन अर्थों में पिस्तौल, बन्दूक, तोप और आजकल के युग में मिसराईल शस्त्र भी धनुष ही कहे जा सकते हैं। उन दिनों में कुछ इसी प्रकार का कोई यन्त्र रहा होगा जिसको कार्य में लाने के लिये न केवल बल, वरन् धनुर्वेद के ज्ञान की भी आवश्यकता रही होगी। केवल बल की परीक्षा पर एक राजा की लड़की को बाज़ी पर लगाना समझ में आता नहीं।

"इस कारण मैं तो यह समझा हूँ कि उन दिनों यह धनुष भी अति विषम ढंग से चलने वाला यन्त्र रहा होगा। राम विश्वामित्र से अनेकानेक प्रकार के शस्त्रास्त्र की शिक्षा ग्रहण कर आया था। अतः वह आशा कर रहा था कि वह इस शिव के धनुष के चलाने की विधि जान लेगा।

"यह ऐसा ही प्रतीत होता है जैसे किसी अनजानी पेचीदा मशीन को कोई योग्य मैकेनिक खोल कर उस पर काम करने का ढंग जान जाये।

"अगले दिन राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ राजमहल में गये। वहाँ उनको शस्त्रागार में ले जाकर धनुष दिखाया गया। यह कहा जाता है कि राम ने उसे चालू कर दिया था, परन्तु चलते-चलते वह धनुष टूट गया। इसमें कारण यह बताया जाता है कि धनुष चिरकाल से बिना प्रयोग के पड़ा हुआ पुराना हो गया था और जर्जर होने के कारण टूट गया।

"इस पर भी मैं यह कल्पना करता हूँ कि धनुष चल पड़ा था और वह वाण छोड़ने लगा था।

"इस प्रकार धनुष के चालू किये जाने पर जनक ने सीता का विवाह राम से करना स्वीकार कर लिया।

"इस बात की सूचना अयोध्या भेजी गयी और वहाँ से दशरथ अपने मन्त्रियों और पुरोहित के साथ जनकपुरी में आया और राम के विवाह के साथ-साथ उसके अन्य तीनों भाइयों का विवाह भी जनक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार की कन्याओं से हो गया।

"उस धनुष के टूट जाने का समाचार शिवजी के शिष्य परशुराम को मिला तो उसे बहुत क्रोध आ गया। उसका विचार था कि धनुष को ठीक ढंग से न चला सकने के कारण टूटा है। इस कारण वह राम के इस हीन कौशल की निन्दा करने जनकपुरी को चल पड़ा।

दशरथ इत्यादि राम और उसके भाइयों का विवाह कर अयोध्या लौट रहे थे कि मार्ग में अमर्ष से भरा परशुराम मिल गया। वह इस विवाह को रुकवाने के लिये जनकपुरी में जा रहा था। जब उसे पता चला कि अयोध्या से गयी बरात विवाह कर लौट रही है तो वह धनुष को तोड़ डालने का दोष राम पर लगाते हुए उसकी निन्दा करने लगा।

"राम ने उसे समझाने का यत्न किया कि धनुष को पड़े-पड़े जंग लग रहा था; इस कारण वह टूटा है। इस पर परशुराम ने कह दिया, "राम! तुम झूठ बोलते हो। अपनी धनुष चलाने में अयोग्यता को छुपाने के लिये यह बहाना कर रहे हो।"

"राम को झूठ बोलने वाला कहा जाता सुन लक्ष्मण ने अपना खड्ग निकाल लिया और परशुराम को ललकारने लगा।

"राम ने पुनः बीच-बचाव करने के लिये परशुराम से कहा,'भगवन्! मैं सत्य कहता हूँ। उस यन्त्र का कोई कल-पुर्जा टूट गया और सब यन्त्र विनष्ट हो गया। इसमें मेरा कोई दोष नहीं।'

"परन्तु परशुराम नहीं माना और राम को द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारने लगा। परशुराम ने अपना परसा चलाने के लिये उठाया तो राम ने उसकी बाँह पकड़ ली। परशुराम का परसे वाला हाथ पकड़ा गया तो वह उसे छुड़ाने का यत्न करने लगा। उसने बहुत यत्न किया, परन्तु वह अपना हाथ छुड़ा नहीं सका। इस पर राम ने उसकी बाँह को इतने ज़ोर से पकड़ा कि परशुराम के हाथ से परसा नीचे गिर पड़ा।

परशुराम ने देखा कि वह इस युवक से पार नहीं पा सकता। वह निस्तेज हो गया था। अतः वह लज्जित हो अपने स्थान सरस्वती नदी के तट पर लौट गया।

इस घटना के उपरान्त तो राम के बल-पौरुष की कहानी भूमण्डल-भर में फैल गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २ :

राम के महादेव के धनुष पर चिल्ला चढ़ा सकने तथा परशुराम को निस्तेज करने की कथा देवलोक में इन्द्र के पास भी पहुँची। वृत्तान्त सुनाने वाले मुनि नारद थे। वह इन्द्र की सभा में पहुँचे तो इन्द्र ने पूछ लिया, "भगवन् ! कहाँ से आ रहे हैं ?"

नारद ने कहा, "महाराज ! मैं राम तथा उसके भाइयों के विवाह का समारोह देखने गया था। उससे पूर्व राम के शिव-धनुष को कार्य में लाने की कुशलता भी मैंने देखी और अन्त में परशुराम की राम से भेंट देखकर मैं आ रहा हूँ।"

"हाँ, तो क्या देखकर आये हैं ?"

इस पर नारद ने पूर्ण वृत्तान्त सविस्तार सुना दिया। इन्द्र इस कथा को सुनकर चकित रह गया। जब नारद पूर्ण कथा सुना चुका तो इन्द्र ने पूछा, "अब आप बताइये, आप क्या समझे हैं ? क्या यह राम देवताओं का कार्य सम्पन्न कर सकेगा ?"

"महाराज ! देवताओं का क्या कार्य है जो आप राम से लेना चाहते हैं ?"

"तो मुनिवर ! आप नहीं जानते क्या ?"

"जानता हूँ। बीस वर्ष से ऊपर हुए रावण देवलोक में आया था और यहाँ की रमणियों से बलात्कार कर गया था। तदनन्तर उसने देवलोक पर आक्रमण कर सहस्रों देवताओं को यमलोक में पहुँचा दिया था। परन्तु भगवन् ! आप देवलोक के साथ किये अन्याय और अपमान का बदला लेना नहीं चाहते।

"एक वर्ष हुआ, मैंने आपसे कहा था कि विश्वामित्र के शस्त्रास्त्र रावण को पराजित करने में समर्थ नहीं होंगे ! आप अपने शस्त्रागार से उसके पास अस्त्र-शस्त्र पहुँचाइये। आपने इस दिशा में कुछ किया प्रतीत नहीं होता।"

इन्द्र झेंप गया। उसने अपनी अकर्मण्यता की सफाई देते हुए कहा, "मुझे अभी तक विश्वास नहीं हुआ था कि यह राम मेरे दिव्य-अस्त्रों का प्रयोग कर भी सकेगा अथवा नहीं।"

नारद ने दीर्घ निःश्वास लेकर कहा, "हाँ महाराज ! देवताओं को.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यों की योग्यता का ज्ञान तो तब होगा जब वे देवलोक पर आक्रमण कर इसे अपने अधीन कर लेंगे। रावण ने देवताओं को अपमानित किया, उनको लूटा, उनके स्त्री-वर्ग पर बलात्कार किया, इस कारण देवेन्द्र ने अपनी अतुल सामर्थ्य वाली 'शक्ति' मेघनाथ को दे दी है।

"अच्छा भगवन् ! आप कुशल-मंगल से तो हैं ? आपका नाच-रंग तो चल रहा है ? नर्तकियाँ और अप्सरायें कुशल से तो हैं ?"

"सब परमात्मा की कृपा है।" इन्द्र ने बात बदलती देख सुख का साँस लिया।

विष्णुशरण द्वारा कही और महिमा द्वारा लिखी कथा पढ़ते-पढ़ते कुलवन्त को झपकी आ गयी। वह बिस्तर में बैठा पुस्तक पढ़ रहा था। पुस्तक उसके हाथ से छूट गयी और वह बिस्तर में लेट गया।

कुलवन्त इंगलैण्ड से प्रशिक्षण प्राप्त कर लौट आया था। उसे दिल्ली पहुँचे अभी तीन-चार दिन ही हुए थे। यह पहला शनिवार था दिल्ली में आये हुए और वह आज इंगलैण्ड से लौट पहली बार इस पुस्तक को पढ़ने लगा था।

महिमा के घर एक लड़का हो चुका था। महिमा की सास सुन्दरी उसके पास रहने लगी थी। वह विचार कर रही थी कि बच्चा एक वर्ष का हो जाये तो उसे बिलासपुर ले जायेगी और उसका पालन-पोषण वहाँ पर ही करेगी। महिमा स्कूल से तीन मास के अवकाश के बाद पुनः स्कूल में जाने लगी थी।

कुलवन्त ने अमृत से भेंट का कथन न तो इंगलैण्ड में अपने साथियों से किया था और न ही उसने दिल्ली आकर अमृत के साथियों से किया था। वह अपने मन में यह भी निश्चय नहीं कर सका था कि वह उसकी बात अमृत की माताजी तथा उसकी पत्नी को बताये अथवा नहीं।

उस रात वह कथा पढ़ते-पढ़ते सोया तो वह नींद में स्वप्न देखने लगा। उसे ऐसा समझ आया कि भारत देवलोक है। भारत के इन्द्र यहाँ के प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री रावण से पराजित हो गये हैं। युद्ध समाप्त हो जाने पर भी उसे स्वप्न में यह दिखायी दे रहा था कि भारत की भारी हानि हुई है और वह अपने सैनिकों की हानि और अपने अत्यावश्यक छम्ब के क्षेत्र के छिन जाने के अपमान को छुपाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये अपने लोगों को अपनी भलमनसाहत और देवतापन की डुग्गी पीट-पीटकर प्रजा के आंसू पोंछ रहा था।

कुलवन्त स्वप्न में देख रहा था कि रूस के प्रधान कोसिगिन ब्रह्मा के समान देवताओं को अपमान से बचाने के लिये राक्षसों और देवताओं में संधि करवा रहे हैं।

वह देख रहा था कि संधि हुई और देवताओं को राक्षसों को प्रसन्न करने के लिये अनेकों बातें माननी पड़ीं। परन्तु सबसे बड़ी बात यह हुई कि राक्षस यह सहन नहीं कर सके कि देवताओं में कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जो पराजित होकर भी कहे कि वह पराजित नहीं हुआ। वह व्यक्ति भारत का प्रधानमन्त्री था और उसको भूतल पर से निकाल देने का प्रबन्ध कर दिया गया।

उसे स्वप्न में कांग्रेसी नेता वही देवता समझ आ रहे थे जो इस घोर अपमान के समय अपने मन को सान्त्वना देने के लिये गांधी धुन गा-गाकर मन बहला रहे थे। वे मन्दिरों और राजभवनों में 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान' का गान कर रहे थे।

उसे सोये-सोये यह करुण-क्रन्दन असह्य हो उठा तो वह घबरा कर जाग पड़ा। वह उठकर बिस्तर में बैठ गया। उसके साथ के बिस्तर में गरिमा लेटी हुई थी। वह तो साढ़े-नौ बजे ही सो गयी थी। अतः अब पिछली रात वह भरपूर नींद ले चुकी थी। अतएव अपने साथ के पलंग पर हलचल हुई तो उसकी भी नींद खुल गयी। उसने आँखें खोल कर देखा तो उसका पति अपने पलंग पर बैठा आँखें मलता दिखायी दिया।

वह भी उठकर बैठ गयी और पूछने लगी, "क्या बात है ? नींद नहीं आयी क्या ?"

"देवलोक विजय का दृश्य इस समय के भारत में घट रहा है। ब्रह्मा ने दोनों पक्षों में संधि तो करा दी है, परन्तु राक्षसों को यह सहन नहीं हो सका कि उनसे पराजित देवलोक वाले डींग हांकते फिरें कि वह जीत गये हैं।

"उनको यह ज्ञान कराने के लिए कि देवता जीते नहीं, वरन् हारे हैं, उन्होंने देवेन्द्र की हत्या कर दी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरिमा पति की बात समझ नहीं सकी। वह आश्चर्य कर पति का मुख देखने लगी। कुलवन्त ने उसे परेशान देखा तो खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "तो नहीं समझी न ? सुनो, मुझे असुर तो पाकिस्तानी समझ आते हैं और देवता यहाँ के कांग्रेस वाले। ये महादेव गांधीजी की अहिंसा रूपी भाँग पी मस्त पड़े थे और अपनी कल्पना का रसास्वादन करते हुए जी रहे थे।

"पाकिस्तानी राक्षसों ने आक्रमण कर दिया। विवश हो ये लड़े, परन्तु सदा राष्ट्र संघ का मुख देखते रहे कि वह उनकी संधि करा दे। राष्ट्र संघ ने युद्ध-विराम तो करा दिया, परन्तु संधि नहीं करा सका। अब ब्रह्मा की भाँति कोसिगिन मंच पर आया और संधि कराने में सफल हो गया। तो इस पर असुरों ने जाते-जाते भारत के प्रधान मन्त्री की हत्या करा दी।

"अब भारतीय देवता पुनः सो जाने की बात कर रहे हैं। वह 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम' की धुन गा-गाकर मन बहलाने लगे हैं।"

गरिमा समझ गई कि बाबा की कथा और पिछले वर्ष हुआ भारत-पाक युद्ध परस्पर मिलकर उसके पति के स्वप्न का रूप बन गये हैं।

वह बोली, "अब सो जाइये। स्वप्न कभी ठीक सिद्ध नहीं होते। देवताओं की सहायता के लिये राम अभी उत्पन्न नहीं हुए।"

"एक पुत्रेष्टि यज्ञ तो हमारे घर में भी हुआ है, परन्तु उत्पन्न हुआ राम प्रतीत नहीं होता। ऐसा समझ आया है कि अश्विनी कुमारों ने फल-पाक बना कर नहीं भेजा।"

गरिमा हँस पड़ी। उसने पूछ लिया, "कितने बजे सोये थे ?

"कुछ पता नहीं। पढ़ते-पढ़ते ही सो गया था। नहीं जानता कि कब सोया था।"

कुलवन्त ने अपने तकिये के समीप पड़ी बाबा से कही हस्तलिखित पुस्तक उठाकर देखी और कह दिया, "आज रात मैंने पचास पृष्ठ पढ़े हैं। अवश्य चार घण्टे तक पढ़ता रहा हूँ। अर्थात् एक बजे सोया हूँ और अब तीन बजे हैं। इस प्रकार दो घण्टे की नींद ले चुका हूँ।"

"तो अब सो जाइये।"

"चित्त करता है कि जल गरम कर स्नान कर लूं। पीछे चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीकर सोने का यत्न करूँ।"

अब गरिमा उठी और उसने गीज़र का स्विच दबा दिया। कुलवन्त बिस्तर से निकल स्नान की तैयारी करने लगा।

जब तक कुलवन्त ने स्नान किया, गरिमा ने चाय तैयार कर दी और दोनों ने चाय पी। इस समय चार बज गये थे। गरिमा तो अपना स्वाध्याय करने लगी। वह रामचरित मानस का पाठ किया करती थी और कुलवन्त पुनः सो गया। अब वह गहरी नींद सोया और चार घण्टे सोकर आठ बजे उठा।

अल्पाहार लेकर कुलवन्त और गरिमा नीचे महिमा तथा उसकी सास से मिलने चले गये।

महिमा और सुन्दरी अल्पाहार ले रही थीं। जब कुलवन्त इत्यादि वहाँ गये तो सुन्दरी ने अल्पाहार के लिये पूछ लिया।

कुलवन्त ने कहा, "मौसी! हम खा-पीकर पेट भर आये हैं।"

"तो एक-एक प्याला चाय ही पी लो।"

"चाय तो हम दो-दो बार ले चुके हैं।" कुलवन्त कहता-कहता हँस पड़ा।

जब सुन्दरी और महिमा इनके हँसने का कारण नहीं समझे तो गरिमा ने बताया, "यह रात बाबा वाली पुस्तक पढ़ते-पढ़ते सो गये थे। सोये-सोये देवलोक के स्वप्न देखने लगे। उसमें किसी प्रकार की भयंकर घटना देख यह जाग पड़े। जब पुनः सो नहीं सके तो इन्होंने पानी गरम कराया, स्नान किया और तब चाय पीकर सोये। अभी-अभी जागे हैं और अल्पाहार लेकर अवकाश पा नीचे आये हैं।"

इस पर सुन्दरी ने कह दिया, "आज महिमा भी कह रही थी। कि उसने भी स्वप्न में सुशान्त के पिता को देखा है। यह विचित्र लड़की है।

"जब वह जीवित था, तब उससे घृणा करती थी और अब जब वह नहीं रहा तो उसके स्वप्न लेती रहती है।"

कुलवन्त ने गम्भीर हो देखा कि महिमा अपनी सास के लांछन का उत्तर नहीं दे रही। वह आंखें नीचे किये नाश्ता ले रही थी।

कुलवन्त के मन में आया कि महिमा को सत्य बात बता देनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। परन्तु वह वचन लेना चाहता था कि वह कोई ऐसी बात नहीं करेगी जिससे सरकारी क्षेत्रों में अमृत के जीवित रहने का पता चल जाये।

इससे उसने कहा, "एक बात तो मुझे समझ आ रही है कि स्वप्न सर्वथा असत्य नहीं भी होते। इनमें सच्चाई का अंश अवश्य रहता है।

"मैं रात ब्रह्मा, इन्द्र और राम-विवाह की बातें पढ़ रहा था और जब सोया तो पाकिस्तान लंका समझ आने लगा। अयूब रावण समझ आया, कोसिगिन ब्रह्मा के रूप में दिखायी दिया। और अपने तत्कालीन प्रधान-मन्त्री देवेन्द्र प्रतीत हुए। देवेन्द्र की हत्या हुई देख ही मेरी नींद खुली थी।"

इससे महिमा ने उत्साहित हो पूछ लिया, "तो आप समझते हैं कि मेरे स्वप्नों में भी सच्चाई हो सकती है?"

"मुझे तो इसमें कोई विस्मयजनक बात प्रतीत नहीं होती।"

"तो यह अनुसन्धान का विषय है?"

"मैंने इस दिशा में कुछ तो अनुसन्धान किया है।"

"सत्य! परन्तु आपने आज तक बताया नहीं?"

"वह इसलिये कि यदि उसका हमारे कार्यालय को पता चल गया तो उसको पकड़ने का यत्न किया जायेगा और उस पर कोर्ट-मार्शल भी हो सकता है।"

महिमा अवाक् अपने जीजाजी का मुख देखती रह गयी। सुन्दरी भी विस्मय में मुख देख रही थी। गरिमा देख रही थी कि उसके पति के मुख पर किसी रहस्य को प्रकट करने की मुद्रा बनी हुई है। वह कभी-कभी बलवन्त के लिये कुछ मनोरंजक खिलौना लाते तो ऐसी ही मुद्रा बना उसे कहा करते थे, "बलवन्त! बताओ, मैं क्या लाया हूँ?"

उसे यह भी स्मरण था कि बलवन्त के पिता ने एक पाकिस्तानी वायु-सेना के एक अफसर द्वारा पहले भी अमृत की खोज करवायी थी। इस कारण वह समझी थी कि सत्य ही कोई नयी बात पता लगी है।

इस कारण उसने कह दिया, "जब इतना बताया है तो अपनी खोज का परिणाम भी बता दीजिये।"

"मुझे भय है कि मेरी जानकारी की बात कहीं कार्यालय वालों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता चल गयी तो बहुत मुसीबत हो जायेगी।"

गरिमा ने ही आगे बात चलायी। उसने कहा, "परन्तु यहाँ बतायी बात कैसे आपके कार्यालय वालों को चली जायेगी ?"

"यदि कोई रहस्य की बात बताऊँ तो तुम लोग अपनी सहेलियों को नहीं बताओगी क्या ?"

"हम क्यों बतायेंगी ?"

"हाँ। यदि तुम सब लोग सौगन्धपूर्वक वचन दो कि किसी से नहीं कहोगे तो एक अपनी जानकारी की बात बता सकता हूँ ?"

गरिमा ने कह दिया, "हाँ, नहीं बतायेंगे।"

कुलवन्त ने गम्भीर हो कहा, "दीदी भी वचन दें तो मैं अमृत के विषय में बता सकता हूँ।"

सुन्दरी ने कुलवन्त के घुटने को हाथ लगाकर कहा, "बेटा ! अब बता दो। मेरा तो दिल धक्-धक् कर रहा है। अब यदि नहीं बताओगे तो यह बैठने लगेगा।"

"माताजी ! वह जीवित है। फ्रांस में एक स्थान पर रहता है। उसने अपने जीवित बच पाकिस्तान से निकलने की कथा मुझे सुनायी है।"

"कहाँ मिला था तुम्हें ?" सुन्दरी ने उत्सुकसा से पूछ लिया।

इस पर कुलवन्त ने उससे लन्दन हवाई पत्तन पर भेंट का समाचार सुना दिया और वह सब कथा सुना दी जो अमृत ने उसे बतायी थी।

अब महिमा ने ठण्डी साँस लेते हुए कहा, "मुझे ठीक ही स्वप्न में वह किसी लड़की के कन्धे पर हाथ रखे खड़े दिखायी देते रहे हैं। मैं समझती हूँ कि उनके भाग्य में स्थान-स्थान का गन्दा पानी पीना ही लिखा है।"

"मैं विचार कर रहा हूँ कि दीदी से कहूँ कि उन्हें एक पत्र लिखें। मैं वह पत्र उसके पास भेज दूंगा।"

"क्या लाभ होगा इससे ?" महिमा का प्रश्न था।

"लाभ का आश्वासन नहीं दे सकता। परन्तु उसने मुझे बताया था कि यह पाँचवीं बीवी है उसकी। उसके भाग्य में ये लड़कियाँ चलचित्र की भाँति आती और विलीन हो जाती हैं। वह आशंका कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था कि यह लड़की भी उसके पास नहीं रह सकती।"

"तो कोई और मिल जायेगी।" महिमा ने कह दिया।

अब सुन्दरी ने कहा, "बेटा कुलवन्त ! तुम ही उसे लिखो। उसे कह भेजो कि तुम्हारी माँ को तुम्हारे बच जाने से प्रसन्नता हुई। अब उसे यहाँ ही रहना चाहिये।"

"माताजी ! वह मेरे इंगलैण्ड में रहते हुए ही 'एयर फ्रांस' में नौकरी पा गया था। उन दिनों वह पैरिस और न्यूयॉर्क में आता-जाता था।"

"यहाँ आकर तुमने उसे कोई पत्र लिखा है क्या ?"

"अभी नहीं लिखा। मैं तीन दिन से विचार कर रहा था कि आपको उसकी कथा बताऊँ और फिर दीदी की प्रतिक्रिया देख उसे लिखूं।"

"तो जीजाजी !" महिमा ने कहा, "उन्हें लिख दीजिये कि मुझे उनके विरुद्ध कुछ नहीं कहना। परमात्मा उनको सुमति दे।"

"ठीक है। लिखूंगा। और यदि तुम लिखना चाहो तो मैं तुम्हारा पत्र उसे भेज सकता हूँ।"

"नहीं ! मैं लिखना नहीं चाहती। मैं उनका पता जानना भी नहीं चाहती। इस पर भी मैं इस दुर्घटना में उनको दोषी नहीं मानती।"

: ३ :

कुलवन्त ने अमृत को पत्र लिखा। उसका लियौन में नाम ए० डी-रोमल था और पत्र-व्यवहार लियौन के पते पर ही होने लगा है।

कुलवन्त लन्दन में रहते हुए भी उसे पत्र लिखा करता था और भारत लौटते समय वह एक दिन उसको मिलने गया था। सूसन डी-रोमल उस समय गर्भवती थी और प्रत्यक्ष रूप में वह इस घटना से प्रसन्न थी। वह अमृत को विवाह करने के लिये कह रही थी।

"अमृत विवाह करना नहीं चाहता था इस कारण पति-पत्नी में एक तनाव की अवस्था हो गयी थी।

कुलवन्त जब डी-रोमल के मकान पर पहुँचा तो अमृत घर पर ही था। परन्तु कुलवन्त का स्वागत सूसन ने किया और उसे अपने मकान में ठहरा लिया। उस समय सायं चाय का समय था, अतः कुलवन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति-पत्नी के साथ चाय पीने जा बैठा। उसे वहां बैठते ही समझ आ गया कि उसके पहुंचने से पहले वे परस्पर किसी दुःखद बात की चर्चा कर रहे थे।

कुलवन्त ने पूछ लिया, "अमृत पत्नी से लड़ पड़े हो क्या?"

"कैसे कहते हो यह?" अमृत ने पूछा।

"तुम दोनों के मुख देखकर यही प्रतीत होता है। देखो अमृत! मैं भी अपनी पत्नी से कभी-कभी लड़ता रहता हूं। जब लड़ता हूं तो पत्नी का मुख ऐसा ही हो जाता है जैसा कि अब सूसन का हो रहा है।"

अमृत खिलखिलाकर हँस पड़ा। कुलवन्त भी हँसने लगा। सूसन हँसी नहीं। उसने कहा, "आप दोनों हंस रहे हैं, परन्तु मैं यह हँसने का विषय नहीं समझती।"

"डीयर सिस्टर!" कुलवन्त ने कहा, "मैं तो इस बात पर हँसा हूं कि मैंने आपके मुख पर कुछ वैसे ही लक्षण देखे थे जो मैं अपनी रूठी हुई पत्नी के मुख पर देखा करता हूं। शेष बात यह कि तुम किस लिये रूठी हो, यह तो मुझे पता नहीं। न ही उस अज्ञात बात पर हँसा हूं।"

"तो मैं बताती हूं।" सूसन ने कुलवन्त के लिये चाय बनाते हुए कहा, "मैं मां बनने वाली हूं। मैं नहीं चाहती कि मेरा बच्चा 'इललैजिटिमेट' दर्ज हो।"

"देखो सिस्टर!" कुलवन्त ने उसको साहस बँधाने के लिये कह दिया, "परमात्मा के घर में तो कोई भी बच्चा 'इललैजिटिमेट' कभी भी नहीं होता। परमात्मा ने बच्चा पैदा करने के लिये जो विधि-विधान बना रखा है, वह तो पालन हुआ ही है। उस विधि-विधान के अतिरिक्त तुमने कोई नया ढंग बच्चा निर्माण का आविष्कार किया है तो बताओ? यह बच्चा, जो तुम कहती हो कि बन रहा है यह 'लैजिटिमेट' ही है।"

"पर मैं तो समाज की बात कह रही हूं। बच्चा पैदा होने पर म्यूनिसिपल अधिकारी बच्चे का नाम रजिस्टर करते हैं। उसे रजिस्टर

—११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराते समय विवाह का सर्टिफिकेट दिखाना पड़ता है ।"

"तो यह बात है । देखो सिस्टर, यह प्रबन्ध तो हो सकता है ।"

"कैसे हो सकता है ? यह तो मेरे लिये किंचित् मात्र भी झूठ बोलना नहीं चाहते ।"

"झूठ बोलने की क्या आवश्यकता है ? मैं एक ऐसे ढंग से विवाह का सर्टिफिकेट बनवा सकता हूँ जिसमें दूसरे विवाह की पाबन्दी नहीं है ।"

"मुसलमानी विवाह की बात कह रहे हैं ?"

"नहीं । मैं हिन्दू तरीके से विवाह की बात कह रहा हूँ ।"

"परन्तु हिन्दुस्तान में भी तो 'बाई गैमी' (दो पत्नियाँ) वर्जित हैं ।"

"मैं जानता हूँ । परन्तु हिन्दू स्मृति में वर्जित नहीं हैं और हिन्दू स्मृति तो हिन्दुस्तान से बाहर भी प्रयुक्त होती है ।

"देखो अमृत ! मैं पैरिस में एक पण्डित को जानता हूँ जो तुम्हें विवाह का सर्टिफिकेट दे देगा । विवाह पाकिस्तान में हुआ कहा जायेगा ।"

सूसन ने कह दिया, "परन्तु वहाँ तो विवाह हुआ नहीं ।"

"अमृत की कहानी सुन तो मुझे यही समझ आया था कि आपने इसे वहाँ ही वरा था ।"

"क्यों जी !" सूसन ने अमृत की ओर देखकर पूछा, "आपने क्या झूठ बोल रखा है इनके सामने ?"

अमृत ने कह दिया, "मैंने कुछ भी झूठ नहीं बोला । मैंने इन्हें बताया था कि लियोन में पहुँचने के उपरान्त ही हम 'मैन एण्ड वाइफ' बने थे ।"

"देखो सिस्टर ! यही बात अमृत ने बतायी थी, परन्तु मैं पूछता हूँ कि क्या अमृत को हसबैण्ड बनाने की इच्छा आपकी कराची में नहीं हुई थी ?"

"इच्छा तो वहाँ ही हुई थी । एक ही नजर में मेरे मन ने कह दिया था कि यह एक इच्छित पति है । मैं इसी विचार से इनको यहाँ लायी थी ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं भी तो यही कह रहा हूँ कि आपने इनको वहाँ ही वर लिया था। जहाँ तक आपका और अमृत का प्रश्न है, आपका विवाह तो वहाँ ही हो गया था। वास्तविक विवाह यही है। शेष तो गौण है।"

सूसन अब चाय की चुस्कियाँ लगाती हुई विस्मय में कुलवन्त का मुख देख रही थी। वह मन में विचार कर रही थी कि कई-कई दिन तक उनमें सहवास नहीं होता। तो क्या उन दिनों वह अविवाहित होती है? इससे वह विचार करने लगी थी कि विवाह में कौनसी बात आवश्यक होती है? क्या सहवास आवश्यक है? कुलवन्त ने उसके मनोभावों को समझते हुए कहा, "देखो सिस्टर! विवाह तो आपका पाकिस्तान में हुआ था और यहाँ का एक हिन्दू पण्डित तुमको हिन्दू तरीके से विवाह का सर्टिफिकेट दे देगा। हमारे समाज में तो विवाह हो जाता है, परन्तु पति-पत्नी के परस्पर मिलने में कभी कई वर्ष भी लग जाते हैं। परन्तु विवाह तो मिलने से एक पृथक् बात है।

"सर्टिफिकेट देश के कानून का पेट भरने के लिये है। विवाहित जीवन आप दोनों के चलाने की बात है।"

अमृत हँस पड़ा। हँसकर बोला, "कुलवन्त! यह कर दो। क्या हम दोनों को उसके सम्मुख जाना पड़ेगा?"

"परन्तु एक बात है।" सूसन ने कहा, "क्या हम उस सर्टिफिकेट से हिन्दू हो जायेंगे?"

"यह इस प्रकार नहीं। आप दोनों हिन्दू तो पहले होंगे। तब ही वह विवाह होगा, अन्यथा वह झूठी बात हो जायेगी।"

"पर मैं तो हिन्दू हूँ नहीं?"

"वह तो कदाचित् तुम पीछे भी नहीं रहोगी। परन्तु विवाह के समय तुम दोनों को हिन्दू समझ ही विवाह किया गया समझा जायेगा।"

"तो उसमें यह लिखा जायेगा कि हमने अपना मज़हब बदल दिया है?"

"वहाँ कुछ नहीं लिखा जायेगा, परन्तु उस रीति से विवाह के अर्थ ही यह होगे कि आप हिन्दू हैं।"

अमृत और कुलवन्त दोनों पैरिस के विद्वान् के पास गये और उससे कह कर संस्कृत में एक सर्टिफिकेट लिखवा लाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सर्टिफिकेट एक सुदृढ़ कागज़ पर लिखा गया था और साथ ही उसका एक फ्रांसीसी भाषा में अनुवाद एक पैरिस के मैजिस्ट्रेट से 'अटैस्ट' करा लिया गया।

कुलवन्त तो पैरिस से ही भारत लौट आया और अमृत तथा सूसन में उस समय सुलह हो गयी थी।

भारत पहुंच कर उसने पहला पत्र अमृत को लियोन में तब लिखा जब वह महिमा और सुन्दरी से बातचीत कर चुका था। उसने पत्र हिन्दी में लिखा और उसमें औपचारिक कुशल-मंगल लिखकर यह सूचना दे दी—

'मैंने तुम्हारी पूर्ण कथा तुम्हारी माताजी को तथा महिमा बहन को सुना दी है। इस कथा की प्रतिक्रिया यह है कि माताजी ने तुम्हें आशीर्वाद और अपनी शुभ कामना भेजी है और महिमा ने कहा है कि वह न तो नाराज़ है और न ही प्रसन्न। उसे आपसे किसी प्रकार का गिला नहीं। वह एक पुत्र को तुमसे पाकर प्रसन्न है।

'तुम्हारे और महिमा के लड़के का नाम सुशान्तकुमार रखा गया है। वह अब पाँच महीने का हो चुका है और ऐसा लगता है कि बड़ा होकर तुमसे कम शरारती नहीं होगा।'

इस पत्र का उत्तर आया, अमृत ने लिखा—'मैंने तुम्हारा पत्र सूसन को पढ़कर और अनुवाद कर सुनाया है। वह पत्र सुनकर आपका धन्यवाद करती है। मेरा प्रणाम माताजी से कहना और महिमा को धन्यवाद कह देना।

'मैं यत्न कर रहा हूँ कि सूसन के बच्चा होने के उपरान्त उसे अमेरिका ले जाकर रहूँ। मैं एयर फ्रांस का नौकर रह सकूँगा। उसके वाशिंगटन स्टेशन पर रहूँगा। मैंने अपने अधिकारियों को राज़ी कर लिया है, परन्तु सूसन अभी तैयार नहीं हुई। उसे अपनी नानी का घर अधिक पसन्द है।

'बच्चा अभी चार महीने तक होने वाला है। तब तक तो यहीं पर हूँ।

'भैया! मुझे तीन हज़ार फ्रैंक मासिक वेतन मिलता है। इसक अतिरिक्त जब पैरिस से बाहर जाता हूँ तो भत्ता भी मिलता है। मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छा भारत आने की हो रही है, परन्तु कई कारणों से ऐसा नहीं कर सकता।

'कभी विचार करता हूँ कि महिमा को पैरिस और इंगलैण्ड की सैर का निमन्त्रण भेज दूँ। परन्तु अपने वहाँ प्रकट हो जाने से भयभीत हूँ।'

कुलवन्त युरोप से लौटा तो वायु-सेना का पुनर्गठन करने के लिये एक कमेटी एयर मार्शल की अध्यक्षता में नियुक्त हुई और कुलवन्त उस कमेटी में सदस्य बना लिया गया।

सैनिक क्षेत्रों में सेना को आधुनिक ढंग पर संगठिन करने तथा इसको आधुनिक यन्त्रों से सुसज्जित करने के लिये योजनायें बनने लगी थीं।

सैनिक अधिकारियों के मन में यह विश्वास था कि पिछला पाकिस्तान से युद्ध अनिर्णीत रहने के कारण पुनः एक युद्ध अवश्यम्भावी है। इस कारण उसको किसी निर्णय तक पहुँचाने के लिये विशेष प्रयत्न की आवश्यकता है। सैनिक मन राजनीतिज्ञों के मन से भिन्न प्रकार का होता है। उनके लिये शत्रु की सेना का विनाश शान्ति की विशेष शर्त होती हैं। यह सन् १९६५ में हो नहीं सका था।

राजनीतिज्ञ तो यह समझते हैं कि बातें करने में चतुराई इतनी होनी चाहिये जिससे कि शत्रु के मन में यह अध्यास बनाया जा सके कि उसे अपने शत्रु से भय नहीं है। कभी सेना भी इस अध्यास में सहायक होती है। परन्तु न तो शत्रु का पूर्ण विनाश सम्भव है और न इससे कुछ लाभ होता है। अतः राजनीति और सैनिक नीति में अन्तर रहता है।

सन् १९६२ की चीनियों से पराजय तथा सन् १९६५ के अनिर्णीत युद्ध के उपरान्त भारत के राजनीतिज्ञों ने सेना को तैयारी के लिये बहुत कुछ छूट दे रखी थी।

अतः युद्ध की तैयारी होने लगी। कुलवन्त युरोप से लौटने के उपरान्त और सैनिक पुनर्गठन की कमेटी का सैक्रेटरी बनने से उन्नति पा गया। इस पर भी उसका हेड क्वार्टर दिल्ली में ही था।

सेना के लिये नये-नये प्रकार के हवाई जहाज और उनमें लगने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले यन्त्रों की खरीद के लिये वह रूस, अमेरिका और इंगलैण्ड की यात्रा पर रहता था।

इन्हीं भ्रमणों में वह लन्दन के हवाई पत्तन पर उतरा तो इसकी दृष्टि अमृत पर जा पड़ी। लगभग एक वर्ष हो चुका था उसे अमृत को पत्र लिखे हुए और उससे पत्र पाये हुए।

अमृत न्यूयार्क जा रहा था। उसका हवाई जहाज़ लन्दन हवाई पत्तन पर उतरा हुआ था और वह उसके 'क्लीयरेंस' मिलने की प्रतीक्षा कर रहा था कि एकाएक कुलवन्त ने उसके कन्धे पर हाथ रख उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। अमृत घूमा और कुलवन्तसिंह को सामने खड़ा देख हाथ जोड़ नमस्कार करने लगा।

"अमृत ! यहाँ क्या कर रहे हो ?" कुलवन्त ने पूछा।

"हेलो, कुलवन्त अपने जहाज़ की 'क्लीयरेंस' मिलने की प्रतीक्षा में हूँ।"

"कहाँ जा रहे हो ?"

"पैरिस से आया हूँ और न्यूयार्क जा रहा हूँ।"

"लियोन नहीं ?"

अमृत कुछ परेशानी अनुभव करता हुआ कुलवन्त का मुख देखता रह गया।

"क्या बात है ?" कुलवन्त ने पूछ लिया।

"उसने मुझे तलाक दे दिया है।"

"किस कोर्ट में ?"

"परमात्मा के कोर्ट में। मेरा मतलब है, एक दिन मेरी बाँह पकड़ कर घर से बाहर निकाल दिया और कह दिया है कि पुनः उसके घर जाऊँगा तो पुलिस में रिपोर्ट लिखा छलना से विवाह करने के अपराध में पकड़वा दूँगी।"

"वाह ! तो अब कहाँ रहते हो ?"

"पैरिस के एक सुबर्ब में एक फ्लैट ले रखा है। सप्ताह में केवल दो दिन वहाँ रहता हूँ, एक दिन वाशिंगटन में रहता हूँ और चार दिन यात्रा में रहता हूँ।"

कुलवन्त से नहीं रहा गया। उसने कहा, "तो अब छटा विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का विचार कर रहे हो ?"

"वह भी कर लिया है। वह हमारे विभाग में एयर होस्टैस है।"

"तुमने इस परिवर्तन की बात लिखी नहीं ?"

"लिखी थी। परन्तु अब विचार करता हूँ कि वह पत्र सूसन ने चुरा लिया होगा। मैं भी विस्मय कर रहा था कि तुमने उसका उत्तर क्यों नहीं लिखा ? उस पत्र में मैंने अपना नया पता लिखा था।"

इस समय फ्रांसीसी 'ट्रांस कौन्टिनेण्टल' की सूचना प्रसारित की गई। अभिप्राय यह कि अमृत के जहाज़ को क्लीयरेंस मिल गयी है।

अमृत ने जल्दी-जल्दी में अपनी जेब से अपने पते का कार्ड निकाल कुलवन्त को देते हुए कहा, "इस पते पर लिखना अथवा कभी पैरिस आओ तो मिलना। तब तुम्हें नयी मिसेज़ से मिलाऊंगा।"

"आऊँगा। सप्ताह के किस दिन वहाँ होते हो ?"

"शनिवार और रविवार को।"

"मिलने का यत्न करूँगा।"

: ४ :

कुलवन्त विष्णुशरण द्वारा लिखी कथा को पढ़ते हुए यह समझ रहा था कि यह बाबा युद्ध-नीति और राजनीति के मूल सिद्धान्तों को जानते प्रतीत होते थे। कदाचित् उन्होंने इस विषय पर बहुत मनन किया था। पुस्तक में उसने नीति की यह बात पढ़ी तो वह चकित रह गया।

एक समय में एक पत्नी तो पत्नी होती है और जब एक से अधिक हों तो वे घर के प्राणी मात्र होती हैं। यदि घर का स्वामी कुशल प्रबन्धक नहीं हुआ तो एक-न-एक दिन वैमनस्य फूट ही पड़ता है। पति अथवा पत्नी तो एक ही होती है, अन्य उसके प्रतिस्पर्धी।

यही बात दशरथ के घर में हुई। दशरथ की तीन पत्नियाँ थीं और तीनों परस्पर स्नेहपूर्वक रहती थीं। उनके स्नेह को चुनौती देने वाली परिस्थिति कोई भी नहीं थी। राजा की अवस्था पचहत्तर वर्ष की हो चुकी थी। वह पति के रूप में सबके लिये समान था। शेष वस्त्र, भूषण, सेवक-सेविकायें सबके लिये प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थीं।

इस सुखमय वातावरण में देवताओं का काम चल नहीं रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोशल राज्य गंगा के उत्तर में था। गंगा को पार कर दक्षिण की ओर कई छोटे छोटे राजा थे। यमुना से पार बीहड़ वन-प्रदेश था और उससे पार विन्ध्याचल था। विन्ध्याचल के दक्षिण की ओर राक्षस उपद्रव मचा रहे थे। वहाँ की प्रजा भाग-भाग कर उत्तर के राज्यों में आ रही थी। वहाँ की भूमि उपजाऊ थी, परन्तु जनसंख्या कम थी। अतः दक्षिण विन्ध्य प्रदेश से आये विस्थापित लोग राज्य के हित में ही थे। अतः वहाँ के राज्यों के लिये यह सुखद स्थिति ही थी। कोशल राज्य में तो अभी इसका प्रभाव नहीं हो रहा था। अतः राम का राक्षसों से कभी भी आमना-सामना होने की सम्भावना नहीं थी।

इस कारण देवता समझने लगे कि रावण और राक्षसों की पराजय का जो आयोजन ब्रह्मा ने किया है, वह असफल हो जायेगा।

रावण को लंका का राज्य प्राप्त किये पच्चीस वर्ष के लगभग हो चुके थे और जो उपद्रव वह दक्षिण भारत में मचा रहा था, उससे वह देश उजड़ रहा था। यह चर्चा इन्द्र ने नारद मुनि से चलायी। उसे नारद मुनि का यह लांछन स्मरण था कि आर्यों की योग्यता का ज्ञान देवताओं को तब होगा जब वे देवलोक पर आक्रमण कर उस पर अपना अधिकार जमा लेंगे। इस उपालम्भ से पीड़ित हो इन्द्र ने इस दिन बातों का प्रवहन भारत पर बदल दिया। नारद ने कहा था कि वह भारत का भ्रमण करके आ रहा है तो इन्द्र ने पूछ लिया, "तो राम-रावण का युद्ध कब होगा ?"

"रावण अब द्वन्द्व-युद्ध नहीं करेगा। वह स्त्रियों का अति प्रयोग करने से दुर्बल हो चुका है। बाली से पकड़े जाने के उपरान्त उसे साहस नहीं हो रहा कि वह किसी से भी द्वन्द्व-युद्ध करे। अतः राम-रावण का युद्ध तो होगा नहीं। हाँ, राम-सेना और रावण-सेना का एक दिन युद्ध हुए बिना नहीं रहेगा।"

"कैसे होगा यह युद्ध ? दोनों एक-दूसरे से सात-आठ सौ कोस के अन्तर पर हैं।"

"उसके लिये मैं यत्न कर रहा हूँ। इस अर्थ मैं अयोध्या गया था और वहाँ एक पाँसा फेंक आया हूँ।"

"मुनि जी ! क्या पाँसा फेंक आये हैं ?" इन्द्र ने उत्सुकता से पूछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया।

"बताने का नहीं है। मैं ऐसा समझता हूँ कि उस चाल से राम राक्षस देश में पहुँच जायेगा और तब दोनों मुख्य पुरुषों का आमना-सामना हो जायेगा। यह वैसा ही होगा जैसे कि विष्णु भगवान् का युद्ध माल्यवान की सेना से हुआ था।"

"परन्तु विष्णु के पास तो गरुड़ था और सुदर्शन चक्र था। राम के पास ऐसे साधन हैं नहीं।"

"ये साधन आपके पास हैं। आप उसे राम को देंगे।"

"यह आपको किसने कहा है?"

"कहा तो किसी ने नहीं। मैं अपने मन में विचार कर रहा था कि आपसे कहूँ कि आप इन शस्त्रों को राम को दे दें।

"नहीं मुनिजी! ये साधन तो भगवान् की उपाधि प्राप्त व्यक्ति के ही काम आ सकते हैं।"

"तो आप उसे भगवान् की उपाधि से विभूषित कर दें। ऐसा करने की सामर्थ्य आप में है।"

"नहीं मुनिवर! मैं उपाधि वितरक नहीं हूँ। वह हमारे पुरोहित ब्रह्माजी हैं। वह चाहें तो यह बात कर सकते हैं।"

नारद मुनि की चाल यह थी कि राम को किसी प्रकार अयोध्या से निकलवा कर उन वनों में भेज दिया जाये जहाँ राक्षसों का उत्पात हो रहा था। इसके लिये मुनि ने मंथरा को प्रभावित किया। मंथरा कैकेयी की दासी थी। उसे तैयार किया गया कि वह रानी कैकेयी को भड़काये कि कौशल्या के पुत्र राम को राज्य मिलने पर उसकी और उसके सब दास-दासियों की स्थिति ऐसी हो जायेगी जैसी कि नगर में किसी साधारण स्त्री-पुरुष की है।

यह बात मंथरा की एक दासी-सखी द्वारा उसके कान में डलवा दी गयी। उस समय राम के युवराज बनाये जाने का समाचार राज्य के मुख्य मन्त्रियों के विचाराधीन ही था। यह सामान्य प्रजा को अभी विदित नहीं हुआ था।

जब मंथरा की सखी ने यह बात उसको कही तो मंथरा को विश्वास नहीं आया। इस पर भी वह कल्पना करने लगी थी कि यदि यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार ठीक हुआ तो क्या सत्य ही उसकी तथा उसकी रानी कैकेयी की यह दशा हो जायेगी ?

इसके कुछ दिन उपरान्त ही राज्य-सभा में यह घोषणा हो गयी कि राम का युवराज के रूप में अभिषेक किया जायेगा। यह समाचार भी सामान्य प्रजा में सबसे पहले प्रचारित हुआ।

मंथरा ने इस समाचार को अयोध्या नगर में हर्षोल्लास से कहा जाता सुना। इस समय तक उसके मन में अपनी सखी द्वारा डाला गया विषबीज पनप चुका था। अतः इस समाचार को सुनते ही वह अपनी रानी कैकेयी के सम्मुख उपस्थित हो बोली, "महारानी जी! कुछ सुना है ?"

"क्या ?"

"राम का राज्याभिषेक हो रहा है।"

"सत्य ?"

"तो आपको विदित नहीं ?"

"कहाँ से सुन आयी हो इस शुभ समाचार को ?"

"तो यह शुभ समाचार है ?"

"तो यह नहीं है क्या ?"

"महारानी जी! अयोध्या के कुँजरे-कबाड़ी भी इस समाचार की चर्चा कर रहे हैं और यहाँ राजप्रासाद में इसकी गंध तक नहीं है।"

"इसमें कुछ कारण रहा होगा।"

"क्या कारण हो सकता है ?" मंथरा ने माथे पर त्योरी चढ़ा कर पूछा।

"कोई राजनीति की बात रही होगी।"

"नहीं रानी जी! यह राजनीति की नहीं, वरन् यह राजप्रासाद में चल रही नीति की बात है। देखिये, आपको इस समाचार का ज्ञान नहीं और फिर यह कल ही हो रहा है। इस समय आपका पुत्र यहाँ नहीं है। वह ननिहाल में है। मुझे तो विश्वास है कि यह समाचार आपसे छुपा कर रखने के लिये प्रासाद में किसी को नहीं बताया गया।

"एक बात और है। मेरी एक सखी ने मुझे यह समाचार आज से एक सप्ताह पूर्व ही सुनाया था, परन्तु मुझे विश्वास नहीं हो रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। परन्तु आज प्रजा को सुनाया जाता देख आयी हूँ तो मन विषाद से भर गया है।"

"पर मंथरा, यह सब क्यों ?"

"महारानी ! इसके कुछ वर्ष उपरान्त की बात मैं देख रही हूँ। महारानी कौशल्या राजमाता होंगी और आप तथा महारानी सुमित्रा एक सामान्य प्रजा की-सी स्थिति में हो जायेंगी। जानती हैं कि आपकी स्थिति क्या होगी ? केवल मात्र गुज़ारेदार की। गुज़ारेदार का अभिप्राय यह होता है कि निर्वाह के लिये मिलने वाली वृत्ति पाना।

"महारानी सुमित्रा की स्थिति तो फिर भी आपसे अच्छी होगी। उनका लड़का लक्ष्मण राम के साथ घनिष्टता का सम्बन्ध रखता है। राम अवश्य लक्ष्मण को किसी अधिकार-युक्त कार्य पर लगा देगा, परन्तु भरत तो बाल्यकाल से ही ननिहाल में रहते हैं। उनका राम से भी हेलमेल नहीं है। अतः उनकी और आपकी स्थिति बहुत ही हीन होने वाली है।"

कैकेयी ने इस भावी धूमिल चित्र की कल्पना की तो उसका दिल भीतर-ही-भीतर बैठने लगा। इस निराशा की अवस्था में उसने कह दिया, "मंथरा ! तुम कदाचित् ठीक कहती हो। परन्तु देखो न, इसका दोष तो मैं अपने भाग्य को ही दे सकती हूँ। यज्ञ में उपलब्ध दैवी पाक हम तीनों रानियों ने एक समय खाया था, परन्तु पुत्र कौशल्या के पहले हुआ। मुझे स्मरण है कि महाराज की सेवा में पहले मैं गयी थी, परन्तु गर्भ स्थिति कौशल्या के पहले हुई थी। भला इसके लिये मैं कैसे और किससे झगड़ा करूँ ?"

"झगड़ा करने की आवश्यकता नहीं रानी जी ! अपनी अर्जित स्थिति से लाभ उठाना चाहिये। एक बार पश्चिम के असुरों के साथ हुए युद्ध में आपने महाराज की सेवा की थी। यह सेवा उसी युद्ध में दो बार सम्पन्न हुई थी। उस समय महाराज ने प्रसन्न हो आपको वर दिये थे। आपने वे वर सुरक्षित रखे हुए हैं। आज अवसर है उन वरों को माँगने का।"

"परन्तु उसके उपरान्त तो युग बीत गया है।"

"महारानी ! क्षत्रियों का वचन टलता नहीं। सूर्य और चांद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने स्थान से टल सकते हैं, परन्तु क्षत्रिय का वचन नहीं टलता। आप उन वरों को जीवित करिये और दो बातें माँगिये। एक यह कि राज्याभिषेक भरत का हो और दूसरा यह कि राम को देश निष्कासन की आज्ञा दे दी जाये।"

"यह क्यों ?"

"इस कारण कि राम यहाँ राज्य में रहता हुआ लोकप्रिय हो रहा है। अतः भरत के राजा बन जाने पर भी वह राम की दया पर ही रहेगा। इस कारण कम-से-कम इतने काल के लिये जितने में आप समझती हैं कि भरत का राज्य सुदृढ़ हो सकता है, राम को वनवास दिलवा दीजिये।"

"कौन मानेगा इस बात को ?"

"महारानी जी ! आप सत्याग्रह कर दीजिये। खाना-पीना बन्द कर दीजिये। अपने को शोकाभिभूत प्रकट कीजिये। अपने अधिकारों के लिये कुछ कष्ट सहन करना ही तो तपस्या कहलाती है। तपस्या एक दैवी गुण है। आप यह करने में योग्य हैं।"

इस प्रकार अयोध्या में दशरथ के राजप्रासाद में प्रथम ऐसा अवसर आते ही जिसमें एक पत्नी और दूसरी पत्नी में अन्तर होना था, फूट पड़ गयी। पत्नी और पति का भाव विलुप्त हो गया और एक परिवार में दो स्त्रियाँ प्रतिस्पर्धी के रूप में दृष्टिगत होने लगीं।

ज्यों ही मंथरा की वाक्चातुरी का प्रभाव कैकेयी पर हुआ कि उसके प्रासाद में दिये बुझा दिये गए। रानी ने अपनी वेणी खोल दी, भूषण उतार दिये, सामान्य शोक समय के पहनने वाले वस्त्र पहन, भूमि पर लेट गयी।

बात यह हुई थी कि राजा मन्त्री-मण्डल की उन बैठकों में स्वयं उपस्थित नहीं होता था, जिनमें युवराज-पद के विषय पर विचार होता था। जब मन्त्री-परिषद् इस बात पर सहमत हुई कि राम युवराज बने और उसे राज्य का कार्य-भार सौंपा जाये तो यह समाचार राजा से भी पहले प्रजा को मिल गया। राजप्रासाद में तो यह समाचार प्रजा के पास पहुँचने के उपरान्त पहुँचा।

मन्त्री-मण्डल जानता था कि राजा दशरथ राम के युवराज बनाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने से प्रसन्न होगा। इस कारण राज्य-परिषद् में निश्चय होते ही प्रजा में यह घोषणा कर दी गयी और प्रजागण राम के प्रति स्नेह तथा मान का भाव रखते हुए हर्षोल्लास में नाचने-गाने और कूदने लगे।

महाराज दशरथ को यह समाचार मिला तो वह सबसे पहले इसे अपनी सबसे प्रिय रानी कैकेयी को सुनाने के लिये पहुँचा। परन्तु कैकेयी के भवन की शोक-युक्त अवस्था देख वह स्तब्ध खड़ा रह गया। उसने एक दासी से पूछा, "यहाँ अन्धकार की अवस्था क्यों है?"

दासी जानती हुई भी बता नहीं सकी। उसने कह दिया, "महाराज! मैं नहीं जानती। महारानी जी भीतर हैं।"

राजा विस्मय-ग्रस्त भीतर के आगारों में पहुँचा तो वहाँ की अवस्था और भी बुरी देख वह लम्बे-लम्बे पग उठाता हुआ अन्तःपुर में जा पहुँचा और वहाँ भेंट करने के आगार में सर्वथा अन्धकार देख आवाज़ देने लगा, "महारानी! महारानी कैकेयी!!"

उसके मन में भय समा गया था कि किसी प्रकार की दुर्घटना हो गयी है। महाराज के कई बार पुकारने पर एक धीमी-सी आवाज़ आयी, "भगवान् का धन्यवाद है कि आपको यहाँ आने के लिये अवकाश मिल गया है।"

आवाज़ की दिशा में दशरथ गया तो अन्धेरे में उसका पाँव किसी से अटका और वह गिरते-गिरते बचा। यह कैकेयी थी।

"अरे! तुम यहाँ किसलिये पड़ी हो?" दशरथ ने पूछ लिया।

"मैं वहीं हूँ जहाँ आपने मुझे पटक दिया है।"

"और यह अन्धकार भी मैंने कर रखा है?"

"हाँ, महाराज! अब आप आये हैं तो प्रकाश कर दीजिये।"

दशरथ ने ताली बजायी। दासी आयी तो महाराज ने आज्ञा दी, "प्रकाश करो।"

उस बड़े-से आगार में एक धीमा-सा प्रकाश कर दिया गया। महाराज रानी के समीप भूमि पर ही बैठ गये और पूछने लगे, "क्या कष्ट है देवी? मुझे तुरन्त सूचना क्यों नहीं भेजी?"

"आपके ढोल-नगाड़ों के तुमुल नाद में यहाँ की चीख-पुकार की सुनवायी कैसे हो सकती थी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रानी ! कुछ स्पष्ट बात कहो। आज हम बहुत प्रसन्न हैं। आज माँगो जो मन में आये। वर माँगो, हम देंगे।"

"पहले दिये वर और वचन तो भी पूरे हुए नहीं और अब के दिये वचन को क्या करूँगी ?"

"कौन-से वचन पूरे नहीं किये ?"

अब कैकेयी उठकर भूमि पर बैठ गयी और माथे पर त्योरी चढ़ा कर बोली, "तो अवस्था बड़ी हो जाने के साथ स्मृति भी क्षीण होने लगी है ?"

"हाँ। यह बात तो है, परन्तु तुम तो बूढ़ी नहीं हुईं। रानी, स्मरण करा दो तो हम उनको भी पूरा कर देंगे।"

कैकेयी ने स्मरण कराया। उसने कहा, "एक बार पश्चिम देश में असुरों से युद्ध करते हुए आप असुरों से घिर गये थे और आपका रथ टूट गया था। तो आपको स्मरण है कि तब क्या हुआ था ?"

"ओह ! याद आ गया। उस युद्ध में दो बार तुमने हमारी जान बचायी थी और हमने दो वर दिये थे। अच्छा, पहले उन्हीं को माँगो। बताओ, हम क्या करें कि हमारी रानी इस कोप को छोड़कर हम पर प्रसन्न हो जाये ?"

"माँगूंगी। पर मैं जानती हूँ कि आप उस बात को पूरा नहीं करेंगे।"

"कैसे जानती हो कि हम अपना दिया वचन पालन नहीं करेंगे ? कभी पहले भी ऐसा हुआ ?"

कैकेयी ने आँखें मूंद कह दिया, "हाँ। पहले तो आपने कभी अपना वचन भंग नहीं किया, परन्तु अब मन कहता है कि आप वचन से बदल जायेंगे।"

"नहीं रानी। माँगो ! रघुकुल की रीति है। प्राण जा सकते हैं, पर वचन नहीं। माँगो।"

"तो सुनिये, महाराज ! मैं चाहती हूँ कि आप भरत को युवराज-पद पर आसीन करिये और राम को चौदह वर्ष तक बनवास की आज्ञा दीजिये।"

दशरथ अब कैकेयी से युक्ति करने लगा। वह चाहता था कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ और बात माँग ले, परन्तु कैकेयी नहीं मानी। जब बहुत समझाने-बुझाने पर भी रानी नहीं मानी तो दशरथ मौन हो गया। इस पर कैकेयी ने ताना देकर कह दिया, "बस, हो गयी बात पूरी ? अब आप जाइये। और भविष्य में रघुकुल की रीति की ढींग मत हाँका करिये।"

राजा मुख से न तो कह सका कि वह वचन पालन नहीं करेगा और साथ ही राम के विषय में बात इतनी दूर तक जा चुकी थी कि उसे बदलना सम्भव प्रतीत नहीं होता था।

कैकेयी को एक बात सूझी। उसने राम को बुला भेजा और उसके सम्मुख उसके पिता की विडम्बना का वर्णन कर दिया।

राम क्षत्रिय स्वभाव का युवक था। जिसके लिये जीवन और मरण खेल समान हो, उसके लिये राज्य जैसी वस्तु का त्याग बहुत ही सामान्य बात है। उसने कह दिया, "पिताजी ! आप चिन्ता न करें। आपको दिया वचन पूरा होगा। मैं कल प्रातःकाल ही वन के लिये प्रस्थान कर दूंगा।"

: ५ :

कहानी तो सुनी समझी थी, परन्तु राम के इतिहास की पृष्ठ-भूमि कुलवन्त के लिये विशेष रुचि का विषय बन रही थी। कहानी में आगे लिखा था—

राम के वन जाने के समाचार से अयोध्या नगरी और पूर्ण कोशल राज्य में शोक छा गया। जहाँ नगर में राज्याभिषेक का उत्सव मनाने के लिये नगरवासी सजधज कर तैयार हो रहे थे, वहाँ देवलोक में इस समाचार से नयी लहर उत्पन्न हो गयी। कुछ उत्सुकता, कुछ आशा और कुछ भय की भी भावी गतिविधियाँ दिखायी देने लगी थीं।

जिस दिन कुलवन्त ने कहानी का यह अंश पढ़ा था उसी दिन भारत के समाचार-पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब और उसके विदेश मन्त्री भुट्टो में फूट पड़ गयी है।

भुट्टो पाकिस्तान का विदेश-मन्त्री राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् में भारत और भारत के नेताओं को गालियाँ दे चुका था और सम्पूर्ण भारतवासियों को इससे रोष था। इस समाचार से प्रायः भारतवासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह समझने लगे थे कि यह पाकिस्तान में किसी प्रकार की गड़बड़ के लक्षण हैं और इससे वे लाभ की आशा करने लगे थे।

देवता समझने लगे थे कि अब कोशल देश और रावण के बीच युद्ध होगा। वह विचार कर रहा था कि मानव मन कैसे सब कालों में समानान्तर रेखाओं में चलता है। समान परिस्थितियों में समान व्यवहार स्वीकार करता है।

अयूब भारत को गालियाँ दे-देकर, पाकिस्तानी जनता का ध्यान राज्य से हटा कर एक शत्रु देश पर केन्द्रित कर यह समझ रहा था कि उसे गुलछर्रे उड़ाने का अवसर मिलता रहेगा। परन्तु वहाँ के समझदार लोग समझ रहे थे कि देश का सर्वनाश हो रहा है।

पाकिस्तान का विदेश मन्त्री जुल्फिकार अली भुट्टो यह समझ रहा था कि यह भारत को और विशेष रूप में हिन्दुओं को गालियाँ दे-देकर पाकिस्तानी जनता को प्रसन्न कर रहा है।

इस प्रकार भारत को कोसने में जब भुट्टो बाज़ी ले जाने लगा तो अयूब को चिन्ता लग गयी कि उसका चेला उसको भी मात कर रहा है। अतः पाकिस्तान के प्रधान ने अपने ही विदेश-मन्त्री को पदच्युत कर उसे जेल में डाल दिया।

अपने देश की जनता को अयूब ने यह कह कर प्रसन्न कर दिया कि वह ताशकन्द समझौते को भंग करने के लिये कह रहा है और इससे रूस से पाकिस्तान का द्वेष प्रकट होने लगेगा।

इससे पाकिस्तान की जनता क्या समझी, कहना कठिन था। हाँ, भारत का राज्य और जनता खुशियाँ मनाने लगी थी। समाचार-पत्रों ने इस पर सम्पादकीय लिखे और राजनीतिक नेताओं ने रूस के साथ रहने से अपने को बधाई दी।

लगभग यही बात देवलोक में हुई थी। राम के वन भेज दिये जाने पर देवेन्द्र समझा कि रावण से एक बार युद्ध हुआ तो कोशल राज्य की देवता सहायता कर देंगे और कोशल राज्य की विजय करा देंगे।

पाकिस्तान में विशेष रूप में पूर्वी पाकिस्तान के लोग इस घटना से प्रसन्न नहीं थे। वे समझ रहे थे कि दोनों तानाशाह हैं और ये परस्पर झगड़ कर जनता को मूर्ख बना रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलवन्त फ्रांस में था जब भुट्टो को जेल से छोड़ा गया था। उसके साथ उसका एक साथी वाई० वोपत फ्रांस में कुछ लड़ाकू हवाई जहाज़ ख़रीदने की बातचीत करने गया हुआ था। वोपत ने पैरिस के एक समाचार-पत्र में भुट्टो के स्वतन्त्र होने का समाचार पढ़ा और उसमें यह भी पढ़ा कि भारत में इस स्थिति बदलने से सन्तोष अनुभव किया गया है। यह पढ़ वह इस सन्तोष में कारण नहीं समझा तो उसने कुलवन्त से पूछा, "भारत के इस सन्तोष से क्या समझे हैं, कुलवन्त?"

कुलवन्त ने समाचार-पत्र ले पढ़ा और कह दिया, "यदि यह 'स्मोक स्क्रीन' नहीं तो महा मूर्खता है।"

"पाकिस्तान में जितनी देर तक सैनिक तानाशाही चलती रहेगी तब तक भारत के साथ युद्ध की सम्भावना बनी रहेगी।"

"परन्तु युद्ध क्या ख़राब बात है?"

"नहीं, वोपत! यह ख़राब नहीं। यह तो देश के लिये वरदान होता है। युद्ध से जातियाँ पवित्र और सुदृढ़ होती हैं।"

"हारने पर भी?"

"हाँ। परन्तु शर्त यह है कि जाति में जीवन हो। मुर्दा जाति के लिये तो युद्ध अथवा शान्ति कुछ अर्थ नहीं रखते, परन्तु जीवित जातियों में युद्ध तो यज्ञ की भाँति पवित्र और समृद्ध करने वाला होता है।

"भारत में अभी भी गांधी की मीमांसा कार्य कर रही प्रतीत होती है, जिसमें यह भावना बना दी गयी है कि देश अपमानित एवं लज्जित किये जाने पर भी शान्ति की लालसा करता रहे।"

वोपत ने बात बदल दी। उसने कहा, "यदि युद्ध होना है तो यह बोझा हमारे कन्धों पर आ जाता है कि देश की रक्षा में हम भूल न करें।"

"पर मिस्टर वोपत! सुरक्षा मन्त्री का सन्देश आया है कि मिराज लड़ाकू जहाज़ों के ख़रीद की बात पक्की कर ली जाये।"

"पर वह तो अंग्रेज़ी नैटों से घटिया है।" वोपत ने कहा।

"हाँ। मैं समझता हूँ कि 'मिराज' वालों से झगड़ा कर ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जाये कि सुरक्षा मन्त्री स्वयंमेव नैट्स ख़रीदने

—१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये तैयार हो जायें।"

"बात तो ठीक है। युद्ध के समय मरने-जीने की बाज़ी तो सेना के अधिकारियों ने ही लगानी है और हम उनके हाथों में घटिया साधन देंगे तो अपने ही सैनिकों की हत्या और फिर देश की पराजय के लिये उत्तरदायी होंगे।"

"मैं समझता हूँ कि हमें इंगलैण्ड वापस चला जाना चाहिये। हमें स्पष्ट लिख देना चाहिये कि 'मिराज़' घटिया जहाज़ हैं।"

"और अमेरिकन 'सैबर' को कैसा समझते हो?"

"मेरे विचार में तो वह भी 'नैट' की तुलना में घटिया हैं।"

दोनों पैरिस के एक होटल में ठहरे हुए थे और फ्रांस, अमेरिकन और इंगलैण्ड के जहाज़ बनाने वाली कम्पनियों से बातचीत कर रहे थे।

बातचीत होटल के रिसैप्शन-रूम में चाय लेते समय हो रही थी। दोनों साथी विचार कर रहे थे कि किस प्रकार अपनी सम्मति लिखकर भेजें कि डिफेंस कमेटी वालों के लिये इनकार करने को स्थान ही न रहे?

कुलवन्त ने कहा, "मैं आज रात यहाँ की रिपोर्ट ड्राफ्ट कर तुम्हें दिखाऊँगा। तुम···।"

वह आगे बात कर नहीं सका। उसने आँखें मूँदी हुई थीं कि किसी ने उसे आवाज़ दी, "ब्रदर कुलवन्त।"

कुलवन्द ने आँखें खोल देखा। सूसन उसके सामने खड़ी थी। कुलवन्त ने उठ उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "सिस्टर! कहाँ घूम रही हो?"

"आपके मित्र ने बहुत तंग कर रखा है।"

"ओह! कहाँ है वह?"

"तो आप नहीं जानते?"

"छः मास हुए मैं उसे लन्दन में मिला था। तब वह कहता था कि आपने उसे बाँह पकड़कर घर से निकाल दिया है। उसके उपरान्त मैं भारत लौट गया था। वहाँ से आये मुझे पाँच-छः दिन हुए हैं और इन दिनों में अत्यन्त व्यस्त था। मुझे उससे मिलने का अवसर नहीं मिला। वैसे उसका पता मेरे पास लिखा हुआ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूसन को इस समय तक सामने बैठने का निमन्त्रण दिया जा चुका था। कुलवन्त घबरा रहा था कि वोपत के सामने अमृत का नाम न आ जाये। कहीं वह जान गया तो दिल्ली में उसके जीवित होने का समाचार पहुँच जायेगा और कई प्रकार की पेचीदगियाँ उत्पन्न हो जायेंगी।

इस कारण कुलवन्त ने पूछ लिया, "सिस्टर! पैरिस में कहाँ ठहरी हुई हैं?"

"मैं इसी होटल के रूम नम्बर थ्री-नाट-फोर में ठहरी हूँ।"

"अच्छा देखो, यह हैं मिस्टर वोपत। हमारे एयर मार्शल हैं। मैं आपके कमरे में आ पूर्ण इतिहास जानने की इच्छा करता हूँ। क्या रात के खाने के उपरान्त मैं आपसे नहीं मिल सकता?"

सूसन वोपत के परिचय के उपरान्त सावधान हो गयी। वह समझ गयी कि अमृत सेना से भागा हुआ व्यक्ति घोषित हो सकता है। अतः वह बोली, "ठीक है। अब तो मैं भी एक काम से जा रही हूँ। मैं आपके मित्र की पूर्ण कथा आपको अपने कमरे में आराम से बैठ सुनाऊँगी।"

"चाय यहीं ले लें।"

"वह मैं ले चुकी हूँ। चाय लेते हुए ही मैंने आपको देखा था और आपसे बात करने का विचार बना बैठी थी।"

जब सूसन गयी तो वोपत ने पूछ लिया, "यह बहन कैसे और कब बना ली है यहाँ?"

"यह एक लम्बा किस्सा है। कभी अवकाश के समय सुनाऊँगा। यह जन्म से अंग्रेज लड़की है, परन्तु अपनी माँ की सम्पत्ति पर रहती है। वह एक फ्रांसीसी स्त्री थी।"

"तो तुम रात खाने के उपरान्त इसके कमरे में जाओगे?"

"हाँ। यह अपने पति के विषय में कुछ बताना चाहती है।"

"परन्तु पैरिस में एक युवती के कमरे में रात खाना खाने के उपरान्त जायें तो ठीक नहीं। इससे तो होटल में 'स्कैण्डल' बन सकता है।"

"ठीक है। परन्तु मैं एक हिन्दुस्तानी और हिन्दू हूँ। अतः जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी स्त्री को बहन मान लेता हूँ तो फिर वह बहन के अतिरिक्त अन्य कुछ बन नहीं सकती।"

वोपत हँस पड़ा। हँसकर बोला, "पर वह मेरी तो बहन नहीं बनी। यदि मैं भी तुम्हारे साथ वहाँ चल सकूँ तो कैसा रहे?"

"यह तो उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। मेरे साथ तो वह अपने पति से झगड़े की बात करना चाहती है। इस समय तो नहीं। आगे-पीछे तुम उससे बात कर लो, परन्तु चार बच्चों के बाप होते हुए कैसे ऐसी बात विचार करने लगे हो?"

"मुझे वह मज़ेदार स्त्री समझ आयी है।"

"देखो मिस्टर वोपत! तुम उससे मेरी अनुपस्थिति में बातचीत कर लो। इतना बता दूं कि यह लखपति है।"

"यह तो और भी ठीक है।"

चाय के उपरान्त दोनों अपने कमरे में चले गये। कुलवन्त ने सब बिकाऊ जहाज़ों के विवरण-पत्र निकाले और अपने सामने रख, अपने सुरक्षा मन्त्री को पत्र लिखने लगा। पत्र लम्बा हो गया और लिखते-लिखते रात खाने का समय हो गया। पत्र लिखने में वोपत भी सहायता कर रहा था। पत्र समाप्त कर टाईप करके उन्होंने होटल के पोस्ट-बाक्स में डाल दिया। तदनन्तर वे खाना खाने 'डायनिंग हाल' में आये तो सूसन उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। इनके आने पर उसने कहा, "मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही थी।"

"हम एक आवश्यक 'डिस्पैच' तैयार कर रहे थे। उसे तैयार करने और पोस्ट करने में देर लग रही थी।"

"आइये! मैंने तीनों के लिये खाने का आर्डर दे रखा है।"

"तब तो ठीक है।" कुलवन्त ने वोपत की ओर अर्थ-भरी दृष्टि से देखा और मुस्करा दिया। वोपत ने उत्साहित हो कहा, "आपके जाने के उपरान्त हम आपके विषय में बातें करते थे। उस वृत्तान्त से मैं आपमें रुचि लेने लगा हूँ।"

सूसन परेशानी में कुलवन्त का मुख देखने लगी। कुलवन्त समझ गया कि वह यह जानने की इच्छा कर रही है कि उसने अपने मित्र के विषय में बताया है अथवा नहीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलवन्त ने विचार किया कि उसे बता देना चाहिये कि उसने क्या श्रौर कहाँ तक बताया है। उसने कहा, "सूसन डीयर! मैंने केवल इतना ही परिचय दिया है कि श्राप श्रंग्रेज़ पिता से एक फ्रांसीसी माता की लड़की हैं श्रौर श्रापकी माँ लाखों की सम्पत्ति श्रापके लिये छोड़ गयी है।"

"शेष परिचय तो तुम स्वयं ही दे सकती हो।"

इतता कहते-कहते ही कुलवन्त ने बात बदल दी। उसने कहा, "हमारा पैरिस में काम समाप्त हो गया है श्रौर यदि कल नहीं तो श्रगले दिन हम यहाँ से चल देंगे। हमारा काम कुछ दिन के लिये लन्दन में है।"

"तो श्राप श्रपने मित्र के बेबी को नहीं देखेंगे ?"

"वह कहाँ है ?"

"इस समय लियौन में है। एक नर्स उसकी देख-रेख कर रही है।"

"मैं देखना चाहूँगा। परन्तु पहले श्रापके बेबी के पिता से वैमनस्य की कहानी सुन लूं, तब विचार करूँगा।"

"श्रब तो पैरिस से लियौन हवाई जहाज़ जाता है। यदि श्राप प्रातःकाल जायें तो दिन-भर वहाँ रहकर सायंकाल लौट सकते हैं।"

"परन्तु वहाँ तो मैं श्रपने मिस्टर वोपत के साथ ही जा सकता हूँ।"

"तो मैं इनको भी वहाँ श्राने का निमन्त्रण दे सकती हूँ।"

"श्रब बताश्रो, वोपत ?"

"परन्तु हमने परसों लन्दन पहुँचना है।"

"कल का दिन यहाँ खाली है। यदि सिस्टर सूसन कल वहाँ चल सकें तो हम भी उनके साथ चल सकेंगे।"

"मैं तो कल प्रातः के हवाई जहाज़ से जा रही हूँ।"

"क्यों, मिस्टर वोपत! क्या हम कल लियौन नहीं जा सकते ?"

"मुझे तो सूसन का निमन्त्रण स्वीकार करते हुए बहुत प्रसन्नता होगी।"

"तब कल का कार्यक्रम निश्चय समझो। मैं श्रभी टेलीफोन कर श्राप दोनों के लिये सीटें रिज़र्व करा देती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व इसके कि खाना आये, वह होटल में एयर लाइन्स के रिज़र्वेशन क्लर्क से लियौन के लिये दो अन्य सीटों के लिये अपने पास से दाम दे आयी।

वोपत ने सूसन के आने पर पूछा, "क्या दे आयी हो?"

"वह आपने नहीं देना। आप वापसी भाड़ा स्वयं देना।"

खाना आया तो तीनों खाने लगे। खाने के समय इधर-उधर के विषयों पर वार्त्तालाप होता रहा।

: ६ :

खाने के उपरान्त वोपत एक पिक्चर देखने चला गया था और कुलवन्त सूसन के साथ उसके कमरे में चला गया।

सूसन ने अपने अमृत से झगड़े की बात बता दी। उसने बताया, "यह लड़की जिसके साथ आपका मित्र रह रहा है, एक दिन उसके साथ लियौन में आयी थी और हमारे घर में रही थी। उसी रात मैंने इनको अनिच्छित अवस्था में पाया। मैंने इनको इस व्यवहार पर कुछ डाँटा-फटकारा तो वह कहने लगे कि यह उसका 'पर्सनल' (निजी) मामला है। मुझे क्रोध आ गया और मैंने उसे बाँह से पकड़कर घर से बाहर निकाल कहा कि 'आप अपने पर्सनल मामलों को घर से बाहर ले जायें।'

"बस इतनी ही बात हुई है। अब आपके मित्र अपने व्यवहार पर पश्चात्ताप करने के स्थान उस लड़की से खुले-आम रहने लगे हैं। दोनों ने एक फ्लैट किराये पर लिया हुआ है और दोनों एयर लाइन्स में काम करते हैं और 'मैन एण्ड वाइफ' के रूप में रहते हैं।"

"तो अब तुम क्या चाहती हो?"

"वह मेरे बच्चे का पिता है और मैं उससे सुलह करना चाहती हूँ।"

"देखो सिस्टर! मैं समझता हूँ कि या तो तुम्हारे व्यवहार में किसी प्रकार का दोष रहा होगा अथवा इस देश की समाज का चलन ऐसा होगा जिससे कि उसे साहस हुआ है कि वह एक लड़की को लाकर अपनी पत्नी के पास रहने लगा था। मैं तो ऐसे व्यवहार को मनुष्य के सामान्य जीवन में अपवाद समझता हूँ। यह लज्जा-हीन बात कैसे उसके जीवन में आयी, कहना कठिन है। इस पर भी जिन कारणों से यह आई है, उन कारणों की जाँच-पड़ताल करने पर ही तो इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाज ढूंढा जा सकता है।"

"तो करिये। मैं इस जाँच-पड़ताल में आपको पूर्ण सहयोग दूँगी।"

"कठिनाई यह है कि मैं परसों लन्दन जा रहा हूँ और कह नहीं सकता कि कब पैरिस आ सकूंगा और कदाचित् आ ही न सकूं।"

"ब्रदर! अपनी सिस्टर के लिये त्याग करें। कुछ दिन की छुट्टी ले लो।"

"यह सम्भव नहीं। इस पर भी मैंने आपको अपनी बहन माना है तो मैं उसके लिये पूर्ण यत्न करूँगा। परसों तो हम लन्दन जायेंगे। मैं वहाँ से ही किसी सरकारी काम को यहाँ के लिये निकालूंगा और अमृत से मिलकर कोई उपाय करूँगा।"

"पर मुझे कैसे पता चलेगा कि आपके प्रयत्न का क्या परिणाम निकला है?"

"मैं आपसे अमृत को अपने समक्ष मिलाने का यत्न करूँगा।"

"मैं आपकी जीवन-भर आभारी रहूँगी। मैं नहीं चाहती कि मेरे लड़के के भावी जीवन पर किसी दूसरी स्त्री की परछायीं पड़े।"

"परन्तु सूसन! यह मेरा साथी इतना विश्वस्त नहीं है जितना कि मैं सिद्ध हो चुका हूँ। यदि इसको पता लग गया कि आपका पति जीवित है और सेना से भागा हुआ है तो एक मुसीबत खड़ी हो जायेगी।"

"मैं तो कुछ और समझी हूँ।"

"क्या समझी हैं?"

"यह महानुभाव मुझ पर कुदृष्टि रखते हैं।"

कुलवन्त सूसन के इस कथन पर विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। वह समझ नहीं सका कि सूसन कैसे उसके मन की बात जान गयी है।

इस कारण सूसन ने पूछ लिया, "आप मेरे मुख पर क्या देख रहे हैं?"

"आपको किसने उसकें ऐसे भावों को बताया है?"

"किसी ने नहीं। मैंने उसकी आँखों में शरारत देखी है।"

"मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता। परन्तु यह जानते हुए भी तुमने उसको लियोन में चलने का निमन्त्रण किसलिये दिया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शिष्टाचार के नाते। जब आपने बताया कि वह आपके साथ है तो मैं इन्कार नहीं कर सकी। परन्तु वह यदि किसी प्रकार की मुझसे आशा करता है तो वह निराश होगा।"

"इसका मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं। तुम जानो और वह जाने। मैं तो केवल यह कह रहा हूँ कि उसको अमृत का परिचय नहीं देना।

"मुझे अमृत के रहस्य का भारत सरकार के ज्ञान में आना किसी शुभ का सूचक प्रतीत नहीं होता।"

"मैं सावधान रहूँगी।"

जब वोपत पिक्चर देखकर साढ़े-ग्यारह बजे तक लौटा तो कुलवन्त गहरी नींद सो रहा था। इस पर भी उसे जागना पड़ा। वोपत ने द्वार खटखटाया तो कुलवन्त ने नाईट ड्रैस में बिस्तर से निकल द्वार खोला।

"तो तुम आ गये हो?" वोपत ने पूछ लिया।

"उससे तो बीस मिनट तक बातचीत हुई थी।"

"वह तुम्हारा कौन-सा मित्र है जिसके विषय में यह कह रही थी?"

"एक हिन्दुस्तानी मित्र है। वह यहाँ ही नौकरी करता है।"

"कहाँ का रहने वाला है?"

"अपने ही राज्य का है। मेरा मतलब है कि हिमाचल प्रदेश का।"

"मुझे यह स्त्री पसन्द आ गयी है। यदि कल तुम मुझे इसके साथ एकान्तवास का समय दो तो मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँगा।"

"देखो मित्र! समय देना तो साधारण-सी बात है, परन्तु मैं तुम्हें सचेत किये देता हूँ कि तुम्हें निराशा होगी। जहाँ तक मेरा ज्ञान है कि यह उस प्रकार की स्त्री नहीं है।"

"तुम कुछ नहीं जानते। इस देश की स्त्रियों में पचहत्तर प्रतिशत ऐसी हैं जो साधारण से प्रलोभन के लिये जीवन का सुख लुटाने के लिये तैयार हो जाती हैं।"

"देख लो। कहीं एक हिन्दुस्तानी सैनिक अफसर का अपमान न हो जाये।"

"तुम चिन्ता न करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलवन्त विचार कर रहा था कि क्या यह इन्द्र और अहल्या के नाटक की पुनरावृत्ति नहीं हो रही ?

इन्द्र तो एक ऋषि की भोली-भाली स्त्री को फुसला सका था। परन्तु वोपत तो इन्द्र प्रतीत नहीं हुआ था। हाँ, सूसन अहल्या लग रही थी। सूसन का अमृत को सड़क पर चलते-चलते पकड़ने की बात स्मरण कर वह शंका कर रहा था कि यह वोपत के जाल में फँस जायेगी।

दोनों मित्र सो गये। कारण यह कि प्रातः लियौन के लिये 'प्लेन' पकड़ना था। तीनों सात बजे प्रातः 'प्लेन' पकड़ आठ बजे लियौन पहुँच गये और दिन-भर वहाँ रहे। कुलवन्त ने अमृत के लड़के को देखा। वह बहुत सीमा तक अमृत से मिलता था। अमृत का महिमा से लड़का इतना गौरवर्णीय नहीं था।

मध्याह्न के भोजन के उपरान्त कुलवन्त ने कह दिया कि वह अपने एक फ्रांसीसी मित्र से मिलने जा रहा है।

सूसन उसके साथ नहीं गयी और वोपत भी वहीं रहा। जब कुलवन्त जाने लगा तो वोपत ने उसकी ओर अर्थ-भरी दृष्टि से देखा। कुलवन्त को यह समझ आया कि वोपत मन-ही-मन उसका धन्यवाद कर रहा है।

कुलवन्त कह गया कि वह ठीक पाँच बजे आयेगा और चाय लेते ही वे हवाई पत्तन के लिये चल देंगे। हवाई जहाज़ साढ़े-छः बजे छूटता था।

जब वह अपने मित्र से मिलकर लौटा तो सूसन और मिस्टर वोपत उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कुलवन्त आया तो चाय पर बैठ गया। वह वोपत के मुख पर निराशा के लक्षण ढूंढ रहा था। वोपत न तो प्रसन्न था और न ही निराश प्रतीत होता था। सूसन भी किसी प्रकार से हर्ष-शोक के लक्षण प्रकट नहीं कर रही थी।

चाय समाप्त हुई और दोनों मित्र हवाई पत्तन की ओर चले। सूसन ने अपनी गाड़ी निकाल ली और दोनों मित्रों को छोड़ने चल पड़ी। हवाई जहाज़ में सवार हो कुलवन्त ने पूछा, "सुनाओ, मित्र ! कैसा बीता आज दोपहर का समय ?"

वोपत ने उत्तर देने से बचने के लिये टाल कर कह दिया, "सो-सो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या मतलब ?"

"तो तुम अंग्रेज़ी भाषा भूल गये हो क्या ?"

"नहीं। मैं इसका अर्थ यह समझा हूँ कि तुम अपनी योजना में सफल नहीं हुए।"

"हाँ। यही कहना चाहिये।"

कुलवन्त चुप रहा। अब वह अमृत से मिलने की योजना बनाने लगा। वह यह नहीं चाहता था कि वोपत के सामने भेंट हो। इसी कारण पैरिस में एक सप्ताह तक रहते हुए भी उसने अमृत से मिलने का यत्न नहीं किया था।

अब वह सूसन और अमृत में सुलह करा देना चाहता था। वह इसी कार्य के लिये योजना बना रहा था। वह चाहता था कि लन्दन पहुंचकर वह किसी बहाने से पैरिस अकेला लौटे और फिर सूसन से अमृत की सुलह कराने का यत्न करे। जब वे अपने होटल में पहुँचे तो वहाँ इनके लिये नयी दिल्ली से एक 'डिस्पैच' आया हुआ था।

उस पत्र को लेकर वे सीधे अपने कमरे में जा पहुँचे और पढ़ने लगे कि उसमें क्या नयी बात है ?

भारत से पत्र था कि वोपत लन्दन में जाकर वहाँ पर भारत के कमिश्नर के द्वारा बीस हवाई जहाज़ों का सौदा कर लिखें और इस सौदे को गुप्त रखने के लिये कुलवन्त पैरिस में टिका रहे और वह दूसरे जहाज़ बनाने वाली कम्पनियों से बातचीत जारी रखे।

कुलवन्त ने नयी दिल्ली से आये आदेश पर विस्मय प्रकट किया। उसने कहा, "वोपत ! क्या समझे हो इसका अर्थ ?"

"कुछ विशेष नहीं। यह हमारे सुरक्षा-मन्त्री की योजना प्रतीत होती है। मैं समझता हूँ कि इसमें कोई राजनीतिक चाल है।"

"मेरा अनुभव है कि इस प्रकार की बातें छुपी नहीं रह सकतीं।"

वोपत ने कह दिया, "इस विषय में हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। हमारा राजनीति से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं।"

इस प्रकार बात समाप्त हो गयी। दोनों ने भोजन किया और सो गये। अगले दिन वोपत लन्दन चल दिया। उसके विदा होते ही कुलवन्त ने अमृत के घर का रास्ता पकड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह शनिवार था। वह विचार कर रहा था कि वह अमृत को घर पर ही मिल सकेगा। कुलवन्त का विचार ठीक था। पहली रात बारह बजे के उपरान्त अमृत अपनी ड्यूटी से लौटा था। उसकी साथिन लुईसी क्रिस्टर तो सायंकाल छः बजे ही काम से लौट अमृत की प्रतीक्षा कर रही थी। दोनों रात देर से सोने के कारण दस बजे तक सोये रहे थे।

अमृत का फ्लैट ढूंढने में कुलवन्त को सामान्य-सा ही कष्ट उठाना पड़ा। वह एक बड़ी-सी इमारत की तीसरी मंज़िल पर एक फ्लैट में रहता था। द्वार बन्द था, परन्तु द्वार पर घण्टी बजाने का बटन लगा था। कुलवन्त ने बटन दबाया तो एक युवती ने द्वार खोला। कुलवन्त समझ गया कि वह अमृत की उन दिनों की साथिन है।

कुलवन्त ने पूछ लिया, "क्या मैं मिसेज़ अमृत से बात कर रहा हूं ?"

"हां ! बताइये, क्या काम है ?"

"मैं भारत से आया हूं और अमृत का मित्र हूं।"

"आइये।" वह कुलवन्त को सिटिंग-रूम में बैठा अमृत को जगाने चली गयी।

पांच मिनट में अमृत और उसकी प्रेमिका बाहर आये। अमृत कुलवन्त से गले मिला और उसके उपरान्त उसने लुईसी क्रिस्टर से परिचय कराया।

कुलवन्त ने बताया, "मैं अपनी सरकार के काम से यहां आया हुआ हूं। आये तो कई दिन हो चुके हैं, परन्तु मेरे साथ अपने विभाग के मिस्टर यशवन्तराय वोपत भी हैं। इस कारण उसके साथ रहते हुए यहाँ आकर मिल नहीं सका। आज मैं उससे अवकाश पा सका हूं। इससे तुम्हें मिलने चला आया हूं।"

अमृत ने कुछ बात करने से पूर्व पूछ लिया, "अल्पाहार लेकर आये हो अथवा नहीं ?"

"अल्पाहार ले चुका हूं।"

"मैं तो रात बहुत देर से ड्यूटी से लौटा था। इस कारण अभी तक सो रहा था। यदि तुम जल्दी में नहीं तो हम आधे घण्टे में खाली हो जायेंगे और तब हम दिन-भर तुम्हारे साथ व्यतीत करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह ठीक है। मुझे तुम आज का समाचार-पत्र दे दो तो मैं बैठ कर पढ़ूंगा और तुम नित्य-कर्म से निवृत्त हो जाओगे।"

अमृत फ़्लैट के बाहर जा डाक के डिब्बे में से उस दिन का समाचार-पत्र निकाल कर ले आया। वह उसने कुलवन्त को देते हुए पूछ लिया, "फ्रांसीसी समझ सकोगे क्या ?"

"हाँ ! मैं बहुत अच्छी तरह इसे पढ़ और समझ सकता हूँ।"

"तो तुम पढ़ो। आओ, लुईसी ! हम शीघ्र तैयार हो जायें। तदनन्तर इनके साथ भ्रमण करेंगे।"

अमृत की साथिन ने कह दिया, "पर मैं तो अपनी सहेली के घर जा रही हूँ।"

"ओह ! याद आ गया है। तो वहाँ से किस समय लौटोगी ?"

"मैं समझती हूँ कि हम ब्रेक फास्ट तो प्लाज़ा डीनोवो में लेंगे। आपके मित्र चाहें तो उसी समय लंच ले सकेंगे। वहाँ से मैं अपनी सहेली से मिलने चली जाऊँगी। रात डिनर से पहले घर पर आपको मिलूंगी।"

अब कुलवन्त ने कहा, "मिसेज़ लुईसी ! यदि कोई अन्य प्रबन्ध न हो तो रात का डिनर मेरे साथ इण्टर कौन्टिनेण्टल में साढ़े-आठ बजे लें तो मैं कृतज्ञ रहूँगा।"

"तब तो मैं साढ़े-आठ बजे वहाँ ही पहुँच जाऊँगी।"

इस प्रकार कुलवन्त को अमृत से बातचीत करने का पूरा दिन मिल गया। प्लाज़ा डीनोवो में नाश्ता कर लुईसी अपनी सहेली के घर चली गयी और दोनों मित्र अण्डर-ग्राउण्ड रेलवे से 'चैम्पस इलिसीस' के बाग में जा पहुँचे। वहाँ एक एकान्त स्थान पर घास के लान में बैठ अमृत ने पूछा, "कैसी लगी है यह लुईसी ?"

"उतनी अच्छी नहीं जितनी कि सूसन है।"

"हाँ ! बच्चा होने से पहले वह अधिक सुन्दर थी, परन्तु प्रसव के उपरान्त तो वह सर्वथा असुन्दर हो गयी है।"

"मेरा तुमसे मतभेद है।"

"कब देखा है तुमने उसे ?"

"मैं कल दिन-भर लियोन में उसके घर रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह ! तो उसने प्रेम प्रकट नहीं किया ?"

"वह मुझे ब्रदर कहती है और मैं उसे सिस्टर मानता हूँ । तब वह मुझसे ऐसी बात कैसे कर सकती थी ?"

"परन्तु वह तो हरजाई है ।"

"पर उसका बच्चा तो सर्वथा तुम्हारी प्रतिलिपि है ।"

"हाँ । परन्तु मैंने उसे कई लोगों का मनोरंजन करते देखा है ।"

"और इस समय तुम मेरा मनोरंजन कर रहे हो ।"

अमृत हँस पड़ा । हँसते हुए बोला, "परन्तु कुलवन्त ! मैं पुरुष हूँ, नारी नहीं हूँ । पुरुष और नारी के मनोरंजन में अन्तर है ।"

"देखो, अमृत ! मनोरंजन-तो मनोरंजन ही होता है । हाँ, उसके ढंग भिन्न-भिन्न होते हैं । तुम लुईसी का मनोरंजन करते हो और मेरा भी । इस पर भी दोनों मनोरंजन में अन्तर है । इसी से मैं कहता हूँ कि सूसन किस-किस का मनोरंजन किस-किस प्रकार करती है, यह देखना है ।"

"कुलवन्त ! मैं उससे ऊब गया हूँ ।"

"और इससे कब ऊबोगे ?"

"अभी कैसे कह सकता हूँ ? अभी तो वह तरोताज़ा प्रतीत होती है ।"

"देखो, अमृत ! यह खेल अति भयंकर है ।"

"यहाँ तो यह खेल बहुत प्रचलित हैं ।"

"देख लो । एक समय ऐसा आने वाला है कि जब तुमसे भी कोई ऊब सकता है ।"

"तो वह मुझे छोड़कर जा सकता है । मुझे उस पर गिला नहीं होगा ।"

"मेरी सम्मति मानो । मैं तुम्हारी सुलह दीदी से भी करा सकता हूँ और सूसन से भी ।"

"महिमा को तुम इन दोनों की तुलना में कैसा समझते हो ?"

"दोनों से श्रेष्ठ । तुम उसके विषय में इतना भी नहीं कह सकते कि वह किसी का मनोरंजत करती रही है ।"

"वह श्रेष्ठता का लक्षण तो हो सकता है, परन्तु सौन्दर्य और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन करने की सामर्थ्य का नहीं।"

"इस गन्दे पानी को यदि मनोरंजन समझते हो अथवा चमड़ी के श्वेत रंग को सौन्दर्य समझते हो तो मुझे तुम्हारी बुद्धि पर विस्मय होता है।"

"और तुम सौन्दर्य किस बात में समझते हो ?"

"मनुष्य के शरीर के अंग-प्रत्यंग का सन्तुलन ठीक होना शारीरिक सौन्दर्य है। मन और बुद्धि का ठीक कार्य करना मानसिक सौन्दर्य के लक्षण हैं और सबके हित में कार्य करने को आत्मा का मैं सौन्दर्य मानता हूँ। इन तीनों के समन्वय को सौन्दर्य की पूर्णता समझता हूँ।

"इस कसौटी पर मैं महिमा को इन दोनों स्त्रियों से श्रेष्ठ मानता हूँ। परन्तु यह लड़की तो सूसन से भी घटिया प्रतीत हुई है।"

"एक घण्टे की संगत से आप कैसे इतनी लम्बी-चौड़ी व्याख्या को जान गये हैं ?"

"हमारे यहाँ यह कहावत है कि एक दाना देखने से पूर्ण देगची की दाल के पक जाने का अनुमान लग सकता है।

"देखो, मैं तुम्हें बताता हूँ। इसने तुम्हारे लिये ब्रेक-फास्ट का प्रबन्ध घर पर नहीं किया। मैं समझता हूँ कि यह इसकी मूर्खता का एक लक्षण है। इसी से शेष बातों का भी ज्ञान हो गया है।"

"परन्तु रसोईघर में चूल्हा सेंकना क्या सौन्दर्य का लक्षण है ?"

"हाँ, मानसिक सौन्दर्य का। इसका यह अर्थ निकला है कि उसे अपनी नौकरी पक्की प्रतीत हो रही है। परन्तु मैं समझता हूँ कि एक एयर होस्टैस चार-पाँच वर्ष से अधिक यह कार्य नहीं कर सकती और यदि कहीं इसके बच्चा हो गया तो इससे भी पहले छुट्टी मिल जायेगी।"

"हम इस बात का बहुत ध्यान रख रहे हैं कि बच्चा न हो।"

"परन्तु प्रत्येक बार जब तुम उसकी संगत में होते हो तो बच्चा हो जाने की चिन्ता होती ही है ?"

"जब हम पूर्ण सावधानी बर्तते हैं तो फिर चिन्ता नहीं होती।"

"यह तुम अनृत भाषण कर रहे हो, अथवा तुम अज्ञानता की बात कहने लगे हो ?"

"ऐसा है नहीं। इस विषय में तुम लुईसी से बात करना। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे भावों का समर्थन करेगी।"

कुलवन्त ने बात बदल दी। उसे अमृत की मनोवृत्ति ठीक प्रतीत नहीं हो रही थी।

: ७ :

दिन-भर वे घूमते रहे। सायं की चाय उन्होंने पुनः एक रैस्टोराँ में ली और रात को आठ बजे वे होटल इण्टर कौण्टिनेण्टल में जा पहुंचे। कुलवन्त समझ रहा था कि वह अहल्या-उद्धार का-सा कार्य करने गया था, परन्तु वह उसमें सफल नहीं हुआ। इससे वह समझ गया कि राम के कथन में अवश्य कुछ गुण रहा होगा, जिससे गौतम जैसा विद्वान् व्यक्ति बालक राम की बात मान गया था।

अपने को वैसा चमत्कार करने के अयोग्य समझ वह गम्भीर भाव बनाये हुए था। खाने के समय से आधा घण्टा पूर्व वे होटल में आये थे। वह अमृत को अपने कमरे में ले गया। वहाँ पहुँच अमृत ने विस्मय से पूछा, "यह कमरा तो डबल-सीटर है। और कौन यहाँ आने वाला है?"

"मिस्टर वोपत आज प्रातः ही गया है। मैंने अभी कमरा बदला नहीं, परन्तु मैनेजर से मैंने कह दिया है कि एक आदमी के खाने का ही दूंगा। वह मान गया है।"

"परन्तु कमरे का तो डबल पड़ेगा?"

"डबल नहीं, ड्योढ़ा भाडा होगा। मुझे इसमें लाभ यह है कि यदि वोपत मेरे यहाँ रहते ही लौट आया तो पुनः हम एक ही कमरे में रह सकेंगे।"

अमृत ने बात बदल दी। उसकी दृष्टि मेज़ पर रखी गरिमा के चित्र पर चली गयी। अमृत ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो तुम गरिमा का चित्र साथ-साथ लिये घूमते हो?"

"हाँ। और जहाँ मैं रात सोता हूँ, इसे सामने रखने से मुझे स्मरण रहता है कि मैंने इससे विवाह के समय कुछ वचन दिये हुए हैं। मैं उन वचनों को स्मरण कर अपने को स्वस्थ-चित्त रख सकता हूं।"

अमृत मुस्कराया और चुप कर रहा। यह देख कुलवन्त ने पुनः कहा, "गरिमा सत्यवक्ता है और उसके तथा मेरे भीतर किसी बात का लुकाव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुपाव नहीं। इससे मैं सदा ध्यान रखता हूँ कि कोई ऐसी बात न कर दूं जिससे कि मुझे उसके सामने आँखें झुकानी पड़ें।"

"परन्तु क्या वह भी ऐसा ही विचार रखती है ?"

"हाँ। मुझे विश्वास है।"

इस पर अमृत ने कुछ विचार कर कह दिया, "मैं समझता हूँ कि वह आपसे लुकाव-छुपाव अवश्य रखती है। किसी स्त्री के मन के भाव एक पारे की बूंद की भाँति होते हैं। वह उनको स्वयं ही नहीं समझ सकती तो वह बताती क्या होगी ?"

"देखो, अमृत ! मुझे उसने तुम्हारे साथ सम्बन्ध की बात बता दी थी, मैं स्वयं चकित था कि उसने वह क्यों बतायी है। उसने मुझे बताया कि उसने तुम्हारे बाबा के समक्ष सौगन्धपूर्वक यह माना है कि वह अपनी भूल का प्रायश्चित्त करेगी। वह अपने दोष मुझे बता कर प्रायश्चित्त कर रही थी।

"उसने यह भी बताया था कि यदि वह प्रायश्चित्त पूर्ण नहीं करती तो जीवन-भर उसे मन में क्लेश होता रहता।

"मैंने उसे पूछा था, कि तुम्हें भय नहीं लग रहा कि मैं तुम्हारा त्याग भी कर सकता हूँ ?

"उसका कहना था कि वह अपने चित्त की शान्ति के लिये प्रायश्चित्त कर रही है। यदि मैं उसकी इस ईमानदारी पर उसे दण्ड दूंगा तो वह समझेगी कि उसका प्रायश्चित्त अभी पूर्ण नहीं हुआ और सहर्ष वह उस दण्ड का भोग करेगी।

"मैंने उसे कहा कि उसने मुझे यह बताकर मेरे मन में अशान्ति उत्पन्न कर दी है। इस पर उसका कहना था कि वह अशान्ति अस्थायी होगी। यदि मैं उसकी निष्ठा को देखूंगा तो अशान्ति मिट जायेगी।

"अमृत ! मैं उस समय तो इस फिलॉसोफी को नहीं समझा था। परन्तु मैं स्त्री की संगत का भूखा था; इस कारण मेरा उससे सम्बन्ध चलता रहा। दो बच्चे भी हो गये। अब तीसरे की तैयारी है। तीन वर्ष हुए जब तुम मेरे अधीन कार्य करने दिल्ली में आये थे तो मुझे तुम्हारे बाबा द्वारा कही और महिमा द्वारा लिखी कथा पढ़ने को मिली। मैं अब गरिमा की महानता को समझ पाया हूँ। मैं समझ गया हूँ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने भूल की थी, पाप नहीं किया था। ऐसी भूल कोई भी कर सकता है और भूल का प्रतिकार प्रायश्चित्त होता है।

"अब तीसरे बच्चे के जन्म पर मैंने उसे कहा था, पहले दो बच्चे मैंने वासनाभिभूत ही उत्पन्न किये हैं, परन्तु यह तीसरा उसकी श्रद्धा और भक्ति का प्रतीक है।

"वह मेरे कथन का अर्थ नहीं समझी थी। मैंने बताया कि बाबा ने अपनी कथा में बताया है कि अहल्या से भी भूल हुई थी। उसने इन्द्र से सहवास पर तृप्ति अनुभव की थी, परन्तु जब उसके पति ने उसे बताया कि उसने यह अपने विवाह-सम्बन्धी वचन को भंग किया है तो वह समझ गयी थी। उसने भी प्रायश्चित्त किया था और उसके निमित्त पति से त्यक्ता होकर सन्तोष तथा धैर्य से अपने उद्धार की प्रतीक्षा की थी।

"उसकी कथा और गरिमा की कथा में यह अन्तर आ गया है कि गौतम त्रेता युग का व्यक्ति था। वह स्वयं सर्वथा संयम का जीवन व्यतीत करता हुआ अपनी पत्नी को भूल ही गया था। परन्तु मैं तो कलयुगी जीव हूँ और मैं संयम से रह नहीं सका और उसको भूल नहीं सका। उसे स्मरण कराने के लिये राम जैसे प्रतिष्ठित नेता की आवश्यकता पड़ी थी। मुझे बाबा की कथा ने ही उसकी तपस्या का रहस्य बता दिया है। मैंने जब से बाबा की कथा पढ़ी है, समझ गया हूँ कि मनुष्य की महानता क्षमा में ही है। प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप करने वालों को क्षमा करना धर्म का पालन ही है।

"और अमृत ! जानते हो कि उसने क्या किया था ?"

"क्या किया था ?"

"यही कि मेरे चरण-स्पर्श कर मेरा धन्यवाद किया और कहा कि अब वह कृत्य-कृत्य हो गयी है।

"तबसे मैं उसके चित्र को अपने सामने रखता हूँ। हमारे जीवन में अनेक बार फिसलने वाले समागम आते हैं। मैं ऐसे समागमों के आने पर भी फिसलता नहीं।"

अमृत मुख देखता रह गया। वह समझा था कि कुलवन्त गरिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उसके साथ सम्बन्ध रखने की बात को जानता नहीं। अब यह देख उसे आश्चर्य हुआ कि वह पूर्ण कथा को जानता है और उसे जानकर भी पत्नी के निष्ठावान होने से सन्तुष्ट है।

इस समय भोजन का समय हो गया। ये दोनों उठकर नीचे की मंज़िल पर रिसैप्शन हाल में आ गये।

वहाँ पहुंच उन्होंने देखा कि लुईसी अभी नहीं आयी। ये एक कोने में एक स्थान पर बैठ उसकी प्रतीक्षा करने लगे। समय व्यतीत होता गया। अब अमृत अपने मनोभावों को बताने में निस्संकोच हो गया। उसने कहा, "मेरी शिक्षा-दीक्षा जीवन को सर्वोपरि समझने वालों में हुई है। मैं जो कुछ भी जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि सम्मुख आये, उसको प्राप्त करने से अपने सुख के अतिरिक्त अन्य कोई कारण नहीं मानता। ऐसी मनःस्थिति में मुझे एक पुस्तक-विक्रेता की दुकान पर महिमा मिल गयी। वह मुझे प्राप्त करने योग्य समझ आयी। मैं उसे सहज ही पा गया और लगभग डेढ़ वर्ष तक मैंने उसका जी भर कर भोग किया।

"ऐसा प्रतीत होता है कि वह मुझसे ऊब गयी थी और मुझे विवश करने लगी कि मैं अपने माता-पिता से मिलने चलूं। यदि इससे पहले मैंने गरिमा को न देखा होता और उसे महिमा से श्रेष्ठ समझ उसे प्राप्त करने का असफल प्रयत्न न किया होता तो कदाचित् मैं लम्बी छुट्टी लेकर घर बिलासपुर न जाता। यह देख मुझे विस्मय हुआ कि गरिमा भी मुझसे मिलने के लिये उत्सुक है। बस फिर क्या था।

"दो रात-भर वह मेरे साथ रही। संयोगवश उन दिनों बाबा राम-कथा सुनाने लगे और उस कथा में दोनों बहनें रुचि लेने लगीं। परिणाम यह हुआ कि दोनों बहनें ही मुझसे नाराज़ हो गयीं। मैं उनको छोड़ कश्मीर चला गया।

"कश्मीर जाकर मैंने गरिमा को घर से भाग आने के लिये लिखा, परन्तु वह नहीं आयी और मुझे एक अन्य वहाँ मिल गयी। मैं उसे लेकर चण्डीगढ़ अपने काम पर जा पहुँचा। वह लड़की एक सामान्य क्लर्क की पुत्री थी। वह जब यह जान गयी कि मैं वेतन से अधिक घूस से पैदा करता हूँ तो उसने मुझे कहा कि शीघ्र ही मुझे कुछ स्वतन्त्र कार्य करने के लिये पूंजी एकत्रित करनी चाहिये। इस संकेत पर मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यय कम और आय अधिक करने लगा। इस व्यय कम करने में मैंने रिश्वत में से अपने साथियों और अधीनस्थ का भाग देना कम कर दिया और रुपया मेरी तिजोरी में एकत्रित होने लगा। यह बात मेरे साथियों को पसन्द नहीं आयी और उन्होंने षड्यन्त्र कर मुझे रंगे-हाथ पकड़वा दिया। मैं पकड़ा गया। मेरी तलाशी हुई और पकड़ लिया गया। पचास हज़ार की ज़मानत मांगी गयी। इसके लिये कोई तैयार नहीं हुआ। परिणाम यह हुआ कि मुझे दो वर्ष का कठोर दण्ड हो गया।

"दण्ड भोगने के उपरान्त मैं अपनी अविवाहित पत्नी सुमन को मिलने कश्मीर गया तो पता चला कि उसके लड़का हुआ था। उसका तो गला घोंट कर उसने झील में फेंक दिया था और स्वयं एक कश्मीरी मुसलमान से विवाह कर लिया था। इस पर मुझे क्रोध आ गया। उस कश्मीरी से बदला लेने के लिये मैं कुछ गुण्डों की मण्डली में सम्मिलित हो गया। मैं मुसलमान बन गया और अपने साथियों को सुमन के पति के पीछे लगा दिया। वह एक झगड़े में मारा गया और उसकी हत्या को छुपाने के लिये मैंने अपने कपड़े उसके शव को पहना कर अपनी घड़ी, पैन और डायरी सहित 'डल' में फिकवा दिया और स्वयं वहाँ से भाग बैंगलोर जा पहुंचा। मेरी उस चतुराई का परिणाम हुआ कि सुमन के कश्मीरी पति के स्थान मेरा मारा जाना समझा जाने लगा और उस कश्मीरी को कातिल समझ उसकी खोज होने लगी।

"मैं बैंगलोर में सैनिक हवाई जहाज़ों की वर्कशाप में फिटर के रूप में भरती हो गया। कुछ ही महीनों में मेरी योग्यता को देख मुझे जहाज़ उड़ाने का अभ्यास करने के लिये कहा गया। मैंने एक वर्ष में कोर्स पूरा किया और फिर एक एयर कमाण्डर की प्रेरणा से 'ऐक्टिव सर्विस' में चला आया।

"आगे की कथा आप मेरी सर्विस फाइल में पढ़ चुके हैं। पाकिस्तान में भी मुझ पर एक लड़की ने मुग्ध होकर मेरी जान बचायी। कराची में सूसन ने मुझ पर मोहित होकर मुझे पाकिस्तान से बाहर किया और अब सूसन की कैद से छुट्टी दिलवाने के लिये लुईसी मिल गयी है।"

एकाएक कुलवन्त ने घड़ी में समय देखा। उस समय साढ़े-नौ बज रहे थे। कुलवन्त ने समय देख पूछ लिया, "परन्तु अमृत! वह लुईसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ है ?"

इस. पर तो अमृत को भी चिन्ता लगने लगी। उसके फ्लैट पर टेलीफोन लगा था। उसने होटल के 'पब्लिक कॉल बूथ' से घर पर टेलीफोन किया। वहाँ किसी ने टेलीफोन उठाया नहीं। इससे निराश हो वह कुलवन्त के पास आ कहने लगा, "वह घर भी नहीं पहुँची। मैं समझता हूँ कि कहीं 'ऐक्सीडेण्ट' हो गया है।"

"तो फिर ?"

"समीप ही पुलिस चौकी में जाकर रिपोर्ट करता हूँ। वहाँ से पैरिस-भर की पुलिस चौकियों से टेलीफोन से सम्पर्क बना पता किया जायेगा।"

"तो चलो।"

"पहले भोजन कर लें।"

"नहीं अमृत ! जब तक यह पता न चल जाये कि वह कहाँ है तब तक खाना खाया नहीं जा सकता। 'ऐक्सीडेण्ट' के विचार से तो मुझे भूख ही नहीं रही।"

दोनों मित्र होटल से निकल पैदल ही पुलिस चौकी में पहुँचे और वहाँ अमृत ने अपनी पत्नी का नाम लिखाकर रिपोर्ट लिखायी।

लिखने वाले क्लर्क ने पूछा, "जहाँ वह गयी थी उस स्थान से पता किया है कि वह वहाँ से चली भी है अथवा अभी वहाँ ही है ?"

"नहीं।"

क्लर्क ने पूछा, "वहाँ का टेलीफोन नम्बर बताइये ?"

अब अमृत ने जेब से अपनी 'पॉकेट डायरी' निकाली और पत्नी की सहेली का नम्बर बताया। क्लर्क ने उस नम्बर पर टेलीफोन किया तो वहाँ से लुईसी की सहेली का पति बोला। उसने बताया कि दोनों सखियाँ पिक्चर देखने गयी हुई हैं और रात के साढ़े-ग्यारह बजे लौटने के लिये कह गयी हैं।

क्लर्क ने वहाँ का सन्देश सुनाकर हँसते हुए कहा, "परमात्मा का धन्यवाद करो कि कहीं रात रहने के लिये नहीं चली गयीं।"

अमृत झेंपता हुआ गरदन झुकाये थाने से बाहर निकल आया। कुलवन्त ने कह दिया, "लड़का बगल में और ढिंढोरा नगर में, वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात हो गयी है ।"

अमृत हँस पड़ा । दोनों मित्र होटल में आये और भोजन करने लगे । भोजन करते हुए अमृत गम्भीर हुआ बैठा खाता रहा ।

भोजननोपरान्त कुलवन्त ने पूछा, "अभी तो साढ़े-दस बजे हैं । वह साढ़े-ग्यारह बजे से पहले नहीं आयेगी । तब तक यहाँ ही रहो ।"

"नहीं, अब मैं चलता हूँ ।"

इतना कह अमृत वहाँ से घर चला आया ।

: ८ :

दशरथ मन से तो चाहता था कि राम वन को न जाये, परन्तु इस बात को वह अपने मुख से नहीं कह सका । वह चाहता था कि कोई दूसरा कैकेयी को समझाये । वशिष्ठजी ने तथा कुछ मन्त्रियों ने राम को समझाने का यत्न किया कि वह पिता के इस अधर्मयुक्त वचन का पालन करने से इन्कार कर दें ।

युक्ति देने वालों में सबसे प्रबल युक्ति लक्ष्मण की थी । लक्ष्मण का कहना था कि यदि गुरु भी कोई अयुक्तियुक्त बात कहे तो उसकी अवज्ञा करना पाप नहीं होता ।

परन्तु राम ने उसे कह दिया कि अयुक्ति-संगत बात हम मान नहीं रहे । हम अभी राजा नहीं हैं । हम तो पिता के आज्ञाकारी पुत्र मात्र हैं ।

इसी प्रकार सुमन्त ने राम को समझाया । राम का उसे उत्तर सर्वथा स्पष्ट था कि मेरे लिये राज्य-पद और वनवास एक समान हैं । जब मैं इन दोनों में अन्तर नहीं मानता तो क्यों एक के लिये पिता के वचन को असत्य सिद्ध करूँ ?

परन्तु जब राम अयोध्यापुरी से वनवासियों के वस्त्र पहने हुए निकलने लगा तो पुरवासियों ने मार्ग रोक लिया और इस घोर अनर्थ-कारी कार्य के लिये हाहाकार करते हुए आग्रह करने लगे कि राम वन को न जाये ।

राम की युक्ति सरल थी । उसने कहा था, "तुम प्रजा हो । तुमको धर्म का पालन करते हुए राज्य में रहना चाहिये । राजा मैं हूँ अथवा भरत है, इसमें क्या अन्तर पड़ जाता है ? हाँ, यदि भरत अधर्माचरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाला सिद्ध हो तो वे उसको राज्यच्युत कर सकते हैं।"

पुरवासियों के लिये तो यह युक्ति का विषय नहीं था। वह तो राम से प्रेम-वश कह रहे थे कि वह अयोध्या में ही रहें, परन्तु जब राम नहीं माना तो वे सब प्रेम-वश ही राम के साथ-साथ चल पड़े।

राम के रथ को घेरे हुए अयोध्या के रहने वाले सहस्रों ही नर-नारी, बाल-वृद्ध अपने घर-बार छोड़कर साथ-साथ चल पड़े। राम का रथ नगर और फिर नगर के बाहर गाँवों में से होकर निकला। उस रथ के साथ जाने वाली भीड़ बढ़ती गयी। तमसा नदी के तट तक पहुँचते हुए यह इतना बड़ा जन-समूह हो गया कि राम और रथ ले जाने वालों के लिये यह चिन्ता का विषय हो गया। सहस्रों नर-नारियों तथा बच्चों के खाने-पीने का तथा अन्य सुविधाओं का प्रबन्ध असम्भव हो गया। अतः राम ने सुमन्त्र को कहा और पुरवासियों को रात तमसा नदी के तट पर सोया छोड़ चोरी-चोरी वहाँ से चल दिये।

राम ने कुछ दूर जा सुमन्त्र को भी समझा-बुझा कर वापस कर दिया और तब तीनों राम, लक्ष्मण और सीता, नदी के पार गये और वहाँ से गंगा को पार कर भारद्वाज के आश्रम में जा पहुँचे। भारद्वाज ने उन्हें चित्रकूट पर रहने की सम्मति दी और वहाँ का मार्ग बता दिया।

भारद्वाज के आश्रम से चलकर राम और लक्ष्मण ने स्वनिर्मित नौका से यमुना पार की और फिर चित्रकूट के वन में जा कुटिया बना रहने लगे।

"भारद्वाज मुनि का आश्रम कहाँ था?" महिमा ने प्रश्न किया।

"यह गंगा-यमुना के संगम स्थान पर था। दोनों महानदियों के बीच के उस स्थान पर जहाँ से दोनों नदियों का संगम दिखायी दे।"

"बाबा! इसे तो त्रिवेणी कहते हैं।"

"हाँ। यह किंवदन्ति है कि बहुत प्राचीन काल में, सम्भवतः सत् युग में, इस स्थान पर तीन नदियाँ मिलती थीं। गंगा-यमुना और सरस्वती। परन्तु किसी महान् भूकम्प के कारण सरस्वती और यमुना के बीच की भूमि ऊपर को उठ आयी और सरस्वती हिमालय से दक्षिण को आती हुई गंगा और यमुना के समान पूर्वाभिमुख नहीं रह सकी और तब यह पश्चिम को घूम गयी। पश्चिम में उस स्थान, जहाँ अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान मरु-भूमि है, किसी समय सागर होता था। सरस्वती नदी उससे मिलने लगी।

"तदनन्तर पृथिवी के भीतरी हलचल के कारण राजस्थान की भूमि ऊपर को उठ आयी और सागर का जल वहाँ से टलकर वर्त्तमान स्थान पर चला गया और सरस्वती भूमि के भीतर-भीतर पूर्वाभिमुख हो इस त्रिवेणी के स्थान पर यमुना-गंगा में आ मिलती है।"

"इसका कहीं प्रमाण भी है अथवा यह केवल कहने में ही आता है।"

"इस बात का प्रमाण तो है कि सरस्वती नदी दक्षिण-पश्चिम को बहती हुई सागर में मिलती थी। परन्तु यह भूमि के भीतर-ही-भीतर जाकर प्रयाग राज में गंगा-यमुना से मिल जाती है, इसका प्रमाण नहीं है। यह गलत भी हो सकता है।

"इसी कारण मैं इसे प्रयाग राज ही कहता हूँ। प्रयाग का अर्थ दो नदियों का संगम स्थान ही है।"

"बाबा! आप क्या समझते हैं कि राम को सौतेली माता का कहा मान राज्य त्याग कर चला जाना चाहिये था? उस समय तो रावण और राक्षसों से युद्ध की बात चल नहीं रही थी। न तो दशरथ के मन में राम के वन जाने से रावण से दूर का सम्बन्ध था और न ही कैकेयी के मन में।

"राम के वन जाने के कर्म को तो रावण-युद्ध से प्रथक् कर देखना चाहिये कि क्या यह एक मिथ्या मनोद्गार नहीं था?"

विष्णुशरण ने समझाया, "महिमा बेटी! कैकेयी, दशरथ, राम और लक्ष्मण के कार्य का मूल्यांकन राम-रावण युद्ध से पृथक् ही करना चाहिये।

"जहाँ तक दशरथ और कैकेयी का प्रश्न है, दोनों ने एक सामान्य मनुष्य का-सा व्यवहार अपनाया था। उनके व्यवहार का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, कुछ अर्थ रखता है।

"दशरथ समझ रहा था कि कुछ अनुचित हो रहा है, परन्तु वचन से बद्ध होने के कारण वह अपनी इच्छा ही प्रकट कर सकता था। कैकेयी के मन में यह भ्रम उत्पन्न हो गया था कि उसकी स्थिति और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिमा कम हो जायेगी। यह भ्रम सत्य था अथवा असत्य था, केवल यह कह देने से मिट नहीं सका कि राम एक श्रेष्ठ विचारों का युवक था और वह अपनी तीनों माताओं से सद्व्यवहार करेगा।

"अतः कैकेयी के मन में यह भय उपस्थित हो गया था। कदाचित् यह बात कैकेयी के माता-पिता के और कुमारी कैकेयी के मन में विवाह के पूर्व रही होगी कि उसके घर में पुत्र होगा जो पहली दो रानियों के नहीं था। इससे वह पटरानी बन जायेगी और समय पाकर राजमाता होगी। यह भावना दशरथ के कैकेयी से विवाह के समय कैकेयी के माता-पिता के मन में होनी स्वाभाविक ही थी। उसी भावना का समय पर मंथरा से प्रोत्साहन पा उभर आना ही कारण हो सकता है।

"जब किसी पुरुष को सन्तान प्राप्त करने के लिये दूसरा विवाह करना पड़े तो दूसरी पत्नी और उसके माता-पिता के मन में अपनी लड़की के मुख्य पत्नी बनने की आशा रहती है। इसी का प्राकट्य हुआ प्रतीत होता है।

"अतः मेरा विचार है।" विष्णुशरण ने बताया, "दशरथ और कैकेयी के व्यवहार को समान मनुष्यों का-सा व्यवहार समझना चाहिये।

"परन्तु राम, सीता और लक्ष्मण का व्यवहार महान् जीवनोद्देश्यों से सम्बन्ध रखता है। पिता ने किसी को एक वचन दिया था और वह बिना राम के वन गये पालन नहीं हो सकता था। इस कारण राम ने पितृ-ऋण उतारने के लिये वन जाना स्वीकार किया।

"सीता का पत्नी होने के नाते राम का साथ देना उचित ही था उसने पति के साथ रहना स्वीकार किया। यह भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप ही है। इसमें विशेषता यह है कि वनवास उसके पति को मिला था। उसके लिये वन जाने की बात नहीं थी। वह यदि गयी थी तो पति के प्रति अपना कर्तव्य पालन करने के लिये ही गई थी।

"सीता ने राम को यह नहीं कहा कि वह अपने पिता का वचन पालन न करे। यह कहना उसके अधिकार के बाहर की बात था। उसका अपना राम के साथ जाना अथवा न जाना ही उसके विचार का विषय था। उसने उसी का निश्चय राम के साथ जाने के पक्ष में किया था। इसमें उसे अपार कष्ट भी हुआ, परन्तु उसने चौदह वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के वनवास के दिनों में और उसके पीछे भी कभी मुख से नहीं निकाला। यही सीता की अपने कर्तव्य पालन करने की महिमा थी जिससे उसका नाम अमर हो चुका है।

"लक्ष्मण की समस्या भिन्न थी। वह राम से प्रेम करता था और वन में राम को होने वाले कष्ट में भागीदार बनने के लिये चल पड़ा। लक्ष्मण की पत्नी ने पति के साथ जाना स्वीकार नहीं किया। यह अन्तर तो उर्मिला और सीता के भावों को प्रकट करता है और यही कारण है कि उर्मिला का नाम केवल इतिहास पढ़ने वालों को ही ज्ञात है। उसका राम की कथा में कोई स्थान नहीं।

"वास्तव में कैकेयी को समझाने और उस पर दबाव डालकर राम के प्रति उसके भय का निवारण करने का उचित यत्न नहीं किया गया।

"सुमन्त्र ने एक बार कैकेयी से कहा था कि वह इतनी कठोर माँग न करें, परन्तु कैकेयी ने उसे डाँट दिया था। यदि यही बात वशिष्ठ कहता तो कदाचित् कैकेयी मान जाती और राम वन को न जाता। तब न राम-रावण युद्ध होता और न ही आज वह कोटि-कोटि भारत-वासियों के पूज्य होते।

"दुर्घटना यह हुई कि दशरथ का देहान्त हो गया। कदाचित् वह भरत के लौटने तक जीवित रहता तो पुत्र की प्रेरणा पर कैकेयी अपना वचन वापस ले लेती और पिता वन में जाकर पुत्र को वापस ले आता।

"पति के देहान्त पर कैकेयी को समझ आने लगा था कि उसने क्या भूल कर दी है? जब भरत ननिहाल से आया और पिता के संस्कार-कार्य कर चुका तो कैकेयी को विदित हुआ कि जिसके लिये उसने राम को वन भेजा है, वह राज्य लेना नहीं चाहता।

"उसने अपने पुत्र के लिये राज्य माँगा था और इस माँग की प्रतिक्रिया-स्वरूप उसके पति का देहान्त हो गया। साथ ही भरत ने राज्य स्वीकार नहीं किया। उसने अपना राज्याभिषेक अस्वीकार कर दिया और अपना निश्चय माता को तथा पुरवासियों को बता दिया कि वह राम के पीछे-पीछे वन में जायेगा और उसे वापस लाये बिना नहीं लौटेगा।

"कैकेयी पुत्र के इस विचार को सुन अपने कृत्य पर अति दुःखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई और भरत के साथ वन जाने के लिये तैयार हो गयी।

"भरत जब राम को वन से लौटा लाने के लिये चला तो अयोध्या का पूर्ण मन्त्री-मण्डल, सहस्त्रों पुरवासी और एक बड़ी सेना साथ चल पड़ी। भरत के साथ उसकी तीनों मातायें, उसका छोटा भाई शत्रुघ्न भी गये। अन्तःपुर की अन्य स्त्रियाँ भी साथ हो लीं।

"इस प्रकार एक विशाल जन-समूह राम को वापस लाने के लिये चल पड़ा। मार्ग में चलते हुए वे राम की यात्रा के चिह्न देखते जाते थे। तीनों का समाचार लेते हुए वे सब दल-बल सहित भारद्वाज के आश्रम में जा पहुँचे।

"भारद्वाज ने राम के वहाँ आने और एक रात के लिये उस आश्रम में ठहरने का समाचार दिया। तदनन्तर यह बताया कि वहाँ से राम, सीता और लक्ष्मण तीनों चित्रकूट पर्वत को चले गये हैं।"

: ६ :

अमृत के अपने निवास-स्थान को चले जाने के उपरान्त कुलवन्त पैरिस के इण्टर कोन्टिनेण्टल होटल में अपने कमरे में चला गया। वह अमृत को सूसन अथवा महिमा के पास ले जाने में असफल हो निराशा से भर रहा था।

उसे अमृत का सम्बन्ध लुईसी से अरुचिकर और अकल्याणकारी लग रहा था। इस पर भी वह अमृत को समझा नहीं सका था कि वह वापस सूसन के पास चला जाये।

अपनी असफलता की निराशा में उसने अपने सरकारी काम पर ध्यान केन्द्रित करने का यत्न किया। इस पर भी वह चित्त लगा नहीं सका, अतः वह एक पुस्तक निकाल पढ़ने लगा।

जब उस पर भी चित्त नहीं लगा तो वह उठकर टेलीफोन लन्दन भारतीय कमिश्नर के कार्यालय से मिलाने लगा। तीन-चार बार यत्न करने पर टेलीफोन मिल गया। उसने अपना नाम व पता बता कर ब्रिगेडियर वाई० वोपत के विषय में पूछा। वहाँ से उत्तर आया कि वह वहीं पर ही ठहरा है। कुलवन्त ने उसके लिये यह सन्देश दे दिया कि प्रातः सात बजे मुझे मेरे कमरे के नम्बर से टेलीफोन मिलाये। इसके उपरान्त वह टेलीफोन रख विचार कर रहा था कि अब सो जाये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि किसी ने उसके कमरे के द्वार की घण्टी बजायी। वह उठा और द्वार खोल देखने लगा। बाहर अमृत को देख वह विस्मित रह गया।

अमृत कमरे में घुस आया और धम्म से सोफा पर बैठते हुए बोला, "मैं आपके कमरे की खाली सीट पर रहने के लिये आ गया हूँ।"

"क्यों ? अपने घर क्यों नहीं गये ?"

"वहाँ कोई दूसरा किरायेदार आ गया है।"

"किरायेदार ? क्या मतलब ?"

"वह मकान लुईसी क्रिस्टर ने भाड़े पर लिया हुआ है। मैं तो उसके मकान में रह रहा था। मैं यहाँ से सीधा वहाँ गया तो मकान खुला था। भीतर प्रकाश हो रहा था। मैंने द्वार पर की घण्टी बजायी तो एक अपरिचित युवक ने द्वार खोला। मैं भीतर घुसने लगा तो उसने द्वार में खड़े हो मेरा मार्ग रोक पूछ लिया, 'कहाँ जा रहे हो ?'

"मैंने बताया, 'अपने मकान में जा रहा हूँ।'

'पर तुम कौन हो ?'

"मैंने अपना नाम बताया तो उसने कहा, 'ओह ! तुम मिस क्रिस्टर से मिलने आये हो ?'

'हाँ।' मैंने कुछ न समझते हुए कह दिया।

"उस व्यक्ति ने कहा, 'मिस क्रिस्टर ने विवाह कर लिया है। वह अब मिसेज़ फिशर हो गयी है। वह इस समय अपने बैड-रूम में है। यदि आप कल आयें तो वह मिल सकेगी।'

'कब हुआ है विवाह ?'

'विवाह तो आज मध्याह्नोत्तर ढाई बजे मजिस्ट्रेट के सामने हुआ है और विवाह के उपरान्त हम यहाँ आये थे। दो घण्टा-भर रहने के उपरान्त हम वैडिंग-डिनर के लिये गए थे और अभी-अभी यहाँ आये हैं। मैं भी उसके साथ अभी बैड-रूम में जाने ही वाला था कि आप आ गये हैं।'

'मैं लुईसी से अभी मिलना चाहता हूँ। यदि वह बाहर आ सके तो मैं उसकी बहुत कृपा मानूंगा।'

'देखता हूँ। यदि उसने अभी वस्त्र नहीं उतारे तो कदाचित् मिल सकेगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उस व्यक्ति ने मुझको सिटिंग-रूम में सोफा पर बैठा दिया और स्वयं बैड-रूम में चला गया। पांच मिनट लगे लुईसी को बाहर आने में। वह नाइट गाउन पहने हुए थी।

"मैंने उठकर उसे कहा, 'यह जैण्टलमैन कह रहे हैं कि आपने विवाह कर लिया है? क्या यह ठीक है?'

'इन्हें झूठ बोलने की आवश्यकता नहीं हो सकती।'

'मैं यहाँ रात काटने आया था।'

'मैं समझती हूँ कि तुम किसी होटल में चले जाओ। यहाँ तो दो ही व्यक्तियों के रहने का स्थान है।'

'तो मैं अपना सामान ले जाऊँ?'

'आपका क्या सामान है यहाँ?'

'मेरा सूटकेस है, ब्रीफ केस है और कुछ अन्य सामान भी है।'

"इस पर उसने कहा, 'यह सब सामान आप कल प्रातःकाल आकर ले जायें तो ठीक है।'

'मैंने कुछ विचार किया और कहा, 'ठीक है। कल किस समय आऊँ?'

'नौ बजे अल्पाहार के समय आइयेगा। आपका सब सामान यहीं रखा होगा। मैं तो मिलूंगी नहीं। हम हनीमून के लिये प्रातः के हवाई जहाज से लन्दन जा रहे हैं। तुमको सामान यहाँ एक अन्य स्त्री से मिल जायेगा।'

"सो कुलवन्त! किसी होटल में जाने के स्थान यहाँ ही चला आया हूँ।"

कुलवन्त खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसकर बोला, "तो अब सूसन के विषय में क्या विचार है?"

"मैं अभी अनिश्चित मन से हूँ।"

"इसमें निश्चय करने की कठिनाई क्या है? इस समय दो पत्नियाँ हैं जिनमें से तुमको एक चुन लेनी चाहिये।"

"और शेष संसार की सब स्त्रियाँ विवाही जा चुकी हैं क्या?"

"विवाही तो नहीं जा चुकीं, परन्तु अब विवाह करने में वह सुगमता नहीं हो सकती जो पहले थी। मैं तो समझता हूँ कि अब वह समय आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है जिसमें स्त्रियां तुमसे ऊबने लगी हैं।"

"देखो कुलवन्त ! अब मैं सोना चाहता हूँ। कल प्रातःकाल विचार कर लेंगे कि क्या करना चाहिये ?"

कुलवन्त ने भी यही ठीक समझा। वह गुसलखाने में रात सोने योग्य वस्त्र पहनने चला गया।

अमृत के पास उन वस्त्रों के अतिरिक्त जो उसने पहने हुए थे, दूसरे वस्त्र नहीं थे। इस कारण वह कोट, पतलून उतार 'अण्डर वेयर' के साथ ही बिस्तर में घुस सो गया। कुलवन्त विस्मय कर रहा था कि इस प्रकार अपमानित हो वह किस प्रकार गहरी नींद सो सकता है ?

अगले दिन कुलवन्त सोकर उठा तो अमृत स्नान इत्यादि कर वस्त्र पहन चुका था।

"ओह ! कब के जागे हुए हो अमृत ?" कुलवन्त ने पूछ लिया।

"प्रातः चार बजे ही आँख खुल गयी थी।"

"और इतने समय से क्या कर रहे थे ?"

"मैं लुईसी के चले जाने पर कुछ हल्का-हल्का अनुभव करता था। इस कारण लेटते ही सो गया। परिणाम-स्वरूप प्रातः चार बजे ही जाग पड़ा था। स्नानादि से निवृत्त हो मैं विचार करने बैठ गया था कि अब मुझे क्या करना चाहिये ? मैंने यह विचार किया है कि सूसन से अपने व्यवहार की क्षमा माँग उसके साथ रहना आरम्भ कर दूं।"

"और महिमा के पास क्यों नहीं ? उसका दावा सूसन से अधिक है।"

"परन्तु मैं भारत में जा नहीं सकता। जाना भी नहीं चाहता। यह बहुत अच्छी नौकरी मिली हुई है। वहाँ पुरानी नौकरी पाने में भी कठिनाई है।"

"यदि महिमा यहाँ आ जाये तो ?"

"तो सूसन 'बाई गेमी' के लिये दावा कर देगी।"

कुलवन्त मुख देखता रह गया। कुछ विचार कर उसने कहा, "पर यहाँ कोई लुईसी जैसी अन्य भी तो मिल सकती है।"

"पर कुलवन्त ! तुमने ही रात कहा था कि स्त्रियां मुझसे अब ऊबने लगी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या आयु है तुम्हारी ?" कुलवन्त ने पूछ लिया।

"अब उनतालीस-चालीस के लगभग है।"

"अभी चार-पाँच वर्ष और वर्त्तमान खानाबदोशों का जीवन व्यतीत कर सकोगे। उसमें भी कल रात जैसी घटना फिर भी हो सकती है।"

"मैं अब जीवन में स्थिर होना चाहता हूँ।"

"तो मैं सूसन को टेलीफोन कर देता हूँ।"

"क्या कहोगे ?"

"यही कि मैं उसके पति के विषय में सफल हो रहा हूँ। उसे अपने बेबी के साथ तुरन्त आ जाना चाहिये।"

"हाँ, कर दो।"

कुलवन्त ने कहा, "स्नानादि से अवकाश पा नीचे होटल में जाकर टेलीफोन करूँगा। उसे मैं इस कमरे से टेलीफोन करना नहीं चाहता।"

कुलवन्त स्नानादि से अवकाश पा वस्त्र पहन रहा था कि लन्दन से टेलीफोन आया। यह वोपत का था। वोपत ने कहा, "मैं यहाँ का काम समाप्त कर चुका हूँ और नयी दिल्ली सूचना रात भेज दी थी। मैं वहाँ से उत्तर आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"मैं क्या करूँ ? कल मैं यहाँ किसी से भी सम्पर्क नहीं बना सका था। आज रविवार है। कल तक यहाँ कम्पनियों से बातचीत की जा सकेगी।"

वोपत का कहना था, "मैंने पैरिस के काम के विषय में भी पूछा है। मेरा विचार है कि तुम्हारे विषय में भी आदेश आयेगा।"

"तो सायंकाल तक बताना। मैं आठ बजे यहाँ अपने कमरे में रहूँगा।"

तदनन्तर दोनों मित्र नीचे रिसैप्सन हाल में चले गये। वहाँ होटल के सार्वजनिक टेलीफोन से कुलवन्त ने सूसन का नम्बर घुमाया और उसके मिलने पर कुलवन्त ने अपना नाम बता कहा, "तुरन्त यहाँ चली आओ।"

"क्या बात है ?" सूसन ने पूछा।

"अमृत मेरे कमरे में आ गया है। वह मेरे सामने तुमसे कुछ बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहता है।"

"अब मैं सायंकाल के हवाई जहाज़ से ही आ सकूंगी।"

"ठीक है। मैं होटल में तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।"

कुलवन्त ने टेलीफोन का बिल नकद दे दिया और अमृत के साथ उसके घर उसका सामान लेने चला गया। वहाँ एक बूढ़ी स्त्री मिली। उसने आने वालों का नाम-धाम पूछा और सिटिंग-रूम में ले जाकर एक कोने में रखा अमृत का सूटकेस और ब्रीफ केस दिखा दिया।

अमृत ने पूछा, "और बस ?"

"लुईसी यही दे गयी है। शेष सामान को बैड-रूम में रख ताला लगा गयी है।"

विवश अमृत ने दोनों नग उठाये और फ्लैट से बाहर चला आया। दोनों मकान से नीचे उतर आये और टैक्सी कर होटल इण्टर कौन्टि-नेण्टल में जा पहुँचे।

वहाँ जा दोनों, सूटकेस और ब्रीफ केस को खोलकर देखा गया तो अमृत ने कहा, "परमात्मा को धन्यवाद है कि मेरे पहनने के कपड़े और कार्यालय के कागज़ ठीक हैं, परन्तु मैंने पिछले नौ महीने में कम-से-कम पाँच हज़ार फ्रेंक का और सामान मकान में रखा था। वह सब उसने अपने अधिकार में कर लिया है।"

"अमृत! परमात्मा का धन्यवाद करो कि उसने तुम पर से अपना अधिकार उठा लिया है।"

"ठीक है। फिर भी सूसन से तो अच्छा ही किया है। उसने तो मेरे वस्त्र भी वहाँ से लाने नहीं दिये थे। केवल बाँह पकड़ कर घर से निकाल दिया था।"

"मैं समझता हूँ कि सूसन ने यह इसी कारण किया होगा कि वह तुम्हें पुनः घर लाने का यत्न करना चाहती होगी।"

अमृत मुख देखता रह गया। दोनों ने होटल में प्रातः का अल्पाहार लिया और फिर घूमने चले गये। कुलवन्त अमृत के साथ 'ट्यूलरीज़' देखने चला गया। वहाँ एक बहुत बड़ा अजायबघर था।

सायं साढ़े-सात बजे से पहले अमृत और कुलवन्त अपने कमरे में आ गये। कुलवन्त लन्दन से टेलीफोन की आशा कर रहा था। साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही आठ बजे तक सूसन के आने का समाचार था।

कुलवन्त ने एक डबल-सीटर कमरा पृथक् सूसन और अमृत के लिये सुरक्षित कर लिया। वह समझता था कि दोनों के रात इकट्ठे रहने से सुलह पक्की हो जायेगी।

सूसन से भेंट कुलवन्त के कमरे में ही हुई। दोनों मित्र होटल के रिसैप्शन हाल में सूसन से मिले और कुलवन्त के कमरे में आ गये। आठ बजने वाले थे और कुलवन्त लन्दन से टेलीफोन की प्रतीक्षा में था।

तीनों कमरे में पहुँचे। सूसन अपने बेबी को भी साथ लायी थी। अमृत ने बेबी को अपनी गोद में ले लिया और उससे बातें करने लगा।

बेबी इस समय दो वर्ष का था। वह अपने पिता को पहचानता नहीं था। अमृत को लियौन से आये एक वर्ष से ऊपर हो चुका था। अमृत ने जब बच्चे में किसी प्रकार की रुचि उत्पन्न नहीं की तो कह दिया, "यह तो बुद्धू है। अपने बाप को भी नहीं पहचानता।"

इस पर कुलवन्त ने पूछ लिया, "और तुम इसे यदि किसी अन्य की गोद में देखते तो पहचान जाते?"

"हाँ। यह मेरी प्रतिलिपि ही तो है।"

"अर्थात् तुम भी बुद्धू ही।"

"इस पर अमृत और सूसन हँसने लगे। इसी समय द्वार के बाहर की घण्टी बजी। इन्होंने द्वार भीतर से बन्द कर रखा था। कुलवन्त ने द्वार के पास जाकर आवाज़ दी, "कौन है?"

कुलवन्त का विचार था कि होटल का बेटर हो सकता है। परन्तु बाहर से आवाज़ आयी, "वोपत।"

कुलवन्त का मुख विवर्ण हो गया। उसने अमृत की ओर देखा और भाग कर उसके समीप आ कहा, "वोपत है।"

अमृत ने तुरन्त अपना सूटकेस और ब्रीफ केस उठाया और गुसलखाने में चला गया। भीतर जाते ही उसने बाथ-रूम का द्वार भीतर से बन्द कर लिया। कुलवन्त ने समझा कि वह उसमें छुप गया है। इससे कुछ आश्वस्त हो उसने कमरे का द्वार खोल दिया।

वोपत भीतर आया तो सूसन और उसके बेबी को वहाँ बैठे देख खिलखिलाकर हँस पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १० :

व्रोपत ने अपना सूटकेस एक कोने में रखते हुए कहा, "कुलवन्त ! मेरे लिये पृथक् कमरे का प्रबन्ध कर दो ।"

"मैंने सूसन के लिये पृथक् कमरे का प्रबन्ध कर रखा है ।"

"पर यहाँ एक बैंड तो खाली था ही ।"

"इस पर भी इसके लिये रूम नम्बर दो-चार-पांच है ।"

"पर तुम दोनों यहाँ कमरा भीतर से बन्द कर क्या कर रहे थे ?"

"एक गुप्त षड्यन्त्र इसके पति के विरुद्ध कर रहे थे ।"

यह कहते-कहते कुलवन्त हँस पड़ा । कुलवन्त ने सूसन को कहा, "अच्छा, सिस्टर ! तुम अपने कमरे में चलो । शेष बात वहाँ आकर ही करूँगा ।"

"तो मेरे सामने वह बात नहीं हो सकती ?" वोपत ने पूछ लिया ।

"तो फिर गुप्त कैसे रहेगी ?" कुलवन्त ने मुस्कराते हुए कहा ।

सूसन ने भी यही उचित समझा और वह वहाँ से उठी और एक हाथ में सूटकेस पकड़े हुए तथा दूसरे हाथ में बेबी को अँगुली से लगाये हुए कमरे से निकल गयी ।

वोपत ने कहा, "कुलवन्त डीयर ! मुझे शोक है कि मैंने तुम्हारे काम में विघ्न डाल दिया है ।"

कुलवन्त ने बात को बदलते हुए कहा, "क्या हुआ है कि एकाएक आ गये हो ?"

"ऐसा प्रतीत होता है कि सुरक्षा मन्त्री और हमारे 'हाई कमाण्ड' में मतभेद चल रहा है । दोनों में समझौता यह हुआ प्रतीत होता है कि दोनों स्थानों पर बिक्री की जाए । मुझे यह टेलीफोन से सन्देश मिला है कि मैं पैरिस पहुँच कर यहाँ के दूत के साथ मिलकर पच्चीस 'मिराज़' जहाजों का क्रय कर लूं । इसी कारण तुमको टेलीफोन करने का विचार छोड़ स्वयं ही चला आया हूँ ।"

"अब तो खाने का समय हो गया है । खाने के लिये नीचे चलना चाहिये ।"

"ठीक है । मैं तनिक बाथ-रूम में हो लूं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वोपत उठा और बाथ-रूम की ओर चला। कुलवन्त विचार कर रहा था कि अब अमृत का रहस्य खुल जायेगा। वह जानता था कि बाथ-रूम में सफाई करने वाले के लिये पृथक बाहर से द्वार है। परन्तु वह नहीं जानता था कि अमृत उस द्वार से चला गया है अथवा नहीं? इस कारण वह साँस रोक वोपत को बाथ-रूम के द्वार को धकेल कर खोलने का यत्न करते देखता रहा।

कुलवन्त ने घूम कर पूछ लिया, "क्या है?"

"भीतर कौन है?"

"तो यह भीतर से बन्द है।"

"हाँ।"

"स्वीपर बन्द कर गया प्रतीत होता है। मैं अभी खुलवा देता हूँ।"

कुलवन्त कमरे से निकल कमरों के पीछे 'कारीडोर' में जाकर अपने कमरे के बाथ-रूम के द्वार पर जा पहुँचा। द्वार खुला था और अमृत भीतर नहीं था। कुलवन्त समझा कि वह रूम नम्बर दो-चार-पाँच में चला गया होगा। इस विचार से सुख अनुभव करता हुआ वह बाथ-रूम में गया। उसने पिछला द्वार बन्द किया और कमरे में खुलने वाला द्वार खोल दिया।

'मैं तो समझा था।" वोपत ने कहा, "तुमने सूसन से बात करने वाले को बाथ-रूम में बन्द कर रखा है।"

"नहीं भाई! यह तो स्वीपर ही बन्द कर गया प्रतीत होता है।"

वोपत आया तो दोनों मित्र डायनिंग हाल में जा बैठे। वोपत ने पूछा, "आपकी सिस्टर नहीं आयी?"

"आना चाहिये था। मालूम नहीं क्यों नहीं आयी?"

"तो उसे बुला लाओ।"

कुलवन्त उसे वहाँ लाना नहीं चाहता था। उसका विचार था कि अमृत उसके साथ है और कदाचित् वे किसी अन्य होटल में डिनर लेने चले गये होंगे। इस कारण उसने कह दिया, "भूख लगेगी तो आ जायेगी।"

"उसके पति का क्या हुआ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दोनों में सुलह कराने की योजना ही बना रहे थे।"

"द्वार भीतर से बन्द करके ?" कहता-कहता वोपत हँस पड़ा।

कुलवन्त अब आश्वस्त था। इस कारण उसने पूछ लिया, "उस दिन लियौन में तुमसे कैसी बीती ?"

"मैं उसे तैयार नहीं कर सका। उसने स्पष्ट कह दिया, कि यदि अपने को पुलिस के हवाले नहीं होना तो चुपचाप बैठे रहो। इतना कह वह अपने बेबी को लेकर अपने बैड-रूम में चली गयी थी और फिर चाय के समय ही बाहर आयी थी।"

"तो फिर तुम मेरे विषय में इस प्रकार के व्यंग किसलिये कर रहे हो ?"

"बात यह है कि लियौन में तो वह बन्द द्वार के एक ओर रही थी और मैं द्वार के दूसरी ओर। परन्तु तुम दोनों बन्द द्वार के एक ओर ही बैठे थे।"

"इस पर भी ऐसी कोई बात नहीं थी जिसका तुम संकेत कर रहे हो। वह मेरी सिस्टर है और मैं उसका ब्रदर ही हूँ।"

वोपत चुप कर गया। कुलवन्त ने कहा, "मैं तो यह 'मिराज़' हवाई जहाज़ों के क्रय करने के पक्ष में नहीं हूँ। हमें लन्दन में ही और जहाज़ों के लिये यत्न करना चाहिये।"

"हाँ। यदि एक ही प्रकार के जहाज़ हों तो काम-चालकों इत्यादि को बहुत सुविधा रहती है। साथ ही इनके पुर्ज़ों के बदलने का भी सुभीता रहता है।"

"इस पर भी हमें यहाँ के भारतीय दूत से बातचीत करनी ही चाहिये। हमें तो आज्ञा पालन करनी है।"

"मेरा विचार है कि मेरा भेजा उपलब्ध हवाई जहाजों का विवरण पहुँच गया होगा और यदि किसी ने किसी प्रकार दो-तीन दिन की देर कर दी तो सम्भव है कि तब तक मेरे लिखे से कुछ समझ आ सके।"

इस प्रकार भोजन करते समय वे सरकारी काम की बातें ही करते रहे। तदनन्तर वे अपने कमरे में जा सो गये।

अगले दिन कुलवन्त सूसन की प्रतीक्षा करता रहा। न तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे मिलने आयी और न ही प्रातः के अल्पाहार के समय खाने पर आयी।

भारतीय दूतावास में जाने से पूर्व कुलवन्त होटल के कार्यालय में गया और रूम नम्बर दो-चार-पाँच में रहने वाले के विषय में पूछने लगा कि उस कमरे में ठहरा व्यक्ति है अथवा कमरा छोड़ गया है?

उत्तर मिला कि वह तो प्रातः सात बजे ही चला गया था।

कुलवन्त ने समझा कि अमृत ने अपने काम पर जाना होगा और सूसन लियोन चली गयी होगी। अतः उनकी बात मन से निकाल वे अपने काम पर चले गये।

उस दिन के उपरान्त दोनों अधिकारी इकट्ठे रहे। इस कारण अमृत और सूसन के विषय में बात नहीं चली। एक सप्ताह-भर पैरिस में रहकर वे अपने काम से अमेरिका गये और वहाँ से जापान होते हुए भारत लौटे।

कुलवन्त को न तो अमृत का कोई पत्र मिला और न ही कोई समाचार सूसन का। वह समझ रहा था कि दोनों में सुलह हो गयी है और दोनों प्रसन्न हैं।

भारत में पहुँच उसने सूसन को एक पत्र लिखा। परन्तु उसका कोई उत्तर नहीं आया। कुलवन्त ने समझ लिया कि पति-पत्नी दोनों सुलह कर किसी विदेश में अपनी सुलह का जशन मना रहे हैं।

: ११ :

लगभग ऐसी ही प्रसन्नता की अवस्था विष्णुशरण की कथा में उपस्थित थी। भरत अपने मन्त्रियों, माताओं और सैनिकों के साथ भारद्वाज आश्रम में पहुँचा तो मुनि ने पूछा, "भरत, कैसे आये हो?"

"मुनिवर! पितृ तुल्य भाई राम को वापस ले जाने के लिये।"

"और सेना साथ लेकर?"

"भगवन्! राम की अयोध्या-वापसी को धूम-धाम से करने के लिये सेना लाया हूँ। राम को वचन से मुक्त करने के लिये मैं अपनी माताजी को साथ लाया हूँ। मन्त्रियों को साथ इसलिये लेकर आया हूँ कि ये युक्ति से और धर्म-व्यवस्था से भैया को समझा सकें कि उनको अयोध्या लौट चलना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपने कथन को बल युक्त बनाने के लिये अयोध्या के मुख्य-मुख्य पुरवासियों को भी साथ लाया हूँ।"

भारद्वाज के मन में विश्वास बैठ गया कि राम लौट जायेगा। इसी प्रसन्नता में मुनिजी ने भरत को उसके सब साथियों सहित आश्रम की ओर से आतिथ्य उपस्थित कर दिया।

भरत, राज-परिवार, मन्त्री-गणों तथा पुरवासियों और सेना के खाने-पीने तथा मनोरंजन का सर्वोत्तम प्रबन्ध वहीं आश्रम में कर दिया गया। इससे सहस्रों जन जो भरत के साथ थे, अति आनन्दित थे।

इस पर पण्डित भृगुदत्त ने प्रश्न कर दिया, "बाबा! आप यह कथा महर्षि वाल्मीकि की रामायण में से कर रहे हैं अथवा तुलसीजी के रामचरित मानस से?"

"किसी से भी नहीं। मेरी यह कथा अनेकों ग्रन्थों से संकलित है। इसका कथानक भी मेरा अपना ही है।"

"परन्तु मैं जो पूछना चाहता हूँ वह यह है कि भारद्वाज मुनि के आतिथ्य का जो वर्णन वाल्मीकीय रामायण में है वह अनृत और अतिशय प्रतीत होता है।"

"हाँ। उसने लिखा है कि इस भोज में जो मुनि के आश्रम में राज-परिवार और अयोध्या की सेना तथा पुरवासियों को मिला, वह वर्त्तमान युग के वैष्णव हिन्दुओं की रुचि के अनुकूल नहीं। वहाँ लिखा है कि मुनिजी ने सैनिकों के स्वागत-सेवा और सुख-सुविधा के लिये मांस, मदिरा, अप्सराओं द्वारा नृत्य-संगीत का भी प्रबन्ध किया था।

"कुछ लोग मांस का अर्थ विशेष प्रकार के फल करते हैं। परन्तु सुरा और सुन्दरी के कुछ अन्य अर्थ न निकाल सकने के कारण कुछ लोग इस अंश को रामायण में प्रक्षिप्त मानते हैं।

"मैं तो इस झगड़े में पड़ता नहीं और कहता हूँ कि जो कुछ वहाँ लिखा है वह अयोध्यावासियों के आतिथ्य स्वागत के लिये अलंकार रूप में ही समझना चाहिये।

"यदि मैं नयी दिल्ली में यह कथा सुनाऊँ और कहूँ कि मुनि भारद्वाज के आश्रम में अयोध्यावासियों को बहुत स्वादिष्ट भोज दिया गया तो वहाँ के लोग कल्पना करने लगेंगे कि चाय, कॉफी कोका कोला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे पेय पदार्थों का प्रबन्ध रहा होगा।

"इसी प्रकार जिसने भी बाल्मीकीय रामायण में वर्णित सब पदार्थों को केवल श्रेष्ठ भोज्य वस्तु मात्र समझा होगा, वह लिखने वाला महर्षि बाल्मीकि है अथवा कोई अन्य है, नहीं कहा जा सकता।

"अगले दिन भरत इत्यादि मुनिजी से चित्रकूट का मार्ग पूछने गये। भरत ने मुनिजी के आतिथ्य के विषय में धन्यवाद कर दिया। भरत ने कहा, "भगवन्! आपने तो अतिथि-सत्कार में राजाओं को भी मात कर दिया है।"

"भरत! हम बहुत प्रसन्न हैं कि तुम अत्यन्त धर्मनिष्ठ व्यक्ति हो। जहाँ राम के त्याग-तपस्या और पितृ-ऋण की बात सुन चित्त अति प्रसन्न हुआ था, वहाँ तुम्हारा धर्म के तत्व-युक्त व्यवहार से चित्त पहले से भी अधिक प्रफुल्लित हुआ है। इसी प्रसन्नता के अनुरूप ही हमारे आश्रमवासियों ने ये कुछ श्रद्धा के फूल तुम्हारे चरणों में रखे हैं।

"हमारा आशीर्वाद है कि तम्हारी कामना पूर्ण हो।"

भरत ने मुनिजी से पूछा, "यहाँ से आर्य राम किस ओर गये हैं?"

मुनिजी ने बताया, "आजकल राम चित्रकूट पर्वत पर रह रहे हैं। जाओ, और उसे वापस अयोध्या में ले जाकर राज्यासीन करो। तुम्हारा कल्याण हो।"

भरत भारद्वाज मुनि का आशीर्वाद ले चित्रकूट को चल पड़ा। यमुना पार कर चित्रकूट पर्वत के चरणों में पहुँचे तो विशाल सेना तथा रथों, घोड़ों इत्यादि के चलने से उड़ती हुई धूल से लक्ष्मण के मन में शंका होने लगी कि कदाचित् भरत उनकी हत्या करने के लिये वहाँ दल-बल सहित आया है। वह एक वृक्ष पर चढ़कर सेना के आगे-आगे सूर्यवंशियों का ध्वज फहराया जाता पहचान राम से अपनी आशंका प्रकट करने लगा।

राम ने पूछा, "लक्ष्म ! तुम यह बुरी शंका किसलिये मन में ले आये हो?"

"भैया!" लक्ष्मण ने कहा, "यह राजनीति है। संसार में सब आप जैसे धर्म का मर्म जानने वाले नहीं। इससे बदल रहे काल की गति देख मन में यह शंका उत्पन्न हुई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो लक्ष्मण ! मैं तो इसमें कोई चिन्ता की बात नहीं देखता। यदि भरत हमें मिलने के लिये आया है तो यह उचित ही है। यदि वह हमें वापस ले चलने के लिये आया है तो भी अब मैं उससे राज्य नहीं लूंगा। इसमें भी किसी प्रकार की चिन्ता की बात नहीं।

"और यदि तुम्हारी आशंका सत्य है कि वह मन में द्वेष-भाव लेकर आया है तब भी मुझे चिन्ता की बात प्रतीत नहीं होती। कारण यह कि मैं अयोध्यावासियों की हत्या करना नहीं चाहता। मैं इन्हीं पुरवासियों का स्नेह और आदर पा चुका हूँ। इससे इन पर बाण चलाते समय मेरी बाहें निस्तेज और बलहीन हो जायेंगी। भरत का अनिष्ट मैं कर नहीं सकता। वह पिताजी का उतना ही प्रिय पुत्र रहा है जितना मैं रहा हूँ।

"अतएव लक्ष्मण ! मुझे तो किसी भी दशा में चित्त में चिन्ता अथवा भय नहीं। देखो, अयोध्या नरेश के आने की शान्ति से प्रतीक्षा करो।"

लक्ष्मण भाई की युक्ति और मनोद्गार सुन चुप कर गया और आने वालों के वहाँ पहुँचने की प्रतीक्षा करने लगा।

एकाएक वृक्षों के झुरमुट में से मुनि वशिष्ठ तथा अन्य मन्त्री-गण निकलते दिखायी दिये। उनके साथ भरत, शत्रुघ्न और माताओं को आते देखा तो राम और लक्ष्मण आगे बढ़े और माताओं तथा गुरुजनों के चरण-स्पर्श कर भरत और शत्रुघ्न से गले मिले।

उनके पश्चात् सीता अपनी सासों के चरण-स्पर्श कर हाथ जोड़ सामने खड़ी हो गयी।

मातायें तथा भरत इत्यादि सब शिष्ट वर्ग राम को वल्कल पहने सामने खड़ा देख प्रेम और दुःख के आँसू बहाने लगे।

भरत नहीं जानता था कि किस प्रकार पिता के देहान्त का समाचार सुनाये। वह बात करने में कठिनाई अनुभव करता हुआ चुप था।

जब सब चुपचाप खड़े आँसू बहा रहे थे तब महर्षि आगे बढ़ राम की पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए समाचार देने लगे, "राम ! तुम्हारे पिता महाराज दशरथ तुम्हारे वन को चले आने के उपरान्त अति दुःख अनुभव करते हुए, स्वर्ग सिधार गये हैं। [illegible] पिता के देहावसान का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार पाकर अयोध्या आया और उनका दाह-संस्कार तथा अन्त्येष्टि-क्रिया कर अब राज्याभिषेक के लिये तुम्हें वापस अयोध्या ले जाने के लिये आया है।"

इस शोक-समाचार से तो राम भी विह्वल हो रोने लगा। भरत और अन्य सब इस समाचार के उपरान्त मन्दाकिनी के किनारे पहुँच हाथ-मुख धो वहाँ ही नदी तट पर बैठकर विचार करने लगे।

बात भरत ने आरम्भ की। उसने कहा, "भैया! अयोध्या का सिंहासन सूना पड़ा है। अब तुम चलो और उसे सुशोभित करो।"

"भरत! पिताजी अयोध्या का राज्य तुम्हें दे गये हैं। इस कारण वह तुम्हें सुशोभित करना चाहिये। वह सिंहासन यदि अभी तक सूना पड़ा है तो भूल तुम कर रहे हो।"

"परन्तु भैया! अधिकारी तुम हो?"

"राज्याधिकार कैसे प्राप्त होता है? इसके तीन ही उपाय हैं। राजा का पुत्र होने से, राजा द्वारा अभिषिक्त करने से। दूसरे, राज्य के विद्वानों द्वारा निर्वाचित करने से; तीसरे, समर में जीतने से।

"तीसरा उपाय तो है नहीं। हो सकता नहीं। अयोध्या नगरी महाराज इक्ष्वाकु के काल से आज तक अजेय रही है। दूसरा उपाय भी इस वर्त्तमान परिस्थिति में नहीं चल सकता। महाराज की मृत्यु से पूर्व की इच्छा कौन अयोध्या का विद्वान् अस्वीकार करेगा? परन्तु पहली बात तो मूल है। महाराज ने माता कैकेयी के पुत्र भरत को अयोध्या का राज्य सौंपा है।

"भरत! तुम अयोध्या का राज्य करो। यही पिताजी की इच्छा है। पिताजी तुमको राज्य के अयोग्य नहीं मानते थे। मेरा अयोध्या के विद्वानों से आग्रह है कि स्वर्गीय महाराज की इच्छा की पूर्ति करें। जब तक तुम में वे कोई दोष नहीं देखते, उनको स्वर्गीय महाराज की बात माननी चाहिये। यही धर्म-व्यवस्था है।

"मैं पिताजी की आज्ञा को परमात्मा की आज्ञा के तुल्य मानता हूँ। इस कारण तुम जाओ और राज-सिंहासन को सुशोभित करो।"

राम के युक्तियुक्त एवं धर्मानुसार वचन सुन सब निरुत्तर हो गये। इस पर वशिष्ठ मुनि बोले, "यह अयोध्या में चलकर विचार कर लेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम ! तुम अब वापस चलो । माता कैकेयी जो महाराज से तुम्हारे वन जाने की बात कह रही थीं अब वह पश्चात्ताप करती हुई तुम्हें वापस ले जाने के लिये कह रही हैं । अब तुम पर अयोध्या लौटने का प्रतिवन्ध नहीं ।"

"पर मुनि श्रेष्ठ ! वह प्रतिबन्ध माताजी ने लगाया था क्या ? मैं ऐसा नहीं समझता ! माताजी ने मुझे यहाँ वन में आने की आज्ञा नहीं दी थी । आज्ञा तो पिताजी की थी । वह मुख से नहीं कहते थे । उनका मान प्रेम-वश था, परन्तु वह वचनबद्ध थे । उनकी इस वचन-बद्धता से उनको मुक्त करने से ही मैं यहाँ चला आया हूँ ।

"माताजी ने यदि कुछ वापस लेना है तो पिताजी से लेना है । मुझे उन्होंने न तो वन जाने की आज्ञा दी थी और न ही मैं उनकी आज्ञा से यहाँ आया हूँ । पिताजी के देहान्त के उपरान्त में उनकी आज्ञा का उल्लंघन करूँगा तो जन्म-जन्मान्तर तक पाप का भागी बना रहूँगा ।

"अत: गुरुवर ! मुझे क्षमा करें । मैं चौदह वर्ष व्यतीत हो जाने के पूर्व वापस नहीं जा सकता ।"

इस कथन ने बात समाप्त कर दी । सब एक-दूसरे का मुख देखते रह गये । भरत ने एक योजजा विचार की । वह आगे आ राम के खड़ाऊँ को माँगने लगा । उसने कहा, "भैया ! ये पादुका मुझे दे दो ।"

"इनको किसलिये माँग रहे हो ?"

"जब तक आप चौदह वर्ष के वनवास का व्रत पालन कर लौट नहीं आते, तब तक ये अयोध्या में राज्य करेंगी ।"

"पर तुम क्यों नहीं करोगे ?"

"भैया ! मैंने वह राज्य पिताजी से प्राप्त कर तुम्हें लौटा दिया है । तुम जब तक वहाँ नहीं आते, ये राज्यासीन रहेंगी और इनका अनुचर बनकर मैं राज्य-कार्य देखूंगा ।"

इस पर वशिष्ठजी बोल उठे, "हाँ ! यह ठीक है । भरत ने राज्य लिया और फिर बड़े भाई के चरणों में अर्पण कर दिया । भाई चौदह वर्ष तक आ नहीं सकते; इस कारण भाई के अनुचर तब तक कार्य चलायें । भाई की ये पादुका तब तक अपने स्वामी का कार्य चलायेंगी ।"

इस प्रकार भरत को राम ने लौटा दिया । भरत बड़े भाई की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके उपरान्त उसने डाक्टर से पूछा, "क्या इसे यहाँ स्पेशल वार्ड में रखेंगे अथवा मैं इसे सैनिक हस्पताल में ले जाने का यत्न करूँ ?"

डाक्टर इस विषय में निश्चयात्मक उत्तर नहीं दे सका। आखिर यही निश्चय हुआ कि अभी उसे वहाँ ही रखा जाये। पीछे निश्चय कर लिया जायेगा।

कुलवन्त ने कार्यालय में पहुँच सबसे पहले अपने घर पर गरिमा को टेलीफोन किया। उसे अमृत के अचेत मिल जाने का समाचार दे दिया। कुलवन्त ने गरिमा से कहा, "माताजी को समाचार दे दो। यदि वह पुत्र को देखने जाना चाहें तो हस्पताल में जा सकती हैं।"

अगले दिन अमृत को सैनिक हस्पताल में भेज दिया गया। वह अभी भी अचेत था और डाक्टर जान नहीं सके कि वह क्यों अचेत है ?

इसके एक सप्ताह उपरान्त सूसन का पत्र आया। उसमें उसने लिखा था, "भाई साहब ! आपके कमरे में से निकलकर मैं रूम नम्बर दो-चार-पाँच में आपके मित्र की प्रतीक्षा करती रही। वैसे मैं आपके बाथ-रूम के पिछवाड़े के द्वार पर उसे वहाँ से निकाल कर ले जाने के लिये गयी थी। पिछला द्वार खुला था और आपके मित्र वहाँ, नहीं थे। उनका सूटकेस और ब्रीफ केस भी वहाँ नहीं था।

"मेरे मन में विचार आया कि वह अपनी ड्यूटी पर हवाई पत्तन पर चला गया होगा। बहुत प्रातः मैं वहाँ चली गयी थी। वहीं से मुझे लियौन वापस जाना था।

"वह मेरे वहाँ पहुँचने से पूर्व हवाई जहाज़ से लन्दन और फिर न्यूयॉर्क के लिये जा चुका था। मैं लियौन जा पुनः शनिवार पैरिस हवाई पत्तन पर पहुँची, परन्तु वह लौटा नहीं। न्यूयॉर्क में ही वह एक महीने की अवैतनिक छुट्टी लेकर कहीं लापता हो गया है।

'मैं उसे ढूंढने न्यूयॉर्क और फिर वहाँ से उसका पता करती हुई वाशिंगटन पहुँची। परन्तु उसका पता नहीं चला।

"अमेरिका से मैं आज ही वापस लियौन पहुँची हूँ और यहाँ आपका पत्र मिला है। अतः लिख रही हूँ कि आपको कुछ पता हो तो लिखिये।"

कुलवन्त ने पत्र पढ़ा और उत्तर देने के लिये पत्र को एक ओर रख छोड़ा। अमृत अभी भी अचेत था।

081
167932
167932
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-P आगत संख्या 167932

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar